एस. हुसैन ज़ैदी प्रस्तुत करते हैं

अमित लोढ़ा

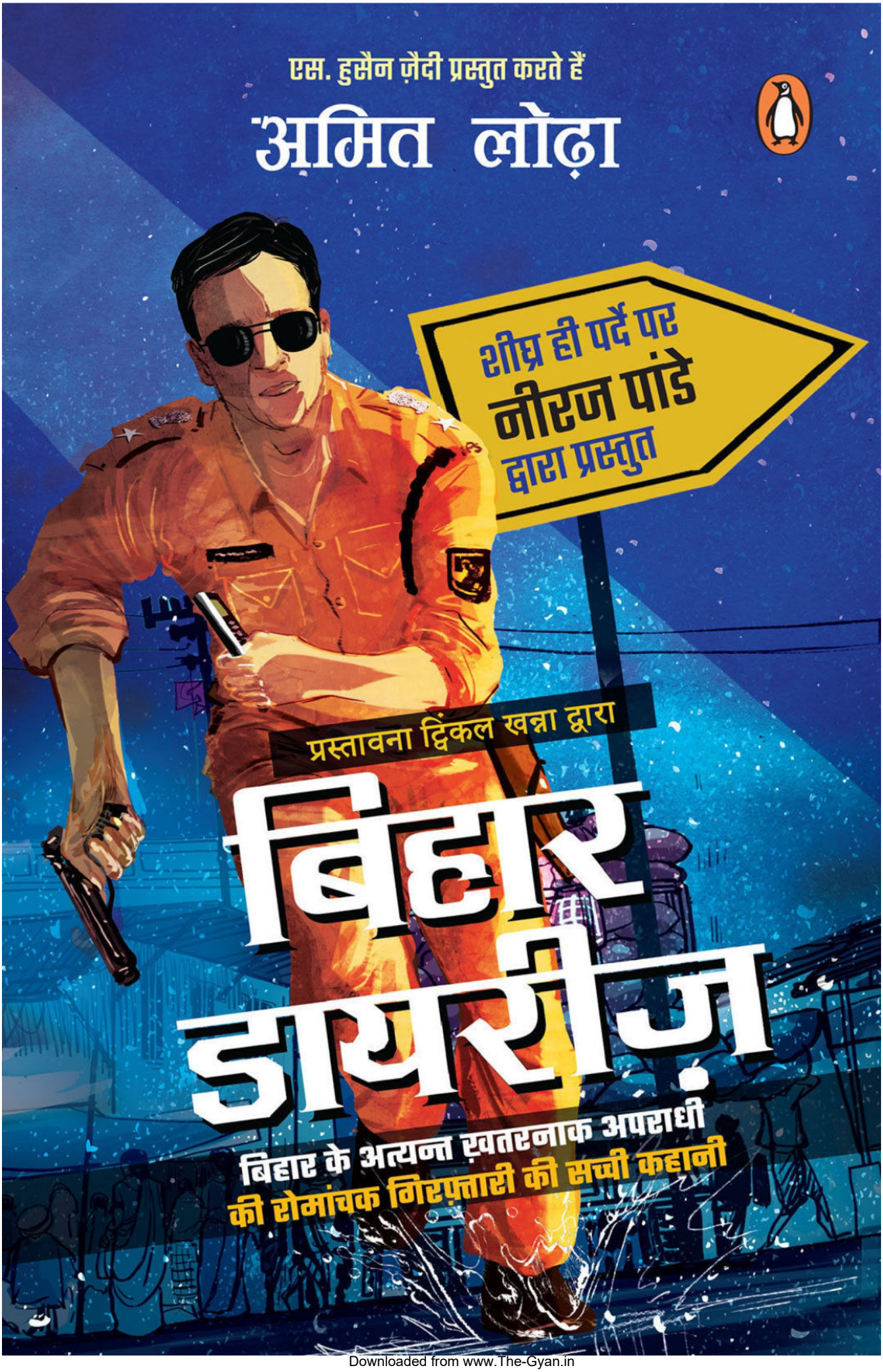

शीघ्र ही पर्दे पर
नीरज पांडे
द्वारा प्रस्तुत

प्रस्तावना ट्विंकल खन्ना द्वारा

बिहार डायरीज़

बिहार के अत्यन्त ख़तरनाक अपराधी
की रोमांचक गिरफ़्तारी की सच्ची कहानी

Downloaded from www.The-Gyan.in

Downloaded from www.The-Gyan.in

हिन्द पॉकेट बुक्स

बिहार डायरीज़

अमित लोढ़ा भारतीय पुलिस सेवा (IPS) के एक अधिकारी हैं, जो वर्तमान में इंस्पेक्टर जनरल (आईजी) के पद पर आसीन हैं। अपने करियर के दौरान वे कई सफल ऑपरेशनों का हिस्सा रहे हैं, जिनमें आपराधिक गिरोहों के सरगनाओं की गिरफ्तारी और अपहृतों के बचाव अभियान भी शामिल हैं। उनके शानदार कार्यों के लिए उन्हें प्रतिष्ठित प्रेसिडेंट्स पुलिस मैडल फॉर मेरिटोरियस सर्विस, पुलिस मैडल फॉर गैलेंट्री और इंटर्नल सिक्योरिटी मैडल से सम्मानित किया जा चुका है।

अमित को टेनिस और स्क्वैश खेलना बहुत पसंद है और वे किशोर कुमार के गीतों के दीवाने हैं। वह नियमित रूप से *टाइम्स ऑफ इंडिया* के लिए ब्लॉग लिखते हैं। उनसे *फेसबुक, ट्विटर* और *इंस्टाग्राम* (@ipsamitlodha7) पर संपर्क किया जा सकता है।

पुस्तक की अग्रिम प्रशंसा में

'भारत में वीरता और पराक्रम के ऐसे बहुत कम किस्से हैं जो वास्तविक भी हैं और प्रेरणादायक भी। *बिहार डायरीज़* एक ऐसे उच्च पदस्थ पुलिस ऑफ़िसर की कहानी है जो अपने काम को ही नहीं बल्कि देश की सेवा को प्राथमिकता देते हैं। यह किताब कहानी के रूप में लिखी गई है, जो पाठक को ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जिसका अनुभव केवल वही करते हैं जो ज़मीनी स्तर पर संकटों से जूझते हैं। अमित के लेखन की शैली और कहानी बुनने का अंदाज़ उन बेहतरीन थ्रिलर लेखकों का स्मरण कराता है जिनकी कहानियों में डूबे हुए पाठक अनजाने में पुस्तक पढ़ते-पढ़ते अपने बिस्तर के किनारे पर पहुँच जाते हैं।' — सुहेल सेठ

'वास्तविक और प्रासंगिक होने के कारण यह एक आम रोमांचक पुलिस कहानी से कहीं अधिक है। यह एक ही बार में पढ़ लेने योग्य कहानी है, जिसे बीच में छोड़ना असंभव है।'— रॉनी स्क्रूवाला

Downloaded from www.The-Gyan.in

अमित लोढ़ा

बिहार डायरीज़

Downloaded from www.The-Gyan.in

हमारी पुलिस और हमारे अर्धसैनिक बल के सभी
भूले-बिसरे नायकों– भारत के वीर सपूतों को समर्पित।
आइये, हम सभी ख़ुद को उनके बलिदानों को सँजोकर रखने के योग्य बनाएँ।

Downloaded from www.The-Gyan.in

अनुक्रम

भारतीय पुलिस रैंक

प्रस्तावना

भूमिका

1. जेल तोड़

2. ‘अंकल स्कोर क्या है?’

3. शंटिंग

4. गर्त का सफ़र

5. नरसंहार

6. ‘कुर्सी सब सिखा देती है’

7. संभोगी छिपकलियाँ

8. वापस काम पर

9. एक कसाई की कहानी

10. लोहा ही लोहे को काट सकता है

11. ‘आप सस्पेंड हो गए हैं’

12. ‘तुम सब हिजड़े हो!’

13. केबल टीवी कनेक्शन

15. ‘देखते हैं’

Downloaded from www.The-Gyan.in

16. गद्दार

17. कुदरत की पुकार

18. भुजिया

19. ‘बोल बम’

20. ‘बग़ल में है, हुज़ूर’

21. हेडबट

22. ब्यूटी कुमारी

23. ‘आलू ले लो’

24. ‘सुत्तल है’

25. ‘मेरे पति बिहार के “मशहूर” क्रिमिनल हैं’

26. ‘साहिब गुसल में हैं’

27. पूछताछ

28. ‘मेरा बेटा पुलिस अफसर बनेगा’

29. ‘शेखपुरा पुलिस ज़िंदाबाद!’

30. ‘मर्द है तो आजा!’

31. ‘जय चामुंडी माँ’

32. ‘फोन क्यों नहीं बज रहा है?’

33. ‘एनकाउंटर’

34. ‘नेटवर्क नहीं आ रहा है’

35. ‘मुझे गैस बंद करनी आती नहीं’

36. ‘आपने जीता है एक नोकिया मोबाइल फोन’

37. ‘रिंगा-रिंगा रोजेज’

39. ‘आ गया हूँ छत पर’

Downloaded from www.The-Gyan.in

40. ‘सर, पकड़ लिया’

41. ‘अपनी वर्दी पहनो’

42. ‘सारेगामा’

43. अवि पर हमला

44. एमएलए पर हमला

45. ‘वही लड्डू हैं’

उपसंहार

आभार

फॉलो पेंगुइन

कॉपीराइट

Downloaded from www.The-Gyan.in

भारतीय पुलिस रैंक

डाइरेक्टर जनरल (डीजी)

एडिशनल डाइरेक्टर जनरल (एडीजी)

इंस्पेक्टर जनरल (आईजी)

डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल (डीआईजी)

सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस (एसपी)

असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस (एएसपी)

डिप्टी सुपरिंटेंडेंट ऑफ़ पुलिस (डीएसपी)

इंस्पेक्टर

सब-इंस्पेक्टर (एसआई)

असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर (एएसआई)

सीनियर कॉन्सटेबल / हवलदार

कॉन्सटेबल

Downloaded from www.The-Gyan.in

प्रस्तावना

किसी भी कहानी को वास्तव में क्या मनोरंजक बनाता है? अनादि काल से हर कहानी कहने वाला इसी व्याकुलता से ओत-प्रोत रहा है। कर्ट वोनगट ने इस पहेली को सुलझाने के लिए विश्व की सबसे प्रचलित कहानियों का मनन किया — उन्होंने बताया कि एक सबसे प्रचलित प्रसंग, 'मैन इन होल' में मुख्य पात्र मुसीबत में फँसता है और फिर अधिक अनुभवी बनकर बाहर निकलता है। अमित लोढ़ा की दिलचस्प कहानी *बिहार डायरीज* इसी विशिष्ट शैली का एक बढ़िया उदाहरण है, जिसमें सदा उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।

लेखक आईपीएस अफ़सर हैं और उन्हें 'पुलिस मैडल फ़ॉर गैलेंट्री' तथा 'इंटर्नल सिक्योरिटी मेडल' जैसे कई पुरस्कारों व प्रशस्तियों से सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही, वे हमारे पारिवारिक मित्र भी हैं और मनमोहक बातचीत में प्रवीण भी—उनके पास हमेशा अनगिनत साज़िश-भरी कहानियाँ सुनाने को होती हैं।

अमित ने नागरिक सेवाओं में करियर चुना, पर वो दिल से हमेशा लेखक ही रहे हैं—उन्होंने स्कूल मैगज़ीन के संपादक होने से लेकर आईआईटी के प्रकाशनों के लिए लिखा और हाल ही में उन्होंने *टाइम्स ऑफ़ इंडिया* में ब्लॉग भी लिखना शुरु किया है।

'आप अपने यूनिवर्सिटी के दिनों के बारे में क्यों नहीं लिखते? आप भी चेतन भगत की तरह बेस्टसेलिंग लेखक बन जाते!' मुझे याद है, मैंने उनसे ऐसा कहा था, यह जानते हुए कि वे दोनों आईआईटी दिल्ली में नब्बे के दशक में साथी थे।

जहाँ उनके एक अन्य बैचमेट, समीर गहलोत, ने इंडियाबुल्स की स्थापना की, चेतन ने *फाइव पॉइंट समवन* की रचना की, वहीं अमित अपने साथी नागरिकों की सुरक्षा करने की भावना से पुलिस बल में शामिल हो गए।

इस सफ़र में अंततः वो पटना के सीले से गेस्ट हाउस में नरसंहार और अशांति के महौल के बीचोंबीच जा पहुँचे। इस किताब में उन्होंने उसे एक बड़ा ही पीड़ा देने वाला अनुभव बताया है। उन्होंने उस बीच अपना बहुत समय निराशाजनक परिस्थितियों और भाग्य को दोष देते हुए बिताया। लेकिन जैसा महान लेखक सेनेका ने कहा है, भाग्य तो

उनके लिए वह अवसर लेकर आया जिससे व्यवसायी जीवन के साथ ही पेशे में उनका भाग्य बदल सका और जिसके कारण यह ख़ासी जटिल किताब सामने आ सकी है।

Downloaded from www.The-Gyan.in

जब आप यह कहानी पढ़ेंगे, तो आप इसे जीवंत और ज्वलंत पाएँगे, क्योंकि लेखक ने स्वयं उन सभी क्षणों को जिया है, हम अन्य लोगों के विपरीत, जो दूसरों के अध्ययन और आराम-कुर्सी पर बैठे-बैठे अपनी कल्पना पर निर्भर रहते हैं।

यह कहानी *मैन इन होल* के मॉडल पर आधारित है, न केवल इसलिए कि इसका लेखक अपने आपको एक गहरी खाई में फँसा पाकर वहाँ से बाहर निकलकर आता है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि वह अपराधियों को पकड़ता है। मुझे इस पुस्तक में लेखक की पत्नी की भूमिका भी बहुत रोचक लगी, जिसकी दक्ष सलाह ने लेखक को कई कठिनाइयों में से निकाला। वैसे अधिकतर लोग इस बात से सहमत नहीं होंगे, मगर अधिकतर स्थितियों में हर सफल आदमी के साथ-साथ एक औरत भी होती है, जो अपने मल्टीटास्किंग दिमाग से उसको सहारा देती रहती है।

अमित लोढ़ा के इस दिलचस्प विवरण पर जल्द ही एक फ़िल्म बनाई जाने वाली है, जो किसी डेब्यू लेखक के लिए वास्तव में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। यह पुस्तक एक लोकप्रिय फ़िल्म की याद दिलाती है, जो बिहार के एक पुलिस अफ़सर के जीवन पर आधारित है। उस फ़िल्म में मेरे एक सुपरिचित अभिनेता हैं और उनका नाम राउडी राठौड़ है। मेरा सुझाव है कि उस लम्बे क़द के अभिनेता को ही उसी क्षेत्र पर आधारित इस चोर-पुलिस कहानी में अभिनय करने को कहा जाए। हमें फ़िल्म का नाम 'लक्की लोढ़ा' रखना चाहिए, और मुझे लगता है कि एक और ब्लॉकबस्टर हमारे हाथ लग गई है।

मुंबई
जून 2018

ट्विंकल खन्ना

Downloaded from www.The-Gyan.in

भूमिका

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि मैं भारतीय पुलिस सेवा से जुड़ा हूँ, क्योंकि मुझे पुलिसकर्मियों का काम बड़ा चुनौतीपूर्ण और फिर भी असीम संतोषदायी लगता है। यह उन दुर्लभ कामों में से है जहाँ कठोर परिश्रम का तुरंत फल मिल जाता है। वो अहसास जब एक अपहृत बालक अपनी माँ से मिलता है, शब्दों से परे है। ज़्यादातर लोग पुलिस वालों के काम को आकर्षक मानते हैं, लेकिन सच यह है कि खून, पसीना और आँसू भी इससे जुड़े हैं। अपने किसी साथी को खो देना या अपने परिवार की असुरक्षा ऐसे पेशेवर ख़तरे हैं जिनका हमें रोज़ सामना करना पड़ता है।

पुलिसवाला होने के नाते मुझसे अपेक्षित है कि लोग मुझे आदर्श की तरह देख सकें। लेकिन मैं भी पूर्णतः दोषहीन नहीं हूँ। मेरी भी अपनी कमज़ोरियाँ और मानवीय दोष हैं। मेरी पूरी कोशिश रहती है कि मैं लोगों के विश्वास पर खरा उतरूँ। मैं वो हीरो तो नहीं जो लात मारकर दरवाज़े तोड़कर बदमाशों की पिटाई करता है, पर मैं अपने सिद्धांतों और नीतियों पर अडिग हूँ। मैं वही करता हूँ जो न्यायपूर्ण और सही है।

मेरे लंबे करियर में मेरे साथ कई रोमांचक घटनाएँ हुई हैं, और लगभग सभी मेरी याददाश्त में उकेरी हुई हैं। मेरा भाग्य अच्छा था कि मैंने बिहार में काम किया। मुझे राज्य के लोगों, मेरे सीनियर्स और मेरे सहयोगियों का बहुत प्यार मिला। मैं यहीं अपने आपको पहचान पाया।

इस किताब में एक विशेष मिशन का वर्णन है, जो बिहार के सबसे कुख्यात डॉन सामन्त प्रताप को पकड़ने के मेरे दृढ़ संकल्प से किया गया था। दुर्भाग्यवश, जब तक किताब प्रिंटिंग के लिए गई, तब तक उसका सहयोगी, हॉर्लिक्स सम्राट, ज़मानत पर जेल से बाहर आ गया था। क्योंकि मेरे परिवार और मिशन से जुड़े अन्य लोगों को इससे सम्भावित ख़तरा था, इसलिये विशेषकर अपराधियों के नाम तथा पहचान किताब में बदल दिए गए हैं।

2006 में बिहार पुनरुत्थान की कगार पर था। संस्थापन सुशासन करने में विश्वास

ख़ुश नहीं था। वह काफ़ी पिछड़ा हुआ ज़िला था, जहाँ ऐसा लगता था मानो समय काफ़ी लम्बे समय तक थम गया हो। मैं एक छोटी पेशेवर परेशानी के दौर से गुज़र रहा था और

Downloaded from www.The-Gyan.in

जिस दौरान मेरे दोस्त जीवन में नई ऊँचाइयाँ छू रहे थे, उस समय मैं किसी सुस्त पिछड़े हुए कस्बे में काम करने की मनोस्थिति में नहीं था।

सामन्त प्रताप, हॉर्लिक्स के काबिल सहयोग से शेखपुरा और आसपास के क्षेत्र पर राज करता था। उसका नाम दूर-दूर तक फैला था—वह शेखपुरा का 'गब्बर सिंह' था। हर हत्या उसके लिए प्रगति के संकेत की तरह थी। एक पूर्व एमपी, एक ब्लॉक डेवेलपमेंट ऑफ़िसर (बीडीओ) और कुछ पुलिसकर्मी उसकी बेरहमी का शिकार हो चुके थे। जब सामन्त प्रताप द्वारा कई निर्दोष लोगों को पहुँचाए गए इस दर्द का अनुभव मुझे हुआ, तब मैं अपनी छोटी-छोटी व्यक्तिगत समस्याओं को भुलाकर एकमात्र लक्ष्य को प्राप्त करने के जुनून से भर गया—सामन्त प्रताप और उसके सहयोगियों के ख़िलाफ़ न्याय करना। सौभाग्य से, मेरे साथियों ने दाँव पर काफी कुछ लगे इस ख़तरनाक केस में मेरा साथ दिया और उन दोषियों को पकड़ने के अथक प्रयासों में मेरी मदद करते रहे। बेशक, मेरी पत्नी इस रोलर-कोस्टर सवारी में मेरे साथ चट्टान की तरह बनी रही—इसके बावजूद कि उसे और हमारे बच्चों को उन स्थितियों में सामन्त से बहुत ख़तरा था।

मैंने इस घटना का वर्णन उतनी ही सच्चाई से किया है, जितनी मुमकिन थी। कोई भी मिशन, चाहे वह कितना भी चुनौतीपूर्ण और खतरनाक क्यों न हो, हल्की-फुल्की घटनाओं से रहित नहीं होता। इस कारण, भयानक मुजरिमों को पकड़ने की बहुत गंभीर घटना के वर्णन में हास्य को भी उदारता से मिलाया गया है। इस किताब में फ़िल्मों और खेलों के भी कई संदर्भ आए हैं, क्योंकि मुझे ये दोनों बहुत प्रिय हैं। मैंने अपने आईआईटी के दिनों के भी कुछ अनुभव इसमें पिरोए हैं, जो मेरे एक शर्मीले और नम्र युवक से लेकर एक अति आत्मविश्वासी पुलिस वाले बन जाने तक के सफ़र को दर्शाते हैं।

मैं पाठकों को यह याद दिलाना चाहूँगा कि यह यथार्थ है, एक काल्पनिक कहानी नहीं। यहाँ वर्णित विचार और मान्यताएँ केवल मुझ तक सीमित हैं, यह किसी भी प्रकार से भारत सरकार के विचारों को नहीं दर्शातीं। यह मेरे जीवन में घटी सत्य घटनाओं, विभिन्न प्रकाशित स्रोतों व अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारियों पर आधारित है। यह मेरे अनुभवों का मेरी याददाश्त के अनुसार किया गया वर्णन है और इसकी पुष्टि अनुसंधान द्वारा की जा सकती है। किताब में सभी लोग वास्तविक हैं, और उनमें से कुछ के नाम व पहचान बदलकर बताए गए हैं, ताकि उनकी गोपनीयता सुनिश्चित की जा सके। इस किताब का उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना या किसी व्यक्ति, समाज, लिंग, मत, देश या धर्म की ओर या विपरीत झुकना नहीं है।

इस किताब से मेरा उद्देश्य यह है कि सामन्त प्रताप जैसे अपराधी का पीछा करने के

शुभचिंतक ऊँचे पदों पर भी आसीन थे — किस प्रकार का कठोर परिश्रम, धैर्य और चरित्र की दृढ़ता चाहिए, उससे पाठकों को रूबरू करवाया जा सके। एक आईपीएस ऑफ़िसर

Downloaded from www.The-Gyan.in

के रूप में अपने किए गए काम का वर्णन करते हुए मुझे गर्व भी महसूस होता है; मुझे जीवन में इतनी संतुष्टि मिलती है और मेरा विश्वास पक्का बना रहता है कि मैं भी उस समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता हूँ, जिसकी सेवा में रत हूँ।

Downloaded from www.The-Gyan.in

1
जेल तोड़

नवादा, 23 दिसंबर 2001

एक टाटा 407 धीरे-धीरे नवादा जेल की ओर बढ़ रही थी। रौशन ने अपने मोबाइल फोन की ओर देखा। सुबह के 9:38 बज रहे थे। उसे अभी अगले बीस मिनट में मात्र तीन किलोमीटर तय करना था। वह समय से आगे चल रहा था। उसने ड्राइवर को आराम से चलने के लिए इशारा किया और फिर पीछे मुड़कर देखा।

'सब बंदूकें देख लेना,' उसने उस टाटा 407 में अपने पीछे बैठे हुए आदमियों के मिश्रित समूह से कहा। वे सभी मज़दूर जैसे लग रहे थे।

रौशन ने अपनी एके-47 उठाई और उसको ध्यान से देखने लगा। पारंपरिक राइफल से छोटी और हल्की, क्लाशनिकोव ऑटोमैटिक राइफ़लें चलाने में बहुत आसान होती हैं, क्योंकि इसमें कम चलने वाले पुर्ज़े होते हैं। इस कारण यह काफ़ी मज़बूत और भरोसेमंद भी होती है। एक मिनट में यह लगभग 100 राउंड दाग सकती है। इसके 7.62 मिलीमीटर की कार्ट्रिज निशाने पर लगने के बाद भी टुकड़े-टुकड़े नहीं होती, बल्कि हड्डी छू लेने के बाद भी साबुत रहती है। इससे मांसपेशियों को काफ़ी नुकसान पहुँच सकता है। इसलिए एके-47 अधिकतर आतंकवादियों की पसंदीदा होती है।

लेकिन इतनी परिष्कृत बंदूकें भी कभी-कभी फ़ायरिंग के समय तकनीकी ख़राबी का शिकार हो जाती हैं। परंतु आज किसी भी ग़लती की कोई गुंजाइश नहीं थी। गोलियों को एक बार में ही निशाने पर अचूक वार करना था।

~

एक जेल किसी भी ज़िले की सबसे सुरक्षित जगह होती है और अक्सर, सबसे भयानक भी। नवादा जेल भी कुछ अलग नहीं थी। पूरे ज़िले के बदमाशों को यहीं रखा जाता था।

क़ैदी रहते थे। कोठरियाँ गंदी और मलिन थीं, और उनमें घुटन होती थी। रसोई सार्वजनिक

Downloaded from www.The-Gyan.in

शौचालय के ठीक बग़ल में थी। उफनते हुए शौचालय से वमनकारी बदबू आती रहती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि किसी भ्रष्ट वास्तुकार को उस गंध के बिना क़ैदियों को खाना खाने देना तक स्वीकार्य नहीं था। फिर भी जीवन चल रहा था। ऐसी स्थिति में हम मानव शरीर और दिमाग की अनुकूलन क्षमता पर बस आश्चर्य कर सकते हैं।

मान्य सोच के विपरीत, ज़िले की पुलिस आम तौर पर जेल की रक्षा नहीं करती है। इसके लिए अलग से जेल गार्ड की व्यवस्था होती है। प्रशिक्षण और उपकरण के मामले में जेल गार्ड ज़िला पुलिस के गरीब भाइयों की तरह होते हैं।

2001 में नवादा जेल प्रशासन में कर्मचारियों की भारी कमी थी। वहाँ केवल चार या पाँच निहत्थे प्रशासनिक कर्मचारी — जिनमें जेलर, जमादार तथा बड़ा जमादार शामिल थे —और चार-पाँच जेल गार्ड थे। जेल अधीक्षक प्रतिदिन सुबह 11 बजे के बाद जेल का निरीक्षण करता था। उस समय जेलर तथा असिस्टेंट जेलर यह सुनिश्चित करते थे कि जिन क़ैदियों की कोर्ट में पेशी थी, वे उपस्थित हों। जेल का कुछ स्टाफ़ क़ैदियों के लिए उनके रिश्तेदारों से मिलने की व्यवस्था भी कर देता था, बेशक़ इसका भी मूल्य होता था। ये मुलाक़ातें कुछ 'अच्छे' क़ैदियों की निगरानी में की जाती थीं। सभी को फ़ायदा होता था। साँठगाँठ में शामिल पूरे जेल स्टाफ़ में इसका मुनाफ़ा बराबर बाँट लिया जाता था। निगरानी करने वाले क़ैदियों को भी कभी-कभी कुछ पैसा दे दिया जाता था। इनको रोकने वाला कोई नहीं था।

~

23 दिसंबर 2001 नवादा जेल में एक और सर्द व उदास कर देने वाली सुबह थी। एक अकेला गार्ड तीस फ़ीट ऊँचे निगरानी टावर में बैठा था। उसने हथेलियों पर बड़ी कुशलता से खैनी तैयार की और अपने पीले दाँत दिखाते हुए मसूड़ों के आसपास दबा ली। और कुछ करने को था ही नहीं।

नीचे चौक में एक वॉर्डर जेलर के कक्ष की ओर बढ़ रहा था। उसका रोज़ का दायित्व सारे क़ैदियों को लाइन में गिनती के लिए खड़ा करना, जो था तो बहुत उबाऊ काम, लेकिन इसके अपने फ़ायदे थे। हर रोज़ वह क़ैदियों पर तरह-तरह के अहसान करता था, जिसके बदले उसे अच्छा-ख़ासा पैसा मिल जाता था। इसमें जेल के अंदर अश्लील पत्रिकाओं की अनुमति देने से लेकर क़ैदियों तक घर का बना खाना डिलीवर कराना शामिल था। हर काम का रेट अलग तय था। प्रायः दरें काफ़ी अधिक होती थीं, परंतु यदि क़ैदी उन्हीं के समुदाय या जात से हो तो जेल कर्मचारी कुछ मोलभाव कर लिया करते थे। किसी न किसी तरह

में तो डेज़र्ट कूलर भी थे। ज़ाहिर है कि जो वीआईपी थे, उन्हें तो विशेषाधिकार प्राप्त थे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

एक मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर ही वे महीनों अस्पताल में भर्ती कर दिए जाते थे, जहाँ वे एसी वार्ड में हर प्रकार की सुविधाओं का लाभ उठाते थे।

सामन्त प्रताप ने अपनी बाहें फैलाईं और उबासी ली। पास की पहाड़ियों से गड़गड़ाहट की आवाज़ आ रही थी। जेल से लगी उन पहाड़ियों पर ग़ैर-क़ानूनी खनन का कार्य नियमित रूप से चलता रहता था। उसने जेल परिसर, उसकी बड़ी चौक और ढहती हुई दीवारों का जायज़ा लिया। उसे यह जगह पसंद थी। और क्यों नहीं होती भला—जेल प्रशासन उससे राजा की तरह व्यवहार जो करता था। उसका मानना था कि यह रुतबा उसकी अपनी कमाई थी।

सारे क़ैदी परिसर में घूमते रहते थे और आपस में खुलकर मिलते-जुलते थे। क़ैदियों की अगली गिनती दोपहर 2 बजे होनी थी। सामन्त प्रताप की आँखें उसके सबसे ख़ास साथी, हॉर्लिक्स सम्राट को ढूँढ़ रही थीं। हॉर्लिक्स एक छोटे क़द का दुबला-पतला आदमी था, जो पहली बार नवादा जेल में रहने आया था। परंतु राम गोपाल वर्मा की एक मशहूर फिल्म 'सत्या' की तरह उसने सामन्त प्रताप को बहुत प्रभावित किया था।

'मेरे भाई, तुम बहुत बड़ी चीज़ों के लिए बने हो,' सामन्त प्रताप कई बार बातचीत में यह कहता रहा था। लॉकअप में साथ बिताए समय ने उन दोनों मुजरिमों को एक-दूसरे के बहुत निकट ला दिया था। सामन्त प्रताप के जेल के अन्य सहयोगियों को भी पता था कि वह हमेशा हॉर्लिक्स सम्राट की तारीफ़ों के पुल बांधता रहता था। और ऐसा लगता था कि हॉर्लिक्स भी सामन्त प्रताप के लिए बिना पलक झपकाये अपनी जान दे सकता था। वह सामन्त प्रताप के प्रति बेहद वफ़ादार हो गया था क्योंकि उसे किसी ने कभी इतना सम्मान नहीं दिया था।

जो लोग सामन्त प्रताप को जानते थे, उन्हें समझ आ गया था कि जेल से निकलने के बाद हॉर्लिक्स सामन्त प्रताप के गिरोह में उसके ख़ास साथियों में शामिल हो जाएगा—जैसे किसी एमबीए ग्रेजुएट को सीधा सीईओ बना दिया जाये।

~

पार्सलों को छाँटते हुए जेल वॉर्डर ने आवाज़ लगाई, 'हॉर्लिक्स सम्राट, तेरे घर से खाना आया है। लगता है, तेरी बीवी ने स्वादिष्ट हिलसा बनाई है। ले, मज़ा कर,' और खाने का डिब्बा उसे पकड़ा दिया। हॉर्लिक्स ने घड़ी देखी। दस बजने में दस मिनट बचे थे। उसकी पत्नी ने समय से काम किया था। उनकी योजना के लिए समय से बढ़ना बहुत अहम था।

एक चिंतित पत्नी होने के नाते, शांति देवी अपने पति को जेल का अखाद्य भोजन नहीं

उसके दोस्त, प्रसिद्ध सामन्त प्रताप के लिए देकर जाती थी। सामन्त प्रताप के प्रति अपनी

Downloaded from www.The-Gyan.in

पत्नी का सम्मोहन हॉर्लिक्स के लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। शांति को हमेशा से शक्तिशाली लोग पसंद आए थे, फिर वो चाहे ज़िले का एसपी हो या कोई डॉन।

जब भी मिलने का मौका लगता, वह हॉर्लिक्स से पूछती, 'आपके दोस्त सामन्त प्रताप को अच्छा लगा?'

सामान पहुँचाने के लिए जेल गार्ड को केवल थोड़ा पैसा और एक मीठी-सी मुस्कान की आवश्यकता होती थी। बस। शुरुआत में गार्ड टिफ़िन की जाँच करते थे, पर कुछ महीनों बाद सब बहुत ही सामान्य लगने लगा था और उन्होंने इस पर ध्यान देना बंद कर दिया। 'किसी पत्नी को अपने पति के लिए घर का खाना पहुँचाने देने में क्या हर्ज़ है?' उन्होंने सोचा। कभी-कभार जब भाग्य अच्छा हो तो गार्ड लोगों को भी थोड़ा लिट्टी-चोखा और पूरी-सब्ज़ी मिल जाती थी।

हॉर्लिक्स ने अपने खाने का निरीक्षण करने के लिए वह बड़ा-सा टिफ़िन खोला। सबसे ऊपर वाले डब्बे में बेसन के लड्डू थे। उसने सामन्त प्रताप की ओर देखा और अपनी गर्दन हिला कर हामी भरी।

सामन्त प्रताप ने हॉर्लिक्स के हाथ से डब्बा लिया और जेल कर्मचारियों की ओर बढ़ा। 'अरे सिपाहियों, आप लोग खाइए। ये मेरे मनपसंद लड्डू हैं। घर का बना है!' उसने बड़े उत्साह से कहा।

पिछले कुछ दिनों से जेल के गार्ड और कर्मचारी सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स की कई भेटों का मज़ा उठाते रहे थे। आख़िर उन स्वादिष्ट व्यंजनों को कौन मना कर सकता था?

'धन्यवाद, सामन्त भाई,' हाथों में लड्डू भरते हुए गार्डों ने कहा।

'और लीजिए ना,' सामन्त प्रताप ने लड्डू बाँटते हुए कहा।

लड्डुओं को देखकर अन्य क़ैदियों की लार टपकने लगी, लेकिन वे सब सामन्त प्रताप से सुरक्षित दूरी पर ही रहे। वह कोई साधारण अपराधी नहीं था। वह नवादा का कसाई था, जो कम से कम तीस लोगों की हत्या के जुर्म में उस जेल में लाया गया था।

जब सामन्त प्रताप ने पक्का कर लिया कि जेल स्टाफ़ के जो चार कर्मी वहाँ मौजूद थे, उन सबको लड्डू मिल चुके तो उसने हॉर्लिक्स की ओर देखा। हॉर्लिक्स ने तुरंत दूसरा डब्बा खोला।

हवा में मछली करी की सुगंध फैल गई, जो शौचालय की बास के साथ मिल गई। फिर भी, इससे कुछ क़ैदी हॉर्लिक्स की ओर मुड़कर देखने लगे। लेकिन हॉर्लिक्स को अपनी मनचाही करी में फ़िलहाल कोई रुचि नहीं थी, क्योंकि अभी उसकी आँखें कुछ और भी ज़ायकेदार चीज़ खोज रही थीं। उसने अगला डब्बा खोला।

ख़ास तौर पर .38 रिवॉल्वर का स्वदेशी संस्करण माँगा था। इसे इस्तेमाल करना बहुत आसान था, किसी ऐसे के लिए भी जिसने पहले कभी गोली न चलाई हो, जैसे हॉर्लिक्स।

Downloaded from www.The-Gyan.in

उसका मूल रूप, स्मिथ एंड वेंसन .38 जो अक्सर अमेरिका में महिलाओं द्वारा आत्म-रक्षा के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 'चिट्ठियाँ स्मगल करने के लिए तो टिफ़िन एक सुगम रास्ता था ही, और अब तो बंदूक भी आ गई,' हॉर्लिक्स ने सोचा। यदि सब कुछ योजना के अनुसार नहीं हुआ, तो यह बंदूक काम आएगी।

अचानक जेल वॉर्डर को कनपटी में बहुत ज़ोर का दर्द महसूस हुआ। ऐसा लगा जैसे सिर फट जाएगा। अपने दोनों हाथों से सिर को पकड़कर वह ज़मीन पर घुटनों के बल बैठ गया।

एक जमादार तो और भी बुरी हालत में था। उसे ख़ून की उल्टी हुई और यह साफ़ था कि वह असहनीय दर्द में था। एक के बाद एक, सभी जेल कर्मी गिर पड़े, कोई भी खड़े रहने की स्थिति में नहीं बचा।

क़ैदियों को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या चक्कर है। पर एक बात तो स्पष्ट थी, उन लड्डुओं में शक्कर से कहीं ज़्यादा नुकसानदायक कोई पदार्थ था। सामन्त प्रताप मुस्कुराया। वह संतुष्ट था कि शांति देवी ने लड्डुओं में चूहे मारने का ज़हर एकदम सही मात्रा में डाला था।

~

ट्रक ने नवादा जेल की ओर उपमार्ग पकड़ा।

शहर के बाहर कई बोर्ड लगे थे, और उन सब पर भड़कीले हरे रंग में एक ही संदेश लिखा था—'मुस्कुराइए, आप नवादा में हैं'।

उस सुनसान परिदृश्य को देखकर रौशन मुस्कुराया। 'कुछ ही मिनट में हम अपनी मंज़िल पर पहुँचने वाले हैं। तैयार रहो।'

जेल के फ़ाटक पर संतरी ने हाथ हिलाकर ट्रक को रोका।

'क्या है? कौन-कौन है इस टाटा 407 में?' गार्ड चिल्लाया। दूसरा गार्ड सनसनीखेज़ अपराध कथाओं को छापने वाले एक बेस्टसेलर *मनोहर कहानियाँ* को पढ़ने में व्यस्त था। जबकि उनका एक साथी सब्ज़ियाँ खरीदने गया हुआ था।

उस समय तक दोनों को जेल परिसर में घट चुकी घटनाओं का ज़रा भी आभास नहीं था। भीतर की दीवार और भीतर के द्वार के कारण दोनों गार्ड अंदर की घटनाओं से एकदम अलग-थलग रहते थे।

'सर, हम जेल के टॉयलेट ठीक करने आए हैं। मैं ठेकेदार हूँ।' रौशन ने हाथ जोड़कर कहा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

'आने दो। टॉयलेटों का हाल सच में बहुत बुरा है। तुरंत मरम्मत की ज़रूरत है,' सहयोगी जेलर, यानी गार्ड के बॉस ने ऊँची आवाज़ में कहा। गार्ड जल्दी से वापस आया और उसने फ़ाटक खोल दिया।

'ठीक है, तुम सब नीचे उतरो और अंदर जाओ' उसने रौशन को इशारा किया। सहायक जेलर के होठों पर धूर्त मुस्कान थी। वह अगले महीने रिटायर होने जा रहा था। पटना के गर्दनीबाग जैसे पॉश इलाके में एक दो-बेडरूम फ़्लैट का उसका सपना अंततः पूरा होने वाला था। एक स्थानीय नेता का इसमें बड़ा हाथ रहा था।

रौशन ने उसकी ओर देखा और हल्का-सा सिर हिलाया।

'मजदूरों' ने अपने 'औज़ार' उठाए।

'मारो, भून डालो,' रौशन ज़ोर से चिल्लाया। बदमाशों ने कूद लगाई और दोनों जेल गार्ड पर गोलियाँ दागी। दोनों तुरंत ढेर हो गये। फिर तेज़ी से, रौशन और उसके साथी जेल परिसर में घुस गए।

गोलियों की आवाज़ सुनकर जेलर अपने दो गार्ड के साथ चौक में पहुँचा। वहाँ का दृश्य देखकर उसे बहुत बड़ा झटका लगा। उसके चार कर्मी ज़मीन पर पड़े दर्द से छटपटा रहे थे, मुँह से निकली खून की उल्टियाँ फ़र्श पर यहाँ-वहाँ फैली थीं।

जेलर ने फ़ाटक की ओर देखा। रौशन और उसके आदमी लुटेरे चंगेज़ ख़ान की तरह अंदर घुसे आ रहे थे। बदमाशों को देखकर जेलर और अप्रशिक्षित संतरी अपनी जगह पर खड़े के खड़े रह गये। उनकी पुरानी अँग्रेजी .303 बंदूकें एके-47 के सामने वैसे भी बेकार ही थीं। रौशन की बंदूक से गोली चलते ही जेलर ज़मींदोज़ हो गया। दोनों गार्ड अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागे। दोनों में से एक किसी तरह रेंगते हुए ऑफिस पहुँच गया और अलार्म बजाया, पर दुर्भाग्य से अलार्म बजा ही नहीं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि कोई भी इन 'सामान्य' चीज़ों को चेक नहीं करता था। संयोग से, गोलियों की आवाज़ पास की खान में काम कर रहे मज़दूरों ने सुन ली और उन्होंने पुलिस को सचेत कर दिया।

अपनी लगभग आसान सी जीत पर रौशन मुस्कुराया। जेल कर्मियों की प्रतिक्रिया वैसी ही थी, जैसी उसने सोची थी। सामन्त प्रताप ने उसे गार्डों की संख्या और उनके दिनचर्या का पूरा ब्योरा दे रखा था। पिछले दो महीनों से वह इस धृष्ट ऑपरेशन की योजना बना रहा था। उनकी नज़र से बारीक से बारीक बात भी नहीं बच पाई थी। कारागार में एक साथ आठ से दस कर्मी होते थे और उनमें से केवल आधे ही सशस्त्र थे। सुरक्षा कारणों से जेल कर्मियों को कारागार परिसर के अंदर शस्त्र ले जाने की इजाज़त नहीं थी। सिद्धांततः, क़ैदी

और बाकी पुलिस वालों को भी जेल अधीक्षक के दफ्तर में अपने हथियार जमा करके ही परिसर के अंदर जाना होता था। अतः निहत्थे जेल कर्मी हमले का जवाब देने की स्थिति में

Downloaded from www.The-Gyan.in

थे ही नहीं। वैसे भी, उस दिन तो उनमें से कोई भी कुछ करने की स्थिति में नहीं था—सभी धराशाई, अपने सिर को पकड़कर दर्द से कराह रहे थे। जो मुट्ठी-भर संतरी गेट पर थे, उनको तो रौशन और उनके आदमियों ने पहले ही निपटा दिया था। सामन्त प्रताप ने जो रेखाचित्र बनाकर दिया था, उसे रौशन और उसके साथियों ने रट लिया था। उन्हें परिसर में कहाँ जाना है, यह अच्छे से पता था। शांति देवी के हाथों पहुँचे सभी पत्र आज काम आ गये थे।

अचानक, रौशन ने अपने एक आदमी, मुकेश कुमार को दर्द में मुँह बनाते देखा। एक गोली उसकी बाँह को चीर गई थी। रौशन ने बदहवास सा इधर-उधर देखा और गोलियाँ दागने वाले को ढूँढ़ने लगा।

उसने ऊपर की ओर देखा तो पहरे के टावर पर झुककर एक गार्ड निशाना साध रहा था। गार्ड को अब यह साबित करने का अवसर मिला था कि वह केवल खैनी बनाने में ही दक्ष नहीं था। रौशन गालियाँ देने लगा। टावर की ऊँचाई की वजह से गार्ड अधिक सहूलियत की स्थिति में था—उसके लिए निशाना साधना आसान था। ऐसे में सामन्त प्रताप जेल के द्वार तक गोली से बचकर नहीं पहुँच सकता था।

रौशन चबूतरे के पीछे छिप गया और सामन्त प्रताप का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए इशारे करने लगा। उसने उँगली से टावर में बैठे गार्ड की ओर इशारा किया। सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स ने टावर की ओर देखा। जिस स्थान पर वो खड़े थे, वहाँ से गार्ड पर निशाना साधने का कोई तरीका नहीं था, गार्ड सुरक्षित था। एकाएक हॉर्लिक्स हरकत में आया और टावर की ओर रेंगने लगा। टावर के नीचे पहुँचकर उसने सीढ़ियों के दरवाज़े को धीरे से धक्का दिया तो उसकी सरकारी कुंडी गिर गई और दरवाज़ा खुल गया। वह झट से सीढ़ियाँ चढ़ गया।

गार्ड को रिवाल्वर की हल्की-सी आवाज़ तो सुनाई दी, पर उसके पास कुछ करने का समय नहीं रह गया था। उसका सिर तरबूज़ की तरह फट गया। ट्रिगर काफ़ी चिकना था और बंदूक का झटका ना के बराबर था। हॉर्लिक्स ने बंदूक को अपने हथेलियों से सहलाया, उसने पहली बार किसी की हत्या करने के अनुभव का स्वाद चखा था। भविष्य में की जाने वाली अनेक निर्मम हत्याओं में से यह हॉर्लिक्स की पहली हत्या थी।

परिसर पूरी तरह नरक बन चुका था। सामन्त प्रताप और उसके साथी अपने बेहतर हथियारों की वजह से जंग आसानी से जीत चुके थे। उनके हौसले भी बुलंद थे। अक्षम वॉर्डर किसी तरह से उठकर अपनी जान बचाने लगे—वे इधर-उधर कोनों में छिपकर पुलिस बल के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

सकती है'।

अचानक सामन्त प्रताप मुड़ा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

'भैया कहाँ जा रहे हो?'

सामन्त प्रताप ने खतरनाक तरीके से रौशन की ओर देखा। उसने हॉर्लिक्स से देसी कट्टा छीना और शौचालयों की ओर भागा। सहायक जेलर किसी एक में छुपा हुआ था। सामन्त प्रताप ने उसके छिपने की जगह ढूँढ़ निकाली और दरवाज़े को लात मारकर खोल दिया। उस आदमी की भयभीत आँखें फटी की फटी रह गईं। वह समझ गया था, जीवन में हर चीज़ का मूल्य चुकाना पड़ता है!

'ये ले अपना पटना का डेरा!' सामन्त प्रताप उसके शरीर पर गोलियाँ दागते हुए बोला। फिर उल्टे कदम वापस भागा। वह और हॉर्लिक्स टाटा 407 में सवार होकर भाग गए।

'हा हा हा! मज़ा आ गया। हॉर्लिक्स भाई, तुम तो जन्मजात निशानची हो। काली माता की कृपा है। उस संतरी को मारने में तुमने बड़ा जिगर, हिम्मत और हुनर दिखाया। कंपनी में तुम्हारा स्वागत है!' सामन्त प्रताप बोला।

दोनों मुस्कुराए और बिछड़े भाइयों की तरह गले मिलने लगे।

~

उस भागम-भाग में नौ और कट्टर अपराधी भाग छूटे। 13 नवंबर 2005 को जहानाबाद जेल तोड़ के बाद शायद यह बिहार के इतिहास में दूसरा सबसे साहसी जेल तोड़ था। 200 नक्सलियों के जहानाबाद पुलिस लाइन और जेल पर एक साथ हमला किये जाने के कारण उस समय लगभग 340 क़ैदी भागे थे।

1986 में खूँखार सीरियल किलर चार्ल्स सोभराज भी लगभग इसी तरह तिहाड़ जेल से भागा था। वह अपने पीछे दो तमिलनाडु स्पेशल पुलिस संतरियों को जेल के बाहर और छह जेल अधिकारियों को जेल परिसर में बेहोशी में छोड़कर भागा था। कथित तौर पर चार्ल्स ने जेल कर्मियों को विश्वास दिलाया कि वह अपने जन्मदिन का जश्न मना रहा था, और उसने उन्हें बेहोशी की दवा मिले बर्फ़ी और पेठा खिलाए। दोनों बार की पलायनों में विचित्र समानताएँ थीं।

एसपी दयाल प्रताप की अगुआई में नवादा पुलिस जल्द ही केस पर कार्रवाई में लग गई और फिर पुलिस ऐक्शन में तीन अपराधी मारे गए। पर इससे कोई सांत्वना नहीं मिली। सामन्त प्रताप अब आज़ाद था और अधिक खतरनाक भी। उसके कई सारे काम बचे हुए थे।

~

के कामकाज में व्यस्त था। मैंने देखा कि मेरा टेलीफोन ऑपरेटर, तारिक़, हाँफता हुआ

Downloaded from www.The-Gyan.in

लॉन की ओर भागता आ रहा था।

'साहिब नवादा में जेल तोड़ हुआ है। सामन्त प्रताप और उसके कुछ साथी जेलर को मारकर और तीन-चार गार्ड को घायल करके जेल से भाग गए हैं।'

मैं सामन्त प्रताप के बारे में जानता था। 11 जून 2000 को बिहार के अपसढ़ गाँव, नवादा में जो नरसंहार हुआ था, उसका मास्टरमाइंड वही था। करीब सौ आदमी हथियार लिए, कमांडो की तरह काले कपड़े पहने हुए अचानक आकर स्वतंत्र विधायक अरुणा देवी — अखिलेश सिंह की पत्नी — के परिवार पर अंधाधुंध गोलीबारी करने लगे। अखिलेश सिंह सामन्त प्रताप का जानी दुश्मन था। फिर उन्होंने तलवारों से घायलों के गले चीर डाले और पेट में छुरे घोंप दिए। यहाँ तक कि उन्होंने चार साल की एक बच्ची को भी नहीं बख्शा। साज़िश की जड़ें इतनी गहरी थीं कि एक डीएसपी और एक राज्यमंत्री के भाई के नाम भी इस एफआईआर में अभियुक्तों में शामिल थे। डीजीपी के.ए. जैकब को स्वयं अपसढ़ गाँव में बढ़ते हुए तनाव को ठंडा करने जाना पड़ा।

जैसाकि मीडिया में प्रचलित था, वह बिहार का 'जंगल राज' युग था। क्योंकि मैं पड़ोसी ज़िले का एसपी था, इसलिए पुलिस मुख्यालय द्वारा मुझे भी कभी-कभार नवादा में 'कैंप' करने का निर्देश दिया जाता था।

फिर भी, मैं ज़्यादा चिंतित नहीं था। मुझे अच्छी तरह पता था कि सामन्त प्रताप नालंदा में तो कभी शरण नहीं लेगा। आख़िर मेरे पूर्वाधिकारी ने नालंदा में ही तो उसे गिरफ्तार किया था। फिर भी मैंने तारिक़ को मेरे क्षेत्राधिकार के सभी पुलिस स्टेशनों को सचेत करने को कहा।

उस समय मुझे ज़रा भी आभास नहीं था कि भविष्य में, सामन्त प्रताप और मैं, दोनों ही एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाएँगे।

सिर्फ दस मिनट बाद ही, तारिक़ फिर मेरे सामने खड़ा था। उसके साथ लूँगी पहने एक आदमी भी था। दो बच्चे उसके गले से लिपटे हुए थे।

'क्या है?' मैंने कुछ आश्चर्य से पूछा।

'साहिब, मेरी बीवी अपने आशिक के साथ भाग गई है। ज़रा उसे ढूँढ़ दो।'

'तुम्हें तो खुश होना चाहिए; तुम्हें अपनी बीवी से छुटकारा जो मिल गया।' तारिक़ ने हँसते हुए कहा।

मुझे पता था कि यह बेतुका मज़ाक था।

'मुझे उसके भागने का कोई अफसोस नहीं है। पर कम से कम बच्चों को साथ लेकर जाती। आपको उसे वापस लाना ही होगा!' वह आदमी बोला। 'नहीं तो उसे कहिए कि वह

है,' फिर कुछ क्षण रुककर उसने कहा।

मैं चुप रहा। यह ज़िले के एसपी के रूप में मेरे रोज़मर्रा के जीवन का हिस्सा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

2
‘अंकल स्कोर क्या है?’

27 जुलाई 2004 @BOOKSHOUSE1

‘सर, पिछले हफ्ते जिस एसबीआई मैनेजर को अगुआ किया गया था, उसे आज सुबह ही छुड़ा लिया गया है।’ मैंने पटना के आईजी सी.ए. शंकर को खबर दी। सारी रात मैनेजर को बरामद करने में लगे रहने के बाद, अब मैं नींद की कमी से बहुत थका हुआ महसूस कर रहा था। मुझे शंकर से कुछ ख़ास उम्मीद नहीं थी—वह थोड़ा तैश में रहने वाले लेकिन स्पष्टवादी अफसर थे। मगर आज उनका मिज़ाज कुछ ज़्यादा ही ख़राब था। वह शहरी ‘अंग्रेज़-टाइप’ आईजी आज हिन्दी की ख़ासमख़ास गालियों का इस्तेमाल किये जा रहे थे।

‘पता नहीं बिहार को **!& क्या होता जा रहा है! तुम कौन-से मैनेजर की बात कर रहे हो? वो अगुआ कब हुआ था? अगुआ हुए लोगों की तो मैं गिनती ही भूल गया हूँ। मैं ख़ुद पाजामा पहने हुए ही पटना के सड़कों पर एक लड़के को ढूँढ़ने में लगा हूँ। अभी कोई बीस मिनट पहले दिल्ली पब्लिक स्कूल के एक छात्र, आयुष्मान, को अगुआ कर लिया गया है। उसे ज़बरदस्ती किसी मारुति वैन में ले जाया गया है।’

जैसा स्वाभाविक था, मैंने तुरंत टेलीफोन ऑपरेटर को निर्देश दिए कि पटना–नालंदा राजमार्ग के सभी पुलिस थानों को इस घटना के बारे में सतर्क कर दे, और फिर मैं सो गया। पटना में हुए एक अपहरण पर पूरा ध्यान केंद्रित करना इस समय मुश्किल था, कम से कम अभी तो नहीं जब मुझे नींद की ज़रूरत थी। मैंने अपने आपको दिलासा दी थी कि कोई न कोई पटना में इसका प्रभारी है और बच्चे को ढूँढ़ ही रहा होगा।

~

पटना उस समय देश की अपराध राजधानी बना हुआ था। जबरन वसूली, हत्याएँ और अपहरण की घटनाएँ अनियंत्रित रूप से बढ़ गई थीं। हर रोज़ बिहार में किसी न किसी का

लक्ष्य होते थे। हालात इतने बुरे हो गए थे कि एक रिक्शेवाले को भी नहीं बख्शा गया। जब

Downloaded from www.The-Gyan.in

खबर फैली कि उस रिक्शेवाले ने अपना कोई छोटा-सा प्लॉट एक लाख रुपया में बेचा था, तो उसके पड़ोसी ने ही उसका अपहरण कर लिया।

सैकड़ों समृद्ध लोग दूसरे राज्यों में जा बसे थे या उन्होंने अपने बच्चों को राज्य के बाहर बोर्डिंग स्कूलों में भेज दिया था। एक डीजी, जो अपने आपत्तिजनक बयानों के लिए जाने जाते थे, उन्होंने कहा था, 'अपहरण तो बिहार में एक फलता-फूलता उद्योग हो गया है।'

अपहरण में जोखिम कम था और फायदा ज़्यादा। इसका अल्गोरिथम सीधा-साधा था —शिकार की आदतों को समझो, सही समय चुन करके अनभिज्ञ लक्ष्य का अपहरण करो और फिर शिकार के घर फोन कर दो। फिर तो मजबूर परिवारजन फिरौती की रकम डर के मारे दे ही देते थे, क्योंकि कई अगुआ हुए लोगों की हत्या भी हो चुकी थी।

अपहरण करने वाले कई गिरोह बिहार में संचालित थे। कई गिरोह तो ऐसे थे जो मुख्य गिरोह के लिये शिकार को सुरक्षित ले जाने या ठहराने की सुविधा ही उपलब्ध करवाते थे। उन दिनों, बड़ा दुख होता था कि बिहार में यह आउटसोर्सिंग का एक आदर्श उदाहरण हो गया था। परेशान पुलिस के लिए स्टाफ की कमी के कारण इस संगठित अपराध का सामना करना बहुत मुश्किल था। हालाँकि, पुलिस अपनी पूरी कोशिश करती थी और काफ़ी स्थितियों में सफल भी रही थी, लेकिन फिर भी अपहरण होते ही रहते थे। बिहार की स्थिति उस समय 'टूटी खिड़की सिद्धांत' (ब्रोकन विंडो थ्योरी) का एक अच्छा उदाहरण बन गई थी।

केवल एक घंटे सोने के बाद ही मैं फोन की लगातार बजती घंटी से जाग गया।

'सर, बड़ा बाबू नागरनौसा आपसे तुरंत बात करना चाहते हैं।' मेरे टेलीफोन ऑपरेटर ने कहा।

'सर, हमने मारुति वैन बरामद कर ली है और ड्राइवर को भी पकड़ लिया है। लेकिन न तो लड़के का और न अपराधियों का कोई सुराग मिला वहाँ। उन्होंने शायद हमें नाके पर सभी गाड़ियों की जाँच करते देख लिया होगा और वे उतरकर भाग गए होंगे।' नागरनौसा पुलिस स्टेशन के एसएचओ (स्टेशन हाउस ऑफिसर) मिथिलेश ने जोश से कहा।

अपहर्ताओं ने एक बड़ी भूल कर दी थी। ज़ाहिर था कि पुलिस बैरिकेड को देखकर वो बेहोश आयुष्मान को लेकर उतर गए थे। उन्होंने सोचा होगा कि वैन को नाका पार करने दिया जाएगा और फिर वे चेकपोस्ट से निकल जाने पर उसे फिर से काम में ले सकेंगे। पर वे भूल गए थे कि आयुष्मान का स्कूल बैग वैन में ही रह गया था। एक सजग पुलिस कांस्टेबल ने बैग देख लिया और तुरंत ड्राइवर को हिरासत में ले लिया।

मैंने तुरंत पटना आईजी को सूचित किया। सुराग मिलने से वह बहुत उत्साहित थे। मैं

यात्रा के दौरान मैं आशा करता रहा कि हमें वह बच्चा सुरक्षित मिले। मैं अचंभित भी था कि अपराधी पटना से नागरनौसा करीब 80 किलोमीटर तक कैसे आ गए और उन्हें कहीं रोका

Downloaded from www.The-Gyan.in

क्यों नहीं गया। उन दिनों कई मूलभूत सिद्धांतों को अक्सर अनदेखा कर दिया जाता था। यदि पुलिस ने सभी निकास द्वारों पर बैरिकेड लगा दिए होते, तो शायद वैन को पटना जिले में ही रोक लिया जाता।

पुलिस स्टेशन पहुँचकर मैंने एक अभागे आदमी को देखा। उसके कपड़े फटे हुए थे और वह बेहद परेशान दिख रहा था, शायद वह पूछताछ से थक गया था। वह आदमी वैन का ड्राइवर था।

हालाँकि अपहरण बिहार में काफ़ी सामान्य थे, लेकिन किसी प्रतिष्ठित स्कूल के किशोर छात्र का अपहरण होना पूरे राज्य तंत्र के लिए शर्मिंदगी की बात थी। इससे विपक्षी दलों को 'पटना बंद' का आह्वान करने का स्वर्ण अवसर मिल गया था। सारे स्कूल और कॉलेज को आयुष्मान के सुरक्षित वापस लौटने तक बंद करने का ऐलान कर दिया था।

पटना का पूरा पुलिस बल, डीआईजी शिवेंद्र भगत के नेतृत्व में नागरनौसा पुलिस स्टेशन आ गया था। भगत सर, सबसे निष्ठावान पुलिस अफसरों में से एक थे, और नियमों का अक्षरशः पालन करते थे। परंतु अब वह बिल्कुल उतावले हो गए थे। उन्होंने उस आदमी की ओर गम्भीरता से देखा और उससे पूछताछ करने लगे।

वह आदमी चिल्लाता रहा, 'साहिब, मैं बेगुनाह हूँ। मैं तो केवल ड्राइवर हूँ। मुझे अपहरण के बारे में कुछ नहीं पता।'

मैं इस लंबी निरर्थक पूछताछ को सहन नहीं कर पा रहा था। मैंने शिवेंद्र सर से ड्राइवर से बातचीत करने की अनुमति माँगी। सर खुद भी थक चुके थे।

'तुम कौन हो? अपहरण में तुम्हारी क्या भूमिका है?' मैंने पूछा। मेरा मन कह रहा था कि इस ड्राइवर का अपहरण से कोई लेना-देना नहीं था।

'साहिब, मैं तो ग़रीब ड्राइवर हूँ। मेरा बॉस किराए पर गाड़ी देता है। कल हमारे दफ्तर में दो लोग आए और बोले कि उन्हें उनके भतीजे को पटना से नालंदा में अपने गाँव ले जाना है। उन्होंने विशेष रूप से मारुति वैन माँगी। आज सुबह उन्होंने मुझे बोरिंग रोड चौराहे पर इंतज़ार करने को कहा। कुछ समय बाद, कुछ आदमी बेहोशी की हालत में एक लड़के को लेकर आए, जिसने स्कूल के कपड़े पहने हुए थे। उन्होंने बताया कि उनका भतीजा बीमार है और किसी बुरी शक्ति के असर में आ गया था। उन्होंने स्कूल प्रशासन से नालंदा ले जाने के लिए विशेष अनुमति ली थी, ताकि वे बुरी नज़र हटाने के लिए वहाँ पूजा करवा सकें। मुझे थोड़ा शक तो हुआ, पर फिर भी, क्योंकि मैं ड्राइवर हूँ, मैं सभी तरह की सवारियों को ले जाता हूँ। हम अक्सर गाँवों में तांत्रिक, ओझा और नीम-हकीमों के पास जाते रहते हैं। मैंने ज़्यादा सोचा नहीं और नालंदा की ओर चलता गया। जब हम नागरनौसा

किसी रिश्तेदार से मिलना था। उन्होंने कहा कि शाम को वो मेरी गाड़ी को फिर से काम में लेंगे। मैं थोड़ा आगे गया, तभी यहाँ की पुलिस ने मुझे रोक दिया।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

मुझे कोई शक नहीं था कि वह आदमी सच बोल रहा था।

'तुम्हारे पास उन आदमियों के नंबर हैं क्या?'

मैंने जानबूझकर नाम नहीं पूछे। अपराध की दुनिया में तो कोई नौसिखिया भी अपना असली नाम नहीं बताएगा।

'नहीं सर, आजकल नंबर किसे याद रहते हैं?' वह अपने चेहरे को हाथों से बचाते हुए बोला।

'डर मत, नहीं मारूँगा।'

ड्राइवर सही कह रहा था। मुझे भी मेरे घर और मेरे बॉस डीआईजी पटना के अलावा किसी के नंबर याद नहीं थे। मोबाइल फोन ने हमारी नम्बर याद करने की क्षमता घटा दी है। मैंने ड्राइवर का मोबाइल फोन माँगा। मैंने कॉल लॉग खोला और सारे नंबर ड्राइवर को दिखाए।

'इनमें से कौन सा है?'

ड्राइवर ने स्क्रीन पर एक नंबर की ओर इशारा किया।

'सर, आज सुबह मुझे इस नंबर से कॉल आया था। उस आदमी ने मुझे बोरिंग रोड चौराहे पर सुबह 6:40 बजे पहुँचने को कहा था।'

मैंने शिवेंद्र सर से निवेदन किया कि वे मुझे इस केस में अपनी सहायता करने दें, हालाँकि अपहरण पटना में हुआ था।

'सर, मैं अपने तरीके से काम करूँगा। मुझे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करने दें। इस बीच में पुलिस दल सारे संदिग्धों के अड्डों पर छापे मार सकते हैं।'

आईआईटी का छात्र होने के नाते मेरे लिए आधुनिक तकनीक और यंत्र इस्तेमाल करके केस सुलझाना स्वाभाविक था। शिवेंद्र सर को मेरे स्वतंत्र रूप से काम करने में कोई आपत्ति नहीं थी।

हमारे पास समय ज़्यादा नहीं था। आयुष्मान के पिता ने पैसे का इंतज़ाम करना शुरू कर दिया था। वह पटना के जाने-माने दम्पति नीलेश और मधु गुप्ता का इकलौता बेटा था। मुझे आभास था कि फिरौती मिलने पर भी अपराधी आयुष्मान को जीवित नहीं रहने देंगे।

~

मैंने अपने घर में बने दफ्तर पहुँचकर तुरंत रिलायंस टेलिकॉम कोलकाता के महाप्रबंधक से संपर्क किया। मैंने घोष से पहले भी कई मामलों में सहायता ली थी। उनसे मेरा निजी सम्बन्ध बन गया था।

मेरी पत्नी तानू, ऑफिस में आ कर मेरे साथ चाय पीने के लिए बैठ गई थी। वह रोज़ मेरे

Downloaded from www.The-Gyan.in

लौटते ही ऐसा किया करती थी।

उसको आभास हो गया था कि काम की वजह से मैं कुछ परेशान था। 'आपको आयुष्मान मिल जाएगा,' उसने कहा तो उसकी आँखों में मेरे लिये विश्वास साफ झलक रहा था।

घोष ने मुझे फिर कॉल किया और बताया कि वह नंबर केवल एक ही बार उस सुबह वैन के ड्राइवर से बात करने के लिए काम में लिया गया था। बाकी कॉल रिकॉर्ड खाली थे। ज़ाहिर था कि अपराधी ने यह सिम कार्ड केवल बच्चे के परिवार को कॉल करने के लिए लिया था। और पक्का था कि सिम कार्ड जाली नाम पर लिया गया था। अगुआ करनेवाले को मोबाइल की सामान्य जानकारी तो थी, पर वह उतना भी शातिर नहीं था जितना सोचता था।

'घोष बाबू, क्या आप मुझे आईएमईआई नंबर बता सकते हैं?'

'एक मिनट, सर,' घोष बाबू ने कहा।

आईएमईआई (इंटरनेशनल मोबाइल ईक्विपमेंट आइडेंटिटी) एक अनूठा 15 अंकों का सीरियल नंबर होता है, जो हर मोबाइल फोन को दिया जाता है। रिलायंस और एअरटेल जैसे सेवादाता अपने डेटाबेस पर सिम कार्ड का नंबर डालकर आईएमईआई नंबर निकाल सकते हैं। उस फोन पर इस्तेमाल होने वाले किसी अन्य सिम कार्ड का विवरण भी इसके द्वारा मिल सकता है। इसका उलट भी किया जा सकता है। मैंने घोष को कहा कि वह तुरंत आईएमईआई नंबर डालकर देखे कि क्या कोई दूसरा सिम इस मोबाइल पर चलाया गया था?

'इस आदमी ने पहले इस मोबाइल पर दूसरा सिम काम में लिया था! वो सिम कार्ड 94xxxx6381 भी हमारी कंपनी का ही है,' उत्साहित होकर घोष ने अपने मधुर बंगाली उच्चारण के साथ कहा।

'क्या आप चेक कर सकते हैं कि वह नंबर अभी भी काम में लिया जा रहा है या नहीं?' मैंने भी उतने ही जोश में आकर पूछा।

'हाँ, बिल्कुल, मैंने चेक कर लिया है। वो नंबर अभी भी काम कर रहा है।'

इसका मतलब था कि अपहर्ताओं के पास दूसरा सिम कार्ड था जिसे वे अन्य बातचीत करने के लिए काम में ले रहे थे।

'तो मुझे उस नंबर का पिछले 48 घंटों का कॉल रिकॉर्ड भेज दो।'

मैं बस पिछली कुछ कॉलों पर ही ध्यान देना चाहता था। ज़ाहिर था कि वही मुझे गुत्थी सुलझाने के लिए अहम संकेत देने वाली थीं।

सामने थे। मैंने उन नंबरों पर गोले बना दिये जो ज़्यादा बार मिलाए गए थे और जिनसे कॉल

Downloaded from www.The-Gyan.in

आई थीं। एक नंबर पर तो कुछ घंटों पहले ही कई बार संपर्क किया गया था, वैन को पुलिस द्वारा रोके जाने के लगभग तुरंत बाद। वह नम्बर हमारे लिए काम का हो सकता था।

कुछ देर आराम करने के लिए मैं घर के अंदर अपने तीन-वर्षीय बेटे, आदित्य, के साथ खेलने चला गया। जब मैं लौटा तो मैंने देखा कि मेरे सबसे होनहार अफसरों में से एक, संजय, मेरी मेज़ पर रखे प्रिंटआउट को देख रहा था।

'सर, आपने जो इस नम्बर पर गोला बनाया है, यह तो श्याम का नम्बर है! मेरा जासूस!' संजय चिल्ला पड़ा था। मैं इस जानकारी से काफ़ी हैरान था।

'सच कह रहे हो?'

'हाँ, सर, मैं लगभग रोज़ ही श्याम से बात करता हूँ, यह जानने के लिए कि मेरे इलाके में कहीं कोई गड़बड़ तो नहीं चल रही।'

मुझे तो अपने अच्छे भाग्य पर विश्वास नहीं हो रहा था। मैंने संजय को तुरंत उस आदमी को लेकर आने को कहा। एक घंटे बाद, वह लौट तो आया, लेकिन उसका ख़बरी उसके साथ नहीं था।

'सर, मैं श्याम को नहीं ढूँढ़ पाया। मैं कल सुबह फिर कोशिश करूँगा।' निराश होकर संजय ने कहा। फिर उसने सलाम ठोंका और चला गया।

मैं कुछ और मिनट सोच-विचार में लगा रहा। मैं उस समय अपहरण वाले मामले में और कुछ नहीं कर सकता था। मैंने दफ्तर का कुछ और काम खत्म करके सोने की सोची। दिन काफ़ी थका देने वाला रहा था। मैं लेट गया लेकिन वह घटना मेरे मन में घूमती रही। एक आवाज़ कहती रही, 'एक बच्चे का अपहरण हो गया है और तुम सोने जा रहे हो?'

मैं ख़ुद को बार-बार दिलासा देता रहा कि मुझसे जो हो सकता था, मैंने कर दिया था और कल, मैं कुछ और करने की कोशिश करूँगा। लेकिन मैं इस बात को भुलाकर सो नहीं पा रहा था। मैं जानता था कि उस बच्चे की सुरक्षा के लिए हर एक घंटा निर्णायक था।

मैं थोड़ा चिढ़कर बिस्तर से उठ गया, लेकिन मैं समझ गया था कि मुझे क्या करना चाहिए। मैंने एसआई संजय को फोन किया।

'संजय, श्याम को उठाकर के लाओ। उसके सारे अड्डों पर छापा मारना।'

मुझे श्याम से ही उम्मीद थी। अगर अपहर्ताओं ने उससे सम्पर्क किया था तो इसकी कोई ठोस वजह रही होगी। संजय समझ गया था कि मुझे हर हाल में श्याम चाहिए था।

मैं अपने घर में बने दफ्तर में बेचैनी से इंतज़ार करता रहा। कुछ देर बाद, मुझे बाहर जीप के रुकने की आवाज़ सुनाई दी। संजय विजयोल्लास से भरा अंदर आया। इस बार, उसका भाग्य अच्छा रहा था।

मेरी मेज़ की ओर धकेला। साफ दिखा कि वह नशे में था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

श्याम नशेड़ी था, एक ठेठ किस्म का पुलिस 'जासूस', जिसका काम अक्सर किसी छोटी सी रक़म या मदद के बदले पुलिस को सभी ग़ैर-क़ानूनी गतिविधियों के बारे में बताना होता था। आम तौर पर, ऐसे जासूस भी मामूली से अपराध किए होते हैं, जिन्हें पुलिस उनसे मिल रही महत्वपूर्ण जानकारी के कारण अनदेखा कर देती है।

'यह किसका नम्बर है?' मैंने चिन्हित नम्बर की ओर इशारा करते हुए श्याम से पूछा।

'सर, मैं नहीं जानता—आप क्या कह रहे हैं?'

संजय ने उसे धक्का दिया और श्याम ज़मीन पर गिर पड़ा। इस एक ही धक्के से शराब का नशा अब काफ़ी कम हो गया था।

'तुमने पिछले दस घंटों में इस नम्बर पर चार बार बात की है। तुम्हारे मोबाइल के कॉल लॉग से साफ दिख रहा है। हमारे साथ ये नाटक मत करो। बाप हैं हम तुम्हारे,' संजय ने श्याम के मोबाइल की स्क्रीन की ओर इशारा करते हुए कहा।

श्याम समझ गया कि उसका झूठ पकड़ा गया था, उसने हमें बताया कि सुखु साओ ने उसे फोन किया था। सुखु पटना का ख़तरनाक अपहर्ता था जो फिरौती मिलने के बाद शिकार को मार देने के लिए बदनाम था।

सुखु ने श्याम को एक मारुति वैन का इंतज़ाम करने के लिए कहा था। मारुति वैन अक्सर अपहरण के लिए इस्तेमाल की जाती थी। दरवाज़े स्लाइड होकर बंद होने के कारण अपहर्ता अपने लाचार शिकार को आसानी से उसके अंदर धकेल सकते हैं। मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि मारुति कंपनी वाले ऐसी पहचान नहीं बनाना चाहते थे। श्याम इस बात से बेखबर था कि सुखु ने एक बच्चे का अपहरण किया था और वह वैन उस बच्चे को किसी अड्डे पर ले जाने के काम में ली जा रही थी।

'तुम्हें गाड़ी कहाँ पहुँचानी है? सुखु अपने आप आएगा या तुम उसे कॉल करोगे? क्या तुम उसे जानते हो? कैसे दिखता है वो?' मैंने श्याम पर सवालों की बौछार कर दी।

'साहब, मैं सुखु से पटना की बेऊर जेल में दो साल पहले मिला था, जब हम दोनों वहाँ पर बंदी थे। उसके बाद मैंने उससे सिर्फ फोन पर ही बात की है, एकाध बार, पर मैं अभी भी पहचान सकता हूँ। वह काफ़ी लंबा और हट्टा-कट्टा है, एकदम गंजा। उसने मुझे कल सुबह 8 बजे बस स्टैंड के पास बूथ पर बुलाया है।'

मैंने ऑफिस की घड़ी को देखा। रात के 1:40 बज रहे थे। संजय और मैं अगले दिन मिलने के लिये तय स्थान पर जा पहुँचे और उसका मुआयना करने लगे।

'संजय, तुम अपने आदमियों को इस पूरे इलाके में जगह-जगह फैला देना। सुबह 7 बजे तैनात हो जाना। श्याम, जैसे ही तुम यह पक्का कर लो कि वह सुखु साओ ही है, तुम

सुखु को पकड़ने का इशारा होगा। सुबह-सुबह यहाँ ज़्यादा भीड़ नहीं होने वाली, तो तुम्हें उसे गिरफ्तार करने में कठिनाई नहीं होगी।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

संजय को सारे निर्देश देकर मैं बेचैनी से भोर होने का इंतज़ार करने लगा। अब सो पाना नामुमकिन था। मैं अपने ड्रॉइंग रूम में आराम कुर्सी पर बैठ गया। मैं अंदर अपने बेडरूम में नहीं गया, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि तानू और आदित्य की नींद खराब हो।

सुबह 6:30 बजे संजय का कॉल आया तो वो फोन पर ही दीवानों सा चिल्लाने लगा था।

'सर, पकड़ लिया।'

हुआ यह कि सुखु ने श्याम को सुबह ही कॉल करके तय किए गए समय से दो घंटे पहले, 6 बजे मिलने को कहा। चिंतित श्याम ने तुरंत संजय को निर्देश पाने के लिए फोन किया। हमेशा सजग रहने वाले अफसर, संजय ने उसी पल तय किया कि श्याम को सुखु से उसी समय मिलना चाहिए जिस समय वह कहे, नहीं तो उसको संदेह हो जाएगा। संजय तुरंत दो नए भर्ती किए पुलिस कांस्टेबल को साथ लेकर बस स्टैंड की ओर निकल पड़ा। उसने उनको रास्ते में सब समझाया और वो दोनों घबराए हुए, सहमति में सिर हिलाते रहे। संजय के पास ज़्यादा समय नहीं था। उसने मुझे कॉल करने के भरसक प्रयास किए पर बदकिस्मती से कॉल नहीं लगी। ऐसे एकदम भरोसे लायक न होने के लिये मोबाइल नेटवर्क को उसने बहुत गालियाँ दी। फिर उसने भगवान का नाम लिया और दोनों कांस्टेबल को अपनी-अपनी जगह लेने के लिए कहा और यह उम्मीद करने लगा कि सब कुछ तयशुदा योजना के अनुसार ही होगा।

संजय साँसें थामकर एक कोने में इंतज़ार करता रहा, उससे यह समय काटे नहीं कट रहा था। बेचैन श्याम बूथ के पास ही एक गली में टहल रहा था, उसका भी दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। अचानक, एक महाकाय छह फुट से भी लम्बा आदमी प्रकट हुआ। बेशक, वह सुखु था। श्याम उसको पहचानते ही जैसे जम गया। श्याम के चेहरे के भाव को बदलता देखकर सुखु को तुरंत संदेह हुआ और वह तुरंत पलटकर गली की ओर बढ़ने लगा।

'सर पकड़ो!' श्याम पूरी ताकत लगाकर चिल्लाया। संजय सुखु के पीछे किसी धावक की तरह दौड़ा और दोनों कांस्टेबल की ओर हाथ हिलाते हुए चिल्लाया, 'अबे! तुम दोनों कर क्या रहे हो? बुड़बक, रोको उसे!'

संकट में ऐसा कई बार होता है कि मस्तिष्क शून्य हो जाता है और शरीर चलना बंद कर देता है। दोनों कांस्टेबल के साथ ऐसा ही हो गया था। संजय किसी भी हालत में सुखु को जाने नहीं दे सकता था। पूरा दम लगाकर वह सुखु पर लपका और अपनी कोहनी के एक वार से ही उसे गिरा दिया। सुखु संजय से कहीं ज़्यादा बलवान था। वह संजय की जांघ

और सुखु पर झपट पड़े। सुखु को क़ाबू में लाकर संजय ने मुझे कॉल किया। इस बार कॉल कनेक्ट हो गई।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मेरा उत्साह चरम पर था। मैं चप्पलों में ही घर से बाहर भागा और मैंने अपने ड्राइवर और बॉडी गार्ड को तुरंत चलने को कहा। क्योंकि सरकारी वाहन में बीकन (बत्ती) लगा होता है, जिससे अपराधी सतर्क हो जाते; मैंने जानबूझकर निजी गाड़ी से जाने का निर्णय किया।

सरमेरा पुलिस थाने के एसएचओ ने पिछली रात ही एक टोयटा क्वालिस जब्त की थी। वह नालंदा के एक अन्य अपहर्ता, छोटा संतोष की गाड़ी थी। उसे इस नाम से इसलिए जाना जाता था क्योंकि उसका कद छोटा था, पर वह पटना और नालंदा पुलिस के लिए बड़ा सिरदर्द था। संतोष के घर से थानाधिकारी ने एक घोड़ा भी जब्त किया था। ज़ाहिर है, मैंने उसी क्वालिस को अपना वाहन चुना।

मैं तुरंत ही बस अड्डे पहुँच गया था। वहाँ मैंने पसीने और मिट्टी में लथपथ संजय को ज़ोर-ज़ोर से हाँफते हुए देखा। हमने सुखु को कार की पीछे वाली सीट पर बिठाया, और उसे घेर कर मेरा अंगरक्षक, अजीत, श्याम और संजय बैठे थे। मेरे ड्राइवर, छोटू सिंह ने गाड़ी को भरसक तेज़ दौड़ाया। अब बिल्कुल भी समय नहीं गँवाना चाहते थे। मुझे आयुष्मान की सुरक्षा की चिंता हो रही थी। कहीं सुखु साओ के साथ कोई और तो नहीं था? अगर अपहर्ताओं को पता लग गया कि हमने सुखु को पकड़ लिया है, तो क्या होगा?

'कहाँ रखा है तूने बच्चे को?' मैंने सुखु को कसकर झापड़ लगाया। मेरे हाथ में चोट आई मगर मैंने जताया नहीं।

हम चलती गाड़ी में ही उससे पूछताछ करते रहे, पर सुखु ने अपना मुँह नहीं खोला। हम कीमती समय गँवा रहे थे। 'सर, मेरे हिसाब से इसने लड़के को सरोंजा गाँव में रखा है। कल मुझसे बात करते समय इसने सरोंजा का नाम लिया था। मैं आपको वहाँ ले चलता हूँ।' श्याम को बीच में बोलना ही पड़ा।

'चलो, कोशिश करते हैं,' मैंने हताश होते हुए कहा।

मैंने उस क्षेत्र के डीएसपी आदिल ज़फ़र को हमसे सरोंजा में मिलने को कहा। मैंने वहाँ के आईजी सी.ए. शंकर को भी फोन किया।

'सर, मैंने अपहर्ता को पकड़ लिया है। मैं आयुष्मान को लेने जा रहा हूँ।'

आईजी आख़िरकार अच्छी खबर सुनकर खुश हो गए। वे डीआईजी शिवेंद्र भगत के साथ नालंदा के लिए निकल पड़े। उन्होंने आयुष्मान के माता-पिता को भी उनके बेटे की आसन्न वापसी के बारे में सूचित किया। बदकिस्मती से यह खबर मीडिया तक पहुँच गई और जल्द ही मीडिया के, विशेषकर न्यूज़ चैनलों से, कई वाहन मेरे घर के बाहर इकट्ठे हो गए। इतनी सारी ओबी वैनों को मंडराते हुए देखकर तानू चौंक गई। ऐसा सर्कस जैसा

हम दो घंटे बाद सरोंजा गाँव आ पहुँचे। हमने घर-घर छान मारा, पर कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। अब हमारी आस टूट रही थी। बाहर का माहौल भी निराशाजनक हो रहा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘हरामी, तूने लड़के को कहाँ रखा है? भयानक मौत मरेगा तू,’ आदिल गरजा।

‘मार दो, साहब। मैं तो वैसे भी मर गया हूँ,’ बेपरवाह सुखु बड़बड़ाया। उसे पता था कि जब तक आयुष्मान नहीं मिलता, तब तक हम उसे कुछ नहीं करेंगे।

‘अबे, यहाँ क्यों लेकर आया?’ अजीत भड़का और उसने श्याम का कॉलर पकड़ लिया।

‘सर, ग़लती हो गई। मुझे लगा इसने कल सरोंजा का नाम लिया था। पर अब मुझे पक्का नहीं पता। शायद मैंने गलत सुना होगा। मुझे इतना ठर्रा पीना बंद कर देना चाहिए।’

‘मत पी इतना, बेवड़े! ये नशा ही एक दिन तुझे मरवाएगा,’ संजय ने उसे गुस्से से घूरते हुए कहा।

~

‘अमित, कोई खुशखबरी?’ शिवेंद्र सर ने मुझसे मोबाइल पर पूछा।

मैंने कुछ क्षण अपने आपको संभाला और फिर कहा, ‘सर यहाँ कोई नहीं है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूँ। पर मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं बिना आयुष्मान के नहीं लौटूँगा।’

‘ये हुई ना बात!’

चेन-स्मोकर सी.ए. शंकर सर घर में बने मेरे दफ्तर में तानू की मेज़बानी का पूरा आनंद उठाते हुए बैठे थे। जैसे ही वे अपनी अगली चाय का घूँट ले रहे थे, शिवेंद्र सर ने उन्हें ताज़ी खबर सुनाई। कप लगभग उनके हाथ से छूटते-छूटते बचा और थोड़ी-सी चाय उनकी पैंट पर छलक गई। अगर अब कुछ गड़बड़ हो गई तो क्या होगा? आयुष्मान का परिवार पहुँचने वाला था और सारे मीडियाकर्मी बाहर बाज़ की तरह लपकने को तैयार खड़े थे। फिर भी उनको कुछ आभास था कि आज हमारा दिन था, और अंत में सब कुछ भला ही होगा।

आदिल और संजय ने फिर सुखु से पूछताछ की, पर उसने आयुष्मान का कोई पता नहीं बताया। उसे पता था कि उसकी चुप्पी ही उसका रक्षा-कवच थी। यदि हमें आयुष्मान नहीं मिलता, तो हम उसके खिलाफ़ कड़ी क़ानूनी कार्रवाई भी नहीं कर सकते थे। उसको जल्द ही ज़मानत मिल जाती। मैं ऐसे ही शून्य में घूरता रहा, मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था।

तभी अचानक, अजीत ने मुझे अपना मोबाइल पकड़ाते हुए कहा, ‘सर, दीपनगर के एसएचओ विनोद बाबू, आपसे तुरंत बात करना चाहते हैं।’

‘सर, मुझे पता चला है कि आपने शातिर बदमाश सुखु साओ को पकड़ा है। अजीत ने

आप त्रिपोलिया गाँव पर छापा मारें, जो पहले से सुखु और उसके गिरोह का ठिकाना रहा

Downloaded from www.The-Gyan.in

है। मैंने सुखु को कुछ साल पहले उसी गाँव से गिरफ्तार किया था।' विनोद ने जल्दी से कहा।

सौभाग्य से, विनोद यादव ने मेरे घर किसी सरकारी काम से फोन किया था। जैसे ही तारिक़ ने उसे अपहरण वाले मामले में हुई बढ़त के बारे में बताया, उसने मुझे फोन किया। विनोद की अपराधियों के बारे में जानकारी और मेरे तथा विभाग के प्रति वफ़ादारी से मैं बहुत ख़ुश था। कई सारे पुलिसवाले इसी तरह के होते हैं। देशभर में पुलिस की सफलता का यह मूल कारण है। एक बार यूनिफ़ॉर्म पहन लेने के बाद हम टीम की तरह काम करते हैं।

कुछ ही देर पहले तक मैं निराश था। विनोद की कॉल ने हम सबमें नया जोश भर दिया और हमने तय किया कि उसकी बात मानेंगे। लगभग दो किलोमीटर दूर त्रिपोलिया की ओर हम चलने लगे। उसकी खराब सड़कों पर गाड़ियाँ नहीं जा सकती थीं। मेरे कूल्हे का जोड़ अचानक दुखने लगा। यह स्पष्ट रूप से 'एंकिलोज़िंग स्पोंडिलाइटिस' का अटैक था—एक तरह का गठिया रोग, जो मुझे ट्रेनिंग के दिनों से होता रहा था। मेरे पास उसे अनदेखा करके बढ़ते रहने के सिवा कोई चारा नहीं था। फिर भारी बारिश होने लगी। हमने अपनी पैंटों के पोंचे मोड़ लिए और हथियारों को ढक लिया। मैं पूरी आस्था से भगवान का नाम लेकर चमत्कार की उम्मीद करने लगा।

जैसे ही हम गाँव के पास पहुँचे, हमने एक छोटा सा एक-मंज़िला मकान देखा। छत पर एक आदमी खड़ा था, जिसके हाथ में निश्चय ही एक पिस्टल थी। मैंने अपने सभी आदमियों को अपनी जगह लेने के लिए इशारा किया, मगर इससे पहले कि हम हिलते, अजीत के कान के पास से एक बुलेट सनसनाती हुई गुज़री। वह बेशक चौंक गया था, पर क्योंकि बहादुर था, उसने तुरंत पलट वार कर गोली चलाई। सुरक्षा के लिए हमारे पास कोई आड़ नहीं थी। सहज ही, हम सभी तुरंत ज़मीन पर लेट गए और उस घर की ओर रेंगने लगे। मेरे कूल्हे और पीठ में असहनीय दर्द होने लगा था। किसी तरह अजीत और आदिल ने मुझे गोलियों की बौछार से बचा लिया। किस्मत से, वह बंदूक वाला आदमी हमारी तरह पेशेवर निशानेबाज़ नहीं था। जल्द ही, उसने अपनी पिस्टल की मैगज़ीन खाली कर दी। ऐसी स्थिति में अति उत्तेजना ठीक नहीं होती। आदिल के बॉडी गार्ड राजेश के लिए यह एक अच्छा अवसर था। उसने एक लंबी साँस ली, अपनी पिस्टल को स्थिर किया और अपराधी के सीने पर निशाना लगाया। बस एक ही गोली से उसका शरीर धराशाई हो गया। हम बिना समय गँवाए या अपनी जान की परवाह किए, घर में घुस गए। फिर हुई मारपीट के चक्कर में हम सुखु को तो भूल ही गए थे। सुबह से सब कुछ इतनी जल्दी-जल्दी हो रहा था कि

छीनने की कोशिश की। पर अजीत उसी के जितना लंबा और बलवान था। उसने सुखु के साथ थोड़ी खींच-तान तो की, पर अंततः कोई चारा नहीं बचा तो उस पर पॉइन्ट-ब्लैंक

Downloaded from www.The-Gyan.in

गोली चलानी ही पड़ी। सुखु तत्काल ही ढेर हो गया। 9 एमएम की वह गोली उसके फेफड़े के पार निकल गई थी। यदि उन दोनों अपराधियों ने पहले हम पर हमला नहीं किया होता, तो वे जीवित होते।

हमने पूरे घर को छान मारा। लेकिन इस बार मुझे पूरा यकीन था कि आयुष्मान घर में ही कहीं था। मैंने सारे कमरों में देखा और फिर अचानक मुझे एक कमरा दिखा, जो बाहर से बंद था। मैंने उस कमरे को खोला और वहीं उस अभागे बच्चे को बंधा हुआ, एक कोने में सिमटा हुआ पड़ा पाया। मेरे दिल को कैसी राहत मिली यह बताना आसान नहीं।

आदिल और संजय आयुष्मान की ओर उसे खोलने के लिए दौड़े। बच्चा उठा और अपने आसपास देखने लगा। वह अभी भी बहुत डरा हुआ था।

हम सब शांत खड़े रहे और उसके सामान्य होने का इंतज़ार करने लगे। कुछ देर बाद, मैंने लंबी साँस ली और कहा, 'आयुष्मान, मैं अमित लोढ़ा हूँ, नालंदा का एसपी। दोनों अपहर्ता मर चुके हैं। तुम अब सुरक्षित हो।'

'थैंक यू, अंकल'।

'अंकल, स्कोर क्या है?' उसने कुछ रुककर पूछा।

'क्या, क्या मतलब?' मैंने अविश्वास से पूछा।

'अंकल, भारत और श्रीलंका के मैच में!'

मैं बस मुस्कुराया। यह छोटा बच्चा, जो कल से नरक झेल रहा था, वह अब एशिया कप चैंपियनशिप के बारे में पूछ रहा था।

'पता नहीं बेटा, पर आप आज रात हाईलाइट्स देख लेना।'

जब तक हम उस घर से बाहर आए, आसमान साफ हो गया था। मैंने अपने हरेक साथी से हाथ मिलाया और उन्हें बधाई दी। सभी की आँखों में गर्व झलक रहा था।

'सर, खुशखबरी है! मुझे बच्चा मिल गया है। अपहरणकर्ताओं में से दो मारे गए,' मैंने आईजी शंकर सर को बताया।

'मुझे तुम पर गर्व है, बेटा। जल्दी घर आओ। तुम्हारी पत्नी हमसे भी ज़्यादा चिंतित है।'

मैं रात को अपने घर पहुँचा। प्रेस ने तुरंत हमें घेर लिया। मैं चुप रहा, मैं बहुत अभिभूत और थका हुआ था। सीए शंकर सर और शिवेंद्र सर ने मुझे गले लगाया। दोनों वरिष्ठ अधिकारियों से इस तरह गले मिलना मुझे बहुत अच्छा लगा। तानू बरामदे में खड़ी, गर्व से दमक रही थी। फिर मैंने आयुष्मान के माता-पिता, मधु और नीलेश को देखा। उनकी आँखों से खुशी के आँसू बह रहे थे।

मेरी टीम और मैं अभी भी पैंटें ऊँची करे, पसीने और मिट्टी में सने हुए खड़े थे। मेरी एक पैर की चप्पल का पट्टा भी टूट गया था। आयुष्मान की यूनिफ़ॉर्म भी बहुत मैली हो चुकी थी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

अंततः उन्होंने असाधारण रूप से शांत आयुष्मान से उसका हाल-चाल पूछा। यह काफ़ी असंवेदनशील तो था, मगर बच्चे ने बड़े ही अनोखे अंदाज़ में जवाब दिया।

'मुझे खुशी है कि मुझे भारत-पाकिस्तान के मैच के पहले छुड़ा लिया गया। और मैं लोढ़ा अंकल की तरह आईपीएस अफसर बनना चाहता हूँ।'

यह हेडलाइन बिहार के सभी अखबारों में अगले दिन छापी गई। मुझे लगा मैं अपनी सफलता के चरम पर था। तो स्वाभाविक था कि अब समय ढलान से उतरने का था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

3
शंटिंग

19 सितंबर 2005

'आप तैयार क्यों नहीं हो रहे हैं? लोग आपका इंतज़ार कर रहे होंगे,' तानू ने कहा।

'तानू, ऐसे समारोहों में कोई भी समय पर नहीं पहुँचता। मैं थोड़ी देर में जाऊँगा,' मैंने खीजते हुए कहा।

सुबह मुज़फ़्फ़रपुर का एक ख़तरनाक अपराधी, कृपाल सिंह, गोलीबारी में मारा जा चुका था। कई सारे जबरन वसूली और हत्याओं के मामलों के लिए वांटेड था, उसकी मौत शहर के व्यवसायियों और व्यापारियों के लिए काफ़ी राहत लेकर आई थी।

मेरी टीम को और मुझे चेम्बर ऑफ कॉमर्स ने डिनर पर आमंत्रित किया था। पर मैं ज़रा भी उत्साहित नहीं था। मेरी ढेरों कामयाबियों के कारण मुझे इन 'सम्मान समारोहों' की आदत-सी हो गई थी।

'और आप ठीक से कपड़े क्यों नहीं पहनते? पहले तो आप काफ़ी शिष्ट हुआ करते थे, कम से कम हमारी शादी से पहले तो आपने मुझे ऐसा ही बताया था। ख़ुद की इतनी तारीफ करते थे!'

'जब किसी को परवाह नहीं तो तैयार होकर जाने का क्या फायदा है? याद नहीं हज़ारीबाग़ में क्या हुआ था?'

'हाँ बिल्कुल। आपने ख़ुद को उल्लू बनाया था,' तानू हँसते हुए बोली।

उस घटना को याद करके मेरी भी हँसी छूट गई।

कुछ साल पहले, दिसम्बर 1999 में, हमारी नेशनल पुलिस अकादमी (एनपीए) की ट्रेनिंग के तुरंत बाद, हम पाँच बिहार काडर के पुलिस अफसरों ने हज़ारीबाग़ के पुलिस प्रशिक्षण कॉलेज (पीटीसी) में प्रोबेशनर्स के तौर पर प्रवेश किया था। हज़ारीबाग़ के पीटीसी और हैदराबाद के एनपीए में उतना ही फर्क था जितना एक कम बजट की फिल्म और

सरदार वल्लभ भाई पटेल नेशनल पुलिस अकादमी एक प्रमुख संस्थान है जहाँ आईपीएस अफसरों को अपने-अपने काडरों में जाने से पहले प्रशिक्षण दिया जाता है। इस

Downloaded from www.The-Gyan.in

विशाल परिसर में अत्याधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध थीं, जैसे प्रशिक्षण हेतु विश्वस्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर, शूटिंग रेंज, ओलंपिक जितना बड़ा स्विमिंग पूल, आधुनिक जिम्नेज़ियम और विशाल पुस्तकालय। हाँ, यह अलग बात थी कि हममें से शायद ही कोई कभी उस पुस्तकालय में गया होगा।

नियम से, दिन एक थकाऊ दुष्कर दौड़ से शुरू होता था, जिसके बाद हम पीटी और फिर परेड का अभ्यास किया करते थे। हममें से कुछ को सिर पर राइफल रखकर और भी चक्कर लगाने पड़ जाते थे—यह सही ढंग से शेव न करने या बाल न बनाने का दंड था। दंड से बचने के लिए कुछ लोग बालों को कटोरा-कट कटवा लेते थे। फिर फटाफट शानदार नाश्ता करके विभिन्न विषयों पर लेक्चर सुनने कक्षा की ओर बढ़ जाते थे, जिनमें फोरेंसिक साइंस, इंडियन पीनल कोड (आईपीसी), जाँच-पड़ताल (इन्वेस्टीगेशन) आदि विषय शामिल थे। शाम को हम युद्ध-कला, घुड़सवारी, तैराकी और टीम में खेले जाने वाले खेलों में भाग लिया करते थे। रात के भोजन के बाद, हम फिर अगले दिन के असाइनमेंट पूरा करने की जद्दोजहद में लग जाते थे।

हमारे वीकेंड क्रॉस-कंट्री दौड़ों, पर्वतारोहण, और दंगा-नियंत्रण ड्रिलों के लिए आरक्षित थे। अगर आपको लगता है कि हमारी दिनचर्या में बस इतनी ही गतिविधियाँ होती थीं, तो ठहरिए। 'पाठ्येतर' गतिविधियों में वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम और जंगल सर्वाइवल मॉड्यूल भी आते थे। आजकल इनके साथ-साथ राफ्टिंग और स्कूबा डाइविंग भी जोड़ दिए गए हैं।

मेरे जैसे लोग, जिनकी हाल ही में मँगनी हुई थी, उनको तो अपनी मँगेतर से फोन पर बात करने के लिए भी समय निकालना पड़ता था। उन दिनों टेलिफोन बूथ से लॉन्ग-डिस्टेन्स कॉल करनी पड़ती थी। हममें से अधिकतर लोग रात 11 बजे का इंतज़ार किया करते थे, जब कॉल दरें सबसे सस्ती होती थीं। मोबाइल कॉल की दरें उस समय बहुत ज़्यादा थीं, और व्हाट्सऐप-फेसबुक जैसे सोशल मीडिया नहीं थे। ये सब तो हमारी कल्पना से भी परे थे।

हममें से काफ़ी लोग क्लास में कुछ देर की नींद पूरी कर लेते थे। क्लासरूम में डाइरेक्टर के नियुक्त किए गए मार्शल हमें झपकी लग जाने पर जगाते और फिर हमारी शिकायत हमारे सीनियर्स से कर देते थे। जो ऐसा करते अक्सर पकड़े जाते थे, उन्हें श्रमदान या सज़ा के तौर पर कोई सेवा करनी पड़ती थी, जैसे कैम्पस में सफाई करना, पेड़ लगाना इत्यादि।

हम एनपीए में बिताए हर मिनट को कोसते रहते थे। लेकिन जब हमने ज़िलों में

अहमियत थी। वहाँ मैं एक ऑफिसर भी बन सका और एक जेंटलमैन भी।

पीटीसी हज़ारीबाग़ एनपीए से एकदम विपरीत था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

उसकी इमारत टूटी-फूटी थी, और कोई इन्फ्रास्ट्रक्चर नहीं था। कोई स्वीमिंग पूल नहीं था, केवल बारिश के गंदे पानी से भरे गड्ढे थे। घोड़ों की जगह हमें आवारा गाय-भैंस कैम्पस की हरियाली चरते हुए दिखती थीं।

एक 'अच्छी' बात सिर्फ यह थी कि यहाँ एनपीए जैसी सख़्ती नहीं थी। प्रशिक्षक स्वयं ठीक से प्रशिक्षित नहीं थे। न तो वहाँ सुबह 5:40 पर सीटी बजती थी, न ही क्रॉस-कंट्री दौड़ें आयोजित की जाती थीं, न हमारी यूनिफॉर्म चेक होती थी—कुछ भी नहीं होता था। हम पूरी तरह अपने ऊपर निर्भर थे। भाग्यवश, नए और बदलते बिहार में एक अत्याधुनिक पुलिस अकादमी राजगीर में बन चुकी है, वो भी विश्वस्तरीय।

उन दिनों हज़ारीबाग़ के कई लोग, विशेषकर युवा हमें अपना आदर्श मानते थे। उनके लिए हम बिहार पुलिस के भविष्य के 'सितारे' थे! कुछ लोगों ने एक शाम हमलोग को न्यौता दिया।

'सर, परंपरानुसार, एक स्थानीय क्लब में बिहार पुलिस में आपके स्वागत के लिए एक डिनर आयोजित किया जाने वाला है। यह आपके लिए अन्य लोगों से मिलने और बातचीत करने का अच्छा अवसर होगा।' पीटीसी के मोटे मेस कमांडर ने हमें सूचित किया।

'दोस्तो, हमें पहला प्रभाव ज़ोरदार छोड़ना है। याद रखना, लोग आईपीएस अधिकारियों के बातचीत के अंदाज़, पहनने-ओढ़ने, व्यवहार, हर चीज़ पर ध्यान देते हैं। हम सबको अपने जोधपुरी बंदगले पहनने चाहिए, और जेब में रंगीन रुमाल लगाने मत भूलना,' हमारे बैचमेट साहिल ने कहा।

'हमें एनपीए में भोज के दौरान सीखे सारे तौर-तरीकों का पालन करना होगा। छुरी-काँटों का इस्तेमाल क्रम से करना, और टोस्ट करना मत भूलना!' प्रवीण ने याद दिलाते हुए कहा।

हम सबने एक साथ सहमति में गर्दन हिलाई।

उस शाम, हम सब मेस के मंद रोशनी वाले गलियारे में एकत्रित हुए। सभी बने-ठने लग रहे थे। एक-दूसरे की भरपूर प्रशंसा करने के बाद, हम सब क्लब हॉल में पहुँचे।

लेकिन वहाँ तो बहुत ही उलट नज़ारा था—माहौल ज़रा भी औपचारिक नहीं था। हॉल में खचाखच लोग भरे पड़े थे। ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी मेले में आए हों। लोगों ने अपने मर्ज़ी से कुछ भी पहन रखा था। एक सज्जन ने तो लूँगी और कमीज़ पहन रखी थी। एक अन्य तो निकर और चप्पल पहनकर आए थे!

एक आदमी ने प्रवीण को कोहनी मारी।

'अरे थोड़ा मछली लेने दो।' उसने और लोगों को रास्ते से हटाते हुए कहा।

था और उसके ऊपर फिश और चिकन का शोरबा। ज़्यादातर लोगों की प्लेटों के किनारे पर

Downloaded from www.The-Gyan.in

चिकन की हड्डियों का छोटा पहाड़ लगा था। कई लोग तो अपनी प्लेटों में ही कुल्ला कर रहे थे और हाथ धो रहे थे। हम एकदम भौंचक्के रह गए।

रही-सही कसर एक अन्य सज्जन ने पूरी कर दी।

'अरे वेटर, ज़रा मीठा लेकर आना,' उस आदमी ने साहिल को आदेश देते हुए कहा। उस आदमी के पाजामे का नाड़ा घुटनों तक लटक रहा था और बनियान में दसियों छेद थे, जैसे किसी शूट-आउट में गोलियाँ लगीं हों।

साहिल ने चिढ़कर गुस्से में अपने जेब में से रुमाल बाहर खींचा और पैर पटकता हुआ हॉल से बाहर निकल गया।

हम सभी एक-दूसरे को शर्मिंदा होकर देख रहे थे।

'भाई लोगों, चुपचाप वापस चलते हैं, इससे पहले कि और लोग हमें वेटर समझने की गलती करें!' प्रवीण ने कहा।

वो आखिरी बार था जब मैंने उस तरह के कपड़े पहने, पर उस घटना को याद करके मैं और तानू कई बार बहुत हँसे हैं।

~

उस रात को मुज़फ़्फ़रपुर में हो रही सत्कार पार्टी भी हज़ारीबाग़ के डिनर जैसी ही थी। एक के बाद एक हर व्यक्ति ज़िले के प्रशासन में अपनी अहमियत दिखाने के लिए लंबे-लंबे भाषण दे रहा था। ज़िले के प्रत्येक कार्यक्रम में ऐसा ही होता है। अक्सर, मंच पर बैठे व्यक्तियों की संख्या श्रोताओं से अधिक होती है।

भाषण निरंतर चलते ही रहे। ऐसा लग रहा था मानो वक्ता एक-दूसरे से मुक़ाबला कर रहे हों कि कौन सबसे लम्बा और उबाऊ भाषण देता है। यदि ऐसा था तो विजेता चुनना सचमुच बहुत कठिन होता। एक मानक भाषण कुछ इस तरह शुरू होता— 'आदरणीय डीएम साहिब, आदरणीय एसपी साहिब, माननीय ज़िला न्यायाधीश महोदय, माननीय डीएसपी सदर, आदरणीय टाउन डीएसपी' इत्यादि। ज़िले के लगभग हरेक अधिकारी का नाम लिया जाता था। क्योंकि मुज़फ़्फ़रपुर में अफसरों की संख्या काफ़ी थी, आप मेरी परेशानी समझ सकते हैं। मुझे हरेक का नाम सुनना पड़ता था। 'जब से एसपी सर ज़िले में आए हैं, अपराध खत्म हो गया है। अपराधी इनका नाम सुनकर थर-थर काँपते हैं!'

ऐसी चापलूसी पर मैंने कोई भी प्रतिक्रिया देनी बंद कर दी थी; मैं इसका आदी हो गया था। मेरी भावनाएँ वैसी ही थीं जैसी एक सुपरस्टार की होती हैं, जब वह कई 'ब्लॉकबस्टर' बना चुका हो। लेकिन मुझे यह नहीं मालूम था कि यह भावना जल्द ही ख़त्म हो जाएगी,

के बाद एक फ़्लॉप होने लगती हैं।

Downloaded from www.The-Gyan.in

एक और वक्ता मेरी प्रशंसा कर रहा था, जब मेरे बॉडी गार्ड अजीत धीरे से मंच के पीछे से आया और मेरे कान में फुसफुसाया, 'सर, आपका ट्रांसफर हो गया है। आपको बिहार मिलिट्री पुलिस के एक बटालियन का कमांडेंट नियुक्त किया है।'

मैं बिना कुछ बोले पार्टी से निकल आया। मुझे 'शंट आउट' कर दिया गया था। बिहार के प्रशासन के बोलचाल में 'शंट' किए जाने का मतलब होता है - किसी का ज़िले में नियुक्त न किया जाना या उसे कोई महत्वहीन प्रभार दे दिया जाना।

ख़ासतौर पर एसपी या डीएम जैसे सरकारी अफसरों के साथ ऐसा कई बार होता है। जैसे ही वे सोचने लगते हैं कि स्थिति उनके काबू में है, उनका अचानक ट्रांसफर कर दिया जाता है। अक्सर, उन्हें ट्रांसफर की वजह तक नहीं पता होती। उनमें से अधिकतर लोग यह नहीं समझ पाते कि वे केवल सिपाही हैं—प्रतिष्ठान के शतरंज के महज़ प्यादे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

4
गर्त का सफ़र

जनवरी 2006

मैं अपना जीवन तेज़ गति में जीता आया था।

मैं काफ़ी कम उम्र में आईपीएस में भर्ती हो गया था। बिहार काडर दिया जाना मेरे लिए एक आशीर्वाद साबित हुआ, क्योंकि एक युवा एसपी के लिए यहाँ बहुत कुछ करने को था। हर छोटी से छोटी 'सफलता' पर आमजन मेरी सराहना करते थे। बिहार के लोग सरकारी अफसरों, ख़ासकर पुलिस अधिकारियों का बहुत सम्मान करते हैं और उनकी तारीफ़ों के पुल बांध देते हैं। क्योंकि मैं आईआईटी ग्रेजुएट था, इसलिए लोग मुझे और भी पसंद करते थे, ख़ासतौर से युवा पीढ़ी। मैं सभी अख़बारों और टीवी चैनलों पर नियमित रूप से दिखाई देता था। मैं हमेशा काम में व्यस्त रहता था—कभी प्रधानमंत्री के दौरे के लिए सुरक्षा व्यवस्था में, तो कभी संसदीय चुनाव के आयोजन में। जब मैं क्षेत्र का दौरा करने जाता था, तो लोग मुझे काम करते हुए देखने के लिए मेरे इर्द-गिर्द इकट्ठे हो जाते थे। सफलता, प्रसिद्धि और शक्ति की उस नशीली कॉकटेल ने मुझे कुछ अधिक आत्मविश्वासी बना दिया था। मुझे अजेय-सा महसूस होने लगा था। मुश्किल यह थी कि मैंने अपनी नौकरी में बहुत शीघ्र इतनी सफलता देख ली थी, और मुझे यह भ्रम हो गया था कि मेरा जीवन एक निर्विघ्न यात्रा के समान होने वाला था।

मेरा पतन भी उतना ही पीड़ादायक साबित हुआ। अचानक बीएमपी में पोस्टिंग हो जाना एक बड़ा झटका था। मुझे ऐसा लगा जैसे कि मुझे टेनिस चैंपियन, रॉजर फेडरर की तरह, ग्रैंड स्लैम के पहले ही राउंड में नॉक आऊट कर दिया गया हो।

'सर, मैं आपका रीडर हूँ, सुरेन्द्र,' मेरे मोबाइल फोन पर एक मधुर-सी आवाज़ में किसी ने कहा।

'सुरेन्द्र, मुझे कहाँ रिपोर्ट करना है? ऑफिस कहाँ है?' मैंने पूछा।

'हुज़ूर, आफिस कहाँ होगा?' उसने जवाब दिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘हुज़ूर, इस बटालियन के स्टाफ़ में अभी तक तो दो ही लोग हैं—आप और मैं।’ सुरेन्द्र ने भावहीन उत्तर दिया।

मैंने और सवाल नहीं किए। मेरी पत्नी तानू, मेरी सर्विस से जुड़ी किसी भी समस्या के बारे में चिंता नहीं करती थी। वह घर के काम-काज में खुशी-खुशी व्यस्त रहती थी। वह अपने बच्चों को एक साधारण माहौल में बड़ा करना चाहती थी। वह मेरी ताकत थी और हमेशा मेरे साथ खड़ी रही थी। उसने मुझे खुश करने की पूरी कोशिश की, परंतु मेरी हताशा की कोई सीमा नहीं थी।

मेरी अधीनस्थ बटालियन तब तक स्वीकृत भी नहीं की गई थी और उसका अस्तित्व केवल काग़ज़ तक ही सीमित था। मुझे ऐसे पद पर निर्वासित कर दिया गया था जिसमें मेरे पास न ऑफिस, न फोन, न घर और न ही वेतन था। रातों-रात मेरे प्रशंसक और शुभचिंतक गायब हो गए थे। मीडिया का अब मुझसे कोई रिश्ता नहीं था; उनके लिए मैं कोई चर्चित व्यक्ति नहीं रह गया था। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सब मेरे साथ हो रहा है।

मैं अब एकदम अकेला था। किस्मत से, मेरे सबसे भरोसेमंद और वफ़ादार बॉडी गार्ड अजीत ने मेरा साथ नहीं छोड़ा।

‘सब ठीक हो जाएगा, सर,’ वह लगातार मेरी हिम्मत बढ़ाता रहता था। मैं भगवान का शुक्रिया करता रहता था कि मुझे इतने भरोसेमंद आदमी का साथ मिला था। उसने तब तक दो बार मेरी जान बचाई थी, एक बार एक बेकाबू भीड़ में और दूसरी बार, एक नक्सली एनकाउंटर में। वह मेरे परिवार का भी ध्यान रखता था और मेरे बच्चों के प्रति घोर सुरक्षात्मक था।

एक सितारे से एक अवांछित बन जाने तक का मेरा सफर बहुत ही दर्दनाक रहा था। एक ओर, मेरे अहम् को ठेस पहुँची थी और दूसरी ओर, मेरे आईआईटी के सहपाठी अपनी उपलब्धियों से आसमान छू रहे थे। समीर गहलोत ने इंडियाबुल्स की स्थापना कर दी थी जो आज करोड़ों का कारोबार कर रहा है और चेतन भगत के *फाइव पॉइंट समवन* ने देश में तहलका मचा दिया था।

मेरी पोस्टिंग की खबर मिलने के कुछ दिन बाद, मेरे आईआईटी के एक और मित्र, सपरा, ने अमेरिका से मुझे फोन किया।

‘अमित, तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे वॉर्टन यूनिवर्सिटी में एमबीए में दाखिला मिल गया है। सब तुम्हारी सिफारिश की वजह से ही हो पाया है।’

ये विडम्बना असहनीय थी—मेरी सिफारिश से लोग दुनिया के जानेमाने विश्वविद्यालयों में दाखिला पा रहे थे और यहाँ मुझे मेरा 18,000 रूपयों का वेतन भी नहीं मिल रहा था।

मैं शेयर बाज़ार में निवेश—या कहो, तुक्के—लगाने लगा। मैंने न केवल अपना पैसा गँवा दिया बल्कि जो थोड़ी-बहुत मन की शांति बची थी, वह भी खो दी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

'अमित तेरा सही कटा है! तू तो सैक्स और सेंसेक्स दोनों में ही फेल हो गया! हा, हा, हा!' मेरी दुर्गति की कहानी सुनकर तरुण ने मेरी हँसी उड़ाते
हुए कहा।

जब मेरे घनिष्ट मित्र, समीर गहलोत, ने मेरे बुरे दौर के बारे में सुना तो उसने मुझे तुरंत फोन किया। 'अमित, लोग आजकल पाँच अंकों में कमा रहे हैं और तेरी सरकारी नौकरी तुझे बीस हज़ार रुपए से भी कम दे रही है। अब मैं सुन रहा हूँ कि तू ने शेयर बाज़ार में भी नुकसान झेला। क्या फायदा ऐसे? चाहे तो, तू प्राइवेट सेक्टर में आ जा। मेरी कोई मदद चाहिए हो, तो बताना।' समीर केवल अपनी मेहनत के बूते पर बेहद सफल रहा था। उसे सहज ज्ञान और बेहद साहसी निर्णय करने के कारण ही सफलता मिल पाई थी। बाज़ार के उदारीकरण के बाद, 90 के दशक में बड़े हुए अधिकतर लोगों की तरह, उसे भी सरकारी नौकरी करने का मेरा निर्णय काफ़ी अटपटा लगता था।

मैंने कल्पना की कि वह किसी ऊँची इमारत में अपने शानदार दफ्तर के एक आलीशान केबिन में बैठा था, जहाँ कोई उसकी सेवा में गरमा-गरम सिंगल-एस्टेट कॉफी का कप पेश कर रहा हो, जबकि मैं यहाँ अपने एकल स्टाफ सुरेन्द्र के साथ बिहार में बैठा हूँ और जिसके कानों से निकलते हुए बालों को देखकर मुझे मन कर रहा था कि उन्हें ज़ोर से खींच निकालूँ।

मैं जानता था कि समीर मेरा सच्चा शुभचिंतक है। मैंने फोन काटकर गहन चिंतन किया। उस समय मेरे साथ जो कुछ बुरा हो सकता था, हो रहा था। मैंने आईपीएस छोड़कर प्राइवेट सेक्टर में जाने पर गंभीरता से विचार किया। भगवान का शुक्र है कि मैं इसका साहस नहीं जुटा पाया।

~

सरकारी आवास नहीं मिला तो मैंने पटना में एक छोटे से गेस्ट हाउस में दो कमरे ले लिए। पटना अधिकांश महानगरों की तरह था। उसका मूलभूत इन्फ्रास्ट्रक्चर उसकी तेज़ी से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण ढह रहा था। गेस्ट हाउस पटना के बीचोंबीच, डाक बंगला चौराहे पर स्थित था। उस 'पॉश' कहलाए जाने वाले क्षेत्र में मेरी इमारत के ठीक सामने एक विशाल कूड़े का ढेर था। वह हर तबके के व्यक्ति के लिए शौच का एक स्थान था। आवारा कुत्ते और गायें खुले में कई दिन के पड़े हुए कचरे को चबाते थे। वहाँ फैली बदबू और घिनौने दृश्यों को देख-देखकर मैं चिड़चिड़ा हो गया था। ऐसे व्यक्ति के लिए जो तब तक केवल राजसी बंगलों में ही रहा था, स्थिति जितनी पीड़ादायक हो सकती थी, उतनी

उस निराशाजनक वातावरण और मेरी गुप्त बेरोज़गारी ने मेरी यातना और बढ़ा दी थी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

तानू ने तभी हमारी बेटी ऐश्वर्या को जन्म दिया था। मेरी कुंठा ने मुझे एक बहुत अधीर और ग़ैर-ज़िम्मेदार पिता बना दिया था। मैं एक भी बार अपनी नवजात बेटी को चुप कराने के लिए नहीं जगा और न ही मैंने कभी अपने चार-वर्षीय बेटे को एबीसी सिखाने का प्रयास किया। ऐश्वर्या का रोना और आदित्य के बिल्कुल सामान्य से नख़रे भी मुझे बहुत खिजा दिया करते थे।

मैं तो बस अपने पसंदीदा गायक, मशहूर किशोर कुमार, के गाये दुखी और उदास गाने सुनता रहता था। मैंने अजीत से सड़क के दूसरी ओर स्थित म्यूज़िक की एक दुकान से एक ख़ास एलबम लाने को कहा। उस दुकानदार ने तो सहानुभूति दिखाकर मुझे कुछ डिस्काउंट भी दिया!

मुझे ऐसा लगता था जैसे कि मैं धरती का सबसे अधिक परेशान इंसान हूँ, और सब कुछ बिलकुल अस्त-व्यस्त हो गया है। 'केवल एक पोस्टिंग के कारण आप इतने उदास कैसे हो सकते हैं? ये तो छोटी-मोटी दिक्क़ते हैं जो किसी के भी करियर में आ सकती हैं,' तानू ने मुझे डाँटते हुए कहा। मुझे पता था कि तानू सही कह रही है। पर फिर भी मैं अपने भाग्य के इस तरह पलट जाने को स्वीकार नहीं कर पा रहा था।

पटना में मेरे शायद ही कोई दोस्त थे। मेरे आसपास केवल पुलिसवाले ही थे। मैंने अपने सहकर्मियों से मिलने के लिए घर से निकलने की सोची। मैं पुलिस मुख्यालय में बिना किसी उद्देश्य के फिरता रहा और उस समय जो भी अधिकारी खाली होता, उसके कमरे में चला जाता। हाँ, अब तो हमारा पुलिस मुख्यालय बहुत आलीशान और अत्याधुनिक बन गया है। समय कितना बदल गया है!

मैं उन अधिकारियों के पास ज़्यादा जाता था जो स्वयं भी ऐसे ही किसी महत्वहीन विभाग में पदासीन थे। इससे मुझे इस बात की सांत्वना मिलती थी कि केवल मैं ही नहीं था जिसके साथ अन्याय हुआ।

कुछ 'शंटेड' अधिकारी काफ़ी रूखे मिज़ाज के थे। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों को यह समस्या होती थी कि किसी ज़िले के एसपी जैसे शक्तिशाली और प्रभावशाली पद पर काम करने के बाद, दफ्तर में, विशेषकर किसी औपचारिक पद पर काम करना उनके लिए बहुत ही मुश्किल हो जाता है। वैसे ही जैसा किसी बढ़ती उम्र के सुपरस्टार को लगेगा अगर उसे बुढ़ापे में कोई कैरेक्टर ऐक्टर का पात्र निभाने को दे दिया जाए।

चाय के अंतहीन दौरों के बीच, मेज़ पर व्यस्त दिखने के लिए जानबूझकर अधूरी छोड़ी गई फ़ाइलों के ढेर लगाए, उन अफसरों के पसंदीदा टाइमपास में मुझे भी शामिल होना पड़ा था।

मुझे याद करते हैं। तुमने तो सुना होगा . . .' और न जाने क्या-क्या।

Downloaded from www.The-Gyan.in

हममें से कुछ लोगों को यह वहम रहता है कि उनसे बेहतर न तो कोई हुआ है, और न ही आगे कभी होगा।

अपने जैसे 'सताए हुए' अफसरों से ज्ञान प्राप्त करने के बाद, मैंने प्रभावशाली अफसरों के दरवाजे खटखटाने शुरू किए, ताकि कम से कम मेरा वेतन मुझे मिल सके।

शिवेंद्र भगत सर जैसे सज्जन ने तो अपना बटुआ तक निकालकर मुझे पैसे देने की बात कही, 'कुछ पैसे दूँ तुम्हें?'

उनकी उदारता से मैं चौंक गया और मैंने शिष्टतापूर्वक उनको मना कर दिया और उनसे न्यायोचित मेरा वेतन दिलाने का अनुरोध किया।

एक ऐसे ऑफ़िसर, जो सदा मेरे साथ खड़े रहकर मेरी मदद करने का भरसक प्रयास करते रहे, वे थे कुमार भगत। उन्होंने मेरी बेटी को संभालने में हाथ बंटाने के लिये किसी तरह एक सत्तर-वर्षीय नौकरानी, मंजु देवी, का प्रबंध भी किया। वो दिखने में और भी बुज़ुर्ग लगती थीं, जैसे उनकी उम्र अस्सी के आसपास हो, पर जैसे-तैसे एक झूठे प्रमाण-पत्र के बल पर वह कर्मचारी के रूप में काम कर सकी थीं। उस समय जाली प्रमाण-पत्र बनवाना आम बात थी। जब भी मैं किसी मुजरिम से उसकी उम्र पूछता, तो उसका जवाब होता, 'सर, सर्टिफिकेट या असली उम्र?'

मंजु देवी दो बसें बदलकर गेस्ट हाउस पहुँचती थीं और भीतर प्रवेश करते ही, सफर से थककर तुरंत सो जाती थीं। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता रहता था कि कहीं वो अपनी नींद में ही न गुज़र जाएँ। कम से कम हमारे गेस्ट हाउस में तो नहीं। मुझे पहले से मुसीबतों की कोई कमी नहीं थी।

~

'अब तो हम पटना में हैं, कम से कम अवि का दाखिला नोबल एकेडमी में ही करा दीजिये। वह नर्सरी के बच्चों के लिए बढ़िया स्कूल है। आपके सभी साथियों के बच्चे वहीं पढ़ते हैं,' तानू ने ज़िद की।

मैंने तीन बार उस स्कूल के चक्कर काटे, पर प्रिंसिपल ने मुझे मिलने के लिए समय तक नहीं दिया। मैं बहुत परेशान और गुस्सा हो रहा था। हारकर मैंने पाटलिपुत्र स्टेशन के एसएचओ ललित से अवि के दाखिले के लिए सहायता ली। नोबल एकेडमी उसके अधिकार क्षेत्र में आता था।

'सर, आप मुझे पहले ही कह देते। किसी भी स्कूल में दाखिला बहुत मुश्किल है, पर मैं आपके लिए प्रबंध करवा दूँगा,' ललित ने कहा।

इंचार्ज — या बिहारी बोलचाल में 'बड़ा बाबू' — की महत्ता का आभास हुआ। वह पुलिस

Downloaded from www.The-Gyan.in

पदक्रम का बहुत महत्वपूर्ण अंग होता है। मेरे ट्रेनर्स में से एक, गंगाधर पांडे के अनुसार एसएचओ 'अष्टभुजाधारी' होता है। वरिष्ठ अधिकारी उम्मीद करते हैं कि एसएचओ सभी असंभव लगने वाले काम आराम से कर सकते हैं।

दूसरी ओर, मैं अब एक आम आदमी बन गया था, जिसे बर्तन लेकर दूधवाले से दूध लेने की बेमन से प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। मेरी निराशा की कोई सीमा नहीं रह गई थी।

स्थिति को बदतर बनाने के लिए, मई 2006 में मुझे बेगूसराय का कार्यकारी एसपी भी बना दिया गया। मेरे बैचमेट राजेश के ससुर गंभीर रूप से बीमार हो गए थे, तो उसकी गैरहाज़िरी में मुझे उस चुनौतीपूर्ण ज़िले का कार्यभार सौंप दिया गया था। ऐसा लगता था जैसे मेरे कोई अधिकार तो न थे, मगर ज़िम्मेदारी पूरी थी।

मैं बड़ा चिड़चिड़ाया हुआ बेगूसराय पहुँचा। सर्किट हाउस बेहद मैला और घिनौना था। स्टाफ के नाम पर जो आदमी मिला वह लगातार अपने ख़ास अंग खुजलाता रहता और जो भी पर्दा उसके हाथ आ जाता, उसी से अपने पान से सने हाथ पोंछ देता था।

'साहब, लंच में क्या खाएँगे?' वह मुझे हर बार आलू-परवल और लौकी परोसने से पहले पूछता। मुझे तो संदेह है कि उसने शायद महीने भर की सप्लाई एक बार में तैयार करके रखी हुई थी। इतनी परवल और लौकी खाकर किसी का भी दिमाग खराब हो सकता है।

हर शाम को मैं फाइलें देने एसपी के आलीशान बंगले में बने उनके दफ्तर में जाता। उनका सुंदर बगीचा, गैरेज में खड़ी गाड़ियाँ, और गेट पर तैनात संतरी देखकर मैं उस दिन के लिए तरसता, जब मैं फिर किसी ज़िले का एसपी होता।

एक हफ्ते बाद, मैंने तानू को बच्चों के साथ बेगूसराय बुलाया, जिससे उन्हें भी राहत मिले। एकाएक, बेगूसराय के उस सर्किट हाउस में नई जान आ गई। मैं अभी भी सम्पन्न पिता तो नहीं बन पाया था, पर अब मुझे अपने बच्चों की चीखें और किलकारियाँ अच्छी लगने लगी थीं। शायद परिवार से दूर रहने पर ही मुझे उनकी अहमियत समझ आ सकी।

कुछ ही दिनों बाद, जब मैं तानू के साथ इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन (आईओसी) के परिसर में टहल रहा था, तो मैंने देखा कि अजीत हमारी ओर भागते हुए आ रहा था, यह कहता हुआ कि उसके पास मेरे लिए एक संदेश था। जैसे ही हम वापस मेरे घर में बने दफ्तर में पहुँचे, उसने बताया, 'सर, नालंदा और शेखपुरा के सीमावर्ती क्षेत्र में सामन्त प्रताप ने सोलह लोगों को मार दिया है!'

Downloaded from www.The-Gyan.in

5
नरसंहार

21 मई 2006

राम दुलार ने तभी कछुआ छाप मच्छर कॉइल जलाई थी, इस उम्मीद से कि जो सैकड़ों मच्छर उसके आसपास भिनभिना रहे थे, वो उसे रात में सोने देंगे। उसका दिन बहुत लंबा और थकाऊ रहा था, जैसा कि बिहार के किसी भी किसान के साथ होता था। उसका सारा परिवार खुले में सो रहा था क्योंकि अंदर बहुत उमस थी। घर में दो दिन से बिजली नहीं थी। फिर भी वह बहुत सुखी था—उसके सारे निकटतम रिश्तेदार उसके गृह-प्रवेश के मौके पर इकट्ठे हुए थे। समारोह अगली ही सुबह होने वाला था। उसने अपने नए घर की ओर गर्व से देखा। उसे बनाने के लिए उसने बहुत मेहनत की थी। वो आँगन में टहलता हुआ अपनी मेहनत के फल को निहार रहा था। यकायक, रुक गया।

दहशत में उसने कम से कम दस आदमियों को हथियार लिए उसकी ओर घूरते पाया।

'बॉस, यही है। ये सुअर पुलिस को हमारे गैंग के सारे कामकाज की मुखबरी करता रहता है।' एक आवाज़ गरजी।

'और उस दिन इसने लखा सम्राट को पिटवाया। और क्यों? सिर्फ इसलिए कि लखा ने इसकी बहन रेखा का दुपट्टा छीन लिया था।'

'इसकी मुखबरी की वजह से हमारे पाँच भाइयों को भी कमीने राजू और कृष्णा ने मार दिया।' बिरजू चिल्लाया।

एक दुबला-पतला आदमी आगे आया, उसका चेहरा गमछे से ढका था। राम दुलार उस आदमी की आकृति को देखकर डर से वहीं जमा रह गया था। वह सामन्त प्रताप था। उन क्रूर आँखों को कौन नहीं पहचानता था?

'साहिब, मैंने क्या किया? अगर हुज़ूर बुलाते तो मैं तो खुद ही आ जाता,' राम दुलार ने कहा।

बचाते हैं या नहीं!' सामन्त प्रताप गुर्राया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘साहब, कोई गलती हुई है। मैं किसी पुलिसवाले को नहीं जानता, मैं तो बस एक गरीब किसान हूँ,’ राम दुलार हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाया।

सामन्त प्रताप ने राम दुलार को उसकी बाँह से घसीटा और अपने आदमियों को इशारा किया कि वे बाकी परिवारजनों को लेकर आएँ।

‘जाओ, इसके सारे परिवार को लेकर आओ,’ रौशन चिल्लाया।

एक-एक करके परिवार के सारे सदस्यों को बेरहमी से नींद से जगाया गया।

सब ओर मरणासन्न चुप्पी थी, बस झींगुर की आवाज़ें सुनाई पड़ रही थीं। उन आठों लोगों को आँगन में कतार में खड़ा किया गया—वे सब दहशत और नींद में बेहोश से कुछ भी नहीं कह पा रहे थे। उन्हें तब तक यह समझ नहीं आया था कि उनके साथ क्या होने जा रहा था। वह दृश्य बिलकुल यादगार फ़िल्म ‘शोले’ जैसा था।

‘देख ले इन सबको आखिरी बार,’ सामन्त प्रताप ने राम दुलार का गला पकड़कर कहा।

फिर गैंग के लीडर ने उनकी तरफ देखकर एक काल्पनिक बंदूक से गोली दागी।

फिर तो हंगामा मच गया। हॉर्लिक्स ने, जो तब तक सामन्त प्रताप का भरोसेमंद लेफ्टिनेंट बन गया था और एक सटीक निशानेबाज़ भी, अपनी एके-47 से राम दुलार के परिजनों पर गोलियाँ बरसा दीं। वे खिलौनों की तरह बेजान होकर गिरने लगे।

राम दुलार भौंचक्का रह गया। वो सामन्त प्रताप की पकड़ से निकलने की भरपूर कोशिश करते हुए बेतहाशा चीखने लगा। सामन्त प्रताप ने सूखा सिंह को इशारा किया, जिसने सधे हाथ से राम दुलार का गला रेत दिया। जब अगले दिन पुलिस वहाँ पहुँची तो उसका सिर धड़ से दस फीट दूर बरामद किया गया।

अपने गैंग की करतूतों से ख़ुश, सामन्त प्रताप अपनी जीप में रौब जमाते हुए एक टाँग बाहर लटकाकर बैठ गया।

एक आदमी घबराता हुआ जीप की ओर भागकर आया।

‘हुज़ूर, हमसे गलती हो गई है! आप गलत राम दुलार के घर आ गए हैं। जिस गद्दार को हम ढूँढ़ रहे हैं, वो तो एक शादी में शेखपुरा के मन्निपुर गाँव गया है।’ पसीने से लथपथ उसके भेदिये, वकील यादव ने चिल्लाते हुए कहा।

‘बुड़बक!’ हताश हॉर्लिक्स चिल्लाया। रौशन ने उस भेदिये को ज़ोरदार थप्पड़ मारा।

‘छोड़ो उसे! कोई बात नहीं। शेखपुरा दूर नहीं है। हम भी चलकर शादी में शामिल होते हैं। आ जा, जीप में बैठ,’ सामन्त प्रताप ने कहा। यह तो उसके लिये रोज़ की बात थी। लोगों को मारने से उसे सुख मिलता था—उसकी वहशी वृत्ति को संतुष्टि मिलती थी।

की। कोई भी सामन्त प्रताप का अगला निशाना नहीं बनना चाहता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

~

जीप विवाह स्थल के हॉल के बाहर रुकी। लोग शराब के नशे में खुशी मनाने में इतने लीन थे कि किसी ने भी बंदूक ताने उन आदमियों को पंडाल में घुसते हुए नहीं देखा। हवा में फायर करके अपनी मर्दानगी दिखाना तो रिवाज़ था। अगर एक-दो नर्तकियाँ मारी भी गईं, तो क्या?

मेहमानों की उदासीनता यकायक डर में बदल गई, जब उन्हें थोड़ी देर बाद यह समझ आया कि सामन्त प्रताप वहाँ घुस आया था।

विवाह की रस्में रोक दी गईं। पंडित के माथे से पसीने की बूंदें टपकने लगीं। एक बाराती की प्लेट में से मुर्गे की टांग उठाकर सामन्त प्रताप मुस्कुराया।

'चिंता मत करो, मैं तो केवल राम दुलार को ढूँढ़ रहा हूँ। मुझे उससे कुछ काम है।' सामन्त प्रताप ने ऐलान किया।

राम दुलार पत्ते की तरह काँप रहा था और बेहद घबराया हुआ था। वह लुकाछिपी खेलते हुए बच्चे की तरह एक मेज के नीचे छिप गया, इस उम्मीद में कि कोई उसे वहाँ ढूँढ़ न पाएगा।

जब किसी ने उसे कोई जवाब नहीं दिया तो सामन्त प्रताप ने दूल्हे को कॉलर पकड़कर अपनी ओर खींचा और उसकी कनपटी पर उँगली इस तरह रखी जैसे कोई बंदूक रख दी हो।

'अगर मेरे पाँच गिनने तक राम दुलार को मेरे सामने नहीं लाया गया तो इसके सिर की धज्जियाँ उड़ा दूँगा! कोई भी, मेरा मतलब है कोई भी बाहर नहीं जाएगा। तुम सभी बाराती, हिलना मत!'

सारे बाराती डर के मारे अपनी जगह पर जम गए, किसी ने ज़रा भी हिलने की हिम्मत नहीं की। वे सब जानते थे कि सामन्त प्रताप को मारकाट से कितना लगाव था। एकदम हताश होकर, दूल्हे के पिता ने एक नन्हें से बच्चे को सामन्त प्रताप की ओर धकेल दिया।

'साहिब, यह राम दुलार का पोता है। मेरे बेटे को छोड़ दो। आज उसकी शादी है,' वह बड़ी उम्मीद के साथ गिड़गिड़ाया कि इस सौदे से उसके बेटे की जान बच जाएगी। सामन्त प्रताप ने बच्चे की ओर देखा, वह अपने साफ-सुथरे कुर्ते-पाजामे में किसी नन्हें से राजकुमार सा लग रहा था, जिसकी राक्षस के हाथों बलि चढ़ने वाली थी। सामन्त प्रताप ने लड़के के सिर पर हाथ फेरा और राम दुलार को चिल्लाकर पुकारा। उसकी बुलंद आवाज़ से राम दुलार दहशत से काँप उठा।

अपने बेटे को सामन्त प्रताप की गिरफ़्त में देखकर, बच्चे की गर्भवती माँ आगे आई

के पूरे परिवार ने सामन्त प्रताप को घेर लिया और उससे प्रार्थना करते रहे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘आपको जो चाहिए हम देंगे—हम अपना घर बेच देंगे, ज़मीन भी। आपके बर्तन धोएँगे, आपके चाकर बनकर रहेंगे। कृपा करके गोलू को जाने दीजिए। उसने आपका कुछ नहीं बिगाड़ा है। वो तो बस चार साल का एक बच्चा है,’ गोलू की माँ बिलखते हुए बोली।

राम दुलार को पता था कि सामन्त प्रताप उसे क्यों ढूँढ़ रहा है। वह सामन्त प्रताप की जानकारियाँ न केवल पुलिस को, बल्कि सामन्त प्रताप के जानी दुश्मनों, राजू और कृष्णा को भी देता रहा था। यहाँ तक कि जब सामन्त प्रताप के आदमी लखा ने उसकी बहन, रेखा, को छेड़ा था तो राजू और कृष्णा ने उसे बहुत पीटा था। यह ही नहीं, उन्होंने कुछ दिनों पहले ही सामन्त प्रताप के पाँच भरोसेमंद साथियों को नींद में मरवा दिया था।

राम दुलार के पास अब कोई चारा नहीं बचा था। उसको पता था कि उसका समय पूरा हो चुका था, फिर भी वह उम्मीद कर रहा था कि शायद सामन्त प्रताप उसके कुछ परिजनों को छोड़ दे। कम से कम उसके पोते को।

वो मेज के नीचे से बाहर निकला। ‘साहिब, मैंने आपका भरोसा तोड़ा है। मेरे साथ आप जो चाहें करें। मगर कृपा करके मेरे परिवार को छोड़ दे।’ उसने हाथ जोड़ते हुए कहा, उसके गाल आंसुओं से तर थे।

‘अबे गधा, तेरी वजह से हमने किसी दूसरे परिवार को मार डाला। उनकी तो कोई गलती भी नहीं थी। बेकार ही मर गए।’

इतना कहते ही सामन्त प्रताप ने उसे इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा कि उसके कान का पर्दा फट गया। अब तो वह खून का प्यासा हो गया था। घंटे भर में एक और परिवार के नरसंहार की तैयारी में सभी को एक कतार में खड़ा कर दिया गया। उसने राम दुलार के पूरे परिवार की ओर अपनी काल्पनिक बंदूक से इशारा किया। सामन्त प्रताप के इशारे पर उसके ख़ास निशानची हॉर्लिक्स ने अपनी एके-47 से तुरंत उन पर गोलियों की बौछार कर दी। जैसे ही वह गोलू पर गोली चलाने वाला था, सामन्त प्रताप ने उसे रोक दिया।

सभी लोग आश्चर्यचकित हो उठे। क्या भयानक कातिल, सामन्त प्रताप, उस मासूम बच्चे की जान बख्श देगा? क्या सामन्त प्रताप के पास सचमुच एक दिल था?

सारी उम्मीद उस क्षण गायब हो गई जब सामन्त प्रताप ने उस बच्चे को टखने से उठाकर हवा में लहराया। गोलू ज़ोर-ज़ोर से रो रहा था। सामन्त प्रताप ने अपना देसी कट्टा निकालकर भयभीत और रोते हुए उस मासूम के सिर पर ताना—और कुटिल मुस्कान से राम दुलार की ओर देखा। राम दुलार को लगा जैसे उसके दिल के हजारों टुकड़े हो गए हों। उसने एक शब्द मुँह से नहीं निकाला, पर उसकी आँखें विनती करती रहीं। एक खटका और एक धमाका हुआ और उसका चेहरा खून और आंसुओं से लथपथ हो गया। उसका मासूम

हॉर्लिक्स ने एक बार फिर बंदूक तानी और सारी गोलियाँ राम दुलार के शरीर में दाग दीं। लेकिन उसके प्राण तो पहले ही उसका शरीर छोड़ चुके थे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अरे पंडित! तुमने शादी क्यों रोक दी? चलो, अब तो उत्सव मनाने का समय है! सब लोग मौज करो! पीयो और मस्त रहो,’ सामन्त प्रताप चिकन का एक और टुकड़ा उठाते हुए गरजा।

अपने पीछे एक शादी और सात जनाज़े छोड़ते हुए, गैंग जीप में सवार हुआ और आँखों से ओझल हो गया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

6
‘कुर्सी सब सिखा देती है’

बेगूसराय, 22 मई 2006

मुझे एक राजनेता, लक्ष्मी चन्द्र का फोन आया : ‘बधाई हो, अमित जी! आपको शेखपुरा का एसपी नियुक्त किया गया है।’

मैं ऐसा महसूस कर रहा था जैसे कि सब बर्बाद हो गया हो। जो नालंदा और मुज़्ज़फ़रपुर जैसे बड़े और महत्वपूर्ण ज़िलों में एसपी रहा हो, उसके लिए शेखपुरा तो एक खाई समान था। यह फ्लॉरिडा के मायामी से सोमालिया के मोगाडिशू भेज देने जैसा था!

शेखपुरा बिहार का एक छोटा-सा ज़िला है। 2006 में पंचायती राज मंत्रालय ने इसे देश के सबसे गरीब ज़िलों की सूची में शामिल किया था।

कुछ साल पहले, मैं अपने बैचमेट और दोस्त, रामनाथन से मिलने शेखपुरा गया था, जो तब वहाँ एसपी था।

‘बॉस, हमें ब्रेड लेने भी तुम्हारे ज़िले नालंदा जाना पड़ता है। अखबार भी यहाँ दो दिन बाद जाकर पहुँचते हैं,’ रामनाथन ने बेलाग-लपेट कहा था।

नालंदा वापस लौटते समय मुझे रामनाथन के लिए बहुत बुरा लग रहा था। सड़क में बड़े-बड़े गड्ढे थे, जैसे चाँद पर होते हैं। मुझे पूरा यकीन है कि उस सड़क पर मुझे लगातार जो झटके लगे, उनसे मेरी पीठ, जो पहले ही ख़स्ता हालत में थी, उसको हमेशा के लिए और नुकसान ज़रूर पहुँचा होगा। और अब मुझे वही ज़िला मिला था और वह भी ऐसे मुश्किल समय में। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था— मेरी स्थिति बिगड़ती ही चली जा रही थी।

मुझे एडीजी एके प्रसाद का फोन आया।

‘लोढ़ा, मुख्यमंत्री जी चाहते हैं तुम तुरंत जॉइन कर लो। हम तुम्हारा वेतन रिलीज़ कर रहे हैं। हम तुम्हें सीक्रेट सर्विस (एसएस) के फंड में से कुछ पैसे भी दे रहे हैं,’ एडीजी ने

मैंने अपने परिवार को वापस पटना भेज दिया। तानु हमेशा उल्लेखनीय रूप से बहादुर रही थी, विशेषकर संकट के समय में। उसने मुझे शुभकामनाएँ दी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अजीत, ध्यान रखना मैडम का,’ अपने परिवार को विदा करते समय मैंने अपने बॉडी गार्ड को कहा।

अपनी नई कर्म भूमि बेगूसराय जाने के लिये सर्किट हाउस के बाहर एक खटारा-सी, पुरानी अम्बेसडर कार आ खड़ी हुई। यही नहीं, उस पर एक लाल बत्ती भी लगी थी और सामने प्लेट पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—‘एसपी शेखपुरा’। उस पर लिखे ‘एसपी’ को देखकर मेरी आत्मा जैसे फिर जाग गई। कम से कम अब मैं एक ज़िले का हेड तो था।

खुशी कुछ ही देर की मेहमान थी। जैसे ही मैंने शेखपुरा की ओर बढ़ना शुरू किया, मुझे पता चल गया कि सड़क ड्राइव करने तो क्या चलने लायक भी नहीं थी। बिहार के भूतपूर्व नेताओं ने सड़कों को हेमा मालिनी के गालों की तरह चिकना करने का वादा किया था। दुर्भाग्य से, समय के साथ सड़क में ओम पुरी के गालों की तरह चेचक के दाग पड़ गए थे। बदला तो यह भी, हालाँकि मेरे कार्यकाल के बाद, और 2007 आते-आते बिहार में उल्लेखनीय प्रगति दिखाई देने लगी थी। अब तो लगभग सारे ही गाँव और शहर उम्दा सड़कों से जुड़ चुके हैं।

जैसे-जैसे शाम होती गई, मेरी यात्रा और भी निराशाजनक व कष्टदायक होती गई। पूरा वातावरण ही उदास-सा और कुछ सुस्त था, कहीं भी कोई रोशनी नहीं दिखाई दे रही थी। विशेषकर, सड़क के किनारे महिलाएँ मेरी गाड़ी की हेडलाइट पड़ने पर अपनी साड़ियाँ ठीक करती हुई, खड़ी होने लगतीं, जिससे मुझे बड़ी शर्मिंदगी महसूस हो रही थी। उनको चूहों, साँपों आदि के डर से सड़क के किनारे पर ही शौच करना पड़ता था।

ज़ाहिर है, स्वच्छ भारत अभियान की सफलता हमारे देश के लिए बहुत ज़रूरी है। मैंने ड्राइवर को हेडलाइट ऑफ़ करने को कहा, जिससे न मुझे और न ही उन महिलाओं को और शर्मिंदा होना पड़े।

‘साहिब, बिना लाइट के गाड़ी बहुत स्लो चलेगा,’ ड्राइवर ने शिकायत की।

‘चिंता मत करो, इस क्षेत्र को पार करके तुम तेज़ चला सकते हो,’ मैंने सख़्ती से कहा।

हमारी कार बैलगाड़ी की तरह आगे बढ़ रही थी, लाइट होना, न होना बराबर ही था।

मैंने किशोर कुमार के गाने गुनगुनाने की कोशिश की, विशेषकर उनका सदाबहार गीत ‘ज़िंदगी का सफ़र’। कुछ मिनट बाद ही ड्राइवर ने एक सीडी चला दी। मैं समझ गया था कि यह संकेत है कि मैं चुप हो जाऊँ। बेचारे ड्राइवर से संगीत का मर्डर और नहीं सहा जा रहा था।

रास्ते में ही कुछ बधाई के कॉल आए, मुझे सब कह रहे थे कि चलो कम से कम मैं प्रतिष्ठान के कामकाज से तो जुड़ गया। किसी भी प्रांत में किसी आईपीएस या आईएएस

‘सर, सरकार को आपके जैसे अफ़सरों की ज़रूरत है। केवल आपके जैसा योग्य अधिकारी ही शेखपुरा में कानून और व्यवस्था की स्थिति ठीक कर सकता है,’ मुझे इस

Downloaded from www.The-Gyan.in

तरह के कई चापलूसी भरे बयान सुनने को मिले, जो हर ऑफ़िसर को अपने करियर में सुनने को मिलते ही हैं, विशेष तौर पर जब वह किसी ज़िले के एसपी का कार्यभार सम्भालने जा रहा हो। कुछ ऑफ़िसर ऐसे भारी प्रशंसा के जाल में फँस जाते हैं। पर हर अच्छे और सफल ऑफ़िसर टीम वर्क में विश्वास रखते है, दूसरों को अधिकार देते हैं और सभी को उनके काम के लिए श्रेय देते हैं, चाहे वह निम्नतम रैंक का कॉन्स्टेबल ही क्यों न हो। वे गुलदस्ते और आलोचना, दोनों को एक जैसे उत्साह से स्वीकार करते हैं, संकट की घड़ी में अपने सहकर्मियों के साथ खड़े रहते हैं और परेशानी आने पर अपने दृढ़ व्यक्तित्व का परिचय देते हैं, जैसे कि क्रिकेटर एमएस धोनी करते आए।

चलते-चलते, मैं अपने बचपन और आईआईटी की यादों में खो गया। मैं सोच रहा था कि कैसे मेरे जैसा एक अंतर्मुखी और डरपोक इंसान अब एक आत्म विश्वासी और सफल पुलिसकर्मी बन गया है और वह भी बिहार में।

आईआईटी में मेरा प्रदर्शन बहुत ही बुरा रहा था। मुझ पर किसी ने भी जेईई (जॉईंट एंटरेंस इक्ज़ामिनेशन) देने के लिए दबाव नहीं डाला था, पर मैंने अपने सभी मित्रों को उसके लिए तैयारी करते देखा था। 11वीं क्लास के बीच में, मैंने उनकी किताबें उधार लीं और परीक्षा के लिए पढ़ने लगा; ऐसा मैं उनसे प्रतियोगिता करने के भाव से कर रहा था, न कि इंजीनियर बनने की इच्छा से। मैं जैसे ही आईआईटी दिल्ली में अपनी पहली कक्षा मैं बैठा, मुझे तभी एहसास हो गया कि मैं गलत जगह आ गया था। गणित में अव्वल होना एक बात थी; पुली और मशीन आदि में रूचि लेना अलग। मैं कक्षाओं में जाने से बचने लगा, गणित में फेल हो गया और बड़ी मुश्किल से सी या डी ग्रेड से पास होने लगा। यहाँ तक कि मैंने अपने एक प्रोफेसर को चिट्ठी भी लिखी कि वे मुझे फेल न करें। मैंने उस चिट्ठी में राजस्थान के एक गरीब सब्ज़ी बेचने वाले के बेटे होने का दावा तक किया था! मैंने अपने इस काल्पनिक परिवार का वर्णन भी किया था—एक टीबी से पीड़ित पिता और चूल्हे पर रोटियाँ बनाती एक बूढ़ी माँ। उस थर्मल एनर्जी के प्रोफेसर की आँख में ज़रूर आँसू आ गए होंगे, जब उन्होंने मुझे डी दिया होगा, बावजूद इसके कि मैंने पंद्रह में से केवल एक ही प्रश्न का जवाब दिया था।

पढ़ाई के अलावा मैंने हर चीज़ में अपना हाथ आज़माया और उन सभी में मैं असफल रहा। हालाँकि मैं सभी एक्स्ट्रा करीकुलर गतिविधियों में अच्छा था, फिर भी अंतिम क्षण में पीछे हट जाता था, चाहे वह आईआईटी स्क्वॉश टीम का चयन रहा हो या कोई क्विज़ प्रतियोगिता। मैं लड़कियों के मामले में भी लगातार फिसड्डी रहा। मुझे अपनी उम्र की लड़कियों से बातचीत करना बिलकुल नहीं आता था। मैं मिरांडा और लेडी श्री राम जैसे

लेकिन मैं वहाँ की लड़कियों के सामने एक शब्द भी नहीं बोल पाता था। अगर मुझे डांस करने को कहा जाता था तो मैं जॉगिंग करने लगता था। मेरी भारी मूंछें, तेल लगे हुए बाल

Downloaded from www.The-Gyan.in

और ढीली-ढाली पैंटें मेरी छवि की और भी दुर्गति कर देते थे। ज़ाहिर है, मैं किसी भी लड़की को प्रभावित नहीं कर पाता था। कभी-कभी तो मैं किसी लड़की की ओर टहलता हुआ जाता और जैसे ही वह मुड़कर मेरी ओर देखती, मैं बूफ़े टेबल की ओर घूम जाता था। ऐसे में मैं कम से कम बीस समोसे और उतनी ही पेस्ट्री खा लेता था। मैं अपने पिताजी की मेहनत की कमाई को बेकार नहीं जाने दे सकता था। तब मैं अपने पूर्वजों का बहुत आभारी हो गया था कि उन्होंने 'अरेंज्ड मैरिज' की प्रथा शुरू की थी, नहीं तो मेरे जैसों की शादी की कोई उम्मीद ही नहीं बचती।

मैंने केवल टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और इंफोसिस में नौकरी के लिए इंटरव्यू दिया, क्योंकि दोनों कंपनियाँ कम सीजीपीए वाले विद्यार्थियों को प्राथमिकता देती थीं। उनके प्रबंधन के अनुसार कम ग्रेड वाले और ज़्यादा हरे-भरे मैदान ढूँढ़ने नहीं जाते थे।

टीसीएस के इंटरव्यू में मैं हकलाता रहा। उसके बाद टीसीएस से मेरे पास कॉल-बैक नहीं आया। इंफोसिस के कंपनी प्रतिनिधियों ने मुझे लेने की बहुत कोशिश की, लेकिन इसके बावजूद, उन्होंने मुझे अस्वीकार कर दिया। मैं इतना उदासीन था कि मैंने सरल से सवाल – जैसे कि एक घन (क्यूब) में कितने विकर्ण (डाएग्नल) होते हैं – का भी जवाब निकालने की कोशिश नहीं की!

पर यह सब बदलने को था क्योंकि समय मुझे कहीं और ले जाना चाहता था।

मैं हमेशा से सिविल सेवक बनना चाहता था। यही मेरी सच्ची लगन थी। मैंने सिविल सेवा परीक्षा के लिए जी-तोड़ मेहनत की। आईआईटी के उन 'सिक्स पॉइंट समवन' से मैं देश की सबसे प्रतिष्ठित सेवाओं का सदस्य बन गया और वह थी, भारतीय पुलिस सेवा। मैंने गणित को अपना वैकल्पिक विषय चुना और परीक्षा का तोड़ निकालने में सफल रहा। यह वही गणित थी जिसमें मैं आईआईटी में फेल हुआ था। मैं कॉलेज के दिनों में मेहनत न करने के लिए स्वयं को कोसता रहा। मेरे ग्रेड काफ़ी अच्छे हो सकते थे। मैंने दूसरी बार भी प्रीलिम्स क्लियर कर लिए, पर यूनिफ़ॉर्म का प्रलोभन इतना ज़्यादा था कि मैंने मेंस की परीक्षा ही नहीं दी, जिससे शायद मैं किसी अन्य सर्विस में जा सकता था। सिविल सेवा परीक्षा भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक रूप से बहुत ही कष्टप्रद होती है। लाखों युवा और कुछ परिपक्व उम्मीदवारों में से कुछ सैकड़ों को ही चुना जाता है। परीक्षा में सफल होने के लिए बहुत भाग्यशाली होना पड़ता है और अपनी पसंद की सर्विस लेने के लिए तो दुगुना भाग्यशाली होना पड़ता है। मुझे पता था कि हमारे देश में कर्मठ और मेधावी लोगों की कोई कमी नहीं है। मैंने तो अपने भाग्य का शुक्रिया अदा किया और नेशनल पुलिस अकादमी, हैदराबाद में दाखिल हो गया। मेरे आईआईटी में बिताए वर्षों से मैं थोड़ा-थोड़ा

कमियों के बावजूद, मुझमें नैतिकता और सही-गलत का बोध करने की क्षमता हमेशा से रही थी। मेरे करियर के शुरुआती दिनों में मुझे इससे कुछ परेशानी भी हुई। लेकिन अनुभव

Downloaded from www.The-Gyan.in

और परिपक्वता बढ़ने के साथ, मैंने हर बात के बड़े संदर्भ पर ध्यान देना शुरू कर दिया और यह सीखा कि सब कुछ बस काला या सफेद नहीं होता।

आईपीएस में चयन के बाद, मुझे बिहार काडर मिला। बधाई के सारे फोन कॉल कुछ फीकी सी बात पर ख़त्म होते थे।

'वंडरफुल, अमित, हमें तुम पर गर्व है। ओह! तुम्हें बिहार काडर मिला है। बेचारा... च्च, च्च, च्च,' पड़ोस की एक आंटी ने टिप्पणी की।

उन्हें आभास ही नहीं था कि बिहार में बिताया हुआ समय मेरे जीवन का सबसे अच्छा समय होने जा रहा था।

~

मुझे याद है वह दिन, जब मैंने एएसपी जमालपुर मुंगेर का पदभार ग्रहण किया था।

'सर, कुर्सी सब सिखा देती है,' मेरे ट्रेनर एसआई हरिशंकर ने कहा था, जब मैंने अपनी व्याकुलता उनके सामने ज़ाहिर की थी। एक युवा एएसपी का कार्यभार सम्भालना बहुत ही ज़बर्दस्त अनुभव था। मैं बेचैन हो रहा था और मुझे लग रहा था जैसे सब मेरे अगले कदम की ताक में बैठे थे। अपनी यूनिफ़ॉर्म और इर्द-गिर्द खड़े आदमियों की वजह से एक पुलिसवाला भीड़ में अलग ही दिखता है। पूरा ज़िला उसका कार्यक्षेत्र, उसका दफ्तर होता है।

कठोर परिश्रम, बुद्धिमत्ता और कुछ सौभाग्य से, मैं अपने पेशे में शुरुआत से ही सफल रहा था। मुझे अच्छी पोस्टिंग मिलती गईं और मैं नाम कमाता गया। हर अपराध को मैं एक चुनौती की तरह लेता और उसे आत्मविश्वास से सुलझा देता। मैं मीडिया और जनता का दुलारा बन गया था। मैं जीवन का अमृत पिए जा रहा था। व्यावसायिक सफलता, मीडिया कवरेज और अच्छी पोस्टिंग्ज़ ने मेरे आत्मविश्वास को साहस में बदल दिया। मेरा व्यक्तित्व पूरी तरह बदल गया। मैं एक विनम्र और शर्मीले छात्र से एक 'होशियार, सुरुचिसंपन्न और अभिमानी' ऑफ़िसर बन गया था।

फिर भी मैं जनता और अपने सहकर्मियों के साथ पूरी शिष्टता से पेश आता था। हालाँकि, मैं सफलता के लिए हमेशा कृतज्ञ रहता था, फिर भी मैं लापरवाह होने लगा था। एसआई हरिशंकर ने सही कहा था। कुर्सी सब सिखा देती है।

~

नालंदा से ट्रांसफर हो जाने पर लगभग पूरा शहर मुझे विदा करने सड़क पर आ पहुँचा था।

स्टार हो या फिर एक शानदार खिलाड़ी, अच्छा समय जल्द ही बुरा समय ले आता है। जब

Downloaded from www.The-Gyan.in

आप सफलता के शिखर पर होते हैं, तभी आप गिर पड़ते हैं, वह भी ऐसे समय जब आपको असफलता की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं होती।

अचानक मुझे उस बटालियन का कमांडेंट बना दिया गया था, जो थी ही नहीं। मेरी पूरी दुनिया चूर-चूर हो गई। रातों-रात मेरे प्रति सभी का बर्ताव बदल गया। अधिकतर लोग मुझसे कतराने लगे, क्योंकि मैं उनके लिए अब 'महत्वहीन' हो गया था।

'च्च च्च, सर, बहुत बुरा हुआ आपके साथ। बहुत ही बुरी पोस्टिंग दी गई है आपको।' कुछ लोगों ने मज़ाक उड़ाते हुए कहा।

'एक हीरो के हारने को कौन पसंद नहीं करता?' मेरे अंदर के शैतान ने कहा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

7
संभोगी छिपकलियाँ

23 मई 2006

मेरे विचारों की लय शेखपुरा पहुँचते ही थम गई। वह शहर — अगर उसे शहर कहा जा सकता है तो — किसी अन्य नगर की एक छोटी कॉलोनी के बराबर ही था।

'सर, यह डल्लू चौक है। हम शहर के बीचों-बीच हैं।' मेरे ड्राइवर ने ऐसे बताया जैसे वह मुझे अमेरिका के लास वेगास का टूर करा रहा हो।

कभी-कभी कुछ आवारा कुत्तों के भौंकने की आवाज़ के अलावा गलियों में एक अजीब-सा सन्नाटा था। शेखपुरा सीधा रामसे ब्रदर्ज़ की फिल्म में से निकला एक भूतिया शहर लग रहा था। टूटी-फूटी इमारतों के बाहर के कुछ लैम्प लगातार टिमटिमा रहे थे, जैसा कि बिहार में कई जगहों पर होता रहता था। घंटे भर सही वोल्टेज सहित बिना कटे बिजली आना उतनी बार होता था जितनी बार पाकिस्तान क्रिकेट वर्ल्ड कप में भारत को हराता है। शुक्र है, अब तो बिहार की बिजली आपूर्ति की स्थिति में भारी बदलाव आ गया है।

'और सर, यह है फेमस टेलर्स—यह सभी प्रकार के सूट सिलने के लिए बहुत मशहूर है। मास्टर जी ख़ासकर शादी के सूट बनाने के लिए जाने जाते हैं,' मेरे बॉडी गार्ड ने कहा।

'ये मृगेंद्र बाबू का क्लीनिक है; ये शेखपुरा के सबसे अच्छे डॉक्टर हैं। यहाँ बहुत कम मेडिकल सुविधाएँ हैं, एक सदर अस्पताल तक नहीं है,' ड्राइवर ने बताया।

'हे भगवान, हममें किसी को भी यहाँ बीमार नहीं पड़ने देना,' मैंने प्रार्थना की। मैं यह भी सोच रहा था कि हमें अपनी बेटी के लिए टीके कैसे मिलेंगे।

हम जल्द ही सर्किट हाऊस पहुँच गए। सबसे बुरा तो यह था कि मैंने कई पुलिसवाले देखे, जो बिना दाढ़ी-मूँछ बनाए, भूखे और थके-हारे, सड़कों पर खड़े दिख रहे थे। यह दृश्य कानून और व्यवस्था से सम्बन्धित कोई गम्भीर समस्या आ जाने पर अक्सर दिखता है। एक पुलिसकर्मी – चाहे वह डीजी हो या कॉन्स्टेबल – को पता नहीं होता कि वह घर कब

तो अधिकारी और जवान अपनी जीप में ही झपकी ले लेते हैं। खाना तो उनकी प्राथमिकताओं में सबसे निम्न होता है। एक आम नागरिक के लिए यह समझना लगभग

Downloaded from www.The-Gyan.in

नामुमकिन होता है कि श्रीनगर में अनियंत्रित भीड़ का सामना कर रहे या बस्तर में नक्सलियों से लड़ रहे जवानों पर क्या गुज़रती है।

शेखपुरा के डीएसपी, यश शर्मा ने मेरा स्वागत किया। पूरे ज़िले का एक ही डीएसपी था। शेखपुरा मेरे पूर्व ज़िलों के कई सब-डिवीज़न से भी छोटा था।

'सर, शेखपुरा में आपका स्वागत है। मैं आपको स्थिति का ब्योरा दे दूँ।'

'कोई ज़रूरत नहीं है,' मैंने उसकी बात बीच में काटते हुए बोला। मैं पुलिसिया काम करने के मूड में नहीं था। बिल्कुल भी नहीं।

शेखपुरा के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी उम्मीद कर रहे थे कि मैं उनके साथ आपात बैठक करूँगा। आख़िर शेखपुरा में हाल ही में नरसंहार हो चुका था और एसपी तथा डीएम, दोनों के तबादले कर दिये गये थे। साथ ही, एक सफल ऑफ़िसर के रूप में – वह भी पड़ोसी ज़िले नालंदा से – मेरी ख्याति मुझसे पहले यहाँ पहुँच चुकी होगी। पर वे आज बहुत हैरान हुए जब उन्होंने देखा कि मैं अपने कमरे में गया और ज़ोर से दरवाजा बंद कर दिया। एसपी बनने पर जो मुझे हल्की-सी खुशी हुई थी, वह फिर हताशा में बदलने लगी थी। मैं क्यों इस उजाड़ शहर में आ पहुँचा था? मैं इस कड़वी सच्चाई को मानना नहीं चाहता था।

सर्किट हाऊस असल में एक सामुदायिक भवन था, जो मूलतः स्थानीय लोगों की सभाओं के लिए बना था। शेखपुरा में कोई आधिकारिक सर्किट हाऊस नहीं बना था क्योंकि शायद ही कोई राजनेता या वरिष्ठ अधिकारी कभी वहाँ दौरे पर आया था। वैसे तो देश में अन्य जगहों पर भी कोई बहुत अच्छे सर्किट हाऊस नहीं थे।

मैंने अपने 'सुईट' का निरीक्षण किया तो पाया कि पलंग के चारों ओर जो मच्छरदानी बांधने के लिए डंडे लगाए गए थे, उन पर काफ़ी सारे मोटे-मोटे चूहे चढ़ रहे थे। मैंने आहिस्ता से बाथरूम का दरवाज़ा खोला, इस डर से कि कहीं कोई चूहा मेरे ऊपर न कूद जाए। मैं दहशत में आ गया जब मैंने उस इंडियन-स्टाइल शौचालय में दो छिपकलियों को संभोग करते और एक कोने में मेंढक को टर्राते पाया। मैंने कई खूंखार अपराधियों का सामना किया था, लेकिन मैं छिपकलियों को देखकर ही काँप उठता हूँ। अगर आपको मैं कभी अपने घर में सोफे पर चढ़ा दिखाई दूँ तो समझ जाइएगा कि ज़मीन पर मुझसे दूर कोई छिपकली है, वो भी दस फीट दूर।

मैं तीर की तरह सर्किट हाऊस से बाहर, पोर्च की ओर ऐसी रफ्तार से भागा जो उसैन बोल्ट को भी शर्मिंदा कर दे। मैंने दो ऑर्डर्ली को मेरे कमरे से उन सारी बायोडाइवर्सिटी को बाहर करने के निर्देश दिए। शेखपुरा के नए एसपी के रूप में मेरे पहले आदेश का उन्होंने कुछ हैरानी के साथ सफलतापूर्वक पालन किया।

से लटक रही थीं। मुझे थोड़ा बुरा लगा कि मैंने उनके भावुक मिलन में बाधा डाली।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने डरते-डरते फिर कमरे में पैर रखा और डिनर लाने को कहा। मुझे पहले ही समझ जाना चाहिए था कि मुझे परवल, आलू और लौकी जैसे व्यंजन ही मिलेंगे। मुझे विश्वास हो गया था कि बेगूसराय के सर्किट हाऊस के बावर्ची ने अपना बचा हुआ खाना शेखपुरा भेज दिया होगा। मैंने मजबूरन भूखे पेट ही मच्छरदानी में सोने का प्रयास किया। मैं अपने शरीर के कई हिस्सों पर इस उम्मीद में थप्पड़ मारते हुए करवटें बदलता रहा कि जिन कीड़ों और मच्छरों के घर में घुस आया था और जो अब मुझे काट रहे थे, वो मर जाएँगे। मेरे विचार में वे दो छिपकलियाँ और मेंढक इस नाज़ुक पारितंत्र में सामंजस्य बिठाए हुए थे।

अगली सुबह, मैं मच्छरों के निरंतर संगीत से उठा। कुछ क्षण बाद ही कुमार सर का फोन आया, 'अमित, ज़रा इन गाँवों के नाम नोट कर लो। यह सामन्त प्रताप के रेडार पर हैं। इन जगहों पर जाकर यह पक्का कर लेना कि वहाँ पर्याप्त गश्त है।'

मुझे आश्चर्य और प्रसन्नता एकसाथ महसूस हुई। डीआईजी का भी रातोंरात ट्रान्सफर कर दिया गया था और कुमार भरत को उनकी जगह चार्ज सम्भालना था।

कुमार भरत बिहार के सबसे बेहतरीन अधिकारियों में से थे। वह मितभाषी होने के साथ ही पूरी तरह से अपने काम में दक्ष एक कुशल लीडर थे। जब वह पटना में एसपी थे और मैं उनके अधीन एएसपी के पद पर था, मैंने उनसे न केवल तकनीकी और वैधानिक मामलों के बारे में बहुत कुछ सीखा, बल्कि यह भी कि दफ्तर में अपनी गरिमा कैसे बनाए रखते हैं।

दो घंटे बाद उन्होंने मुझे फिर कॉल किया, यह पता लगाने के लिए कि मैंने कोई कार्रवाई की थी या नहीं। मैंने स्पष्ट रूप से 'नहीं' कहा और अपने मन की भड़ास निकालने लगा। सर ने आश्चर्यजनक धैर्य दिखाते हुए मेरी पूरी बात सुनी, जब तक कि मैंने जी भरकर अपना सारा दुखड़ा उन्हें नहीं सुना दिया।

'अमित, मुझे पता है कि तुम्हें लगेगा मैं तुम्हें उपदेश दे रहा हूँ, पर हमने अपने संविधान की यह शपथ ली थी। आईपीएस ऑफ़िसर्स के रूप में यह हमारा देश के सामान्य नागरिकों के प्रति कर्तव्य है कि अपराध से लड़ें और अपराधियों को दंड दिलाएँ। और इसके अलावा, तुम पर तो पहले ही महकमा बहुत मेहरबान नहीं है। पहले वाले एसपी को तो शंट आउट किया गया, लेकिन यदि दुबारा नरसंहार की कोई घटना हुई, तो तुम तो सस्पेंड ही कर दिए जाओगे,' उन्होंने मुझे फोन पर जितनी अच्छी तरह से समझा सकते थे, समझाया।

थोड़ी देर बाद तानू ने मेरा हाल पूछने के लिए फोन किया। मैंने अपने गेस्ट हाऊस की घटिया हालत का हाल उसे सुनाया और बताया कि वहाँ एसपी का कोई सरकारी निवास

मुझे तो इस बात की खुशी है कि हम सब साथ रहेंगे। मैं कुछ दिनों में शेखपुरा पहुँच जाऊँगी।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

8
वापस काम पर

मुझे पता था कि तानू को शेखपुरा सर्किट हाऊस की ख़स्ता हालत से ज़्यादा परेशानी नहीं थी। मुझे 13 दिसंबर 1999 की बिहार में हमारी पहली रात याद आ गई।

उदयपुर जैसी सुंदर जगह में हनीमून मनाने के बाद, हम झुमरी तलैया रेलवे स्टेशन पर उतरे—वही जगह जहाँ के निवासी ऑल इंडिया रेडियो पर अपने पसंदीदा गानों की फरमाइश करते हैं।

एक घंटे की सड़क यात्रा के बाद, हम हज़ारीबाग के पीटीसी के घने अँधियारे कैम्पस में आ पहुँचे। मुझे उम्मीद थी कि मेरा स्वागत ढंग से किया जाएगा, जैसे एनपीए में किया गया था, पर वहाँ अंधेरे से निकलते हुए एक मोटे-से कॉन्स्टेबल को देख मुझे धक्का लगा। उसने हाथ में लालटेन ली हुई थी, जिससे उसकी एक भयानक छाया दिख रही थी, बिल्कुल 'बीस साल बाद' फिल्म के पात्र की तरह। उस मोटे सिपाही ने अपनी तोंद खुजाते हुए मुझे मच्छर मारने की गुडनाइट कॉइल, एक मोमबत्ती और एक माचिस थमा दी। मैं पूरी तरह घबरा गया था।

'आप ये सब मुझे क्यों दे रहे हैं?' मैंने गुस्से में पूछा।

'साहिब, छह घंटे से बिजली नहीं है। अंधेरे में आप देखेंगे कैसे? और यहाँ मच्छर भी बहुत हैं। मेमसाहिब को बहुत परेशानी होगी अगर आपने कॉइल नहीं जलाई। मच्छरों को गोरी चमड़ी बहुत पसंद होती है।' अपनी लूँगी ठीक करते हुए कॉन्स्टेबल ने कहा।

जैसे-तैसे हम पहली मंजिल पर हमारे कमरे तक पहुँचे। तानू ने मोमबत्ती जलाई। मैंने हाथ धोने के लिए नल खोला तो मुझे अहसास हुआ कि सारा पानी मेरे पैरों पर गिर रहा था। नीचे देखा तो पाइप नदारद था और नाली भी बेसिन से लगभग पाँच फीट दूर थी। जब मैं खिड़की बंद करने लगा तो मैंने पाया कि वह अंदर से बंद ही नहीं की जा सकती थी। कमरे के बाहर जाकर देखा तो मैं चकित रह गया—कुंडी खिड़की के बाहर की तरफ लगी थी। इसका मतलब था कि गलियारे में आता-जाता कोई भी व्यक्ति हमारी खिड़की खोल

बहुत खतरे में था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘वॉशबेसिन में पाइप क्यों नहीं है? और खिड़की की कुंडी बाहर क्यों लगी हैं?’ मैंने कॉन्स्टेबल से सफाई माँगी।

‘साहिब, उस ठेकेदार को पीडब्ल्यूडी ने पिछले तीन साल से पैसे नहीं दिए हैं। तो उसने बदला लेने के लिए खिड़कियाँ उल्टी लगा दी हैं। और वॉशबेसिन के लिए पाइप खरीदने के लिए पैसे ही नहीं बचे थे।’

मैंने सोचा कि क्या तानू भाग जाएगी?

‘चलो, “हनीमून सुईट” हमारा इंतज़ार कर रहा है,’ तानू हँसकर बोली जब उसे अहसास हुआ कि हमारी समस्या का कोई समाधान नहीं था। मुझे संतोष था, तानू मुझे छोड़ कर नहीं जा रही थी। कभी नहीं।

तानू हमेशा से मेरे जीवन में शक्ति का एक स्तम्भ रही है। एक वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी की बेटी होने के नाते वह मेरे पेशे की चुनौतियों को अच्छी तरह समझती थी जिनका मैं अपने करियर में सामना कर रहा था और भविष्य में करने वाला था। मेरी आँखों में देखकर मेरे मन में चल रही लगभग हर बात उसे पता चल जाती थी। न केवल वह काफी बुद्धिमान है, बल्कि सदाचार और नैतिकता का एक उम्दा मेल भी रही है। असल में मेरी नौकरी की पहली दो गिरफ्तारियाँ, जिनसे मुझे काफी ख्याति मिली, वह पूरी तरह से मेरी ‘लेडी लक’ की वजह से ही सम्भव हो सकी थीं!

~

मेरी पहली पोस्टिंग सितंबर 2000 में जमालपुर एएसपी के पद पर हुई थी। जमालपुर मुंगेर का एक छोटा-सा सुस्त कस्बा था, जो कभी रेलवे इन्स्टिट्यूट, एससीआरए, आईटीसी की एक फैक्टरी और एक योगाश्रम के लिए मशहूर हुआ करता था, लेकिन अब देसी कट्टों के लिए कुख्यात था। अंग्रेजों ने यहाँ पुलिस और प्रांतीय कॉन्स्टेबुलरी के लिए शस्त्र बनाने की एक फैक्टरी लगाई थी, जो कई साल बाद बंद कर दी गई, जिससे सैकड़ों शस्त्र बनाने वाले कारीगर बेरोज़गार हो गए। क्योंकि उन्हें कुछ और काम आता नहीं था, इसलिए उन्होंने स्थानीय अपराधियों को सस्ते में बन्दूकें बनाकर बेचनी शुरू कर दीं। वे इतने माहिर कारीगर थे कि असल बंदूक और देसी में कोई अंतर ही नहीं पता चलता था और उन्हें प्रामाणिक दिखाने के लिए इन बंदूकों पर ‘मेड इन इटली’ या ‘वाल्टर पीपीके’ तक उभरे अक्षरों में लिख देते थे!

इस शिल्प कौशल की ख्याति जल्द ही फैल गई और बड़े-छोटे हर तरह के अपराधियों से हर प्रकार की बंदूकों के ऑर्डर आने लगे। बिहार और पड़ोसी उत्तर प्रदेश में बढ़ते

Downloaded from www.The-Gyan.in

अब फलने-फूलने लगे थे। बिहार में देसी कट्टे बनाना एक 'लघु उद्योग' बन गया था और इसके लिए किसी सरकारी सब्सिडी की भी कोई आवश्यकता नहीं थी!

जैसा कि किसी भी युवा पुलिस अधिकारी के साथ होता है, जब मैं उस कस्बे में अपनी पहली-पहल पोस्टिंग पर गया तो कई लोग मुझसे मिलने आए।

'सर, कीर्तन मिश्रा मुंगेर का सबसे बड़ा अपराधी है। उसने कुछ समय पहले ही आईटीसी के मुख्य प्रबंधक की हत्या कर दी थी। अगर आप उसे गिरफ्तार कर लें, तो हमें बहुत खुशी होगी। मुंगेर के लोग उसकी जबरन वसूली से परेशान हो गए हैं। पिछले पखवाड़े में उसने हमारे चचेरे भाई को भी मार दिया। कृपा करके उसे गिरफ्तार कर लें। आपसे हमें बहुत उम्मीदे हैं,' एक बुजुर्ग आदमी ने आग्रह किया।

'सर, हमें हाल ही में पता चला है कि वह अपने घर के पास ट्यूबवेल से सटे एक कमरे में छिपा हुआ है। ट्यूब वेल के पास दो नीम के पेड़ हैं,' एक अन्य आदमी ने बताया।

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि यदि कीर्तन के छिपने की जगह इन दोनों को इतनी आसानी से पता चल गई थी, तो पुलिस ने उसे क्यों गिरफ्तार नहीं किया? मैंने सारा विवरण बड़ी अनिच्छा से नोट किया। यदि मेरा कोई भी पूर्ववर्ती उसे नहीं पकड़ पाया, तो मुझ जैसा नौसिखिया क्या कर सकता है?

अगले दिन मैंने कुछ स्थानों पर अवैध हथियार पकड़ने के लिए छापे मारे, पर कुछ नहीं मिला। मैं काफ़ी निराश हुआ; मुझे अपनी पहचान बनाने की बहुत बेचैनी थी।

'हुज़ूर, वह बड़ा-सा बंगला कीर्तन मिश्रा का है,' हम सर्किट हाऊस लौट रहे थे जब मेरे ड्राइवर, शशि ने बताया।

'अच्छा चलो, उसका घर देखकर आते हैं।'

मैंने सोचा कि मैं भी कुछ काम कर लूँ। मैं अपने एसपी को यह बताना चाहता था कि मैंने अपनी निष्ठा का प्रमाण देने के लिए कीर्तन मिश्रा के घर पर 'छापा' मारा था।

मैं घर में घुसा। सब काफ़ी साफ-सुथरा था।

कीर्तन की पत्नी ने पूछा, 'सर, आप चाय लेंगे क्या?' मुझे यह देख-सुनकर बड़ा मज़ा आया था। मुझे नहीं पता था कि बिहार में अपराधियों के घरों में पुलिसवालों का इतना अच्छा स्वागत किया जाता है। मैंने पूरा घर जाँचा, और जैसी उम्मीद थी, मुझे अपराधी कहीं नहीं दिखा। मैंने घर में रखे लैंडलाइन फोन को देखते ही तानू से बात करने के लिए सर्किट हाऊस का नंबर मिलाया।

'हेलो, तुम कैसी हो? मैं अभी ऑफिस में नहीं हूँ। मैंने शायद तुम्हारी मिल्स एंड बून की किताब में एक कागज़ का टुकड़ा रख दिया, जिस पर एक पता लिखा था,' मैंने कहा।

एक मिनट में उसने वह पता पढ़कर मुझे बता दिया। मैंने प्रतिभाशाली ऑफ़िसर इंस्पेक्टर तिवारी को बुलाया जो मेरे साथ आए हुए थे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘तिवारी, हम यह जगह ढूँढ़ सकते हैं क्या?’ मैंने उसे ट्यूबवेल और उसके आस-पास के पहचान चिह्न बताए।

‘सर, यह जगह तो काफ़ी पास है। चलिए, अभी चलते हैं,’ तिवारी ने कहा।

कुछ मिनटों में, तिवारी और मुझे वह ट्यूबवेल के पास वाला कमरा मिल गया और हमने अंदर कदम रखा। पहली नज़र में वहाँ एक पलंग के अलावा और कुछ नहीं दिख रहा था। मैंने उबासी ली और बाहें पसारी। अचानक, तिवारी ने पलंग की ओर पिस्तौल तानी और चिल्लाया, ‘बाहर निकलो, गोली मार देंगे!’

एक लंबा-तगड़ा, बलिष्ठ भुजाओं वाला आदमी पलंग के नीचे से निकला। उसके हाथों में एक देसी कट्टा था। मैं हैरान लेकिन प्रसन्न था। हैरान क्योंकि मैं सोच भी नहीं सकता था कि इतना विशालकाय आदमी पलंग के नीचे छिप सकता था, और प्रसन्न क्योंकि यह मेरी पहली सफलता होने वाली थी, मेरे करियर की पहली गिरफ्तारी! मैंने उस आदमी को ज़ोर से धकेला। जब मैं विश्वस्त हो गया कि अब वह जवाबी हमला नहीं कर सकता, मैंने तिवारी को आदेश दिया ‘ले आइए इसको, तिवारी,’ और अपनी जिप्सी की ओर चलने लगा। कुछ ही क्षण बाद, मुझे मेरा ड्राइवर शशि खुशी से कूदते दिखाई दिया।

‘हुज़ूर, कमाल हो गया। कीर्तन को गिरफ्तार कर लिया,’ उसने उत्साहपूर्वक बताया।

‘कहाँ, कहाँ है वो? किसने पकड़ा उसे?’ मैंने एक हाथ पिस्टल पर रखकर कहा।

‘सर, वो ही तो है। जिस आदमी को अभी आपने गिरफ्तार किया है।’

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था। क्योंकि न मैंने और न ही तिवारी ने अपने जीवन में पहले कभी कीर्तन को देखा था—और लो! यहाँ तो हमने मुंगेर के डॉन को बिना किसी परेशानी के पकड़ लिया। हम कोतवाली थाना पहुँचे, जहाँ उत्साह से भरी अच्छी-खासी भीड़ ने हमारा स्वागत किया। हज़ारों लोग कीर्तन की गिरफ्तारी का जश्न मनाने को सड़कों पर निकल आए थे।

सारे मीडियाकर्मी मुझसे पूछ रहे थे, ‘सर, आपने केवल तीन दिन पहले ही एएसपी का पद ग्रहण किया है। आपने इतनी जल्दी इतने कुख्यात अपराधी को कैसे पकड़ लिया?’

मैं बस चुप रहा। मैं उनको कैसे बताता कि यह सरासर मेरी खुशकिस्मती थी और एक तरह से मेरी पत्नी ने मेरी सहायता की थी!

अंततः मैंने कहा, ‘यह एक गुप्त कार्रवाई का हिस्सा था। मैं और विस्तार से आपको नहीं बता सकता।’ भविष्य में प्रेस वालों के पूछे गए अनगिनत प्रश्नों का जवाब मैंने इसी तरह देना तय कर लिया था।

कुछ दिनों बाद, जैसे ही मैं स्क्वॉश खेलने के लिये घर से निकल रहा था, तो एक खबरी

‘सर, हरि सिन्हा गाँव छोड़कर जाने की तैयारी में है। अभी-अभी उसने गाड़ी किराए पर ली है।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

मुझे गुस्सा आ रहा था क्योंकि मेरे गेम के लिए देर हो रही थी।

'क्या तुम्हें पता है कि वह किस गाड़ी में जाएगा? या फिर किस रास्ते से? तो फिर मैं उसे कैसे पकड़ूँगा?' मैं फोन पर चिल्लाया। जब मुझे कोई जवाब नहीं मिला, तो मैंने फोन पटक दिया और जैसे ही पीछे मुड़ा, अपनी पत्नी को स�ती से घूरते पाया।

'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि स्क्वाश का एक गेम आपके लिए आपकी पुलिस ड्यूटी से ज़्यादा ज़रूरी है!' मैंने उसे समझाने की कोशिश की, पर कोई असर नहीं हुआ। वैसे मैं भी हरि सिन्हा को गिरफ्तार करने को उत्सुक था।

मैंने अपनी यूनिफॉर्म पहनी और सफियासराय पुलिस थाना जाने के लिए कुछ अतिरिक्त बल की माँग की। थाने पहुँचकर मैं लालटेन के अंदर टिमटिमाती आग की लपटों को देखता रहा और सिपाहियों के आने का इंतज़ार करता रहा। लेकिन एक एएसपी की चिंता कौन करता है? वैसे, एसपी बनते ही स्थिति बहुत बदल जाती है। एक एसपी को तो आम बोलचाल में 'ज़िले का मालिक' समझा जाता है।

मैं बैकअप की और देर प्रतीक्षा नहीं कर पा रहा था, तो मैंने अपने ड्राइवर, शशि से कहा कि वह मुझे हरि सिन्हा के गाँव की ओर ले चले। एक पुरानी अम्बेसेडर कार हमारे पास से निकली। पूर्वाभास से मैंने शशि को अगली गाड़ी रोकने के लिए कहा। मेरा वाक्य खत्म होने से पहले ही शशि ने सड़क ब्लॉक कर दी थी और दूसरी ओर से आती हुई उस मारुति कार को रोक दिया था। मैं आराम से अपनी जिप्सी में से उतर ही रहा था कि मुझे शशि के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी, 'सर, नीचे झुक जाइए!'

मैंने तत्काल देखा कि मारुति में से मुझे कोई आदमी एक देसी कारबाइन दिखा रहा था। शशि और मेरा बॉडी गार्ड, भूषण, अपने हथियार उन पर तानते हुए चिल्लाए और उन्होंने गाड़ी में से सभी को उतरने के लिए कहा। ड्राइवर और वह, बंदूक से धमकाता हुआ, भारी-भरकम आदमी हाथ ऊपर करके नीचे उतर आए। शायद वह बंदूकधारी आदमी समझ गया था कि पुलिसवालों की संख्या ज़्यादा थी। वैसे भी वह अंदर बैठा था और सीधा हमारे निशाने पर था। इस समय तक हमारी बैकअप टीम इंस्पेक्टर तिवारी की अगुआई में पहुँच गई थी।

'सर, आपको बहुत यश लिखा है!' उल्लासित तिवारी ने मुझे उठाते हुए कहा।

हमने अभी-अभी बेहद नाटकीय ढंग से हरि सिन्हा को गिरफ्तार किया था और मैंने कुछ भी नहीं किया था, सिवाय अपनी जिप्सी में बैठने के! मैं रातों-रात एक सुपर कॉप बन गया था, एक ऐसे कुख्यात अपराधी को पकड़ने के लिए जो बीस हत्या और अपहरण के कई मामलों में वांछित था, और वह भी कीर्तन मिश्रा की गिरफ्तारी के कुछ समय बाद ही।

बड़े-बड़े अपराधियों को पकड़ना और एक सफल पुलिसकर्मी बनना लिखा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

~

फिर शेखपुरा में, तानू के फोन ने मुझे तुरंत काम पर लग जाने का प्रोत्साहन दिया। मैं अपने परिवार के लिए उचित आवास ढूँढ़ने की चिंता करने लगा, क्योंकि यहाँ एसपी के लिए कोई सरकारी आवास नहीं था। मैंने शहर के एसएचओ, राजेश चरण को बुलाया, जो एक सजीला युवा ऑफ़िसर था।

'जय हिंद, सर, मैं आपके बैचमेट अनुपम चरण का भाई हूँ। मैंने भी यूपीएससी की परीक्षा दी थी,' उसने एक ज़ोरदार सलाम ठोंकते हुए कहा।

बिहार में ऐसा बहुत होता है कि एक भाई आईपीएस ऑफ़िसर बन जाता है और दूसरा भाई उससे कुछ जूनियर ऑफ़िसर बन जाता है। इसे भाग्य का खेल कह सकते हैं। मुझे उसकी आँखों में तिरस्कार साफ दिखाई दे रहा था। मेरे विचार में शायद वह यह सोच रहा था कि मैं भी उसका आईपीएस बैचमेट हो सकता था।

मैंने उसे मेरे परिवार के लिए एक अच्छा घर ढूँढ़ने के लिए कहा। आधे घंटे बाद, वह किसी विजेता के अन्दाज़ में लौटा, जैसे उसने मेरे लिए कोई छोटी-सी सल्तनत जीत ली थी।

'सर, जूनियर इंजीनियर का घर कई सालों से खाली पड़ा है। आप उसमें तुरंत जाकर रह सकते हैं!'

शेखपुरा में बिजली की व्यवस्था काफ़ी बुरी हालत में थी, और इस बारे में जूनियर इंजीनियर कुछ कर नहीं सकता था इसलिये वह ज़्यादातर पटना में ही रहता था और यदा-कदा ही शेखपुरा आता था। देश के लगभग सभी राज्यों में हर विभाग के कुछ अधिकारी ऐसे ही काम करते हैं। वह राज्य की राजधानी में अपना घर बना लेते हैं, बच्चों को अच्छे स्कूल में दाखिला दिला देते हैं, ट्यूटर रख लेते हैं और अपने परिवार के लिए वहीं व्यवस्था पक्की कर लेते हैं। सभी अधिकारी अपने परिवार की सभी आकांक्षाओं की पूर्ति करने का भरसक प्रयास करते हैं। यह लगभग सभी मध्यमवर्गीय परिवारों का सच है। बीच-बीच में ऑफ़िसर, कुछ-कुछ दिनों के लिये अपने असली पोस्टिंग के दफ्तर भी आता-जाता रहता है। पर हमारे जैसे बेचारे पुलिसकर्मियों के पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। हमें तो अपनी पोस्टिंग वाले स्थान पर ही रहना पड़ता है। हम इधर-उधर आ-जा भी नहीं सकते, वह भी इस उम्मीद में तो बिल्कुल नहीं कि जब हम ज़िले में हों, तभी अपराधी अपराध करेंगे। परंतु इस बार मैंने विद्युत विभाग को धन्यवाद दिया और जूनियर इंजीनियर के मकान में रहने का निर्णय लिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

कुमार सर 'सर्किट हाऊस' पहुँचे और मेरे पास वाले 'सुईट' में बिना किसी झमेले के चले गए।

'अमित, आशा करता हूँ कि अब तुम्हारे साथ हुए "अन्याय" से तुम नाराज़ नहीं हो। मैं अब तुमसे कुछ ऐक्शन की उम्मीद करता हूँ।'

'सर, आप मेरे ट्रेनर रहे हैं, मैं जल्द ही सामन्त प्रताप को गिरफ्तार करूँगा, केवल आपके लिए,' मैंने पूरे विश्वास से जवाब दिया। मैं सामन्त प्रताप को गिरफ्तार करना चाहता था, जिससे मुझे अफ़सरों के बीच अपनी प्रतिष्ठा वापस मिल सके। इससे न केवल मेरा आत्मबल बढ़ता, बल्कि मेरे आलोचकों को भी मुँहतोड़ जवाब मिलता।

कुमार सर केवल मेरी ओर देखकर मुस्कुरा दिए। मैंने तो ऐसे ऐलान कर दिया था जैसे सामन्त प्रताप कोई फ्लिपकार्ट या अमेज़न द्वारा दी जा रही हजारों डील्स में बिक रहा हो। बस एक क्लिक करो और लो, सामन्त प्रताप आपके दरवाजे पर हाज़िर हो जाएगा! हाँ, यह बात और है कि तब ऑनलाइन शॉपिंग होती ही नहीं थी।

~

मैं ऑफिस पहुँचा तो पाया कि वह बेहद भद्दा था। एक बड़ी-सी बदसूरत मेज़ कमरे के बीचोंबीच रखी थी और कई रंगों की प्लास्टिक की कुर्सियाँ उसके सामने लगी हुई थीं। काफ़ी सारी फाइलें लाल कपड़े में लिपटी मेज़ पर सजी हुई थीं। सबसे बुरी तो एसपी की कुर्सी थी, जो बड़े से तौलिए से ढकी थी। कई सरकारी दफ्तरों में बॉस की कुर्सी पर एक सफेद तौलिया सजा होता है, जो उनकी शक्ति का प्रतीक होता है! टेबल के पास एक पीकदान भी रखा था। मैंने तुरंत तय किया कि दफ्तर की कायापलट करने की ज़रूरत है। मुझे अपना काम करने के लिए एक सलीक़ेदार दफ्तर चाहिए था।

मैंने पटना से फर्नीचर का कैटलॉग मंगाया।

'हुज़ूर, इतने महंगे फर्नीचर खरीदने के लिए हमारे पास बजट नहीं है,' हेड क्लर्क ने मुझे नामंज़ूरी जताते हुए कहा।

'चिंता मत करो, बस यहीं के किसी कारीगर को बुला दो और उसे इन डिज़ाइनों की नकल करने को कह दो। मुझे विश्वास है कि शेखपुरा में कोई न कोई होशियार बढ़ई तो होगा ही। मैंने अपनी हर पोस्टिंग में यह काम किया है।' अपने निर्देशों से संतुष्ट होकर मैं वापस काम पर लौटा।

मैंने शेखपुरा की स्थिति को सही से समझने के लिए डीएसपी शर्मा और एसएचओ राजेश चरण को बुलाया। दोनों ने एक सुर से यही कहा कि सामन्त प्रताप को गिरफ्तार

अपराधी और सामन्त प्रताप का शत्रु भी था, हम तुरंत पकड़ सकते थे। उसकी गिरफ्तारी

Downloaded from www.The-Gyan.in

मेरे शेखपुरा में आगमन की सूचना भी दे देगी और जनता को लगेगा कि पुलिस एक्टिव हो गई है। और वाकई, अपनी बात के पक्के राजेश ने चौबीस घंटे के अंदर ही चन्दन सिंह को मेरे सामने लाकर खड़ा कर दिया।

'सर, बड़का भेटनर अपराधी है!' राजेश चरण ने उत्साहित होकर कहा। बिहारवालों ने 'भेटनर' नया ही शब्द बना दिया था, 'वेटरन' की जगह!

मैं राजेश से बहुत प्रभावित नहीं हुआ। देसी कट्टे और कुछ गोला-बारूद के साथ की गई चंदन की गिरफ्तारी कुछ ज़्यादा ही आसान लगी, जैसे कि वह अपने घर पर बैठकर इंतज़ार कर रहा था कि पुलिस आए और उसे गिरफ्तार कर ले। जब नया एसपी किसी ज़िले में पद सम्भालता है तो ऐसा कई बार होता है। कुछ एसएचओ अपने नए बॉस को खुश करने के लिए छोटे-मोटे अपराधियों को पकड़ लाते हैं, जिन्हें 'पॉकेट' अपराधी कहा जाता है। मैं इस जाल में आने के लिए काफ़ी परिपक्व था। वैसे भी, मेरा निशाना सामन्त प्रताप पर था, किसी छोटे-मोटे अपराधी पर नहीं।

सामन्त प्रताप बिहार के सबसे खूँखार गैंगलॉर्ड में से एक था। उसका नाम राज्य के सबसे भयानक नरसंहार से सम्बन्धित था, जिसमें सैकड़ों लोगों की जान गई थी। वह शुरुआत में एक छोटा-सा गुंडा हुआ करता था, जो आगे चलकर बिहार का विरप्पन बन गया था। उसको पकड़ने के लिए मुझ पर इसका जुनून सवार होना ज़रूरी था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

9
एक कसाई की कहानी

सामन्त प्रताप एक असामान्य बालक था। जब उसके गाँव के और बच्चे लुका-छिपी, गिल्ली-डंडा खेलने या पोखर में भैंसों के साथ तैरना आदि पसंद करते थे, तब सामन्त प्रताप गिरगिटों का पीछा करता था। वह उनके बदलते रंगों से मोहित था। पर जो रंग उसे सबसे पसंद था, वह था खून का चटक लाल रंग। इसलिए वह उन असहाय जंतुओं का पीछा करता था और फिर उन्हें डंडे से पीट-पीटकर मार देता था। दर्द में छटपटाती वह छिपकलियाँ धीरे-धीरे मर जाती थीं।

बचपन से ही सामन्त प्रताप को भयानक घटनाओं से अजीब-सी खुशी मिलती थी। वह पैदाइशी मनोरोगी था, जो क्षण-भर में हिंसक होने की क्षमता रखता था। बाकी बच्चे उसके पास आने का भी साहस नहीं करते थे।

वह नवादा के एक गरीब परिवार में पला-बढ़ा था। उसके चाचा ने उसे ट्रैक्टर ड्राइवर की नौकरी दिला दी। पर सामन्त प्रताप को जल्द ही आभास हो गया था कि वह ऐसी जिंदगी नहीं जीने वाला। उसे पता था कि वह तो राजा की तरह राज करने के लिए बना था। उसने जेबकतरी का काम शुरू किया, और जल्दी ही, कुछ लड़कों के साथ मिलकर एक गैंग बना लिया, जो छोटे-मोटे अपराध, वसूली और चोरियाँ करते थे। स्थानीय गाँव वाले उससे डरने लगे थे। एक उपद्रवी के रूप में उसकी प्रतिष्ठा धीरे-धीरे बढ़ने लगी। सामन्त प्रताप को पहली सफलता तब मिली जब एक गाँववासी ने उससे किसी जमींदार की ज़मीन हड़पने को कहा। सामन्त प्रताप को इस बात का भी कोई डर नहीं था कि वह जमींदार बहुत धनवान और ताकतवर था।

इसे सीधी चुनौती मानकर जमींदार ने अपने तबके के सबसे ख़तरनाक अपराधी सर्वेश्वर सिंह को बुलाया। जिससे सामन्त प्रताप को सबक सिखाया जा सके।

एक रात सर्वेश्वर और उसके आदमी सामन्त प्रताप के घर में घुस गए और उसके पिता व भाई को बाहर घसीट लाए। जब उन्हें सामन्त प्रताप नहीं मिला, तो गुस्से में सर्वेश्वर ने

घायल हो गई। अगले दिन जब सामन्त प्रताप पास के गाँव में स्थित ईंटों की भट्टी से वापस

Downloaded from www.The-Gyan.in

घर लौटा, तो उसने न केवल ज़मींदार और सर्वेश्वर को, बल्कि उनके पूरे परिवार को खत्म कर देने की कसम खा ली। लेकिन अपने परिवार के प्रति प्रेम के कारण नहीं, बल्कि उसे यह मंज़ूर नहीं था कि कोई उसे चुनौती दे।

सामन्त प्रताप को मालूम था कि वह सर्वेश्वर के गैंग की ताकत की बराबरी नहीं कर सकता था। उसने तय किया कि वह सर्वेश्वर के विरोधी, पंकज सिंह के साथ जुड़ जाएगा, जो सर्वेश्वर का चचेरा भाई था, लेकिन दोनों भाइयों के आपसी सम्बन्ध अच्छे नहीं थे। उन दोनों के बीच संपत्ति को लेकर झगड़ा चल रहा था और समय के साथ उनकी दुश्मनी और बढ़ गई थी।

'पंकज भाई, आपका और हमारा दुश्मन एक है। हमें उसे मिटाना है।' सामन्त प्रताप ने पंकज से कहा।

हालाँकि, पंकज को सामन्त के वंश से भी नफरत थी, लेकिन वह सर्वेश्वर से और भी ज़्यादा घृणा करता था।

'तो कैसे करना है?' पंकज ने पूछा।

'आपको मालूम होगा ना। हमको आप बताइए, हम उसको कहाँ मार सकते हैं? उसका कोई नियत कामकाज रहता है क्या? उसकी कोई न कोई कमज़ोरी तो होगी।' सामन्त प्रताप ने सपाट लहजे में कहा।

'हाँ! सर्वेश्वर भैरव बाबा का भक्त है, पक्का भक्त। हर गुरुवार को वह चामुंडी पहाड़ी पर स्थित भैरव बाबा के मंदिर जाता है, बिना नागा।' पंकज ने कुछ पल सोच कर कहा।

'फिर तो उसे मंदिर में ही मारना होगा। उसकी बलि चढ़ानी होगी।' सामन्त प्रताप ने घोषणा करते हुए कहा।

~

आरती अपने चरम पर थी। सैकड़ों भक्त चामुंडी पहाड़ी पर स्थित भैरव बाबा के उस धाम में खचाखच भरे थे। वह मंदिर भी किसी अन्य पावन तीर्थ स्थल की तरह ही था। सामन्त प्रताप, पंकज और उनके आदमी भक्तों की भीड़ में मिल गए। दृश्य ऐसा था जैसे गेरुए रंग का सैलाब उमड़ आया हो—सभी भक्तों ने इसी पावन रंग के कपड़े पहने हुए थे। 'जय बाबा, जय भैरव'— चामुंडी की पहाड़ियाँ जयकारों की आवाज़ से गूंज उठी थीं, कई शताब्दियों पुराना वह मंदिर सुंदर दियों की रोशनी में जगमगा रहा था। अचानक, सभी भक्त शांत हो गए। सर्वेश्वर प्रार्थना करने आ पहुँचा था।

पवित्र स्थल में प्रवेश करके सर्वेश्वर ने अपने बॉडी गार्डों को बाहर रुकने के लिए इशारा

गई थी। सर्वेश्वर ने आँखें बंद कीं और भैरव बाबा के सामने माथा टेक दिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

यकायक उसे अपने आस-पास कुछ हलचल होने का आभास हुआ। वह ज़मीन पर जहाँ झुका था, वहीं उसने आँखें खोलकर देखा। पंडित थर-थर काँप रहा था और पंकज उसके सिर के ऊपर खड़ा था। उसके साथ सामन्त प्रताप था। वह दुष्टता से मुस्कुराते हुए मंदिर के पट बंद कर रहा था।

सर्वेश्वर ने आँखें बंद कर लीं। वह समझ गया था कि उसका काल आ गया था। पंकज ने बंदूक निकाली और सर्वेश्वर के सिर पर तान दी।

लेकिन इससे पहले कि पंकज ट्रिगर दबाता, सामन्त प्रताप ने शिवलिंग के पास रखे एक बड़े पत्थर को बड़ी ही बेरहमी से सर्वेश्वर के सिर पर मार दिया। जल्द ही, मंदिर की सीढ़ियों पर बहता हुआ दूध खूनी लाल रंग का हो गया। पंकज से अपने चचेरे भाई का कुचला हुआ सिर देखा नहीं गया। उसने ज़ोर से उल्टी कर दी।

यह थी सामन्त प्रताप के एक खूंखार अपराधी बनने की शुरुआत। कुछ ही सालों में, वह नवादा का कसाई कहलाने वाला था।

~

सामन्त प्रताप के अरमान बहुत बड़े थे। वह अपराध की दुनिया में अपना स्थान पक्का करना चाहता था।

'पंकज भाई, हमें और अच्छे हथियार चाहिए,' सामन्त प्रताप ने कहा।

पंकज ने सामन्त प्रताप की ओर देखकर कहा, 'ठीक तो है। हमारे काम के लिए ये देसी हथियार काफ़ी नहीं हैं क्या?'

'अरे, कुछ बड़ा सोचो। बढ़िया हथियारों से हम अपनी अलग ही पहचान बना पाएँगे,' सामन्त प्रताप ने जवाब दिया।

'ठीक है, पर हमें वैसे हथियार मिलेंगे कहाँ?'

'अरे, वह आप मेरे ऊपर छोड़ दो। रोज़ रात को इन्हीं सड़कों पर मिलते हैं वैसे हथियार,' सामन्त प्रताप ने मुस्कुराते हुए कहा।

~

पंकज को विश्वास नहीं हो रहा था। वे पुलिसवालों से उनकी राइफलें लूटने जा रहे थे। सामन्त प्रताप, पंकज और उसके आदमियों ने सड़कों का जायज़ा लिया। दूर-दूर तक कोई आदमी नहीं दिख रहा था। केवल उन दो कमज़ोर होम गार्ड के अलावा जो उस काली, ठंडी रात में गश्त लगा रहे थे। दोनों ठंड में काँप रहे थे और उन्होंने अपने हाथ अपने फटे हुए

Downloaded from www.The-Gyan.in

से अंजान उन दोनों होम गार्डों को घेर लिया और आसानी से दबोच लिया। बेचारे दोनों इतने सारों का मुकाबला नहीं कर सके।

सामन्त प्रताप ने लूटी हुई राइफलें जाँचीं और ख़ुश होकर मुस्कुराया।

'चलो, भागो! अब चलते हैं!' पंकज चिल्लाया।

'काहे, पंकज भाई? क्या जल्दी है?' सामन्त प्रताप दुष्टता से मुस्कुराया।

सामन्त प्रताप ने अपना प्यारा देसी कट्टा होम गार्डों पर ताना। वे दोनों बेचारे अपनी मौत को घूरते रह गये थे।

इससे पहले कि पंकज कुछ बोल पाता, सामन्त प्रताप ने दोनों पर गोली चला दी। पंकज दहल गया था। सामन्त प्रताप तो पागल लग रहा था। उस पर हत्या का जुनून सवार था।

अब सामन्त प्रताप के गैंग के पास पुलिस राइफलें भी थीं। पंकज सामन्त प्रताप से और अधिक सावधान रहने लगा था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि अब गैंग में सामन्त प्रताप की ही चलती थी। वह काफ़ी होशियार भी था, और अपनी बुद्धिमानी का प्रयोग आपराधिक गतिविधियों की योजनाएँ बनाने में करता था। साथ ही, वह था भी बहुत खतरनाक।

जब उसने देखा कि उसके खर्चे बढ़ रहे हैं, तो उसने लक्खीसराय के एक सराफा व्यापारी बेटे का अपहरण कर लिया। व्यापारी ने सामन्त प्रताप को पाँच लाख रुपए दिए और उसने उसके डर से पुलिस को ख़बर तक नहीं की। लोगों में उस बदमाश का इतना ख़ौफ़ था। भगवान का शुक्र है कि उसने व्यापारी के बच्चे को छोड़ दिया। गैंग में किसी को भी विश्वास नहीं हुआ। शायद सामन्त प्रताप उस दिन मूड में नहीं था। पर अगले ही दिन, सामन्त प्रताप ने बच्चे के चाचा को मार दिया—जब कि उसे फिरौती दे दी गई थी और बच्चे को छोड़ दिया गया था। पर शायद वह कसाई अपनी छवि धूमिल नहीं करना चाहता था।

~

नवादा एक छोटा-सा, पिछड़ा कस्बा था, जो आलू, बालू और एक ऐसे राजनेता के लिए प्रसिद्ध था जिनका नाम ऐसे ही तुकवाला था। सामन्त प्रताप को आलू में तो कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन वह बालू के व्यवसाय से ज़रूर जुड़ना चाहता था। रेत खनन बहुत लाभदायक धंधा था। सामन्त प्रताप का रुझान जल्द ही अवैध खनन की ओर हो गया। हाँ, अपहरण और जबरन वसूली के धंधे तो उसकी पहचान बने रहे थे। उसका गुट

Downloaded from www.The-Gyan.in

जल्द ही, बुरी छवि वाले राजनेताओं ने सामन्त प्रताप को लुभाना शुरू कर दिया। दिन-पर-दिन उसकी ताकत अपने लोगों के बीच बढ़ती जा रही थी।

कुमारबल्लभ उन दिनों एक स्थानीय नेता हुआ करता था। सामन्त प्रताप और वह एक ही कुल के थे।

'सामन्त भैया, हमारे साथ मिल जाओ। आप बहुत आगे जाओगे।' उसने सामन्त प्रताप से मिलने पर कहा।

'ज़रूर, कुमार भाई, बताइए मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'

'बस चुनाव जितवाना है।'

'आपकी जीत से मुझे क्या फायदा होगा?' उसने सीधे पूछा।

'सामन्त प्रताप, राजनीतिक सम्बन्ध होना तो हमेशा अच्छा होता है। तुम्हारे धंधे के लिए भी अच्छा रहेगा।'

सामन्त प्रताप मुस्कराया। कुमारबल्लभ सही कह रहा था।

सामन्त प्रताप ने अपने आदमियों को कहा, 'हमें पक्का करना है कि चुनाव में हमारे कुमारबल्लभ जी की जीत हो। पैसे की कोई चिंता नहीं है,' उसने अपने देसी कट्टे को घुमाते हुए कहा। गैंग के सारे सदस्यों ने एक साथ सिर हिलाया।

कुमारबल्लभ का एकमात्र प्रतिद्वंद्वी, केशो सिंह, अनोखी ही तरह का एक दबंग नेता था। वह सर्वेश्वर और पंकज के कुल का था। केशो के विरुद्ध सामन्त प्रताप की योजनाएँ पंकज को सहन नहीं होती थीं। बेशक़, पंकज कुछ महीनों से सामन्त प्रताप के साथ काम कर रहा था, पर यह तो बस आपसी सहूलियत के कारण था। सामन्त प्रताप पहले ही उससे कहीं ज़्यादा शक्तिशाली हो गया था। कुमारबल्लभ की जीत सामन्त प्रताप को 'किंगमेकर' बना देती।

पंकज के आदमी पहले ही उससे बहुत परेशान थे।

'तू दूसरे लोगों के साथ कैसे मिल गया?'

'अपने चचेरे भाई से बदला लेने के लिए तूने हमारे लोगों के साथ धोखा किया है। शर्म आनी चाहिए तुझे!'

पंकज धोखेबाज़ कहलाकर थक चुका था। उसे अपना खोया सम्मान वापस चाहिए था।

~

कुमारबल्लभ ने सामन्त प्रताप को स्थिति जाँचने के लिए दारू पीने बुलाया था। उसने

दियारा में काफ़ी रसूखवाला है।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘तो क्या तरीका है आपके जीतने का?’ सामन्त प्रताप ने पूछा।

कुमारबल्लभ क्षण भर के लिए रुका। उसने गिलास में जितनी अँग्रेजी व्हिस्की थी, एक घूँट में पी ली।

‘केशो सिंह को मारना होगा।’ कुमारबल्लभ ने सामन्त प्रताप की आँखों में आँखें डालकर कहा।

‘हा, हा! हो जाएगा पर आपको मुझसे एक वादा करना होगा।’

‘तुम्हारे लिए कुछ भी, भाई’, कुमारबल्लभ ने तुरंत कहा।

‘अगले चुनाव में मेरी भाभी को एमएलए बनाना होगा,’ सामन्त प्रताप ने कहा।

~

केशो सिंह बहुत प्रसन्न था। उसकी बहू ने अभी-अभी लड़के को जन्म दिया था।

‘चलो, अब तो मेरा उत्तराधिकारी आ गया है। अब मैं उसको अपनी राजनीतिक डोर सम्भालने के लिए तैयार करूँगा,’ केशो ने सोचा।

केशो को अपने बेटे अखिलेश से कभी कोई लगाव नहीं था। वह उसे बहुत कमज़ोर और दब्बू मानता था। उसकी सालों की दुत्कार और तिरस्कार के कारण उसका बेटा मानसिक रोगी बन गया था। ‘कहाँ शेर के यहाँ यह नालायक पैदा हुआ है?’ बेशक, इस लगातार मिलती लताड़ से अखिलेश को कोई लाभ नहीं होता था।

अपने पिता के गाँव जाते हुए रास्ते में केशो अपने पोते के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनाता रहा। अचानक, उसकी टाटा सफारी कर्कश आवाज के साथ झटके से रुक गई। केशो का सिर आगे की सीट से जा टकराया।

‘बुड़बक! तुझे गाड़ी चलना भी नहीं आता?’ नाराज़ केशो ड्राइवर पर चिल्लाया।

‘हुज़ूर, आगे नहीं जा सकते। रास्ते में पुल पर पेड़ गिरा हुआ है। हमारे आदमियों को उतरकर इसे हटाना होगा।’

‘तो हटाओ ना,’ केशो खीजा।

उसके दो बॉडी गार्ड बेमन से नीचे उतरे, पेड़ बहुत बड़ा था।

‘और आदमी चाहिए। दो-तीन आदमी और आओ,’ एक लम्बा-तगड़ा बॉडी गार्ड चिल्लाया।

पहरे के लिये साथ चल रही जीप में से दो आदमी और उतरे।

चारों आदमियों ने पेड़ उठाने की कोशिश की। उनकी मिलीजुली कोशिश से पेड़ हल्का-सा सरका। सामन्त प्रताप बिल्कुल यही चाहता था।

फटा और चारों बॉडी गार्डों के चीथड़े हो गए। उनके हाथ, पैर और धड़ अलग-अलग हवा में

Downloaded from www.The-Gyan.in

उड़कर, कई फीट दूर जाकर गिरे।

केशो बुरी तरह हिल गया था। उसके दिल में डर बैठ गया।

'रिवर्स ले, भाग,' वह जितना ऊँची आवाज़ में चिल्ला सकता था, ड्राइवर पर चिल्लाया।

ड्राइवर एसयूवी को जितनी तेज़ी से मोड़ सकता था, उसने मोड़ा लेकिन वह पीछे खड़ी जीप से टकरा गया। एसयूवी का ड्राइवर अपनी गाड़ी को बिलकुल नहीं हिला सकता था। पुल के दूसरे छोर पर एक टाटा 407 रास्ता रोके खड़ी थी।

सामन्त प्रताप और उसके आदमी टाटा 407 से नीचे कूदे। केशो के बाकी दो बॉडी गार्ड तो आसान निशाना थे। इससे पहले कि वे अपनी राइफलें साधते, वे मारे जा चुके थे।

सामन्त प्रताप एसयूवी की ओर आराम से चलता हुआ पहुँचा। केशो पसीने में तरबतर हो गया—उसे मालूम था कि उसकी मौत अब दस्तक दे रही थी। पर वह भी बिना लड़े हार नहीं मानना चाहता था।

सामन्त प्रताप ने उसकी खिड़की खटखटाई।

'केशो, तेरा टाइम खत्म,' सामन्त प्रताप हँसा।

एक झटके में केशो ने अपनी बंदूक निकाली और ट्रिगर दबाया।

सामन्त प्रताप चौंक गया। उसे उम्मीद नहीं थी कि केशो के पास कोई हथियार भी होगा।

लेकिन पिस्तौल जाम हो गई। शायद केशो ने काफ़ी समय से उसकी सर्विस नहीं कराई थी।

सामन्त प्रताप मुस्कुराया। वह जानता था, उसका भाग्य एक बार फिर उसके साथ था।

'और ले लाइसेंसी तमंचा' सामन्त प्रताप ने व्यंग कसा।

सामन्त प्रताप की बंदूक से निकली गोलियाँ केशो की छाती पर लगते ही वह वहीं ढेर हो गया।

सामन्त प्रताप ने फिर ड्राइवर की कनपट्टी पर बंदूक तानी।

'यह क्या कर रहे हो? मैंने ही तो तुम्हें केशो सर का कार्यक्रम बताया था। मैंने तो तुम्हारी सारी बताई बातों को माना,' ड्राइवर गिड़गिड़ाया।

'तो अब मेरे अंतिम निर्देश का भी पालन कर। मर जा!' सामन्त प्रताप ने कुटिलता से कहा।

सामन्त प्रताप उन्मत्त होकर हँसा। उसके आदमी देखते रह गए। उस दिन आठ लोगों को मौत के घाट उतारा गया था।

उस दिन से सामन्त प्रताप नवादा और उसके आस-पास के इलाके में जुर्म का एकछत्र राजा बन गया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

सामन्त प्रताप ने अपने बारे में कई कथाएँ बुन ली थीं। उसकी बर्बरता की कोई सीमा नहीं थी। उसे हत्याओं का दृश्य बनाने का बहुत शौक था। बॉलीवुड की मसालेदार ऐक्शन फिल्मों की तरह वह लोगों के घर में घुसता, उनको घसीटकर बाहर निकालता और पूरी जनता के सामने, एक-एक करके उनके हाथ-पाँव तोड़ता, फिर दाँत तोड़ता और अंत में सिर को कुचल कर बर्बरता से मार देता।

सामन्त प्रताप हथियार का इस्तेमाल बहुत कम करता था। हालाँकि उसके चारों ओर एके-47 थामे हुए बदमाश खड़े होते थे, पर उसे देसी कट्टा ही पसंद था। देसी गन चलाने में उसे जाने कहाँ की खुशी मिलती थी।

हर हत्या के बाद सामन्त प्रताप का बोलबाला बढ़ता जा रहा था। जितना बेरहम उसका करतब होता, उतने ही उसके प्रशंसक और चेले बढ़ते रहते। बिहार में हीरो-पूजन का एक अजीब-सा रिवाज रहा है। जब कोई या तो अत्यंत अच्छा होता या अत्यंत बुरा होता, तो लोग उसे पूजने लगते। जहाँ हर प्रसिद्ध आईपीएस ऑफ़िसर का सम्मान लोग करते थे, वहीं दूसरी ओर सामन्त प्रताप जैसा एक खूंखार अपराधी भी लोगों को प्रभावित करता रहता। और जैसे-जैसे अन्य लोग, विशेष तौर पर बेरोज़गार युवा, उसके गुट में शामिल होते गए, उसका आपराधिक साम्राज्य बढ़ता गया। सामन्त प्रताप का हाथ हर धंधे में था—चाहे वह जबरन वसूली हो, अपहरण हो या अवैध खनन। राजनीति उसके लिए एक स्वाभाविक अगला पड़ाव था। स्थानीय राजनेता उसके पास अपने उम्मीदवारों के लिए समर्थन की माँग करने जाते। सामन्त प्रताप अपने इस 'किंगमेकर' की भूमिका से बहुत ख़ुश था। वह इतना डरावना था कि जिसको उसका समर्थन प्राप्त होता, वह लगभग बिना किसी विरोध के जीत जाता था। यदि और कोई सामन्त प्रताप के उम्मीदवार के खिलाफ खड़ा होने का प्रयास करता भी था, तो उसे भयानक तरह से रास्ते से हटा दिया जाता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

10
लोहा ही लोहे को काट सकता है

शहर का एसएचओ होने के नाते, राजेश चरण मुझे रोज़ सुबह रिपोर्ट देने आता था। मेरे पूर्वाधिकारियों को उसने अपने व्यक्तित्व और काम से काफ़ी प्रभावित किया था। पर पता नहीं क्यों, वह मुझे कभी पसंद नहीं आया। मुझे उसका व्यवहार कुछ अटपटा लगता था। मेरी छठी इंद्री हमेशा से बहुत सटीक रही है, जिसके कारण मैं जल्द ही लोगों को समझ लेता हूँ। मैं आशा कर रहा था कि इस बार मैं गलत हो जाऊँ।

'अरे अमित, मेरे दोस्त, मुझे तुम पर बड़ा गर्व है। यार, राजेश मेरा अपना भाई है। तुम भी उसको अपने भाई की तरह ही समझो,' मेरे बैचमेट, अनुपम चरण ने जोशिले अंदाज़ में कहा था। ऐसा लग रहा था कि उसको उम्मीद थी कि मैं राजेश के प्रति अधिक उदार और सौहार्दपूर्ण रहूँगा, क्योंकि अब मैं उसका बॉस था। यह काफ़ी स्वाभाविक अपेक्षा थी।

~

'सर, आपका मकान तैयार हो रहा है। मैंने ठेकेदार को सबसे अच्छा डिस्टेम्पर लगाने को कहा है। घर की सजावट को लेकर क्या मैडम की कोई ख़ास पसंद है?' राजेश ने मुस्कुराते हुए पूछा। उसे पता था कि उसके भाई ने मुझे फोन किया था। उसे लगा कि मुझसे सम्बन्ध गहरे करने के लिए यह समय सही था। मैंने शिष्टता मगर गम्भीर लहजे में उसे कहा कि वह पुलिस कार्य पर ध्यान दे और रेनोवेशन का काम ठेकेदार पर छोड़ दे।

असल में, मकान में मूल रूप से ढाई कमरे थे और एक बाथरूम था। क्योंकि मेरा परिवार आने ही वाला था, मैं रोज़ शाम को मरम्मत के काम को जाँचने-देखने जाता था। मकान बुरी हालत में था, पर मुझे उम्मीद थी कि मैं उसका कायापलट कर पाऊँगा। यह मेरे बाद आनेवाले लोगों के लिए मेरा एक छोटा-सा योगदान होगा—रहने के लिए एक छोटा मगर अच्छा मकान। मेरा दूसरा योगदान होता सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी। मुझे भरोसा था कि ये दोनों परिणाम मुझे मिल जाएँगे।

भरा पड़ा था। कुमार सर ने स्वयं उन सभी गाँवों में जहाँ सामन्त प्रताप के हमले होने की

Downloaded from www.The-Gyan.in

संभावना थी, वहाँ अतिरिक्त बल तैनात किए थे। कई पुलिस पार्टियाँ सामन्त प्रताप के अड्डों पर छापा मारने के लिए लगाई गई थीं। उसके कुछ सहयोगियों को गिरफ्तार भी कर लिया गया था, परंतु फिर भी मैं इस तरह की 'सामान्य' पुलिस प्रतिक्रिया से संतुष्ट नहीं था। मुझे पता था कि कुछ समय में पुलिस कार्रवाई ठंडी पड़ जाएगी और छोटे-मोटे इन गैंग सदस्यों की गिरफ्तारी से सामन्त प्रताप पर कोई असर नहीं पड़ेगा। इस बार उसके गिरोह का पूर्णतः सफाया करना ज़रूरी था, जो तभी हो सकता है, जब उसके कुछ भरोसेमंद साथी, जैसे हॉर्लिक्स, पकड़े जाएँ या फिर ख़ुद सामन्त प्रताप। नहीं तो उसका गैंग एक हाइड्रा (बहुत सिरों वाला सांप) की तरह बढ़ता ही जाएगा।

उसके कुल और बदले के डर, दोनों के कारण सामन्त प्रताप को स्थानीय निवासियों का बहुत समर्थन मिला हुआ था। जैसे ही पुलिस की टीम थाने से निकलती थी, सामन्त प्रताप को सतर्क कर दिया जाता था। जो आए दिन ज़िले में प्रेस कांफ्रेंस बुलाता रहता था, उस जैसे व्यक्ति के लिए पुलिस की योजनाएँ पता करना कोई मुश्किल काम नहीं था। हमारे विभाग में भी उसके खबरी थे।

मुझे अगर सामन्त प्रताप को पकड़ना है तो मुझे उसी की तरह सोचना सीखना था। कई बार तो मैं सोचता हूँ कि मैं भी सफल अपराधी बन सकता था। जब मैं बच्चा था तब ऐसा एक ज्योतिषी ने मेरी माँ से कहा भी था। 'माताजी आपका बेटा या तो अपराधी बनेगा या पुलिसवाला! इसके ग्रह ऐसे हैं कि यह अपराध की दुनिया के संपर्क में रहेगा।'

इसीलिये जब मैंने आईआईटी में बुरा प्रदर्शन किया तो मेरी माताजी मेरे भविष्य को लेकर बहुत चिंतित हो गई थीं। मेरे पास तब न तो नौकरी थी, और न ही लोगों को विश्वास था कि मैं सिविल सेवा परीक्षा में पास हो पाऊँगा। इसलिए उन्होंने मेरी जन्म-पत्री कई ज्योतषियों को दिखानी शुरू कर दी थी। ज़ाहिर सी बात है कि जब मैं भारतीय पुलिस सेवा में भर्ती हुआ, तो मेरी माँ को बहुत राहत मिली।

~

अचानक मेरी पीठ और कूल्हे में दर्द उठा। 'उफ्फ,' मैं नीली जिप्सी में बैठने से पहले भुनभुनाया।

मैंने अपने ड्राइवर को कसार पुलिस थाने ले चलने को कहा।

एक बिना दाढ़ी बनाया हुआ आदमी पुलिस थाने के बाहर मेरा इंतज़ार कर रहा था—चिलचिलाती धूप में अधिक समय बिताने के कारण उसकी त्वचा साँवली हो गई थी। यह था रंजन कुमार, कसार पुलिस थाने का पूर्व एसएचओ जिसको पुलिस मुख्यालय ने सस्पेंड

दूसरी सामूहिक हत्या उसी के अधिकार क्षेत्र में हुई थी। मैं लंगड़ाकर जिप्सी से उतरा और

Downloaded from www.The-Gyan.in

जैसे-तैसे सीधा खड़ा हुआ। रंजन सादे कपड़ों में था, क्योंकि सस्पेन्शन के दौरान पुलिस की वर्दी पहनना मना होता है। वह थाने में मालखाने और सारे मामलों का चार्ज सौंपने आया था।

रंजन ने सावधान खड़े होकर मुझे सलामी दी—मैं इस विपत्ति के समय में भी उसके अनुशासन दिखाने से प्रभावित हुआ। मैंने बहुत मुश्किल से उसे जवाब में सलामी दी। मेरा दर्द काफ़ी बढ़ गया था।

मैंने अपने ड्राइवर और बॉडी गार्ड को जाने का इशारा किया, मैं रंजन से अकेले बात करना चाहता था। मैं बहुत मुश्किल से अपने दर्द को सहन कर पा रहा था, इसलिए मैं जिप्सी के बोनट के सहारे खड़ा हो गया। रंजन कुछ तनाव में लग रहा था। आख़िर एसपी एक निलंबित और अपमानित एसआई से मिलने क्यों आया था?

'रंजन, मैं राम दुलार और उसके परिवार की हत्या का असली कारण जानना चाहता हूँ। हर छोटी से छोटी बारीकी।'

'सर, मैं उसके बारे में ज़्यादा नहीं जानता। सब कुछ अचानक ही हो गया।'

'मुझे पता है, कृष्णा और राजू ने लक्खा को कुछ दिन पहले पीटा था। सामन्त प्रताप के पाँच आदमियों की हत्या के कारण उनका पलड़ा और भारी हो गया। इसलिए सामन्त प्रताप ने गुस्से में आकर राम दुलार और उसके परिवार की बेरहमी से हत्या कर दी। देखो, सरकार ने मुझे और डीआईजी साहब को यहाँ केवल इसलिए ट्रान्सफर किया है ताकि हम सामन्त प्रताप को गिरफ्तार कर लें। यह हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस मिशन में तुम्हें हमारी मदद करनी होगी।'

'लेकिन सर, मैं क्या कर सकता हूँ? मैं तो साधारण एसआई हूँ, और वह भी निलंबित,' निराश रंजन बुदबुदाया।

'रंजन, मैं तुम्हारी दक्षता जानता हूँ। तुम बहुत काबिल ऑफ़िसर हो और तुम्हारे खबरियों का जाल भी बहुत अच्छा है। और मैं जानता हूँ कि राजू और कृष्णा से तुम्हारे सम्बन्ध भी अच्छे हैं,' मैंने उसे भरोसे में लेते हुए कहा।

'नहीं-नहीं, सर। भला मैं क्यों राजू और कृष्णा जैसे बुरे लोगों से सम्बन्ध बनाऊँगा?' रंजन ने साफ इंकार कर दिया।

'ऐसा है, मैंने इस सर्विस में इतने साल बिता लिए हैं कि मैं समझ सकूँ कि कुछ लोगों को सूत्रों के रूप में इस्तेमाल करने के लिए उनसे अच्छे सम्बन्ध बनाने पड़ते हैं। ऐसे लोगों ने पहले कोई अपराध न भी किया हो तो भी कम से कम उनका किसी संदिग्ध गतिविधियों में हाथ होता ही है। मैंने भी अपनी पहले की कई पोस्टिंग में ऐसे लोगों से अपराधियों के

कि एक आम, इज़्ज़तदार आदमी पुलिस का खबरी बनेगा?'

रंजन सिर झुकाए खड़ा रहा, वह कुछ बोलना नहीं चाहता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

अब बारी थी, मेरे इक्के की। जिसे अब खोलने का समय आ गया था।

'रंजन, तुम सस्पेंशन में हो। तुम्हारे खिलाफ़ कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई होगी। तुम्हारा करियर भी दाँव पर है। अगर तुम सामन्त प्रताप को पकड़ने में मेरी मदद करोगे, तो मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारा निलंबन रद्द हो जाएगा और तुम्हें अपनी नौकरी भी पूरे आदर-सम्मान के साथ लौटा दी जाएगी।'

रंजन की आँखें पहली बार चमक उठीं। मुझे मालूम था कि उसे पैसे की कमी थी और उसकी पत्नी डिप्रेशन में थी। उसका सम्मान छिन जाने के बाद उसके आस-पास के सब लोग बदल गए थे। मुझसे बेहतर यह कौन समझ सकता था? कुछ समय पहले मैं भी तो लगभग ऐसे ही अनुभव से गुज़रा था।

'ठीक है सर, मैं आपके साथ हूँ। वैसे भी मैं सामन्त प्रताप से नफरत करता हूँ और मुझे पता है कि आप अपने अधीनस्थ लोगों का हमेशा समर्थन करते हैं। बताइए, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?' रंजन ने कहा।

मैं बस मुस्कुराया और मैंने भागलपुर ज़ोन के आईजी, एमए हुसैन सर को कॉल किया। एक सख़्त, कोई बकवास न करने वाले अपनी अलग तरह के स्वभाव के ऑफ़िसर, जो कठोर निर्णय लेने के लिए जाने जाते थे।

'सर, शेखपुरा से मैं अमित लोढ़ा बोल रहा हूँ। हाँ, सर, मैं काम पर हूँ। मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि जल्द ही सामन्त प्रताप सलाखों के पीछे होगा। सर, मैं आपका बहुत आभारी रहूँगा अगर आप मेरा एक निवेदन स्वीकार कर लें। सामन्त प्रताप को पकड़ने के लिए मैं एक ऑफ़िसर की सेवाएँ लूँगा। आने वाले समय में मैं उसके लिए आपसे एक अहसान माँगना चाहूँगा।'

हुसैन सर ने ध्यान से मेरी बात सुनी। कुछ देर सन्नाटा रहा।

'ठीक है, अमित। उम्मीद है कि तुम्हारा निवेदन सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी से बड़ा नहीं होगा।'

'बिलकुल नहीं, सर। बहुत छोटा-सा मामला है।' मैं मुस्कुरा रहा था जब हुसैन सर ने फोन काटा। रंजन और मुझे, दोनों को पता था कि आईजी एमए हुसैन सर अपनी बात के पक्के थे। पुलिसकर्मियों के बीच शोहरत की बातें बहुत जल्दी फैल जाती हैं।

'मैं राजू और कृष्णा से मिलना चाहता हूँ। एक-दो दिन में उन्हें मेरे घर ले आना,' मैंने रंजन को कहा।

'सर, पक्का? मतलब वे दोनों संदिग्ध माने जाते हैं, कहीं उनसे मिलने से आपकी छवि खराब न हो जाए।'

ही लोहे को काट सकता है!' मैंने रंजन की आंखों में झांक कर कहा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

11
‘आप सस्पेंड हो गए हैं’

बिहार आने से पहले, रंजन ने झारखंड के नक्सल ज़िले, लोहरदग्गा में काम किया था। बिहार के शेखपुरा में आने पर उसने सोचा था कि कुछ शांति मिलेगी। लोहरदग्गा के जंगलों में नक्सलियों के साथ उसकी काफी मुठभेड़ हो चुकी थी। उसे बिलकुल भी आशा नहीं थी कि शेखपुरा में उसका तजुर्बा सबसे दर्दनाक होने जा रहा था।

रंजन को कसार पुलिस थाने का एसएचओ नियुक्त किया गया। कसार में सामन्त प्रताप का काफी दबदबा था और रंजन के क्षेत्र में उसकी बात को ही कानून माना जाता था। रंजन के एसएचओ बनने के दो दिन बाद ही सामन्त प्रताप ने एक खबरी को भेजा।

‘हुज़ूर, सामन्त प्रताप भैया ने आपको प्रणाम भेजा है। हमें आपकी सेवा में न्यूज़पेपर, चिकन और मटन की सप्लाई. . . आपको जो कुछ चाहिए हो, देने का मौका दें!’ खबरी ने मुस्कुराते हुए कहा।

‘इस थाने में दोबारा घुसने की कोशिश भी मत करना! मैं अखबार के लिए ढाई सौ रुपए महीना दे सकता हूँ। चले जाओ यहाँ से!’ रंजन ने उसे भगाते हुए दहाड़कर कहा।

रंजन अब सामन्त प्रताप को सलाखों के पीछे डालने पर उतारू हो गया। जो पेशकश उसने की थी, वह पुलिस विभाग का अपमान था। लोगों की बातों से रंजन को यह तो समझ आ ही गया था कि सामन्त प्रताप कोई मामूली अपराधी नहीं था। जहाँ तक उसकी नज़र जाती थी, वह उस पूरे क्षेत्र का निर्विवाद राजा था।

रंजन ने अपने विकल्पों का जायज़ा लिया। उसके पास आदमी कम थे—केवल चार सिपाही थे। एक न एक सिपाही हमेशा छुट्टी पर रहता था। रंजन ने पहले वाले एक एसपी से कुछ और बल की माँग की थी, ताकि वह सामन्त प्रताप और उसके गैंग पर रेड कर सके।

‘रंजन, आप इसी फोर्स से काम चलाइए। सॉरी, मेरे पास और जवान नहीं हैं,’ एसपी ने दोटूक कह दिया था।

सरकार ने एक प्रभावी योजना बनाई, जिसके तहत पूर्व-आर्मी जवानों को कॉन्ट्रैक्ट पर

Downloaded from www.The-Gyan.in

बिहार पुलिस में शामिल कर लिया गया। इन पूर्व-आर्मी जवानों को स्पेशल ऑक्ज़िलरी पुलिसमैन (एसएपी) कहा गया और उनसे बिहार पुलिस की क्षमता काफी बढ़ गई।

किस्मत से, पिछले चुनावों के दौरान रंजन को अपने क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए केंद्रीय रिज़र्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के अफसरों की एक कंपनी का सहारा मिल गया था। इससे उसे सामन्त प्रताप पर पूरे बल से धावा बोलने का अवसर मिला। यहाँ तक कि एक भयंकर टकराव के बाद, वह सामन्त प्रताप को पकड़ते-पकड़ते रह गया था। जल्द ही एक निडर ऑफ़िसर के रूप में वह पूरे शेखपुरा में मशहूर हो गया। तभी राजू और कृष्णा उसके पास आए थे।

'बड़ा बाबू, हम दोनों का एक ही उद्देश्य है। सामन्त प्रताप की मौत,' कृष्णा ने कहा था।

'तुम पुलिस की सहायता क्यों करना चाहते हो?' रंजन ने कुछ शक करते हुए पूछा।

'सर, मेरे ख्याल से राजू बताएगा,' कृष्णा ने राजू की ओर देखते हुए कहा।

राजू की आँखों में आँसू भर आए।

'सर, यह सच है कि कुछ महीनों पहले तक हम सामन्त प्रताप को गरीबों का मसीहा मानते थे। हम उसे अपना नेता मानकर उसका साथ भी देते थे। पार्लियामेंट के चुनाव में उसने हम सबको रजनीश डॉन को वोट देने के लिए कहा, जो हमारी ही जाति का था,' राजू ने कहा।

रजनीश डॉन एसबीआई के लिये प्रोबेशनरी ऑफिसर्ज़ एग्ज़ाम, सीएटी और आईआईएम प्रवेश परीक्षा जैसे बड़े इम्तिहानों के प्रश्न-पत्र लीक करने के लिए कुख्यात था। कई डॉक्टर अपने बच्चों का दाखिला मेडिकल कॉलेज में कराने लिए उसके पास जाते थे। आखिरकार, कुछ डॉक्टर अपने नर्सिंग होम और अस्पतालों में भारी-भरकम पैसा लगाते हैं। तो उनके 'टैलेंटेड' बच्चे अच्छे कॉलेजों की डिग्री के बिना उन अस्पतालों को कैसे चलाएँगे? ऐसी अफवाहें भी थीं कि उसने कुछ अधीनस्थ सरकारी अफसरों की सहायता भी की थी। यहाँ तक कि सीबीआई ने उसे पकड़ने के लिए एक स्पेशल टास्क फोर्स गठित की थी। मैंने भी उसकी गिरफ्तारी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, क्योंकि रजनीश डॉन नालंदा का था। उसका ऐसा रुतबा था कि 2004 में बेगूसराय चुनावों में उसे बिहार के पूर्व डीजीपी पीपी झा से भी ज्यादा वोट मिले थे।

राजू ने आगे कहा, 'पर सामन्त प्रताप बहुत लालची आदमी निकला। एक और ताकतवर उम्मीदवार ने उसे हमारे वोट अपनी ओर मोड़ने के लिये ज़्यादा लोभ दिखाया, तो वह तुरंत मान गया। मेरे भाई ने इसका जमकर विरोध किया। हम अपने ही लोगों के

'सामन्त प्रताप को किसी भी तरह का मतभेद बिल्कुल पसंद नहीं था; उसे किसी का भी उसके खिलाफ़ बोलना पसंद नहीं था। अगले दिन राजू के भाई की लाश खेतों में मिली।

Downloaded from www.The-Gyan.in

उसके कानों के पर्दे फाड़ दिए गए थे और उसकी जीभ भी काट दी गई थी,' कृष्णा ने कहानी ख़त्म की।

राजू सुबुकने लगा। 'उसने न केवल अपने कई आदमियों की हत्या की है, बल्कि जाने कितनी औरतों और लड़कियों का शोषण भी किया है। किसी की भी उसके खिलाफ एफआईआर करने की हिम्मत नहीं है। वह तो अपनी ही मौत का वारंट साइन करने जैसे होगा।'

'सामन्त प्रताप को आदमियों को मारने का शौक है। हर कांड बस उसका रुतबा और बढ़ाता है।' कृष्णा ने आगे कहा।

रंजन को विश्वास हो गया था कि राजू और कृष्णा ही सामन्त प्रताप को पकड़ने का टिकट हैं। उसने उनसे कहा कि वे सामन्त प्रताप के बारे में जो कुछ जानते हैं, वह उसे बताते रहें। 'उसे ख़त्म करने के लिए तुम जो भी कर सकते हो, करो। मैं तुम्हें अपना पूरा सहयोग दूँगा,' रंजन ने उन्हें भरोसा दिलाते हुए कहा।

कुछ दिनों बाद, सामन्त प्रताप के एक साथी, लाखा ने राम दुलार की बहन को छेड़ा। भड़क कर राम दुलार राजू और कृष्णा के पास उनसे सहायता माँगने के लिए आया। अब समय आ गया था कि सामन्त प्रताप और उसके गिरोह के सदस्यों को सबक सिखाया जाए। उन्होंने लाखा को अचानक पकड़ लिया और बुरी तरह से पीटा। इस 'सफलता' से राजू और उसके आदमियों के हौसले और बढ़ गए। उन्होंने सामन्त प्रताप के गुट पर हमला बोलने का मौका ढूँढ़ना शुरू कर दिया।

कुछ दिन बाद, राम दुलार ने उन्हें खबर दी कि सामन्त प्रताप के करीबी साथी मन्निपुर गाँव में मस्ती कर रहे थे। मौका देखकर, कृष्णा और राजू के कुछ साथी उस छत पर चढ़ गए जहाँ वे बदमाश दारू पीकर सारी रात मौज मनाने के बाद धुत्त पड़े सो रहे थे, और उन्होंने उन सबको नींद में ही मौत के घाट उतार दिया। सामन्त प्रताप के पाँच सबसे अहम आदमी एक ही बार में मारे गए।

सामन्त प्रताप गुस्से के मारे उबलने लगा। उसने राम दुलार को सबक सिखाने की ठान ली थी।

~

रंजन दोपहर का खाना खाने बैठ ही रहा था, जब उसे एक कॉल आई। 'बड़ा बाबू, हम सामन्त प्रताप बोल रहे हैं। बहुत शौक है लाशें गिनने का? जाओ, मन्निपुर गाँव में बहुत सारी लाशें आपका इंतज़ार कर रही हैं।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

गाँव में सन्नाटा छाया हुआ था। कोई भी आदमी कुछ नहीं बोल रहा था। सब लोग बुरी तरह सहमे हुए थे। सामन्त प्रताप ने एक ही रात में इतने लोगों की जानें जो छीन ली थीं।

विवाह वाले पंडाल की ज़मीन पूरी तरह खून से सनी हुई थी। रंजन और उसके सिपाही इस दृश्य को देखकर आतंकित हो गए। पहली लाश का सिर नहीं था। एक औरत और उसका बच्चा उसके पास बैठे थे। उनके आँसू शायद सूख चुके थे।

रंजन और उसकी टीम ने बिखरी हुई लाशों को इकट्ठा करके थाने के कमांडर की जीप में डालना शुरू किया। कुछ आगे चलने के बाद, रंजन एक आठ माह की गर्भवती महिला की लाश के पास पहुँचा। एक छोटा सा लड़का उसके पार्थिव देह से लिपटा हुआ था, जो शायद उसका बेटा था। रंजन जैसा मजबूत दिल वाला पुलिसवाला भी इस दृश्य को देखकर अपनी भावनाओं पर काबू नहीं कर पाया।

आधे घंटे में वह पूरा क्षेत्र पुलिसवालों से भर गया। एसपी और डीएम भी घटनास्थल पर आ पहुँचे थे। 'सर, लाशें हटा लेते हैं, कल सुबह तक यहाँ कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगड़ सकती है,' रंजन ने एसपी से निवेदन किया। ऐसे मामलों में लाशें हटाई जाएं, अक्सर उससे पहले ही लोग स्थानीय प्रशासन से मुआवज़ा और कार्यवाही की माँग करने लगते थे।

एसपी विजय करण तो इस भयावह नरसंहार से सदमे में थे। वह तो दो दिन पहले ही डीएसपी से एसपी बने थे। अपने रिटायरमेंट के कुछ महीने पहले किसी जिले का एसपी बनकर बहुत खुश थे। पर अब वह सारी खुशी गायब हो गई थी, वह बिल्कुल हताश हो गए थे।

डीएम एक सौम्य व्यक्ति थे, वह समझ गए कि एसपी कुछ बोलने की हालत में नहीं थे तो बीच में बोल पड़े।

'नहीं-नहीं। ज़बरदस्ती लाशें मत उठाओ, शेखपुरा के लोगों का समर्थन मुझे मिला हुआ है। मैं गाँव वालों से बात करके कल सुबह लाशों को मुंगेर भिजवा दूँगा।'

शेखपुरा इतना पिछड़ा हुआ था कि पोस्टमॉर्टम के लिए भी लाशों को पास के जिले, मुंगेर भेजना पड़ता था।

मुख्यमंत्री (सीएम) बुरी तरह नाराज हो उठे। वह एक गम्भीर स्वभाव के व्यक्ति थे जिन्होंने सुशासन के वादे पर ही सरकार बनाई थी। यह नरसंहार उनकी सरकार के लिए बहुत बड़ी चुनौती बनकर आया था।

सीएम, गृह सचिव और डीजीपी हेलिकॉप्टर से दोनों हत्याकांडों के स्थानों पर पहुँचे। दोनों स्थानों पर भारी भीड़ जमा हो गई थी। भीड़ को संभालने में पुलिस को बहुत कठिनाई

खराब करने का यह मौका खोना नहीं चाहते थे। उन्होंने सीएम के आते ही चिल्लाना शुरू कर दिया 'बड़ा बाबू, मुर्दाबाद, मुर्दाबाद! कसार एसएचओ रंजन को सस्पेंड करो! इन सारी

Downloaded from www.The-Gyan.in

हत्याओं का ज़िम्मेदार वही है!' सीएम एक अनुभवी प्रशासक थे, वह समय की गम्भीरता को समझते हुए चुप रहे।

मुख्यमंत्री ने आदेश दिया, 'शवों का पोस्टमॉर्टम यहीं गाँव में करवाओ। मुंगेर के सिविल अस्पताल से डॉक्टरों की टीम बुलाओ! उसके बाद, यह ध्यान रहे कि शवों का अंतिम संस्कार ठीक ढंग से हो जाए।'

जैसे ही मुख्यमंत्री हेलिकॉप्टर में चढ़ने लगे, एक बेबाक प्रेस रेपोर्टर ने पूछा, 'सर आप जिले के प्रशासन के खिलाफ क्या ऐक्शन लेंगे?'

सीएम ने उसे गुस्से से घूरा और कहा, 'आज रात 7:30 बजे की खबरें देख लेना। आपको पता चल जाएगा।'

शाम तक डीआईजी, डीएम और एसपी को तुरंत उनके पदों से हटा दिया गया।

~

रंजन सारी रात सो नहीं पाया। वह लगभग चौबीस घंटे बाद, देर शाम को पुलिस थाने पहुँचा। उसने खून से लथपथ अपनी यूनिफॉर्म उतारी और बाल्टी में डाल दी। फिर डिटर्जेंट की एक पूरी थैली उसमें खाली कर दी।

उसने राँची में अपनी पत्नी को फोन किया। वह हमेशा उसके लिए चिंतित रहता था, क्योंकि वह अक्सर डिप्रेशन में चली जाती थी। 'लगता है, हमको सस्पेंड करेंगे,' रंजन ने निराश होकर कहा।

'करेंगे नहीं, कर दिया है। खबर सारे चैनलों पर आ रही है,' पत्नी ने उत्तर दिया।

'चलो अच्छा है। मैंने बहुत दिनों से तुम्हारे साथ ठीक से समय नहीं बिताया है। चलो, हम छुट्टी मनाने दिल्ली चलते हैं,' रंजन ने कहा। उसे पिछले कुछ महीनों की थकान अचानक महसूस होने लगी थी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

12
‘तुम सब हिजड़े हो!’

मैं ‘सर्किट हाउस’ लौटा और सीधा कुमार सर को रिपोर्ट देने उनके पास पहुँचा।

‘कैसा रहा तुम्हारा दिन? आशा करता हूँ कि तुमने केस पर काम करना शुरू कर दिया होगा,’ कुमार सर ने कहा—वे बनियान और निक्कर पहने आराम से बैठे हुए थे। असहनीय गर्मी और उमस की वजह से उन्हें सिर से पैर तक पसीना आ रहा था। पर उन्होंने एक बार भी शिकायत नहीं की। शेखपुरा में उनके होने से मुझे बहुत हौसला मिल रहा था। मैंने रंजन के साथ अपनी मुलाकात के बारे में बताया, लेकिन ज़्यादा विस्तार से नहीं।

‘अमित, मैं तो कहूँगा तुम गाँव का भी दौरा कर लो। तुम हत्याओं के बारे में और जान पाओगे। तुम्हारे जाने से लोगों का गुस्सा कुछ कम होगा और उनमें थोड़ा भरोसा जगेगा।’

‘ठीक है, सर, ज़रूर।’

मैं उन्हें सलामी देकर बाथरूम के चूहों और छिपकलियों से डरता हुआ अपने कमरे में चला गया। लेकिन इस बार मेरे लिए एक और भी बड़ा झटका तैयार था—एक बड़ा-सा काला कोबरा मेरे कमरे के रोशनदान पर चुपचाप रेंग रहा था!

~

लोगों को आश्चर्य होगा मगर मैं साँपों से नहीं डरता। मुझे उनका लालित्य, फुर्तीलापन और ताकत बहुत सम्मोहक लगते थे। मैंने शांति से गार्ड को बुलाया और उसे कहा कि साँप को वहाँ से ले जाने के लिए वह किसी एक्स्पर्ट को ले आए। मैंने निर्देश दिया कि साँप को चोट नहीं आनी चाहिए। गार्ड ने ज़ोरों से सिर हिलाया। वह ज़रूर सोच रहा होगा कि मैं कोई सिरफिरा हूँ जो छिपकलियों से इतना डर रहा था, उसे अपने कमरे में आए इस कोबरा का बिल्कुल डर नहीं।

कुछ देर बाद लैंडलाइन पर फोन आया, ‘हेलो, कैसे हैं आप? मैं इतनी खुश हूँ कि कल हम सब आपके पास होंगे। अवि आपको बहुत याद करता है। ऐश्वर्या ने भी इतने दिनों से

Downloaded from www.The-Gyan.in

हमारा घर करीब-करीब तैयार था और मैंने अपने परिवार को शेखपुरा बुलाने का तय कर लिया था। तानू बहुत ही कुशल माँ थी, जो अकेले दोनों बच्चों को भी संभाल रही थी और उनकी सत्तर-वर्षीय आया, मंजु देवी को भी! भगवान का शुक्र है कि वह आया अभी तक ज़िंदा थी...

मैं एक कठिन यात्रा के बाद मन्निपुर गाँव पहुँचा। पूरा गाँव अभी भी सुनसान और भयावह सा दिख रहा था, शायद उन नृशंस हत्याओं के कारण। आखिर उस गाँव ने शादी के एक समारोह को मातम में बदलते देखा था। पुलिस अफसर होने के नाते मैं कई मौका-ए-वारदात पर जा चुका था और लाशों व उनके चारों तरफ रिश्तेदारों का रोना-पीटना देखने का आदी हो गया था। अन्य लोगों के लिए ये दृश्य काफी व्याकुल कर देने वाले होते हैं, पर हमें इनकी आदत पड़ जाती है। हम अपना काम उस सर्जन की तरह करते हैं, जो मरणासन्न मरीजों का ऑपरेशन करता है।

पर यह तो एकदम अलग ही अनुभव था। वहाँ एक जानलेवा सन्नाटा पसरा हुआ था, जो सामन्त प्रताप के खूनी कदमों की गवाही दे रहा था।

मैं राम दुलार के टूटे-फूटे घर में गया और आंगन का निरीक्षण किया। कोने में एक कमज़ोर-सी बूढ़ी औरत चारपाई पर लेटी थी।

मैंने एक स्टूल पर बैठकर उनके साथ बातचीत करने की कोशिश की।

'माँ जी, क्या हुआ था उस रात? आपके नुकसान का मुझे बहुत दुख है।'

उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और ज़ोर-ज़ोर से ऐसे काँपने लगीं, जैसे कि उन्हें दौरा पड़ रहा हो।

'नहीं, तुम्हें कोई दुख नहीं है। मेरे पूरे परिवार की बेरहमी से हत्या कर दी गई है। मेरा बेटा, मेरा पोता, सब के सब मार दिए गए। मेरा ख़ानदान ख़त्म हो गया है। सब कुछ पुलिस की नाकामी की वजह से। तुम मेरे बच्चों को वापस ला सकते हो? कुछ किया भी है पुलिस ने, सिवाय कुछ लोगों के बयान लेने के? तुम्हारे पुलिसवालों ने राम दुलार को उन्हें खबर देने के बदले में उसकी रक्षा करने का वादा किया था। पता ही था कि वो सामन्त प्रताप के निशाने पर था, पर तुमने न उसको बचाया और न ही उसके परिवार को। तुमने उसे मरने दिया। तुम सब हिजड़े हो!'

मैं उनकी जली-कटी और नहीं सह सका। वह औरत पुलिस के प्रति रूखी थी, पर उसे अपना गुस्सा जताने का भी पूरा अधिकार था। जैसे-जैसे मैंने उस रात की कल्पना करनी शुरू की, मैं सोचने लगा कि यदि *मेरे* बच्चे ऐसी स्थिति में फँस जाते, तो कैसा होता। मैं काँप गया और वापस जाने के लिए मुड़ा। एक कमज़ोर-सा छोटा बच्चा मेरे सामने खड़ा

जीवित सदस्य था। मैंने बच्चे के सिर को थपथपाया और आँगन से निकल आया। शायद उस मासूम का सामना करने की हिम्मत मुझमें नहीं बची थी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने बाकी गाँववालों से बात करने की भी कोशिश की। पर जैसी आशंका थी, वे सभी अंजान बन रहे थे, पर उनके चेहरों पर डर साफ दिख रहा था। उनकी चुप्पी ने मेरे इरादे को और भी मज़बूत कर दिया। एक मासूम परिवार को बेरहमी से ख़त्म कर दिया गया था और उनकी कोई गलती भी नहीं थी। केवल एक आदमी अपनी खून की प्यास बुझाना चाहता था बस। अब सामन्त प्रताप की गाथा का अंत करना ही मेरा उद्देश्य था। अभी तक मैं सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी अपने अहम् की तुष्टि के लिए करना चाहता था, पर मन्निपुर के मुआयने ने मुझे झकझोर दिया था। सामन्त प्रताप के कारनामों से पीड़ित लोगों को इंसाफ दिलाना मेरा कर्तव्य था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

13
केबल टीवी कनेक्शन

जून 2006

गांव के अनुभव ने मुझे झकझोरकर रख दिया था। मैं घर की ओर रवाना हुआ। मैं बस यही सोच रहा था कि मैं कितना भाग्यशाली था कि मेरा परिवार मेरे साथ था। मेरे विचार तब रुके जब मैं घर पहुँचा और मेरे बेटे, आदित्य ने मुझे देखकर किलकारी मारी। मुझे याद आया कि जब वह छोटा था और मुझे यूनिफ़ार्म पहने देखता था, तो वह खुशी से गरगर करने लगता और मेरे बेल्ट व अशोक स्तंभ को खींच-खींचकर उनसे खेलने लगता था। मुझे कभी-कभी यकीन नहीं आता कि मेरे कंधों पर अशोक स्तंभ शोभित रहते हैं। मुझे उससे अपनेआप ही अपार गर्व और ज़िम्मेदारी महसूस होती है। परिवार को देखकर मुझे याद आया कि उनकी ओर भी मेरी कुछ ज़िम्मेदारी थी। मैंने तानू को गले लगाया और हमारी छह महीने की बेटी, ऐश्वर्या को गोदी में भर लिया। मुझे फिर से उनको खोने का डर महसूस हुआ।

मैंने अपने छोटे-से घर का एक चक्कर लगाया और सारे फर्नीचर को ढंग से रखा। मुझे ऑब्सेसिव कंपल्सिव डिसॉर्डर है। मुझे हमेशा अपने घर और दफ्तर में सब कुछ ढंग से लगा दिखना चाहिए। यह व्यवस्था और प्रवीणता का जुनून मुझे मेरे पेशे में बहुत काम आया है। इससे मुझे केस पर पूरी तरह से केंद्रित रहने में मदद मिलती है।

~

कुमार सर दो दिन पुराना *टाइम्स ऑफ इंडिया* पढ़ रहे थे। मुझे याद आया कि मेरे दोस्त रामनाथन ने मुझे बताया था कि शेखपुरा में मूलभूत सुविधाएँ मिलना भी मुश्किल था। उस समय मुझे लगा था कि वह बढ़ा-चढ़ाकर बता रहा था।

पर आज मुझे इन छोटे-मोटे मसलों की कोई चिंता नहीं थी। कुमार सर को मेरे चेहरे पर एक अजीब-सी शांति दिख रही थी। उनका अनुमान था कि मेरे परिवार के आ जाने से

Downloaded from www.The-Gyan.in

केंद्रित महसूस कर रहा था। चाहे कुछ भी हो जाए, मैंने सामन्त प्रताप को पकड़ने की ठान ली थी।

'अमित, मैंने पुलिस मुख्यालय से कुछ और बल की माँग की है, जिससे गांवों में और कड़ी गश्त की जा सके। इससे हम ज़्यादा छापे मार सकेंगे,' उन्होंने कहा। 'सर, मेरी अंतर्मन की आवाज़ कहती है कि अभी सामन्त प्रताप शेखपुरा में है ही नहीं। उसे पता है कि उसे केवल एक एसपी ही नहीं ढूँढ़ रहा, बल्कि पूरी सरकार ढूँढ़ रही है। मुझे नहीं लगता कि हम उसे पुलिसिंग के पारंपरिक तरीके से पकड़ पाएँगे। या तो उसके किसी करीबी से उसकी लोकेशन का पता लगाया जाए या फिर हम किसी नई तकनीक का इस्तेमाल करें। पहला विकल्प तो मुश्किल लगता है। उसके स्थानीय सहयोगी बहुत वफादार हैं और वैसे भी, उसकी सूचना केवल वह ही देगा जिसका आत्महत्या का इरादा हो। सब जानते हैं कि जो भी उसे धोखा देता है, उसके साथ वह क्या करता है।'

हालाँकि, कुमार सर पारंपरिक पुलिसिंग करने में दृढ़ विश्वास रखते थे, वे नए विचारों के प्रति भी उदार थे। वे कभी भी अपने अधीन अफ़सरों के ऊपर अपनी कोई बात नहीं थोपते थे और यह उनकी अनेक विशेषताओं में से एक थी। उन्होंने मेरी बात पूरे ध्यान से सुनी।

काफी देर रुककर, वे बोले, 'ठीक है, जैसे तुम चाहो, करो। मुझे भरोसा है कि जो भी तुम करोगे, कानून के दायरे में ही करोगे।'

उन्हें मालूम था कि मैं अपने हिसाब से चलने वाला अफ़सर माना जाता था। लेकिन वे यह भी जानते थे कि नियमों को तब तोड़ा जा सकता था, जब आपके सामने एक ऐसा प्रतिद्वंद्वी हो जो अपने नियम स्वयं बनाता हो।

~

आम तौर पर एसपी और डीएम के दफ्तर के बाहर बहुत चहल-पहल रहती है, लेकिन यहाँ कोई नहीं था। ऑफिस में लोगों का न दिखना मेरे लिए काफी चौंका देने वाला था, क्योंकि मुझे अपनी पहले की पोस्टिंग के कारण मिलने के लिए इंतज़ार कर रहे सैकड़ों लोगों की आदत थी। मैं अपने कक्ष में गया और मैंने अपनी नई मेज़ व कुर्सी का निरीक्षण किया। बढ़ई ने कमाल का काम किया था। सारा फर्नीचर उनके मूल रूप से भी बेहतर था। मैं अपने दफ्तर से प्रसन्न था। अब मेरी कुर्सी पर कोई तौलिया भी नहीं लिपटा हुआ था।

मैंने सूचना-पट को देखा, जिस पर अपराध के आँकड़े लिखे थे। यह एक विडम्बना थी कि शेखपुरा में अपराध की दर पूरे बिहार में सबसे कम थी, और राज्य का सबसे बड़ा

मैंने रंजन को फोन लगाया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘रंजन, आज रात मेरे घर आ जाओ। कृष्णा और राजू को भी अपने साथ ले आना। मुझे सामन्त प्रताप के बारे में सब कुछ जानना है,’ मैंने कहा।

‘जी, सर।’

‘और मुझे सामन्त प्रताप और उसके नज़दीकी साथियों का मोबाइल नंबर भी चाहिए, सबसे ज़रूरी हॉर्लिक्स का।’

‘ज़रूर, सर। मैं राजू और कृष्णा को पूरा विवरण लाने को कह दूँगा,’ रंजन ने जवाब दिया। उसको सामन्त प्रताप और उसके गैंग के फोन नंबर माँगने पर बहुत आश्चर्य हुआ।

रंजन मेरे घर 1 बजे पहुँचा। राजू और कृष्णा बहुत घबराते हुए उसके पीछे आ रहे थे। यह पहली बार था कि वे किसी एसपी से मिल रहे थे। उनको यह भी चिंता थी कि मैं उन्हें हवालात में बंद कर दूँगा। आख़िर कुछ महीनों पहले तक वे भी तो सामन्त प्रताप के सहभागी ही थे, भले ही उनके कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं थे।

‘बैठ जाइए,’ मैंने तीनों की ओर इशारा किया।

वे एक-दूसरे को देखते रहे।

‘नहीं, सर, ठीक है,’ रंजन ने कहा।

किसी भी जूनियर ऑफ़िसर की तरह, उसे भी अपने सीनियर्स के सामने खड़े रहने की आदत थी। यह पुलिसवालों के लिए अलिखित कोड ऑफ कंडक्ट का हिस्सा था। ऊपर से वह सस्पेंशन पर भी था। ज़ाहिर था कि जब तक रंजन बैठ नहीं जाता, राजू और कृष्णा कुर्सी छूने की भी हिम्मत नहीं कर सकते थे।

मैं उनकी बेचैनी महसूस कर सकता था।

‘बैठ जाओ, रात लंबी चलने वाली है,’ मैंने गंभीर स्वर में कहा।

थोड़ा हिचकिचाते हुए रंजन ने कुर्सी खींची और बैठ गया। राजू और कृष्णा भी अजीब ढंग से कुर्सियों पर टिक गए। उन्हें अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था कि वे शेखपुरा के एसपी के साथ बैठे हैं और वह भी एसपी आवास में। उन्होंने कभी किसी एसआई के सामने बैठने की भी हिम्मत नहीं की थी।

‘मुझे सामन्त प्रताप और उसके गैंग के बारे में सब बताओ। अभी उसके सबसे वफादार साथी कौन हैं? मैं उसके सबसे खास साथी पर धावा बोलना चाहता हूँ।’

‘सर, किस्मत से पिछले कुछ दिनों में उसका गैंग कमजोर पड़ गया है। कुछ साथी मारे गए हैं। उसके सबसे खास साथी छोटू सम्राट को, कुछ दिन पहले रंजन बाबू ने जेल में डाल दिया था। उनके लीडरों में से केवल सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स सम्राट ही बचे हैं,’ कृष्णा ने खुश होते हुए बताया।

सकते हैं। हाल ही में मन्निपुर में हुआ हत्याकांड इसका एक उदाहरण है। हालाँकि, अभी छोटू जेल में है, पर वह पहले दो बार जेल से भाग चुका है,’ रंजन ने बीच में कहा। ‘उसने

Downloaded from www.The-Gyan.in

पिछली बार भी जेल बड़े ही साहस से तोड़ी थी। ये मुकदमा चल रहे कैदियों को जो कोर्ट में मजिस्ट्रेट के सामने ले जाते हैं न, तो सामन्त प्रताप और उसके गैंग को वह समय और तारीख पता थी, जब छोटू को नवादा कोर्ट ले जाया जाना था। छोटू और उसके साथियों ने शौचालय जाने का बहाना किया। मुझे याद है, यह 28 फरवरी 2004 की बात है। आप विश्वास नहीं करेंगे सर, छोटू और उसके साथियों ने बस शौचालय की दीवार फाड़ी और परिसर के पीछे से भाग निकले,' रंजन ने आगे बताया।

'अरे, क्या कह रहे हो? क्या मतलब दीवार फाड़ डाली? इतनी जल्दी?' मुझे विश्वास ही नहीं हुआ।

'हफ्ते के आखिर में कोर्ट बंद रहता है। एक भी सुरक्षाकर्मी नहीं तैनात होता। सामन्त प्रताप के आदमी एक शनिवार को दीवार फाँदकर कोर्ट परिसर में घुस गए और लॉकअप के शौचालय की दीवार तोड़कर उन्होंने उसमें एक छेद कर दिया। छेद करने के बाद, उन्होंने उस पर केवल एक पीला कागज़ ऐसे चिपका दिया जिससे वो दीवार जैसा ही दिखे।'

'और छोटू ने बस वह कागज़ फाड़ा और भाग गया?' मैंने चकित होते हुए कहा।

'जी, सर, एकदम यही हुआ।'

राजू और कृष्णा मुझे हल्के से मुस्कुराते हुए देख रहे थे।

मेरा अनुमान सही था। सामन्त प्रताप को पुलिस काम-काज के मानक तरीकों से पकड़ पाना नामुमकिन था।

हमने सामन्त प्रताप और उसके गैंग के सदस्यों, उसके काम करने का अंदाज़ और उसके दूसरे सहयोगियों इत्यादि के बारे में विस्तार से चर्चा की।

अंत में मैंने पूछा, 'नंबर्स की लिस्ट लाए हो?'

कृष्णा ने तीन सफाई से मोड़े हुए पन्ने मुझे दिए।

'सही है? तुमने चेक किए हैं?'

'हाँ सर, सौ प्रतिशत,' राजू ने पूरे विश्वास से कहा।

मैंने सामन्त प्रताप, हॉर्लिक्स आदि के नंबर लिखे उस कागज़ को अपनी मुट्ठी में बंद किया। मैं मुस्कुराया। मैंने सोचा कि अब चूहा-बिल्ली का खेल खेलना उतना मुश्किल नहीं होगा। पर मैं बहुत गलत था।

~

मोबाइल फोन शायद इस सदी का सबसे क्रांतिकारी आविष्कार है। इस हथेली जितने बड़े उपकरण के बिना आज की दुनिया की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इससे जीवन में

होशियार अपराधी भी उनके फोन की वजह से ही पकड़े जाते हैं। अपराधी कितने भी

Downloaded from www.The-Gyan.in

चालाक हों, उनके मोबाइल फोन से पुलिस को काफी सुराग मिल जाते हैं। मैंने मोबाइल फोन को ट्रैक करने से जुड़ी अपनी जानकारी को अपने इस काम में लाने का तय किया।

मैंने सामन्त प्रताप और उसके साथियों के कॉल डीटेल निकलवाने के लिए एअरटेल, रिलायंस, बीएसएनएल जैसे तमाम मोबाइल कंपनियों को फोन मिलाया। जल्द ही, मेरी फैक्स मशीन का कागज़ ही खत्म हो गया। मेरी मेज़ पर सैकड़ों प्रिंटआउट और फैक्स इकट्ठे हो गए थे। मैं तुरंत समझ गया कि इतने डाटा की छंटाई करना बेकार होगा। मैंने केवल सामन्त प्रताप, हॉर्लिक्स और कुछ अन्य खास सदस्यों पर अपना ध्यान टिकाया। मुझे केवल सामन्त प्रताप के साम्राज्य का तना और जड़ें काटनी थीं, उसके बाद टहनियाँ और पत्ते तो अपने आप ही झड़ जाएँगे।

सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स की कॉल डीटेल अलग करके, मैंने मोबाइल कंपनियों को उनके टावर की लोकेशन पता करने के लिए फोन किया। सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स, दोनों ही शेखपुरा में नहीं थे। हॉर्लिक्स कलकत्ता में था और सामन्त प्रताप के टावर की लोकेशन के हिसाब से वह राँची में था। प्रिंटआउट से पता चला कि सामन्त प्रताप अपना फोन काफी इस्तेमाल कर रहा था और अधिकतर कॉलें आउटगोइंग थीं। ज़ाहिर है, उसे ज़्यादा लोग, ख़ासकर उसके गैंग के सदस्य उसे छोटी-मोटी बातों के लिए फोन नहीं करते थे। अपराधियों में भी छोटे-बड़े का ओहदा स्पष्ट होता है। हॉर्लिक्स का कॉल रिकॉर्ड ज़्यादा लंबा था। दोनों अपराधियों ने झूठे नामों का इस्तेमाल करके सिम कार्ड बनवाए थे। पहले अपराधियों को विक्रेता से बिना किसी वेरिफिकेशन के सिम कार्ड आसानी से मिल जाते थे। हाँ, अब सरकार ने सख्त नियम लागू कर दिए हैं।

मैंने रंजन को फिर से कॉल किया।

'रंजन, राजू और कृष्णा से तुरंत बात करो। पता लगाओ कि सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स के कोई रिश्तेदार या मित्र कोलकाता या राँची में हैं या नहीं। वे इन शहरों में जाते रहते हैं क्या? क्या वहाँ उनका कोई अड्डा है?'

मेरी आवाज़ में हड़बड़ाहट थी।

'सर, मुझे नहीं लगता। मेरी जानकारी में तो सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स का इन शहरों में कोई जाननेवाला नहीं है। फिर भी राजू, कृष्णा और कुछ और अन्य स्रोतों से पता करके आपको बताता हूँ।'

कुछ समय बाद रंजन का फोन आया।

'सर, दोनों शहरों में उनका कोई नहीं है।'

'ठीक है, मैं बाद में बात करता हूँ,' मैंने फोन काटते हुए कहा।

थे। वो किसी जाने-पहचाने के घर नहीं जाते। क्योंकि फिर पुलिस के लिए उनको पकड़ना मुश्किल नहीं होता। मैं सारी संभावनाओं के बारे में सोच रहा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

कुछ दिन बाद, मेरी पत्नी का फोन आया, 'चुन (मेरा घर का नाम), केबल वाला कनेक्शन लगाने आया है। और अगर कोई पटना जा रहा हो तो बताना। ऐश के डायपर का स्टॉक खतम हो रहा है,' तानू ने कहा।

मैं खुशी से भर उठा। तानू ने मुझे तुरंत घर जाने का बढ़िया बहाना दे दिया था। फुटबॉल वर्ल्ड कप केवल कुछ ही दिन दूर था। मैंने केबल टीवी के आविष्कारकों को धन्यवाद दिया। उन दिनों में वह बहुत प्रचलित था। डिश और सेटेलाइट टीवी बहुत नए थे, और सेट-टॉप बॉक्स केबल से कहीं ज़्यादा महँगा था। चैनल्स भी कम थे। अब मैं सारे फुटबॉल मैच शेखपुरा में केबल टीवी पर लाइव देख पाऊँगा। अब अगर यहाँ मुझे ब्रेड नहीं मिल पाती थी तो क्या?'

मैंने कुमार सर को लंच पर आमंत्रित किया। अपने घर में यह हमारा पहला भोजन था। कुमार सर तानू और बच्चों से मिलकर बहुत खुश हुए। मैंने फुटबॉल शेड्यूल के बारे में बताया, विशेषकर ब्राज़ील जिन दिनों खेल रहा था। उन्होंने सामन्त प्रताप के साथ हमारे खेल की याद दिलाई। हमारे लिए हर हाल में जीतना ज़रूरी था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

14
‘क्रेज़ी किया रे’

‘पता है, अमित आईआईटियन है!’ मेरे कई सीनियर साथी बड़े गर्व के साथ कहते। वैसे तो कई आईआईटियन थे जो आईएएस, आईपीएस, सिविल सेवाओं में बहुत अच्छा कर रहे थे। पर मेरा आईआईटी में प्रदर्शन बहुत खराब था।

मैं उन्हें यह कैसे बताता कि जब मैं आईआईटी में था तो मुझे पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मुझे तो इंजीनियरिंग का ‘इ’ भी नहीं पता था।

आईआईटी में अपने फीके प्रदर्शन की कमी को पूरा करने के लिए, जब मैं एसपी बना तो कम्प्यूटर्स और मोबाइल टेलीफोन में मैंने काफी दिलचस्पी लेनी शुरू की। 2005 में मेरी पिछली जिला एसपी की पोस्टिंग में मैंने दिल्ली जाकर दिल्ली पुलिस स्पेशल सैल से इस क्षेत्र की जानकारी ली थी। इस स्पेशल सैल में हर रैंक के बहुत मेधावी लोग थे, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे नए से नए विकास की पूरी जानकारी थी और जिन्होंने कई मुश्किल केस भी सुलझाए थे। उन्होंने मुझे एक आधुनिक तकनीक—कॉल ऑब्ज़र्वेशन के विषय में भी बताया।

इस निराली सुविधा को इस्तेमाल करने का समय आ गया था।

कॉल ऑब्ज़र्वेशन सुविधा या आम पुलिसिया बोलचाल में ‘पैरलल लिसनिंग’, पुलिस के लिए एक सरल लेकिन अत्यधिक प्रभावी हथियार है। इससे पुलिस किसी के भी फोन को मॉनिटर कर सकती है। हर आने या जाने वाली कॉल सुनी जा सकती है। यह तो अपना फोन पुलिस के हाथों में देने के समान ही है। ज़्यादातर, इस सुविधा का उपयोग खुफिया एजेंसियों द्वारा अपराधियों तक पहुँचने के लिए या आतंकवादियों और माफिया सिंडिकेट की बातें सुनने के लिए किया जाता है। पर कई बार ऐसा भी होता है कि इसका दुरुपयोग निजी लाभ या राजनीतिक प्रतिशोध के लिए किया जाए। कुख्यात नीरा राडिया टेप्स विवाद इसका एक उदाहरण है, जिसके आधार पर कई वरिष्ठ पत्रकारों, राजनीतिज्ञों और कॉर्पोरेट हाऊसेज़ पर दुराचार का आरोप लगाया गया था। इस सुविधा के प्रति सरकार

अधिकारों का हनन हो सकता है।

Downloaded from www.The-Gyan.in

बिहार राज्य में होम सेक्रेट्री के पद से नीचे किसी भी व्यक्ति द्वारा इसके प्रयोग के लिए अनुमति नहीं दी जा सकती। एसपी या उससे ऊपर के पुलिस अफसर ही गृह सचिव से इसकी माँग कर सकते हैं। यदि होम सेक्रेट्री इसे उचित समझते हैं, तभी उसकी अनुमति देते हैं।

मैंने अपने पीए को बुलाया, जो एक गोल-मटोल, गंजा आदमी था और जिसने शायद अपनी सारी उम्र टाइपराइटर के सामने बिताई होगी और अब वह कंप्यूटर के इस्तेमाल में भी उतना ही कुशल हो गया था। ब्यूरोक्रेसी के जंगल में पर्सनल असिस्टेंट या सचिव एक अलग ही प्राणी है। वह बिना थके काम करता रहता है और टाईप करते-करते कागजों के ढेर के पीछे भी खुश दिखता है। जबकि ज़्यादातर इन कागजों को कोई पढ़ता भी नहीं होगा।

पर कभी-कभी एक अकेला पत्र भी अधीनस्थ अधिकारी के लिए काफी चिंता का कारण बन सकता है।

पीए एसपी के आँख और कान होते हैं, और उसकी राय एसपी पर ज़रूर असर डालती है। सभी अधीनस्थ अफसर 'पीए बाबू' से बनाकर रखते हैं। एसपी को भी हमेशा यह डर रहता था कि कहीं पीए दफ्तर की खुफिया जानकारी लीक न कर दे। अगर पीए विवेकहीन हुआ तो अपने बॉस की छवि को आसानी से धूमिल कर सकता है।

'राम बाबू, होम सेक्रेट्री के लिए तुरंत एक चिट्ठी टाइप करो, मुझे अभी उन्हें फैक्स करना है।' राम बाबू ने हज़ारों मेमो और ऑर्डर टाइप किए होंगे, पर होम सेक्रेट्री से की जा रही इस माँग ने उसे भी हैरान कर दिया।

'हुज़ूर, यह कैसा अनुरोध पत्र है? यह "कॉल ऑब्ज़र्वेशन फेसिलिटी" क्या है?' राम बाबू ने उत्सुकता से पूछा।

'कुछ नहीं, राम बाबू, इन बातों में मत उलझो। कोई बड़ी बात नहीं है।' मैं उसकी अज्ञानता पर कुछ दंभ के साथ मुस्कुराया, लेकिन मुझे राहत थी कि उसे इस सुविधा के बारे में नहीं पता था। जो एसपी के पीए को नहीं पता, तो ज़ाहिर है कि वह किसी और को तो बिल्कुल भी नहीं पता होता। और पता होने की गुंजाइश उतनी ही थी, जितनी मुगेम्बो अमरीश पुरी के सिर पर बाल आने की।

पीए ने सामन्त प्रताप, हॉर्लिक्स और गैंग के अन्य खास सदस्यों के नंबर एक खाने में टाइप किए और दूसरे खाने में मेरे सरकारी नंबर लिखे गए, जिन पर मैं उन नम्बरों के बीच हो रही सारी बातचीत सुन सकता था। मैंने जान-बूझकर सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स के असली नाम की जगह जाली नाम लिख दिए और केस की कुछ अन्य डीटेल भी बदलकर

मैंने राम बाबू को भेजकर होम सेक्रेट्री को फोन लगाया। अनिल अमर एक सफल ब्यूरोक्रैट थे, जिनकी हमेशा महत्वपूर्ण पोस्टिंग ही होती रही थीं।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘सर, गुड आफ्टरनून। मैं शेखपुरा से अमित बोल रहा हूँ,’ इससे पहले कि मैं अगला वाक्य बोलता, अमर ने मेरी बात काट दी।

‘अमित, मुझे उम्मीद है कि तुम सामन्त प्रताप और उसके गैंग को खत्म करने के लिए गंभीरता से काम कर रहे हो। तुम्हारा पहले का काम देखकर मैंने ही तुम्हारा नाम सुझाया था।’

‘धन्यवाद, सर,’ मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा। मुझे मालूम था कि मेरे कंधे पर रखकर बंदूक चलाई जा रही थी।

‘सर, मैंने अभी आपको कॉल ऑब्ज़र्वेशन सुविधा के लिए एक चिट्ठी भेजी है। कृपया आप तत्काल ऑर्डर पास कर दें।’

होम सेक्रेट्री चकित रह गए।

‘सर, आप जितनी जल्दी इस सुविधा को सैंक्शन कर देंगे, उतनी ही जल्दी हम सामन्त प्रताप को गिरफ्तार कर लेंगे।’ मैंने विनम्रता लेकिन दृढ़ता से कहा।

एक समझदार अफसर होने के नाते, अमर जी ने तुरंत सुविधा की अनुमति दे दी।

~

मैंने सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स के नंबर अपने सरकारी मोबाइल फोन में सेव कर लिए। मुझे पता था कि जब तक मैं उनको पकड़ नहीं लूँगा, उनके नाम मेरे मन में घुमड़ते रहेंगे।

कुछ ही घंटों बाद, मेरी मोबाइल स्क्रीन पर एक नंबर आया। सामन्त प्रताप किसी को फोन मिला रहा था। मैंने मोबाइल फोन का हरा बटन दबाया और पैरलल लाइन पर सुनने लगा। अब खेल शुरू हो गया था। अमित लोढ़ा बढ़त पर।

‘अरे, भाई, कैसन हो? की हाल चाल है? वो कुत्ते मुझे ढूंढ़ रहे होंगे न, पर क्या कुत्ते शेर का शिकार कभी कर सकते हैं? हा हा! भागने दो उन्हें इधर-उधर। शेर तो तभी निकलेगा जब वो चाहेगा। आखिर वो तो जंगल का राजा है। सामन्त प्रताप राजा है। हा हा!’ घमंडी सामन्त प्रताप ने ताकत के नशे में चूर होते हुए कहा।

‘साहिब, फिर भी, सावधान रहें। चारों तरफ पुलिस है,’ एक घबराती आवाज़ ने कहा। सामन्त प्रताप ने फोन काट दिया।

मैंने तुरंत सामन्त प्रताप जिस बीएसएनएल की सर्विस का इस्तेमाल कर रहा था उसको ई-मेल भेजा और उनसे कॉल रिकॉर्ड माँगे। जब डीटेल आई तो पता लगा सामन्त प्रताप ने किसी सुजीत कुमार को फोन किया था। वह एक सीधा-साधा दुकानदार था, जिसका कोई अपराधिक रिकॉर्ड नहीं था। सामन्त प्रताप ने उसको शेखपुरा के माहौल के

Downloaded from www.The-Gyan.in

पसंद करता था। वह ऐसे ही उन पर राज करता था और अपना रौब जमाता था। टावर की स्थिति के अनुसार अब वह हज़ारीबाग में था।

शेर कभी अपना इलाका नहीं छोड़ता, केवल चूहे छोड़ते हैं। उसकी डींग के बावजूद यह साफ था कि सामन्त प्रताप घबराया हुआ था, थोड़ा सा ही सही पर था। यह हमारे लिए अच्छी खबर थी।

हॉर्लिक्स का मोबाइल बंद था। मुझे थोड़ी चिंता हुई। क्या मेरे पास जो नंबर था, वो हॉर्लिक्स का नहीं था? या कहीं उसे मेरे निगरानी के प्लान के बारे में पता तो नहीं चल गया था? मैंने अच्छे की उम्मीद की और घर चला गया।

~

ज़ोर से फोन बजने से मैं जाग गया। मैंने नींद में फोन टटोला।

'श . . . श . . . क्या कर रहे हैं? मैंने ऐश को इतनी मुश्किल से सुलाया था। फिर जगा दिया आपने,' तानू ने थोड़ा नाराज़ होकर कहा।

फोन की आवाज़ ऐश के रोने के शोर में खो गई थी। मुझे चादरों के बीच स्क्रीन ब्लिंक करती हुई दिखी और मैं उस पर झपट पड़ा। उस पर हॉर्लिक्स का नाम था। मोबाइल की घड़ी में सुबह के 4.10 बज रहे थे। मैं उत्साह से रोमांचित हुआ, फिर भी हॉर्लिक्स को कोसा। हम शहरियों के उलट ये गाँव वाले अपना दिन बहुत जल्दी शुरू करते हैं।

'कैसी हो जानेमन, मेरी बुलबुल? मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है,' हॉर्लिक्स ने बड़े प्यार से कहा। मुझे नहीं पता था कि इतना खूंखार निशानची ऐसा रोमांटिक भी हो सकता था।

'मैं भी तुम्हें बहुत याद करती हूँ, डार्लिंग। मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही हूँ, जल्दी आ जाओ,' एक महिला ने बड़े मोहक अंदाज़ में कहा।

'जानू, मैं आऊँगा। थोड़ा आराम से आऊँगा। ये पुलिसवाले भेड़ियों की तरह मुझे ढूंढ़ रहे होंगे। और सुनो, तुम बिल्कुल उस गाने "क्रेज़ी किया रे" वाली ऐश्वर्या राय जैसी लगती हो!'

'धत्त, मैं तो ऐश्वर्या राय से भी ज़्यादा सुंदर हूँ।'

उनकी बेमतलब की रोमांटिक बातचीत कोई बीस मिनट चलती रही। उसको सुनने के बाद मैं झपकी भी नहीं ले पाया। ताज्जुब था कि हमारी ऐश सुख से सो गई थी और अवि भी सारी रात सोता रहा था। मैंने सुबह का इंतज़ार किया। एयरटेल का दफ्तर खुलने तक

~

Downloaded from www.The-Gyan.in

सुबह 10:40 बजे तक मेरे पास हॉर्लिक्स के नंबर की कॉल डीटेल आई। मुझे पता लगा कि उस महिला का नाम सुलेखा देवी था और वो शेखपुरा के महावत गाँव में थी।

मैंने रंजन को तुरंत अपने घर बुलाया। उसके सामने अपने प्रिंटआउट रखते हुए मैंने पूछा, 'तुम इनमें से किसी नंबर को पहचानते हो क्या? इन कॉल रिकॉर्ड का विश्लेषण कर सकते हो?'

रंजन ने मुझे कुछ झेंपते हुए देखा और कहा, 'सर, माफ कीजिए, पर मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा। मैं कॉल डीटेल पहली बार देख रहा हूँ।'

मैं समझ सकता था। उन दिनों के अधिनस्थ अधिकारी – ख़ासकर वे जो ग्रामीण इलाके में काम कर रहे थे – मोबाइल ट्रैकिंग के बारे में कुछ नहीं जानते थे। कॉल रिकॉर्ड जैसी सरल चीज़ भी मोबाइल कंपनी या तो एसपी को देते थे या फिर उनके अधिकारित किए गए किसी अफसर को।

'ठीक है, छोड़ो। मुझे ये बताओ कि सुलेखा देवी कौन है? शायद वह महावत गाँव में रहती है। वो हॉर्लिक्स का भी गाँव है।'

'ओ . . . सुलेखा देवी! वो तो हॉर्लिक्स की भाभी है,' रंजन ने कहा।

'क्या, सच कह रहे हो? क्या उसका अपनी ही भाभी के साथ अफेयर चल रहा है?' मैंने हैरान होते हुए कहा।

'सर, मुझे कोई हैरत नहीं है। ऐसी बातें गाँव-देहातों में होती रहती हैं। मैंने यह भी सुना है कि हॉर्लिक्स की शादीशुदा ज़िंदगी में सब ठीक नहीं है।'

'उसकी महावत लौट आने की कोई सम्भावना है क्या?'

मैं बस इस उम्मीद में था कि हॉर्लिक्स उससे मिलेगा। आखिर, कई आदमी इसी तरह अपने खतरनाक अफेयर के कारण ही तो घिरे हैं। इतिहास इसका साक्षी है।

'कोई संभावना नहीं, सर, उसे पता है कि पुलिस उसे ढूँढ़ रही है।'

'और उसकी बीवी शांति देवी का क्या? वो कहाँ है?'

'सर, वो और उसके बच्चे भी हत्याकांड के बाद से ही गायब हैं। हमें उनका कुछ पता लग नहीं पाया है, जबकि राजू ने भरसक प्रयास किए थे।'

शांति देवी का छुपना स्वाभाविक था। शेखपुरा पुलिस उसके और उसके संबंधियों के घरों पर लगातार छापा मार रही थी।

~

हॉर्लिक्स का नंबर कुछ घंटों बाद ही फिर मेरे मोबाइल स्क्रीन पर चमका।

पढ़ाई कर रहा होगा। तुमने उसे अखबार पढ़वाया कि नहीं? उसके लिए अँग्रेजी का

Downloaded from www.The-Gyan.in

अखबार ले आना, उसे सिविल सेवा परीक्षा देनी है। उसे तो आईपीएस अफसर बनना चाहिए,' हॉर्लिक्स बोला।

'हाँ, पढ़ा रहे हैं। चिंटू कड़ी मेहनत कर रहा है। रोज़ अखबार पढ़ता है। तुम मेरा हाल भी पूछ सकते हो,' शांति देवी ने खीजते हुए जवाब दिया।

मैं यकीन नहीं कर पा रहा था। एक कट्टर अपराधी, एक खूंखार हत्यारा, अपने बेटे को पुलिस अफसर बनाना चाहता था!

कॉल छोटी और कम देर की थी। मेरे ख्याल से हॉर्लिक्स को अपनी पत्नी से अधिक अपनी प्रेमिका से बात करने में मज़ा आता था।

मैं सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स के संपर्क में रहे सुलेखा और तकरीबन सभी से पूछताछ कर सकता था, पर मैंने इसके उलट करने का तय किया। मैं उन दोनों को बिल्कुल भी सतर्क नहीं करना चाहता था। मुझे बस सही घड़ी का इंतज़ार करना था, और मैं जल्द ही उनके छिपने का ठिकाना पता लगाने वाला था।

~

जब तक तानू ऐश को दूध पिला रही थी, मैंने समय बिताने के लिए टीवी चला लिया। एक गानों के चैनल पर मैंने ऐश्वर्या राय को 'क्रेज़ी किया रे' पर लहराते देखा। यह वही गाना था जिसके बारे में हॉर्लिक्स ने अपनी भाभी उर्फ़ प्रेमिका को बताया था।

स्क्रीन पर गाना देखते हुए मैं अचानक बोल पड़ा, 'तानू, तुम्हें नहीं लगता तुम्हारा थोड़ा वज़न बढ़ गया है, खासकर कमर के आस-पास?'

तानू कुछ पल चुप रही।

'आप बच्चे को जन्म देने की कोशिश क्यों नहीं करते? देखते हैं डिलीवरी – और वो भी सी-सेक्शन – के बाद आप कितनी अच्छी तरह अपनी सेहत बनाए रखते हैं,' तानू ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

मुझे पता था कि मैं मूर्खतापूर्ण बात कर रहा था। मैंने टीवी बंद किया और बिस्तर पर चारों खाने चित्त पड़ गया। अपने दिल की गहराइयों से मैं अपनी पत्नी से बेहद प्यार करता था। और उसे भी यह पता था।

~

कुछ घंटों बाद, मेरे फोन की स्क्रीन पर सामन्त प्रताप का नाम आया। मैंने कॉल ऑब्ज़र्वेशन चालू किया।

एसपी बहुत तेज़तर्रार है। वो कोई आईआईटी-वाईआईटी का इंजीनियर है। मैं तुम्हें

Downloaded from www.The-Gyan.in

खबरदार कर रहा हूँ। अपना मोबाइल फोन बंद कर दो,' एक गम्भीर, गरिमापूर्ण आवाज़ ने कहा।

'नेताजी, आपकी चिंता के लिए धन्यवाद। मैंने कई एसपी आते-जाते देखे हैं। नया एसपी तो बच्चा है। मैं उसे आसानी से सम्भाल लूँगा,' सामन्त प्रताप ने बड़े विश्वास से जवाब दिया।

'मैं तुम्हें चेतावनी दे रहा हूँ। अपना फोन स्विच ऑफ कर दो। मुझे नहीं मालूम कि वह एसपी क्या कर रहा है, पर मुझे खबर मिली है कि मोबाइल फोन को ट्रैक किया जा सकता है। वह घिसे-पिटे पुलिसिया तरीकों में विश्वास नहीं करता। मुझे शक हो रहा है कि वो तुम्हें पकड़ने के लिए पक्का कोई नई तकनीक इस्तेमाल कर रहा होगा।'

इसके साथ ही वह आवाज़ चुप हो गई।

~

सामन्त प्रताप सोच में पड़ गया कि पुलिस उसे मोबाइल फोन से कैसे ढूँढ़ सकती है। वह तो लगातार इधर-उधर घूम रहा था। किसी को भी उसके ठिकाने की कोई खबर नहीं थी—उसके सबसे भरोसेमंद लेफ्टिनेंट को भी नहीं, यहाँ तक कि हॉर्लिक्स को भी नहीं। उसे कभी नहीं पकड़ा जा सकता था। आखिकार वो तो राजा है, आजकल देश-निकाले पर है, तो भी क्या? पर फिर भी, उसकी धड़कनें तेज़ हो गई थीं। उसके पसीने भी छूट रहे थे। उसने कंधे उचकाए और झुलसती गर्मी को कोसा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

15
'देखते हैं'

'सर, एडीजी सर आपसे बात करना चाहते हैं,' मेरे पीए ने कहा। एडीजी एके प्रसाद का फोन था। उनको एचएमवी, यानि 'हिज़ मास्टर्स वॉइस' कहा जाता था, क्योंकि वह बिल्कुल 'येस मैन' थे।

'लोढ़ा, कैसा चल रहा है? बॉस तुम्हारे काम-काज को रोज़-के-रोज़ देख रहे हैं। मैंने उनको कहा है कि तुम कड़ी मेहनत कर रहे हो। तुम जानते हो कि वो तुम्हें ज़्यादा पसंद नहीं करते, पर मैं तुम्हारे करियर को पटरी पर वापस लाने की कोशिश कर रहा हूँ,' प्रसाद सर बोले।

मुझे अच्छी तरह मालूम था कि मेरे विषय में लोगों की राय अच्छी न होने में प्रसाद का ही हाथ रहा था। प्रसाद ने एक बार मुझे अपने भतीजे को नालंदा के एक महत्वपूर्ण थाने में एसएचओ के पद पर पोस्ट करने के लिए फोन किया था। किसी भी नए, अनुभवहीन आईपीएस ऑफ़िसर की तरह, मैंने उस समय उगल दिया था, 'सर, माफ कीजिएगा मगर राजेश कुमार बहुत ही अकुशल है। मैं उसे एसएचओ नहीं बना सकता।'

उसके बाद लाइन पर एक घातक चुप्पी छा गई। कुछ सेकंड बाद अपने अहम् को गले से नीचे उतारकर प्रसाद ने फोन पटक दिया था। मेरी यह गुस्ताखी उन्हें लम्बे समय तक याद रहने वाली थी।

उस समय मैंने इस घटना के बारे में दोबारा नहीं सोचा, पर कुछ साल के अनुभव के बाद मुझे अहसास हुआ कि मेरी सोच तो सही थी, पर तरीका गलत था।

अब तो मैं वरिष्ठ अधिकारियों और राजनीतिज्ञों की बात सुन लेता हूँ और बस कह देता हूँ, 'सर, देखते हैं।' ये किसी भी अनुचित माँग के दबाव में आने से बचने के लिए उपयुक्त तरीका है।

'तुम्हें कोई सनी देओल बनने की ज़रूरत नहीं,' मुख्यालय के आईजी, एक मिलनसार मूलत: नागालैंड के अधिकारी, लीमा इंचेन ने मुझसे कहा था जब मैं नया-नया एसपी बना

वजह आक्रामक होने की कोई ज़रूरत नहीं है। ये बेकार के झगड़े केवल फिल्मों में ही

Downloaded from www.The-Gyan.in

अच्छे लगते हैं। अंत में, थोड़ा व्यावहारिक बनो। कुछ निवेदन उचित भी होते हैं, तो उन्हें मान लेना। और जब भी तुम्हारी अन्तरात्मा तुम्हें रोके, रुक जाओ और अपनी बात पर अटल रहो। जल्दी ही तुम्हारी एक साख बन जाएगी। उसके बाद सब आसान हो जाएगा।'

मुझे इससे बेहतर सलाह नहीं मिल सकती थी और वह भी मेरी नौकरी के शुरुआती दिनों में। बाद में, ऐसे कई एमएलए जिनसे मैं पहले अनबन कर चुका था, उन्होंने मुझसे कहा कि वे जानते थे, उनकी माँगें गलत थीं। पर उनके पास भी कोई चारा नहीं था। लोग उनके दफ्तर में डेरा डालकर बैठ जाते थे, कि वे मुझ पर या एसएचओ या अफसरों पर दबाव डालें। चुने गए प्रतिनिधियों की हैसियत से उन्हें हमेशा जनता को जवाब देना पड़ता था। अगर उनके क्षेत्र में बिजली नहीं थी या सड़कों की हालत ख़स्ता थी तो उससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। जनता को केवल इससे मतलब था कि कोई एमपी या एमएलए कितना शक्तिशाली है, और एसपी या डीएम पर अपने फायदे के लिए वह कितना दबाव डाल सकता है।

'एसपी साहिब हम क्या करें? एक नेता का काम बहुत कठिन होता है। सबको हमसे बहुत उम्मीदें होती हैं, चाहे उन्होंने हमको वोट दिया हो या नहीं। लोग ऑफिस में या हमारे घर के बाहर डेरा डाल देते हैं। हमें पता भी हो कि हम अनुचित माँग कर रहे हैं, तो भी हमें आपको फोन करना पड़ता है,' एक स्थानीय एमएलए ने एक बार ईमानदारी से मुझे समझाया था। 'कभी-कभी भारी दबाव में हमें आपसे आमने-सामने मिलने भी आना पड़ता है। पहले आप हमें तुरंत कह देते थे कि आप हमारी नहीं सुनेंगे। इससे हमें लोगों के सामने बहुत शर्मिंदगी होती थी।'

'हाँ, मैं समझता हूँ,' मैंने व्यंग्य से मुस्कुराते हुए कहा था।

'पर आजकल आपका रवैया काफी ठीक है। आप आराम से हमारी बात सुनते हो और सर हिला देते हो। और सबसे सही तो आपका वो जवाब होता है—"देखते हैं"। उससे हमारी परेशानियाँ हल हो जाती हैं। यह हम दोनों के लिए ठीक रहता है। हम लोगों से उनकी पैरवी आप तक करने का अपना वादा पूरा कर देते हैं। लेकिन बाद में, आपको जो भी ठीक लगता है वह निर्णय आप ले ही लेते हैं,' एक नेता जी ने बाद में मुझे बताया।

ये कूटनीति के पाठ मैंने काफी जल्दी सीख लिए थे। मेरी छवि एक विनम्र लेकिन कोई बकवास न सहने वाले अफसर जैसी बन गई थी। और कई बार, किसी एमएलए या नेता का निवेदन सही भी निकल जाता था। बात केवल इतनी थी कि कोई आम नागरिक एसपी से मिलने से डरता था। तो वह एमएलए से निवेदन करता था कि वे हमसे मिलकर उनका पक्ष हमारे सामने रख दें। कभी-कभी हम अपने नेताओं को कुछ ज़्यादा ही बदनाम कर देते

अब मुझे लगता है कि काश अपने शुरुआती दिनों में मैंने एडीजी प्रसाद के सामने सोच-समझकर बोला होता। मुझे नहीं पता कि इससे कुछ अंतर आता या नहीं। उनके मन

Downloaded from www.The-Gyan.in

में मेरे लिए बहुत अच्छे विचार नहीं थे। मुझे उनसे अपनी पहली मुलाक़ात याद है।

'कौन जात?' प्रसाद ने पूछा था।

'सर, मैं समझा नहीं,' कुछ दुविधा में मैंने हकलाते हुए कहा था।

'व्हाट इज़ योर कास्ट?' इस बार उन्होंने अँग्रेज़ी में पूछा।

मैं इसका कोई जवाब नहीं दे पाया। बाद में मुझे पता लगा कि वे अपनी बेटी के लिए रिश्ता ढूँढ़ रहे थे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

16
गद्दार

'नेताजी' की कॉल ने मुझे काफी परेशान कर दिया था। मैंने सामन्त प्रताप की कॉल डीटेल में से नंबर लेकर, तुरंत उसे भी कॉल ऑब्ज़र्वेशन पर डाल दिया। जैसाकि होना ही था, पता चला कि यह सिम कार्ड जाली नाम और पते से ही लिया गया था।

नेताजी का नंबर ज़्यादा व्यस्त नहीं था। ज़ाहिर है, वह प्रभावशाली थे और आसानी से हाथ आने वाले नहीं थे। कौन-सा नेता हो सकता था? और उसे कैसे मालूम कि मैं सामन्त प्रताप के फोन को ट्रैक कर रहा था?

मैंने रंजन से नेताजी के बारे में पूछा और मुझे मेरा उत्तर मिल गया। 'सर, नेताजी सामन्त प्रताप के सगे चाचा हैं। वो नवादा के पूर्व एमएलए हैं और सामन्त प्रताप के नवादा जेल से भागने में उनका भी हाथ था।' समझने वाली बात थी कि उनसे पूछताछ करना बेकार होता। ऊपर से, मेरी योजनाओं को लेकर नेताजी का शक भी पक्का हो जाता।

मैं हैरान हो रहा था कि वो जाने सामन्त प्रताप के कितने अच्छे संबंधी हैं। मैंने सोचा क्यों न नेताजी को किसी कानून के ज़रिए चपेट में लिया जाए, लेकिन फिर ऐसा न करना तय किया। उनके विरुद्ध किसी भी अपराध को साबित करना मुश्किल होगा। केवल एक अपराधी से बात करना तो अपराध था नहीं।

कुछ देर बाद, सामन्त प्रताप का फोन फिर बजा। मैंने आने वाली कॉल को सुना।

'प्रणाम भाई! कैसन हैं? सामन्त भैया, सुनिए ना! दो-चार को और मारेंगे तो अच्छा होगा। इस एसपी का भी या तो ट्रांसफर हो जाएगा या सस्पेंशन,' उस आवाज़ ने कहा।

मैं तो दंग रह गया। यह आवाज़ मैं अच्छी तरह पहचानता था। कैसे नहीं पहचानता—यह आवाज़ मुझे रोज़ सवेरे ज़िले की ख़ैर-ख़बर देती थी!

यह शहर के एसएचओ, राजेश चरण की आवाज़ थी। जिसे एक भरोसेमंद अफसर होना चाहिए था, वह ही मेरी पीठ में छुरा घोंप रहा था! मैं गुस्से से तमतमाने लगा, मैंने इतना बड़ा धोखा कभी नहीं खाया था। पहले दिन से ही राजेश के बारे में मेरी राय बहुत

Downloaded from www.The-Gyan.in

विभाग में खबरी निकलेगा। और उस पर वह शेखपुरा से मेरी ही रवानगी की योजना बना रहा था!

मैंने कुमार सर को कॉल किया और उन्हें राजेश के विश्वासघात के बारे में बताया। हमेशा की तरह शांति से उन्होंने इसे भी सहजता से ले लिया। 'पूरी तरह चौंकाने वाली बात भी नहीं है। राजेश सामन्त प्रताप की जाति का ही है। वैसे भी आजकल हरेक को अपना ध्यान ख़ुद ही रखना पड़ता है। राजेश को पता है कि सामन्त प्रताप एक समय में राजनीतिक रूप से बहुत शक्तिशाली था और सम्भावना है कि ऐसा दोबारा भी हो। और हाँ, सामन्त प्रताप राजेश की हथेलियाँ भी अच्छी-खासी धनराशि देकर गरम करता रहता होगा।'

मैं घर पहुँचा और बेडरूम की तरफ दौड़ा। तानू ने मुँह पर ऊँगली रखकर मेरी ओर चुप रहने का इशारा किया कि बच्चे सो रहे थे।

मैं बाहर ही रुक गया और राजेश चरण की धोखेधड़ी के बारे में सोचता रहा। मैं बहुत गुस्से में था और जी चाह रहा था कि उसका सिर दीवार में दे मारूँ। तानू बाहर आई और जब उसने देखा कि मैं परेशान था, तो मुझे शांत करने के लिए उसने ठंडे रूहअफज़ा का एक गिलास थमा दिया। और वह मुझसे तब तक बातें करती रही, जब तक मैं शांत नहीं हुआ। मेरी पत्नी ने हमेशा मेरा साथ दिया है; एक लंगर की तरह उसने मुझे ठहराव दिया और अपने करियर में एक के बाद एक चुनौती का सामना करने की मजबूती और ताक़त भी दी।

जैसे-जैसे मेरा गुस्सा कुछ ठंडा होने लगा, मुझे अहसास हुआ कि यह तो अच्छा हुआ कि मुझे राजेश की असलियत का जल्दी पता चल गया। मैं कल्पना भी नहीं करना चाहता था कि यदि मैं उसके साथ कोई ज़रूरी सूचना या अपनी रणनीति साझा कर लेता, तो कितना नुकसान होता।

मैंने ठान लिया कि उस बदमाश को तो सबक ज़रूर सिखाऊँगा। उसके जैसे चंद कलंकी लोगों के कारण ही पुलिस विभाग का नाम खराब होता है।

पर अभी राजेश के ख़िलाफ़ कार्यवाही करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उसे ज़रा भी शक नहीं होना चाहिए। हो सकता है कि सामन्त प्रताप के साथ उसकी बातों से मुझे कभी कोई सुराग मिल जाए। मैं अपनी योजनाओं में कुछ गड़बड़ नहीं कर सकता था। लेकिन मैंने अपने आप से वादा किया कि मैं जिस दिन सामन्त प्रताप को गिरफ्तार करूँगा, उस दिन यह पक्का करूँगा कि राजेश दोबारा वर्दी न पहन सके। भगवान का शुक्र है कि दुनिया में भरोसेमंद रंजन धोखेबाज़ राजेशों से कहीं अधिक हैं!

लेकिन यही एक ऐसा विभाग है जो सातों दिन, चौबीस घंटे, साल के पूरे 365 दिन काम भी करता है। न्यूनतम संसाधन के होते हुए भी भारतीय पुलिस दक्ष और प्रभावी है। हमारे देश

Downloaded from www.The-Gyan.in

में पुलिस और पब्लिक का अनुपात दुनिया में सबसे कम है। किसी भी आम पुलिस थाने में, विशेष रूप से गाँवों में जाकर देखें, तो अनुमान लगाया जा सकता है कि स्थिति कितनी दयनीय है। थाना इंचार्ज को उन थोड़े-से संसाधनों से ही अपने क्षेत्र की गश्त लगानी होती है, अपराधियों के ठिकानों पर छापे मारने होते हैं, वीआईपीज़ को एस्कॉर्ट करना होता है और कई सारे अन्य काम करने होते हैं। केवल सुपरमैन ही उनसे बेहतर प्रदर्शन कर सकता है!

इसके बावजूद, संकट काल में पुलिस अपना स्तर और ऊँचा उठा देती है और किसी भी समस्या का समाधान करने में लगी रहती है। निर्भया बलात्कार कांड को सुलझाने के लिए दिल्ली पुलिस की दाद देनी चाहिए। इस, सबसे पाश्विक अपराध से उपजे रोष के चलते देश भर में प्रदर्शन, विरोध और कैंडल लाइट मार्च हुए। काश कि नागरिक निर्भया को अस्पताल पहुँचाने में भी इतनी ही तत्परता दिखाते। जब निर्भया दिसंबर की उस कड़कड़ाती ठंडी रात में नग्नावस्था में घंटों तक सड़क पर पड़ी रही, तब दिल्ली पुलिस की पीसीआर वैन ने ही उसे अस्पताल पहुंचाया था। और फिर भी बिना किसी सहायता के, और भयंकर दबाव के होते हुए, पुलिस ने बिना किसी साक्षी के वह मामला सुलझा दिया था। एक-एक बलात्कारी को कुछ ही दिन में गिरफ्तार कर लिया गया। सारे आरोपियों पर देश के सर्वोच्च्च अदालत में मुकदमा चला और सज़ा सुनाई गई थी। यह केस कुछ मेहनती और समर्पित पुलिसवालों की बुद्धिमानी, दृढ़ संकल्प और मेहनत के कारण ही सुलझ पाया था, जिनको उसके लिए कोई श्रेय नहीं मिलता। वे ऐसे नायक हैं जिनके कारण अंधियारे में आशा की किरण दिखाई देती है। मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि ऐसी सर्विस का हिस्सा हूँ जिसमें कुछ उल्लेखनीय लीडर और हजारों अनजाने अफसर तथा कॉन्स्टेबल हैं, जो अपने काम को अपना सर्वप्रथम कर्तव्य मानते हैं।

Downloaded from www.The-Gyan.in

17
कुदरत की पुकार

'अमित, मैं कल शेखपुरा स्थिति का जायज़ा लेने पहुँच रहा हूँ,' आईजी आरपी केशव की आवाज़ फोन पर गरजी।

'ठीक है सर, हम आपके दौरे की पूरी तैयारी कर लेंगे।'

पटना हेडक्वॉर्टर से आईजी का दौरा एक बहुत महत्वपूर्ण घटना होने जा रही थी।

कुमार भरत अपने परिवार से मिलने और कुछ नए कपड़े लाने के लिए पटना गए हुए थे। वो अपने सूटकेस को अलमारी बनाकर गर्मी और चूहों से जूझते हुए समय बिता रहे थे। मैंने तय किया कि मैं इस बीच उनके कमरे में एक कूलर लगवा दूँगा।

मैंने अपने घर में फैक्स मशीन और कंप्यूटर को ड्राइंग रूम में लाकर रख दिया। मैंने तय किया कि होम सेक्रेट्री के साथ-साथ मोबाइल कंपनियों को सारे निवेदन-पत्र आदि मैं ख़ुद ही भेजूँगा। मैंने चिट्ठियाँ हाथ से लिखनी शुरू कर दीं, क्योंकि मैं टाइपिंग का आदी नहीं था। मेरा स्टाफ हैरान था, लेकिन मैं कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता था। राजेश चरण के विश्वासघात के बाद मुझे किसी पर भरोसा नहीं था। अपने पीए पर तो बिल्कुल नहीं।

~

'सामन्त प्रताप, अड़ियल बेवकूफ! मैंने तुम्हें कहा था ना अपना फोन बंद कर दो। ये एसपी अब कुछ और कर रहा है। बाद में मुझे मत कहना कि मैंने तुम्हें चेताया नहीं था,' एक रहस्यमयी आवाज़ ने कहा और फोन काट दिया। सामन्त प्रताप अपने फोन को घूरता रहा। उसने सोचा शायद नेताजी ठीक ही कह रहे हैं। उसने अपना फोन बंद कर दिया।

जब यह बातचीत चल रही थी, मैं कुमार सर से बात कर रहा था और सामन्त प्रताप की कॉल नहीं देख पाया। मैंने स्क्रीन पर सामन्त प्रताप की कॉल कुछ सेकंड पहले ही देखी थी और समय पर कनेक्ट नहीं कर पाया। मैंने अपने आपको कोसा और उम्मीद करता रहा कि कुछ भी महत्वपूर्ण बात नहीं हुई होगी। दुर्भाग्य से, जैसा मैंने बाद में अनुभव किया, वो

Downloaded from www.The-Gyan.in

किस्मत की ज़रूरत पड़ने वाली थी। मैंने कंधे उचकाए और आईजी के आगमन की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

~

वह रात कुछ ज़्यादा ही अंधेरी थी। सड़क किनारे की कोई लाइट न होने से गड्ढों-भरी उस सड़क पर गाड़ी चलाना काफी मुश्किल था। ऊपर से भारी बारिश हो रही थी। ऐसी स्थिति में तो फॉर्मूला-वन के रेसर्स भी घबरा जाते। लेकिन बिहार पुलिस के चालकों के लिए यह रोज़मर्रा की यात्रा थी। बॉडी गार्ड बेहद नींद में था, उसका सिर बार-बार नींद से झुका जा रहा था। बारिश होने की वजह से बाहर काफी ठंड हो गई थी। कार ड्राइवर और बॉडी गार्ड, दोनों अपने कानों पर मुरेठा (एक तरह की पगड़ी) बाँधे हुए थे। ड्राइवर, विक्रम ने हीटर भी चला दिया था। हीटर की भिनभिनाती आवाज़ आ रही थी, पर कार में बैठे यात्रियों को उससे कोई आपत्ति नहीं थी। आईजी आरपी केशव अपनी अम्बेसडर कार की पिछली सीट पर बैठे थे—यह उनकी पसंदीदा गाड़ी थी। बत्ती लगी अम्बेसडर कार सत्ता की एक ख़ास निशानी थी। उस समय, हमारे देश के सर्वोच्च-स्तरीय अधिकारियों को ही यह नसीब थी।

अपनी गहरी आवाज़ में आरपी केशव ने ड्राइवर को आदेश दिया,'ड्राइवर, गाड़ी रोको।' और वह अपने आपको हल्का करने के लिए नीचे उतरे। असामान्य ठंड उनके मूत्राशय पर कहर ढा रही थी। यह अलिखित नियम था कि ड्राइवर और बॉडी गार्ड ऐसी स्थिति में दूर रहेंगे। इस बार दोनों अपनी सीट पर ही जमे रहे। ठंड में कार से बाहर कौन निकले?

आईजी गाड़ी से कुछ दूर चले गए ताकि उनका स्टाफ उन्हें न देख सके। अरे, कुछ एकांत भी तो चाहिए होता है, कुदरत की पुकार का जवाब देने के लिए। तभी ज़ोर से बादल गरजने लगे, और बूँदें और तेज़ पड़ने लगीं। केशव ने जल्दी से अपना काम ख़त्म किया और पैंट की ज़िप बंद करने लगे। तभी अपनी नज़र के कोने से उन्होंने देखा कि अम्बेसडर जाने लगी थी। आख़िर यह विक्रम सिंह कर क्या रहा था?

अम्बेसडर ने सड़क पर गति पकड़ ली और कार पर लगा आईजी का झण्डा हवा में फड़फड़ाने लगा। आईजी का फोन पिछली सीट पर साइलेंट मोड में पड़ा था। बॉडी गार्ड भजन राम लगभग सो गया था और विक्रम ने आगे सड़क पर ध्यान लगा रखा था। बड़ी खतरनाक और झटकों-भरी यात्रा थी पर उसको तो साहब को बिना किसी तकलीफ के आराम से पहुँचाना था।

कुछ देर पहले, दोनों ने एक आवाज़ सुनी थी और मान लिया था कि वह आईजी के

और अलिखित नियम था, उस समय के लिए जब साहिब कार में बैठे हों। वे चलने लगे,

Downloaded from www.The-Gyan.in

इस बात से बिलकुल बेखबर कि उनके बॉस तो गाड़ी को रोकने का बेतहाशा प्रयास करते-करते बारिश में तरबतर हो गए थे।

आईजी केशव की तो बोलती बंद हो गई। वे समझ ही नहीं पा रहे थे कि कार उनके बिना क्यों चली गई। उन्होंने इस उम्मीद से जेब टटोली कि शायद मोबाइल फोन उसमें मिल जाए। केशव ने चुनिंदा बिहारी गालियों से ख़ुद को ही कोसा, जब उन्हें अहसास हुआ कि उन्होंने फोन गाड़ी में छोड़ दिया था।

उन्होंने चलना शुरू किया। घोर अंधेरा था और सड़क भी गीली और फिसलन-भरी थी। गाड़ी शेखपुरा की ओर बढ़ती गई—उसके ऊपर लाल बत्ती चमकती रही।

केशव चलते रहे, उनका सफारी सूट पूरी तरह भीग गया था और उनकी अफसरी को चोट पहुँची थी। उन्होंने अपने जीवन में कभी ख़ुद को इतना असहाय नहीं महसूस किया था। एक वरिष्ठ पुलिस अफसर, वो भी आईजी, अपनी वर्दी से जुड़ी बिना किसी शानो-शौकत के रह गया था। लेकिन अभी तो स्थिति और बिगड़ने वाली थी।

'खरोंजा पुलिस स्टेशन,' उसी लाल और नीले बोर्ड पर लिखा था, जो भारत में पुलिस स्टेशनों की पहचान है। आईजी केशव की आँखों में चमक आ गई। वह फिर से एक जानी-पहचानी जगह आ पहुंचे थे। वह जल्दी-जल्दी पुलिस स्टेशन की ओर कदम बढ़ाने लगे, वैसे ही जैसे वे दो दशकों पहले अपनी ट्रेनिंग के दिनों में किया करते थे।

एक संतरी अपने मोबाइल पर भोजपुरी गीत सुनता हुआ एक कोने में खड़ा था। एक एएसआई लालटेन की रोशनी में एफआईआर पढ़ रहा था। दो पिटे हुए-से लोग हवालात में सिमटे हुए बैठे थे। बर्तन, कपड़े और साइकिलों से लेकर टेलीविज़न तक, काफी सारे और तरह के सामान का एक ओर ढेर पड़ा हुआ था, जिन्हें शायद छापामारी में ज़ब्त किया गया था।

'अरे, ड्यूटी पर कौन है?' केशव गरजे। एएसआई और सिपाही कुर्सी से कूद पड़े।

'क्या बात है, भाई? क्यों चिल्ला रहे हो? तुम्हें पता नहीं यह पुलिस स्टेशन है?' सिपाही भोजपुरी गीतों से भी ऊँची आवाज़ में चिल्लाया।

'मैं पुलिस मुख्यालय का आईजी हूँ।' केशव बोले, यह उम्मीद करते हुए कि एएसआई और कॉन्स्टेबल दोनों सावधान खड़े हो जाएँगे।

इसके उलट, दोनों एक-दूसरे की ओर असमंजस में देखने लगे। यकायक एक और कॉन्स्टेबल आया।

'कौन है, भैया?' उसने पूछा।

'अरे बेवकूफ, मैं तुम्हें कितनी बार बताऊँ? मैं आईजी हूँ!' इस बार केशव चिल्लाए—वे

'हमको बुड़बक समझे हो? कौन-सा आईजी आधी रात को पूरा भीगा हुआ पुलिस थाने में आएगा? तुम्हारी कार कहाँ है? स्टाफ कहाँ है? कोई आई-कार्ड है तुम्हारे पास?'

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘चलो इसे हवालात में डाल देते हैं। आजकल बहुत बदमाश आईएएस और आईपीएस बने घूम रहे हैं,’ एएसआई ने कहा।

केशव का आत्मविश्वास इस उम्मीद में जाता रहा और उन्हें डर लगने लगा। हवालात में बैठे दोनों कैदी उनकी ओर आशा से देखने लगे, कि कुछ देर अच्छा साथ मिल जाएगा। आख़िर लॉकअप में कितनी बार साफ-सुथरे कपड़े पहना कोई पढ़ालिखा सा आदमी दिखता है? तो क्या अगर वो सिर से पाँव तक भीगा हुआ था।

उसी समय एसएचओ अपनी रात की गश्त पूरी करके पुलिस स्टेशन पहुँचा। और अचानक सलामी देते हुए बोला ‘जय हिंद, सर, मुझे नहीं मालूम था कि आप इधर आने वाले थे।’ वह अपने पुलिस थाने में एक आईजी की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं कर रहा था। आईजी तो एसएचओ लिए बहुत सीनियर होता है।

केशव ने अंततः राहत की साँस ली। ‘भगवान का शुक्र है, कम से कम एसएचओ ने तो मुझे पहचाना,’ वे अपने आप से बुदबुदाए।

एसएचओ ने अपना माथा पोंछा, वह चिंतित था कि सब ठीक तो है। उसने अपने क्षेत्र में अपराध रोकने का पूरा प्रयास किया था। उसे इसका कोई आभास नहीं था कि उसी के थाने में कुछ मिनट पहले ही जो गड़बड़ हो सकती थी, वो हो चुकी थी।

‘एक गाड़ी लाओ और मुझे शेखपुरा सर्किट हाऊस पहुँचाओ और याद रखना, आज जो कुछ हुआ है, उसके बारे में किसी को भी पता न चले,’ केशव ने फुफकारा।

‘जी हुज़ूर,’ उस हक्के-बक्के एसएचओ से इस उत्तर के अलावा क्या उम्मीद की जा सकती थी! उसे तो बाद में इस दुर्घटना के बारे में पता लगने वाला था।

~

अगले दिन सुबह, केशव गार्ड ऑफ ऑनर का निरीक्षण करने बाहर आए। वे पहले ही खराब मिज़ाज में गार्ड को छोटी-छोटी बातों पर लताड़ चुके थे।

‘तुम्हारे जूते के फीते ठीक नहीं हैं! तुम्हारा संगीन ढंग से नहीं टिका है,’ आईजी केशव दहाड़े।

सबको समझ आ रहा था कि आईजी बेहद ख़राब मूड में हैं। मैंने देखा कि उनके बॉडी गार्ड और ड्राइवर एक कोने में खड़े, बली के बकरों की तरह डर से काँप रहे थे। मैं थोड़ा अचंभित था। सरकारी नौकरी में, ख़ासकर पुलिस में, ड्राइवर और बॉडी गार्ड जैसे स्टाफ अक्सर काफी अभिमानी होते हैं। एक एसपी का ड्राइवर सड़क पर सुपर एसपी की तरह बरताव करता है। उन दिनों में वह बिना रुके, सड़क पर से लोगों को हटाने के लिए कार का

कोशिश करता तो उसकी तो ख़ैर नहीं थी। इसी तरह बॉडी गार्ड के बारे में भी सुनने में

Downloaded from www.The-Gyan.in

आता था कि वह लोगों के साथ रूखा हो जाता था। वह बस आपको उठाकर अपने रास्ते से हटा देता था। सो अगर कोई 'साहिब' के साथ फोटो लेना चाहता था तो वह बहुत बड़ा जोखिम उठा रहा होता था। हाँ, अब तो स्थिति बहुत बदल गई है। आजकल तो युवा सुपरिन्टेंडेंट और डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल पुलिस भी कभी-कभार सेल्फी ले ही लेते हैं।

आईजी केशव के ड्राइवर और बॉडी गार्ड तो ऐसे लग रहे थे जैसे वे सिर कलम होने के लिए गिलोटीन का इंतज़ार कर रहे थे। मैं अभी भी सोचता हूँ कि आईजी ने उनके विरुद्ध क्या कार्रवाही की होगी?

लेकिन केशव एकदम प्रोफेशनल थे। वे जल्द ही इस घटना को भूलकर शेखपुरा की स्थिति की जाँच में लग गए। वे हमारी पूरी योजना सुनकर, हमारी पीठ थपथपाकर वहाँ से रवाना हो गए। उन्हें पूरा विश्वास था कि सामन्त प्रताप के पास अब ज़्यादा समय नहीं था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

18
भुजिया

अवि अपने खिलौनों से फर्श पर खेल रहा था और तानू उसे खाना खिलाने की कोशिश कर रही थी। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि चार साल का बच्चा लौकी इतनी आसानी से खा लेता है। मेरे हाथ में भुजिया के पैकेट की ओर इशारा करते हुए तानू ने मुझे डांटा, 'देखिए, यह भी मुँह नहीं बनाता। सारी हरी पत्तियों वाली सब्जियाँ सेहत के लिए अच्छी होती हैं, पता है न? कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि घर में सबसे छोटा बच्चा आप ही हैं। आप इतने नखरे करते हैं और देखिए, आपकी खाने की कैसी आदतें हैं।' मैंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया और एक चम्मच भुजिया और खा ली। मुझे भुजिया का स्वाद बहुत पसंद था। मैंने थोड़ा-सा अपनी बिटिया के मुँह में भी डाल दिया। वो भी चटपटे स्वाद का मज़ा लेते हुए खुशी से खिलखिलाई।

'मत करिए! क्या कर रहे हैं?' तानू चिल्लाई और उसने पैकेट मेरे हाथ से छीन लिया। इससे पहले कि मैं उसे वापस खींचता, मेरे फोन की स्क्रीन पर लिखा था, 'हॉर्लिक्स सम्राट कॉलिंग'।

मैंने हरा बटन दबाया और सुनने लगा। ऐसा लगा जैसे कि हॉर्लिक्स की कॉल कट गई थी। फिर भुजिया के पैकेट की खींच-तान में मैंने अंजाने में हरा बटन फिर से दबा दिया।

हॉर्लिक्स ने फोन उठाया और ठेठ बिहारी लहज़े में बोला,'हल्लो, हल्लो, कौन?'

मैं अपनी जगह पर जम गया और मैंने तुरंत फोन काट दिया।

'ओ हो, यह क्या कर दिया मैंने,' मैंने खुद को कोसते हुए कहा।

दो बार हरा बटन दबाने से हॉर्लिक्स का नंबर दोबारा मिल गया था। पैरलल लाइन पर सुनने के लिए मुझे हरा बटन दबाना था, जिससे आम तौर पर कॉल को स्वीकार किया जाता है। जब तक मैंने पहली बार बटन दबाया, हॉर्लिक्स की कॉल कट चुकी थी। जब मैंने दूसरी बार बटन दबाया तो कॉल हॉर्लिक्स के नंबर पर लग गया था!

हॉर्लिक्स भी उतना ही हैरान था। उसने नेताजी को कॉल किया।

पूछा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अपने मोबाइल को बंद कर दो, मैंने तुम्हें कहा था,’ नेताजी ने कहा और लाइन शांत हो गई।

ज़ाहिर है, हॉर्लिक्स ने शेखपुरा के एसपी का नंबर अपने फोन में सेव कर लिया था। सारे पेशेवर अपराधियों के पास महत्वपूर्ण अफसरों – ख़ासकर एसपी, डीएम और स्थानीय एसएचओ – के नंबर होते हैं। बिहार राज्य में यह कोई बड़ी बात नहीं है।

मेरे पास समय नहीं था। मैं चाहता था कि हॉर्लिक्स को ऐसा लगे कि मैं वास्तव में उससे बात करना चाहता था। उससे उसे मुझ पर संदेह नहीं रह जाएगा।

मैंने हॉर्लिक्स का नंबर फिर मिलाया और अपनी आवाज़ भारी करके अफसराना अंदाज़ में बोलना शुरू किया।

‘हॉर्लिक्स, हम एसपी बोल रहे हैं।’

दूसरी ओर चुप्पी थी।

‘प्रणाम, सर,’ हॉर्लिक्स ने कहा, उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह शेखपुरा के एसपी से बात कर रहा था।

‘हॉर्लिक्स, तुम्हें तो पता ही है कि सरकार सामन्त प्रताप और उसके गैंग को पूरी तरह खत्म करने के इरादे में है। तुम्हारे गैंग का खात्मा होना तो पक्का है। मेरी तुम्हारे लिए यह सलाह है कि तुम आत्मसमर्पण कर दो। मैं तुम्हें सरकार का गवाह बना लूँगा। तुम सामान्य जीवन जी सकोगे। और फिर क्या मालूम, शायद सामन्त प्रताप पुलिस शूटआउट में मारा जाए।’

फिर मौन।

मुझे याद आया कि हॉर्लिक्स अपने बेटे को पुलिस अफसर बनाने के लिए बहुत उत्सुक था।

‘हॉर्लिक्स, अगर तुम हमारी मदद करोगे और मुझे बताओगे कि सामन्त प्रताप कहाँ है, तो मैं तुम्हारी और तुम्हारे परिवार की किसी भी सीमा तक मदद करूँगा। सोचो, सरकार तुम्हारे बच्चों की पढ़ाई-लिखाई में मदद देगी, उनके करियर में भी। क्या पता, शायद तुम्हारा बेटा कल एक पुलिस इंस्पेक्टर बन जाए। इतना ही क्यों, तुम्हारा बेटा आईपीएस अफसर भी बन सकता है। सोचो, वह किसी जिले का एसपी बन जाए तो,’ मैंने शब्दों का जाल फेंका।

मैंने उसकी भावनाओं को कुरेदने की पूरी कोशिश की, इस उम्मीद में कि शायद वह टूट जाए। लेकिन मैं यह भी सोच रहा था कि कहीं मैंने कुछ ज़्यादा तो नहीं कह दिया?

कुछ देर और चुप्पी बनी रही। फिर हॉर्लिक्स बोला।

प्रताप मेरे भाई जैसा है। मुझे पता होता कि वह कहाँ है, तो भी मैं आपको नहीं बताता। मैंने उससे काफी समय से बात नहीं की है।’ वह कुछ क्षण रुका और फिर बोला, ‘शायद मेरे

Downloaded from www.The-Gyan.in

भाग्य में यही लिखा है। लोगों को शूट करूँ और शायद एक दिन पुलिस के हाथों मारा जाऊँ। प्रणाम, सर।'

मैं अपनी साँसें रोककर उसके अगले कदम का इंतज़ार करने लगा। मैं आशा करने लगा कि हॉर्लिक्स मेरे जाल में फंस गया हो।

कुछ देर बाद, मैंने देखा वह फिर से किसी को कॉल कर रहा था।

'नेताजी, अभी-अभी एसपी ने हमको फोन किया।' उतावले हॉर्लिक्स से ख़ुद को रोका नहीं जा रहा था, वह जोश से भरा हुआ था। 'अरे, क्या रौब था आवाज़ में। मुझे भरोसा है कि मेरा बेटा चिंटू भी किसी दिन एसपी बनेगा।'

मैं यह सोचकर मुस्कुराया, कि अपराधी भी किस तरह पुलिसवालों से इतने प्रभावित रहते हैं। इतनी शक्ति है इस वर्दी में! मुझे थोड़ा दुख भी हुआ और मैंने दिल से कामना की कि हॉर्लिक्स का बेटा एक दिन पुलिस अफसर बन जाए। अगर इसका उल्टा हो सकता है– दाऊद इब्राहीम एक बेहद ईमानदार पुलिस अफसर का बेटा होते हुए भी एक आतंकवादी बन गया– तो यह क्यों नहीं?

'चुप रह, बेवकूफ़! एसपी की मीठी बातों में मत आ जाना। मैंने बार-बार तुझे कहा है, अपना फोन स्विच ऑफ कर दे,' नेताजी चिल्लाए।

दूसरी ओर, हॉर्लिक्स बस फोन की स्क्रीन को देखता रहा और सोचने लगा।

'मेरा बेटा, चिंटू, एक पुलिसवाला बन सकता है।'

उसने अपने आँसू पोंछे और अपनी बंदूक को बेल्ट में पीछे फँसा लिया।

'ये एसपी तो बड़ा अच्छा आदमी लगता है,' हॉर्लिक्स बुदबुदाया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

19
‘बोल बम’

2 जुलाई 2006

सामन्त प्रताप ने अपना मोबाइल फोन बंद कर दिया था। मैं रोज़ उसके आईएमईआई नंबर को खोजता था, पर यह साफ था कि उसने कोई दूसरा सिमकार्ड उस फोन में नहीं लगाया हुआ था। राजू और कृष्णा के पास भी कोई सुराग नहीं था। मैं हताश होने लगा था। सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स कहाँ हो सकते थे? स्टॉक मार्केट के उलट जहाँ मैंने कुछ कौड़ियों के स्टॉक खरीदे थे, अपराध की दुनिया में तो मेरा निशाना दोनों ‘ब्लू चिप्स’—सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स—थे। मुझे उनको छिपने के उनके ठिकानों से बाहर निकलने पर मजबूर करना था।

~

इसी बीच हॉर्लिक्स का बिना सिर-पैर का प्रेमालाप मेरे लिए झेलना मुश्किल होने लगा था। मेरी मुश्किल और बढ़ाने के लिए रिलायंस कंपनी ने रिलायंस नंबरों के बीच असीमित मुफ्त कॉलें भी शुरू कर दी थीं। हॉर्लिक्स और उसकी प्रेमिका, दोनों के पास रिलायंस के नंबर थे और वे इस योजना का पूरा लाभ उठा रहे थे। उनकी बातें, जो पहले ही ज़्यादातर सेक्स-संबंधी होती थीं, अब तो अंतहीन हो गई थीं। मेरी मुसीबत हॉर्लिक्स के बार-बार जगह बदलने से और भी बढ़ गई थी। वह बार-बार कलकत्ता, राँची और भी कई दूसरे कस्बों में जाता था।

‘जानेमन, तुम बिलकुल कैटरीना कैफ़ जैसी हो,’ हॉर्लिक्स ने प्रेमवश बोला।

‘कौन है कैटरीना कैफ़? मैंने तो कभी उसके बारे में नहीं सुना,’ उसकी प्रेमिका बोली।

‘ओह, नई हिरोइनवा है। तुम उसकी जितनी आकर्षक हो!’

‘हाय! तुम बहुत शैतान हो। हर बार नई हिरोइन ढूँढ़कर लाते हो। अच्छा, तुम कब

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अभी नहीं जान, पुलिस मुझे ढूँढ़ रही है। तूफान शांत हो जाने दे, फिर हम अपना हनीमून करेंगे।’

उसकी पिछली कुछ बातों से साफ था कि हॉर्लिक्स उससे मिलने के मूड में नहीं था। मुझे उसे ढूँढ़ना था पर वो तभी मुमकिन था जब वो एक जगह टिके।

मुझे तानू के साथ हमारे शुरुआती दिनों की बातचीत याद आ गई, जब हम फोन पर बातें किया करते थे। हम भी यूँ ही मीठी-मीठी बातें करते थे और हर थोड़ी देर बाद कहते थे, ‘और क्या चल रहा है?’ जिससे बातचीत चलती रहे। यह बात अलग है कि अब हम रिसते हुए पाइप को ठीक करने के लिए प्लम्बर को बुलाने की बात करते हैं।

हम लंच या डिनर के मेन्यू के बारे में भी चर्चा करते थे, जो आज भी अंत में तानू ही तय करती है।

‘सुनिए, डिनर में क्या खाएंगे?’

‘स्वीटहार्ट, नूडल्स बनाओ तो?’

‘नहीं, वह सेहत के लिए अच्छे नहीं होते। मैदे के बने होते हैं।’

‘तो कुछ सब्जियाँ डाल दो। स्वाद भी आ जाएगा।’

‘नहीं, मैंने सोच लिया है। हम करेला खाएँगे। करेला स्किन के लिए भी अच्छा होता है।’

जब सब कुछ अपनी पसंद का ही बनाना है तो पता नहीं वह कॉल करने की तकलीफ़ क्यों करती है। शायद इसी का नाम प्यार है, मैं होले से हँसा।

हालाँकि, इतनी सारी फोन कॉल सुन-सुनकर थकान होती थी, फिर भी मैं सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स की महत्वपूर्ण बातचीत सुनने को उत्सुक रहता था। पर इसके अलावा कुछ और निजी कॉलें थीं जो मुझे बहुत तंग करती थीं। तभी मेरी माँ ने तय किया था कि शादी के लायक हो गए मेरे छोटे भाई की अब जल्दी शादी कर देनी चाहिए। एक दिन उन्होंने फोन किया, ‘बेटा, निक्की को अब सेटल हो जाना चाहिए। मैंने तुम्हारा नंबर शादी के इश्तहारों और shaadi.com जैसी कुछ वेबसाइट्स पर दे दिया है।’ जिसके कारण भी रिश्ते के लिए काफी लोग मुझे लगातार फोन करते रहते थे। मेरे कान तो पहले ही इन गैंगवालों की बातें सुन-सुनकर बजने लगे थे और अब मेरी माँ ने मेरी मुसीबत और बढ़ा दी। देशभर से कॉलें आने लगीं जिनसे मैं बहुत परेशान हो गया था। इस बीच मुझे पता लगा कि shaadi.com मेरे आई आई टी दिल्ली के सीनियर्स ने ही बनाई थी। मैंने उन्हें भी ख़ूब कोसा।

जो लोग अपनी बेटियों के लिए रिश्ता ढूँढ़ रहे थे वे कई सारे, बड़े ही उकताऊ सवाल

आप कहाँ पर पोस्टेड हैं? क्या, शेखपुरा? वो कहाँ है?’ एक लड़की के पिता ने पूछा।

‘सर, मैं एक सरकारी अफसर हूँ। मुझे देशभर में काम करना होता है।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैं और कुछ बोल पाता, उससे पहले ही वे बोले, 'पर हम नहीं चाहते कि हमारी बेटी छोटे से शहर में रहे,' और उन्होंने फोन रख दिया। उन्होंने मुझे यह भी कहने का मौका नहीं दिया कि मेरा भाई एमबीए है और वो बड़े शहरों में ही रहेगा। और ज़ाहिर है, वो मेरे साथ नहीं रहता। मैंने यह भी सोचा कि तानू ने कैसे कभी फिक्र नहीं की कि मेरी पोस्टिंग कहाँ हुई है, चाहे कितनी भी दूर-दराज की जगह हो।

~

अब मेरी आखिरी उम्मीद थी शांति देवी, हॉर्लिक्स की पत्नी। मैंने उसके नंबर को भी ऑब्ज़र्वेशन पर रखा हुआ था।

'मुझे पक्का लगता है कि चिंटू मन लगाकर पढ़ाई कर रहा होगा। तुमने उसे अँग्रेज़ी अखबार वो टेम्स ऑफ इंडिया, पढ़ाना शुरू कराया कि नहीं? उसको आईपीएस अफसर बनना है। मैं जब कुछ दिनों में आऊँगा, तो देखूँगा कि उसने कितना क्या पढ़ा।'

'हाँ, पढ़ता है। वो टेम्स ऑफ इंडिया वाला भी,' शांति देवी ने खीजते हुए बोला।

'सुनो, बिटिया को भी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए।'

'अरे, अभी तो तीन साल की ही है। उसे अभी से कॉलेज भेज दूँ क्या?' शांति ने तुनकते हुए कहा।

हर दूसरे दिन, हॉर्लिक्स फोन पर अपनी बात में अपने बेटे की पढ़ाई पर ज़ोर देता था। वह सच में चाहता था कि उसका बेटा पुलिस अफसर बने। इसके बावजूद कि उसकी बेटी छोटी थी, वह उसकी अभी से पढ़ाई की चिंता करता था। इसकी मुझे बड़ी हैरानी हुई। अब मुझे पता लगाना था कि हॉर्लिक्स अपराधी कैसे बना। ऐसा पारिवारिक आदमी एक भयंकर अपराधी कैसे बना? और उसका शादी-शुदा होने के बावजूद अफेयर क्यों चल रहा था?

~

मोबाइल टावर की लोकेशन से जानकारी मिली कि शांति कई दिनों से एक ही जगह पर थी। मुझे लगा कि हॉर्लिक्स जल्द ही अपने परिवार से मिलने आने वाला था। वह झारखंड के एक कस्बे देवघर में थी जहाँ बैद्यनाथ का मशहूर मंदिर है। यह एक विडम्बना ही है कि हॉर्लिक्स सम्राट जैसे पापी ने एक पवित्र तीर्थस्थल में अपना घर बनाया हुआ था।

राजू और कृष्णा के अनुसार, देवघर में हॉर्लिक्स के कोई रिश्तेदार नहीं थे। हॉर्लिक्स की शांति देवी से हुई बातों से यह तो पता लग गया था कि उसके बच्चे देवघर में ही स्कूल

किराए का मकान लिया होगा, जिसका मतलब यह था कि शांति उस घनी आबादी वाले

Downloaded from www.The-Gyan.in

कस्बे के बीचों-बीच कहीं रह रही थी। उसको और उसके बच्चों को वहाँ ढूँढ़ना तो भूसे के ढेर में सुई ढूँढ़ने के बराबर है।

मैंने तुरंत रंजन को बुलाया।

'मेरे घर आ जाओ। राजू और कृष्णा को भी अपने साथ लेकर आओ।'

~

'तुम सबको देवघर जाना है। शांति देवी पक्का वहाँ किसी किराए के मकान में रह रही है,' मैंने आदेशात्मक लहजे में कहा।

'सर, देवघर एक तीर्थ स्थान है। वहाँ बहुत आबादी है—तीर्थ-यात्री भरे पड़े हैं। हम शांति को कैसे ढूँढ़ेंगे?' रंजन ने पूछा। राजू और कृष्णा ने भी सहमति में सिर हिलाया।

'एयरटेल वालों ने बताया है कि शांति के मोबाइल फोन की लोकेशन नन्दन पहाड़ क्षेत्र में ही पिछले पंद्रह दिनों से आ रही है। उस सैल टावर के आस-पास कुछ समय गश्त करो। यह थोड़ा मुश्किल तो होगा, पर नामुमकिन नहीं,' मैंने विश्वास से कहा।

वो सैल टावर वाला नन्दन पहाड़ क्षेत्र देवघर सदर और जसीडीह रेलवे स्टेशन के बीच पड़ता था।

रंजन और साथी मेरे सुझाव को सुन कर बिल्कुल उत्साह में नहीं लग रहे थे।

'मुझे पता है कि यह बहुत कड़ी मेहनत का काम है, पर मुझे उम्मीद है कि हमें परिणाम अच्छा मिलेगा। अच्छा बताओ, क्या तुम शांति देवी को पहचानते हो?' मैं उनको और विश्वास दिलाना चाह रहा था।

'सर, मैं शांति को अच्छी तरह जानता हूँ। उसने मेरे थाना-क्षेत्र से कुछ समय पहले ही एमएलए का चुनाव लड़ा था। हाँ, राजू और कृष्णा भी उसे जानते हैं,' रंजन ने जवाब दिया।

'वह तुम लोगों को पहचानती है क्या?'

'नहीं, सर। किस्मत से वो हममें से किसी को नहीं जानती,' रंजन बोला।

'हम मदद के लिए अपने साथ कुछ और लड़के भी ले जाएँगे,' राजू बोला।

'नहीं, तुम और किसी को इसमें शामिल नहीं करोगे। इस ऑपरेशन को गुप्त रखना है,' मैंने दृढ़ता से कहा।

'ठीक है, सर। मुझे मेरी सुरक्षा के लिए एक हथियार की आवश्यकता भी होगी। मैं अपनी सेवा पिस्तौल रख लूँ, क्या? हॉर्लिक्स काफी खतरनाक है,' रंजन ने निवेदन किया।

'नहीं रंजन, मैं इसकी अनुमति नहीं दे सकता।'

एक सस्पेन्ड हुए पुलिसवाले को सरकारी शस्त्र रखने की अनुमति नहीं होती है—यह सस्पेंशन पर हो। तो तुम्हें अपनी कार्रवाही कानूनन करने के लिए कोई साथी चाहिए। मैं

Downloaded from www.The-Gyan.in

एक सिपाही को तुम्हारे साथ नियुक्त कर देता हूँ। अगर किसी वजह से तुम्हें ऐसी किसी सहायता की ज़रूरत पड़े तो इससे तुम्हारा मिशन आधिकारिक हो जाएगा। कोई ख़ास आदमी है जिस पर तुम्हें पूरा भरोसा हो?' मैंने रंजन से पूछा।

'सर, हवलदार शिव नारायण। वो मेरा बहुत वफ़ादार है। उसने मेरी मातहती में कसार पुलिस स्टेशन में काम भी किया है।'

'ठीक है, उसको साथ ले लो। बस वह तुम्हारे साथ जाने से पहले छुट्टी की एक अर्ज़ी मुझे दे दे। किसी को मालूम नहीं होना चाहिए कि वह तुम्हारे साथ काम कर रहा है।'

मुझे पता था कि मैं कुछ बड़े जोखिम ले रहा हूँ पर तब मेरे लिए कुछ भी मायने नहीं रखता था। सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स को पकड़ने के लिए मैं किसी भी हद तक जाने को तैयार था।

हवलदार शिव नारायण भगवान से काफी डरने वाला आदमी था। शायद यह उसके नाम का असर था। पर मैं जानता था कि वह पुलिस विभाग का एक बहादुर और वफादार सैनिक था। रंजन से मिलकर वह बहुत उत्साहित था। उसने अपनी छुट्टी की अर्ज़ी डाली और किउल रेलवे स्टेशन के लिए रवाना हो गया। जहाँ वह उसका इंतज़ार कर रहे रंजन, राजू और कृष्णा से कुछ घंटों बाद मिला। उसके बैग में एक हल्की ऑटोमेटिक राइफल, कारबाइन थी जिसको उसने मोड़कर रखा हुआ था। उसके पास 9एमएम गोला-बारूद के सौ राउंड भी थे।

श्रावण का महीना था और हजारों काँवड़िए अपने काँवड़ में पवित्र गंगाजल लिए लगभग सौ किलोमीटर की यात्रा पैदल तय करते थे। देवघर तक का पूरा रास्ता 'बोल-बम' की गूंज से गूंज उठा था।

रंजन और बोलेरो में बैठे बाकी लोगों ने एक-दूसरे को देखा और फिर एक साथ बोले, 'बोल-बम!'

Downloaded from www.The-Gyan.in

20
‘बग़ल में है, हुज़ूर’

‘चुन, आपके फोन की बराबर आवाज़ आती रहती है, बच्चे परेशान होते हैं। फिर मेरे लिए उनको सुलाना बहुत मुश्किल होता है,’ तानू ने गंभीर होकर कहा। मैंने बेडरूम से बाहर जाने का सोचा। पर मुझे ड्रॉइंग रूम में अकेले, कालीन पर सोने की बात एकदम नापसंद थी। मेरे ऊपर कभी भी छिपकली चढ़ सकती थी। फिर भी, मैंने अपने डर पर काबू पाने का निर्णय किया। मैं कोई भी कॉल हाथ से जाने नहीं दे सकता था। मैंने ड्रॉइंग रूम में डेरा डाल लिया और कालीन पर सो गया। मेरी पीठ के लिए भी यह अच्छा था। मैंने अपने तकिये के पास अपने मोबाइल फोन रख लिए। सोने से पहले मैंने पक्का कर लिया कि उनकी बैटरी पूरी चार्ज थीं।

मैंने उस दिन हॉर्लिक्स का नंबर दोबारा डायल हो जाने से अपना सबक सीख लिया था। मैंने ऑफिस फोन को इस्तेमाल करना बंद कर दिया और सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स के फोन दूसरे फोन पर लेना शुरू किया, जो मैंने खास तौर पर इस ऑब्ज़र्वेशन के काम के लिए खरीदे थे। मैंने सब पर कॉल रिकार्ड करने की सुविधा ले ली थी। उन दिनों, मोबाइल फोन आज के तरह-तरह के फोन जितने विकसित नहीं थे। मेरे बेडौल से नोकिया और सैमसंग के फोन ही उन दिनों सबसे ज़्यादा प्रचलित थे।

जल्द ही, मुझे हॉर्लिक्स की कॉल्स का बोझ संभालने में दिक्कत होने लगी। हर रात, मैं अजीत को बुलाकर उसको फोन सौंपने लगा।

‘प्लीज़ हर बातचीत को ध्यान से सुनना। मैं कई भोजपुरी शब्द नहीं समझ पाता—मुझे भोजपुरी नहीं आती। बताना, अगर मेरे मतलब की कुछ बात हो तो।’

इस बीच में, रंजन और उसकी टीम ने नन्दन पहाड़ क्षेत्र का कोना-कोना छान मारा। उन्हें कोई सफलता नहीं मिली और वे शेखपुरा लौट आए।

कुछ और दिन निकले। मैं रोज़ सुबह फ़ोन लेते हुए अजीत से पूछता कि कुछ मतलब की बात सुनी क्या, जिससे मैं हॉर्लिक्स का पता लगा पाऊँ। अजीत कुछ नहीं बोलता और

~

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अमित, मनीष से मिलो। यह लखीसराय के एक व्यापारी हैं। यह सामन्त प्रताप की लोकेशन हमें बताएँगे,’ कुमार सर ने हाल ही में कॉलेज से निकले एक युवक से मेरा परिचय कराते हुए कहा।

‘नमस्ते, सर। इस नेक काम में आपका साथ देना मेरा सौभाग्य होगा। सामन्त प्रताप ऐसा बदमाश है जिसका नामो-निशान इस धरती से मिटा देना चाहिए,’ मनीष बोला। मुझे उसके फिल्मी डायलॉग से कोई फ़र्क नहीं पड़ा।

‘तुम हमारी मदद क्यों करना चाहते हो? तुम्हारी सामन्त प्रताप से कोई निजी दुश्मनी है क्या?’ मैंने भौहें चढ़ा करके पूछा।

‘सर, बस देश की सेवा करनी है,’ मनीष ने हाथ जोड़कर कहा। मेरे ठंडे व्यवहार को भाँपते हुए कुमार सर ने मनीष को देखा और उसे बाद में किसी पुख्ता खबर के साथ लौटने को कहा।

‘सर, यह आदमी कौन है? हमारे लिए यह सामन्त प्रताप को कैसे लेकर आएगा?’

‘अमित, मैं मनीष को काफी समय से जानता हूँ। उसने पहले काफी अपराधियों को पकड़वाया है।’

‘किस तरह के अपराधी? और उसको इससे क्या फ़ायदा होगा? वह अपनी जान जोखिम में क्यों डालेगा?’ मैंने कहा, मुझे अभी भी मनीष पर शक था। वैसे भी, मैं मोबाइल टेक्नोलोजी से सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स को पकड़ने के बारे में पूरी तरह आश्वस्त था।

‘ओह, वो सामन्त प्रताप के दर्जे के नहीं, बस छोटे-मोटे अपराधी थे। फिर भी, उसने हमारी मदद की थी। हमने उसे एसएस फंड में से थोड़े-बहुत पैसे दे दिए थे। और इन सबसे ज़्यादा, उसको अफसरों से जान-पहचान बनाना अच्छा लगता है। उसे मदद मिलती है।’

मुझे पता था कि बिना किसी मतलब के कोई हमारी मदद नहीं करेगा। तकरीबन हर ऐरा-गैरा इसी कोशिश में रहता है कि सरकारी अफसरों, ख़ासकर पुलिस अफसरों से जान-पहचान गाँठ ले। यह समाज में उनका दर्जा बढ़ाता है और वे अच्छे संपर्कों के बल-बूते पर अपना रौब दिखा सकते हैं।

‘अमित, मनीष को मौका देने में कोई नुकसान नहीं है। हम कुछ गँवाएँगे नहीं,’ कुमार सर ने मुझे समझाते हुए कहा।

यह अलग बात है कि कुछ ही समय बाद मनीष की दी गई टिप के चलते हमें अपनी जान के लाले पड़ गए थे।

~

पिता पर गई है। वह हर पोषक खाने को देखकर नाक चढ़ाती और किसी भी अनहैल्दी

Downloaded from www.The-Gyan.in

खाने को खुशी-खुशी खा लेती। उसका ध्यान खिचड़ी और दलिये के फीके स्वाद से हटाने के लिए तानू ऐश को बगीचे में ले जाती और बंगले के सारे कर्मचारियों को अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा कर लेती। नतीजा यह होता कि सफाई कर्मचारी, खानसामा, धोबी और यहाँ तक कि गार्ड भी राइफल लटकाए हुए उसके लिए गाते और नाचते रहते। सफाई कर्मचारी तो बंदर की नकल करने लगता था। खानसामा अपनी कमर को बड़े ज़ोर-ज़ोर से घुमा-घुमाकर नाचता। इस तरह से जब तक वे लोग ऐश का मनोरंजन कर रहे होते थे, तब तक तानू उसको जितना चाहे उतना हैल्दी खाना खिला देती थी। ऐश को एक 'सुपरहिट' भोजपुरी गीत ख़ासकर पसंद आया—'तू लगावेलू जब लिपिस्टिक, हिलेला आरा डिस्ट्रिक्ट,' जो हमारा सफाई कर्मचारी अपनी कर्कश आवाज़ में ज़ोर-ज़ोर से गाता था। मैं बहुत चिढ़ता था इस गाने से, पर लगता था कि केवल यही गाना था, जिस पर वह खाना खाती थी। मुझे और चिढ़ इस बात से होती थी कि मैं जैसे ही किशोर कुमार के गाने गाता था, वह रोने लगती थी। मेरा संगीत-कौशल एक बच्चे को भी लुभा नहीं पाता था। रोज़ का यही नज़ारा था और स्टाफ भी ऐश के खाने के समय का इंतज़ार करते थे, क्योंकि उनका भी साथ-साथ मनोरंजन होता रहता था।

~

मैं कुमार सर के साथ बैठा, अर्जेन्टीना और उरुग्वे के बीच हो रहे मैच को देख रहा था। वह फुटबॉल का खेल बिल्कुल उबाऊ था—खिलाड़ी केवल एक-दूसरे को पास दे रहे थे।

मैच के दौरान, कुमार सर का फोन बजा।

'सर, मैंने सामन्त प्रताप की लोकेशन पता कर ली है। वह लखीसराय में है!' मनीष ने जोश से भरकर कहा। कुमार सर ने मेरी तरफ हल्के-से मुस्कुराते हुए देखा। वे हमेशा अपनी भावनाओं को कम ज़ाहिर करते थे। उनका चेहरा हमेशा भावशून्य रहता था। मेरा उत्साह उन्हें देखकर तुरंत गायब हो जाता था। 'मनीष ने हमारे टारगेट की लोकेशन पता कर ली है। मैंने उसे बुलाया है,' उन्होंने मुझे अपनी बातचीत के बारे में बताते हुए कहा।

मैं फिर भी संदेह में था। उसने इतनी जल्दी कैसे पता लगा लिया था? हम मनीष का इंतज़ार करने लगे। एक घंटे बाद, वह मिट्टी और पसीने में लथपथ मेरे घर आया, उसके चेहरे पर उसकी उत्तेजना साफ दिख रही थी।

'नमस्ते सर, मुँह मीठा कराइएगा। जब आप सामन्त प्रताप को पकड़ लें, तो मुझे दावत मिलनी चाहिए। आप बिहार पुलिस के हीरो बन जाएँगे।'

'मनीष, तुम्हें सामन्त प्रताप की लोकेशन कैसे पता चली?' मैंने उसकी बात काटते हुए

देखा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

'सर, मैं आज दोपहर को उससे मिला। मैं लखीसराय के सिमरी गाँव से सीधा भागकर आया हूँ,' आपको बताने। आप देख नहीं रहे मेरे पैर और कपड़े कैसे हो रहे हैं? पूरा मिट्टी में सना हूँ।'

मुझ पर फिर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मनीष ने अपना मोबाइल फोन निकाला और एक फोटो दिखाई। 'सर, यह सामन्त प्रताप की फोटो है, मैंने आज खींची है। अब तो आपको भरोसा हो गया न।'

फोटो तो पक्का सामन्त प्रताप की ही थी। पर कुछ ज्यादा ही अच्छी थी। कोई इतने बड़े वांछित भगौड़े अपराधी की इतनी साफ फोटो उसे बिना पता लगे कैसे ले सकता है? क्या सामन्त प्रताप ने मनीष से जान-बूझकर फोटो खिंचवाई थी? दरअसल, मेरी याद्दाश्त में तो यह फोटो पुरानी थी, जो स्थानीय अखबार *हिंदुस्तान* में कोई पंद्रह दिन पहले छपी थी।

'अच्छा हमारे लिए एक नक्शा खींचो। कितने आदमी चाहिए होंगे? सामन्त प्रताप कैसे हथियार रखता है?' मैंने पूछा।

मनीष ने पूरे आत्मविश्वास के साथ गाँव का नक्शा खींचा और सामन्त प्रताप और उसके गैंग की सटीक लोकेशन हमें बताई।

कुमार सर ने उसे नोटों की एक गड्डी थमाई जो उसने खुशी-खुशी बेपरवाही से यह कहते हुए स्वीकार कर ली, 'सर, इसकी क्या ज़रूरत है?'

मैंने सार्जन्ट मेजर को फोन किया और उसे आधे घंटे में पचास कॉन्स्टेबल भेजने को कहा।

'अमित, हम ठीक शाम साढ़े नौ बजे निकलेंगे। मैं अपने आदमियों को तब तक कुछ नहीं कहूँगा, जब तक हम लखीसराय के सिमरी गाँव नहीं पहुँच जाते। नहीं तो हमारे ऑपरेशन की डीटेल लीक होने का डर रहेगा। और हाँ डिनर हल्का करना,' कुमार सर ने कहा।

मैं खराब मूड में था। सर मनीष पर बहुत भरोसा कर रहे थे। पर मैं अभी भी यकीन नहीं कर पा रहा था। 'तुमसे सामन्त प्रताप क्यों मिलेगा? तुम उसके पास इतनी आसानी से कैसे पहुँच गए?' मैंने मनीष से पूछा। मुझे दिख रहा था कि वह मेरी पूछताछ से काफी बेचैन हो रहा था।

'सर, मेरा विश्वास कीजिए। भगवान का दिया सब है मेरे पास। भगवान मुझ पर मेहरबान रहा है। मैं तो बस एक जागरूक नागरिक होने के नाते पुलिस की मदद करना चाहता हूँ।'

कुमार सर की तरफ देखते हुए वह बोला, 'मैं एक हथियार बेचने वाला बनकर उससे

आपको मेरे बारे में बताएँगे।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

कुमार सर ने मनीष का बनाया हुआ नक्शा मोड़कर जेब में रख लिया। मैं समझ गया कि अब उनको भी मनीष पर संदेह होने लगा था। वह तैयार होने सर्किट हाऊस चले गए। मैंने अगला फुटबॉल मैच देखने के लिए टीवी चलाया, जो काफी मज़ेदार होने लगा था। वह पेनल्टी शूटआउट से तय होने जा रहा था। मैं जानता था कि मैं मैच के आखिरी क्षण नहीं देख पाऊँगा, पर शायद आज रात कुछ और भी रोमांचक घटने जा रहा था।

मैंने ऑस्ट्रिया की बनी 'ग्लोक्क पिस्टल' ली और उसकी मैगज़ीन में नौ गोलियाँ भरीं। बाकी गोलियाँ मैंने एक अतिरिक्त मैगज़ीन में डाल लीं। मैंने तानू को गले लगाया और टाटा सूमो में बैठ गया। कुमार सर ने ड्राइवर को लखीसराय ले चलने का आदेश दिया। कोई पचास कॉन्स्टेबल पीछे मिनी बस और टाटा 407 में आ रहे थे।

बीच रास्ते में बूँदा-बाँदी भी होने लगी।

डेढ़ घंटे में हमारा दल पिपरिया पुलिस थाने पहुँचा। थाने के हेड कॉन्स्टेबल और एएसआई इतने सारे सिपाहियों को देखकर आश्चर्यचकित हो गए।

'सिमरी गाँव कितना दूर है? सड़क कैसी है?' कुमार सर ने पूछा। एएसआई अपनी लूँगी और बनियान में था। बेचारा सारे दिन का थका-हारा तभी सोया होगा। वह अपने कपड़े बदलने भागने ही वाला था, पर मैंने उसे रोक लिया।

'हमारा समय मत खराब करो। हमें जल्दी से कोई गाईड दे दो, जो हमें सिमरी गाँव ले जाए।'

एएसआई समझ गया कोई बड़ी कार्रवाही किसी ख़ास अपराधी के ख़िलाफ़ होने जा रही थी, वरना डीआईजी रैंक का अफसर, वह भी इतने सारे हथियारबंद सिपाहियों के साथ आधी रात को उसके थाने में नहीं खड़ा होता।

एएसआई ने चौकीदार को बुलाया और उसे हमारे साथ सिमरी गाँव जाने को कहा। चौकीदार आम तौर पर एक कम तनख्वाह वाला सरकारी कर्मचारी होता है। वह पुलिस की आँख और कान होता है। अब सबसे निचले स्तर पर होने के बावजूद, वह राज के समय में बहुत महत्वपूर्ण पद माना जाता था। पर समय के साथ, चौकीदार की अहमियत लगभग समाप्त हो गई। यहाँ किसी को उसकी परवाह नहीं थी—न तो गाँववालों को और न ही पुलिस वालों को। वह पुलिस थाने में कुछ छोटे-मोटे कामों में ही लगा रहता था।

हमारा चौकीदार एक अधेड़ उम्र का मरियल-सा, दुबला-पतला आदमी था—कमज़ोरी के कारण उसकी आँखें और भी उभरी हुई लगती थीं। साफ ज़ाहिर था कि उसकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। उन दिनों, ज़्यादातर चौकीदारों को वेतन काफी देरी से मिलता था, कभी-कभी तो तीन माह बाद। अब तो स्थिति काफी ठीक है, क्योंकि सरकार ने वेतन-

'तो तुम सिमरी गाँव जानते हो? हमें वहाँ कम से कम समय में पहुँचना है।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

चौकीदार ने कुमार सर की ओर बिना किसी भाव के देखा। वह देर रात के इस जोखिम-भरे काम के लिए अपने मन में कोई उत्साह नहीं बटोर पा रहा था।

'अरे सर, मैं आपको वहाँ नाव से ले जाऊँगा। हम आधे घंटे में पहुँच जाएँगे। हमें सिर्फ किउल नदी पार करनी है। उस पार ही तो जाना है।'

'ठीक है। मेरे ख्याल से हमारे आदमियों के लिए दो नावें चाहिए होंगी।'

मेरे भीतर अब उत्साह जगने लगा। मैं हमेशा जोखिम-भरे काम करने लिए लालायित रहता हूँ। एक नाव में नदी पार करना और वह भी रात को—सुनकर बड़ा ही दिलचस्प लग रहा था!

किउल नदी गंगा की उप-नदी है, जिसके किनारे के काफी पास पुलिस स्टेशन था। एएसआई ने दो मल्लाहों को बुलवाया। उन्हें अचानक ही नींद से उठाया गया था और वे हमें ले जाने को ज़्यादा उत्सुक नहीं दिख रहे थे।

'भैया, कितना लोगे? चिंता मत करो, हम तुम्हें अच्छा पैसा देंगे,' कुमार सर ने उसका जवाब सुने बिना ही कहा।

मल्लाह खुश हो गए।

'हुज़ूर, हम आपको मुफ्त में ले जाएँगे। आप जनता के लिए इतना कुछ करते हैं। क्या हम आपके लिए इतना भी नहीं कर सकते?'

हम सब मुस्कुरा दिए। उनके प्यार-भरे शब्द हमारा दिल छू गए।

नाविकों ने नावें तैयार कर लीं और लंगर हटा दिए। अब कुमार सर ने हमारे सभी आदमियों को एक साथ किया और उन्हें ऑपरेशन के बारे में बताया। वे अब और इंतज़ार करने का जोखिम नहीं ले सकते थे। सिमरी बिल्कुल नदी के पार ही था।

'हम सामन्त प्रताप के पीछे जा रहे हैं। बहुत सतर्क रहना होगा। तुम सबको पता है कि वह कितना खतरनाक है। और ध्यान रखना—गोलीबारी में कोई हताहत नहीं होना चाहिए। गाँववालों को कोई नुकसान नहीं हो।' कुमार सर ने निर्देश दिया।

पुलिस पार्टी सकपका गई। सामन्त प्रताप! उसका नाम ही किसी को भी डराने के लिए काफी था। आखिर वह नवादा जेल से एक पुलिसवाले को मारकर भागा था, उसने एक पूर्व-सांसद को उसके घर में घुसकर मारा था और सैकड़ों लोगों की हत्याएँ कर चुका था। पर हमारे शांत स्वभाव और दृढ़ निश्चय से हमारी टोली की भी कुछ हिम्मत बढ़ी। उनकी चाल-ढाल बदल गई।

'सब तैयार हैं? अपने हथियारों को संभाल लो,' कुमार भरत ने आदेश दिया।

'जी हाँ, सर,' किउल नदी का किनारा सिपाहियों की आवाज़ से गूँज उठा। ऐसा असर

सभी ने जल्दी से अपने हथियार जाँचे—ब्रिटिश विंटेज .303 राइफल। केवल हमारे निजी बॉडी गार्डों के पास ही कारबाइनें थीं। किसी अपवाद सी .303 राइफल पुलिस के

Downloaded from www.The-Gyan.in

लिए एक बेहतरीन हथियार है। उसका सिंगल एक्शन बोल्ट मेकनिज़म नियंत्रित गोलाबारी के लिए सही है, और अनियंत्रित भीड़ को काबू में लाने के लिए बढ़िया। आप एके-47 जैसे आक्रामक हथियार को भीड़ पर गोलियाँ बरसाने के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकते। इससे सैकड़ों लोग मर सकते हैं, जो पुलिस कभी नहीं चाहती।

पर उस रात हम दंगों का सामना करने नहीं जा रहे थे। हम तो बिहार के सबसे डरावने और घातक गैंग का सामना करने जा रहे थे। अगर सामन्त प्रताप सिमरी गाँव में था तो। मुझे अभी भी इस बारे में गहरा संदेह था।

मेरा सारा उत्साह जल्द ही ठंडा हो गया। किउल नदी उफान पर थी और लहरें नाव पर डरावने थपेड़े मार रही थीं। मुझे डर था कि नाव डूब जाएगी। मैं अच्छा तैराक था पर पूल में फुर्सत से तैरना और इस उफनती नदी में तैरना—दोनों में बहुत अंतर था। उसके ऊपर ज़ोरों की बारिश होने लगी। मैंने कुमार सर की ओर देखा।

अगर वो चिंतित थे भी, तो भी वे दिखा नहीं रहे थे। उन्होंने हम सबको नावों में बैठने को कहा। मैं भी हिचकिचाते हुए, नौतल के पास से चढ़ा। मल्लाह ने नाव नदी में धकेली और तुरंत ही वह ऐसे डोलने लगी कि सिर चकरा जाए। मुझे पेट में ऐंठन लगने लगी। सभी जवान बहुत डर गए। हम अभी किनारे के इतने पास थे, फिर भी नाव इस तरह लड़खड़ा रही थी। जब हम और गहरे पानी की ओर जाएँगे तो क्या होगा?

मुझे अगले ही पल में इसका उत्तर मिल गया। अचानक, एक झटका लगा और नाव पलट गई। मैं उछल गया, कुछ क्षण के लिए भारहीन, बीच हवा में लटका रहा और फिर पानी में गिर पड़ा। करीब-करीब सारे जवान संतुलन खोकर बर्फीले पानी में गिर पड़े। किस्मत से पानी की गहराई कमर तक की ही थी, नहीं तो हममें से कईयों की क़ब्र वहाँ पानी में बन जाती। हम सब जल्दी से वापस किनारे पर आए।

कुमार सर को बड़ा झटका लगा था। वे दूसरी नाव पर चढ़ने ही वाले थे, जब उन्होंने हम सबको पानी में गिरते देखा। उन्होंने तुरंत जवानों को दूसरी नाव में चढ़ने से रोका और संकेत दिया कि वे हमें बाहर निकालें। हमारी यूनिफॉर्म और हमारे हथियार पानी से तरबतर हो गए थे। यह ऑपरेशन तो शुरू होने से पहले ही खत्म-सा हो गया था।

पर कुमार सर हार मानने वाले नहीं थे। उन्होंने हम सबको इकट्ठा होकर अपने हथियार चेक करने को कहा।

'अब हम नाव से तो नहीं जा सकते। कोई और रास्ता है सिमरी गाँव जाने का? सड़क से?' उन्होंने चौकीदार से पूछा।

मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। यदि हम नदी के बीच में होते, तो हम मर

प्रताप सिमरी गाँव में है भी या नहीं। मन ही मन में मुझे कुमार सर के निर्णय पर शक सा हुआ। उन्होंने मेरी तरफ देखा, वे समझ रहे थे कि मेरे मन में क्या चल रहा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अमित, हम गाँव के इतने पास आ गए हैं। सोचो, अगर सामन्त प्रताप सच में सिमरी में हुआ तो? अगर आज वह हमारे हाथ से निकल गया तो क्या हम अपने-आप को कभी माफ कर पाएँगे? वह भी बिना कोशिश करे?’ कुमार सर ने मुझे देखते कहा।

मैं उनसे बहस नहीं करना चाहता था, वह भी इतने जवानों के सामने। अपने वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देश का पालन करना पुलिस की सफलता की नींव है। एक कठोर पदक्रम कायम रखा जाता है, जिससे कि अनुशासन बना रहे। यह सभी वर्दीधारी बलों के लिए सच। आखिरकार, अगर एक सैनिक अपने जनरल की बात नहीं मानेगा तो जंग कैसे जीती जा सकेगी?

‘सर एक-ठो और रास्ता है। हमको पैदल चलना पड़ेगा। सड़क तो बारिश के कारण कई जगह से बहुतई खराब हो चुकी है,’ चौकीदार ने अपने लहजे में कहा।

मैंने उसे मन ही मन में कोसा। क्या वह चुप नहीं रह सकता था?

ज़्यादातर जवानों ने अपने बूट एक-साथ बांधकर गर्दन या कंधों पर लटका लिए। हमने पैंटें घुटनों तक मोड़ लीं। सबने हथियारों में से गोलियाँ निकालीं और बैरल में से पानी झटका। राइफलें काम करने की हालत में थीं। कुमार सर के निर्देश पर हम चौकीदार के पीछे चल पड़े।

पूरा इलाका घने अंधेरे में डूबा था। मूसलाधार बारिश होने लगी थी। जवानों ने अपनी टॉर्च जला लीं। हममें से कई मिट्टी की उन पगडंडियों पर फिसल भी गए।

‘ओ! होली शिट!’ मैं बड़बड़ाया, जब कीचड़ में गिरकर मेरी वर्दी सन गई। मैं फिर खड़ा हो गया। मेरे ‘विदेशी’ जूते का तल्ला निकल गया था। भला महँगे ब्रांड के जूतों का क्या फायदा?

‘गाँव कितनी दूर है?’ ऐसा लगा, कुमार सर ने बहुत देर के बाद पूछा।

‘साहिब पास ही है, बगल में है,’ चौकीदार ने जवाब दिया। पिछले डेढ़ घंटे से वह बार-बार यही कह रहा था। चौकीदार जैसे ग्रामीणों के लिए मीलों पैदल चलना कोई खास बात नहीं थी, और दूरियाँ किलोमीटर में नहीं नापी जाती थीं।

पौ फटने ही वाली थी। अब बारिश भी थम गई थी।

‘सिमरी गाँव आपके सामने है,’ आख़िरकार उसने बताया। कुमार सर और मैंने पुलिस टोली को हाथ हिलाकर इशारा किया। सब रुक गए। हमने जवानों को संकेत दिया कि वे राइफलें लोड कर लें। हमने भरसक कोशिश से चुपचाप अपने हथियार तान लिए। हमने तीन टोलियाँ बना लीं और गाँव को घेर लिया।

हमने घुटनों के बल दो-चार कदम ही लिए होंगे कि हमें कुछ ग्रामीण हमारी ओर आते पर आ गए। ज़ाहिर था कि अगर सामन्त प्रताप जैसा कोई नामी अपराधी गाँव में होता, तो

Downloaded from www.The-Gyan.in

लोग इतने आराम से नहीं घूम रहे होते। गाँववाले भी इतने सारे पुलिस वालों का झुंड देख कर हैरान हो गए।

हमारा जोश अचानक ठंडा पड़ गया। सालों के तजुर्बे से मेरी इंद्रियाँ मुझे साफ कह रही थीं कि इस गाँव में कोई भी अपराधी नहीं था, सामन्त प्रताप और उसका गैंग तो दूर की बात थे।

फिर भी, कुमार सर ने पुलिस दल को गाँव को बंद करने के लिए कहा। वे और मैं खोजी दल को गाँव के अंदर लेकर गए। सारे आदमी और औरतें अपने रोज़मर्रा के कामों में व्यस्त थे। कुछ गायों का दूध निकाल रहे थे, कुछ ट्यूबवेल से पानी भर रहे थे। कुछ देर उन्होंने रुककर इतने सारे खाकी वर्दी वालों को हैरानी से देखा। गावँवालों की शिकायतों को अनसुना करते हुए हमारे आदमी घरों की जाँच-पड़ताल करने लगे।

'हम कुछ अपराधियों को ढूँढ़ रहे हैं। कृपया पुलिस का साथ दें,' मैंने सख्ती से कहा।

'हुज़ूर, यहाँ कोई नहीं आया है। हमारा शरीफों का गाँव है। हमारे गाँव में पुलिस पहली बार आई है।' एक बूढ़े आदमी ने कुमार सर से कहा। उनके चेहरे पर हताशा झलक रही थी। उन्हें पता था कि गाँववाले सच बोल रहे हैं। गाँव का जनजीवन एकदम सामान्य चल रहा था। सामन्त प्रताप के होते हुए यह नामुमकिन था।

थोड़ी देर बाद, हमने अपनी टोली को इकट्ठा किया और गिनती की। जवानों ने अपने हथियार और गोला-बारूद जाँचे। अब हम थक गए थे। मैंने कुछ घरों के बाहर ट्रैक्टर खड़े देखे। मैंने ट्रैक्टर के मालिकों से हमें पुलिस थाने तक छोड़ने के लिए कहा। हमारे पैरों में अब और चलने की शक्ति नहीं बची थी, वह भी उन्नीस किलोमीटर चलने के बाद—वह दूरी जो हमने रात-भर में यहाँ आने के लिए तय की थी। इंसान के शरीर और जोश का अलग ही रंग-ढंग है। अगर सामन्त प्रताप और उसका गैंग हमें यहाँ पर मिल गए होते, तो हम घंटों लड़ लेते और फिर चलकर वापस भी चले जाते। सफल ऑपरेशन का उल्लास सारी शारीरिक पीड़ा को दबा देता है।

लौटते समय हमलोग यह देखकर दंग रह गए कि जिस रास्ते से हमलोग आए थे उसमें सैकड़ों साँप मरे पड़े थे! बेचारे हमारे जूतों से कुचल गए होंगे।

हम सुबह 10 बजे पुलिस थाने पहुँचे। कुमार सर के उदास चेहरे से नतीजा साफ झलक रहा था। जिसे देखकर एसएचओ ने हमसे चाय-पानी के लिए पूछने की भी हिम्मत नहीं की।

एकाएक मेरा निजी मोबाइल फोन बजा। स्क्रीन पर मेरे दोस्त विपुल का नाम दिखा।

'अमित, मेरे दोस्त, कैसे हो?'

'विपुल, मैं अभी एक ऑपरेशन में व्यस्त हूँ। बाद में बात करता हूँ।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘ठीक है, हम एयरपोर्ट पर हैं। बस तुम्हें ये ही बताना था कि पोंडी मैकिन्से में काम करने फ्रैंकफर्ट जा रहा है। अच्छा सुन, पोंडी के इंडिया छोड़ने के पहले हम एक पार्टी करने की सोच रहे हैं।’

उस दिन मैं किसी से भी बात करने के मूड में नहीं था। मैंने फोन काट दिया। रोहित पांडे तो मैकिन्से में नौकरी करने जा रहा था, और यहाँ मैं बिहार के दूर-दराज़ इलाकों में भगोड़ों का पीछा कर रहा था।

एक बार फिर राम दुलार के उस मासूम भतीजे का चेहरा मेरी आँखों के घूम गया। मैं क्यों दूसरे लोगों की सफलताओं के बारे में सोच रहा था? मैंने ख़ुद ही आईपीएस को एमबीए या व्यवसाय की तुलना में प्राथमिकता दी थी। मैंने अपने-आप को इतनी छोटी-छोटी बातों के बारे में सोचने के लिए फटकारा। सामन्त प्रताप को पकड़ने का मेरा निश्चय और भी मज़बूत हो गया।

घर लौटते समय, मैं गाड़ी में ही सो गया। कुमार सर फ़िक्र में डूबे बैठे थे।

घर पहुँचकर मैं घंटे-भर तक रगड़-रगड़कर नहाया। कीचड़ मेरे शरीर के हर हिस्से पर जम गया था। पर मुझे खुशी थी कि पिछली रात को मेरी गठिया की परेशानी ने मुझे परेशान नहीं किया था। मैंने थोड़ा-बहुत कुछ खाया और फिर सो गया। पता नहीं मैं कितनी देर तक सोया। एकाएक अपनी एड़ी में तेज़ दर्द से मेरी नींद टूटी। आँखें आधी खोलकर देखा तो पाया कि मेरा खानसामा मेरी एड़ी की मालिश कर रहा था। मैं तुरंत उछलकर दूर हट गया।

‘हुज़ूर, आप थक गए होंगे। थोड़ा आपका देह दबा देते।’ मेरे रसोइये गिरीश ने गंभीरता से कहा।

मैं पहले ही उसके खाना बनाने से कोई ख़ास प्रभावित नहीं था। वो ऑमलेट भी ठीक से नहीं बनाता था और अब वो मेरे शरीर को बेढंगे तरीके से मरोड़ रहा था। थुलथुल पेट वाले इस रसोइये से मालिश करवाना मुसीबत को दावत देने का पक्का नुस्खा लग रहा था।

~

मैं शाम को कुमार सर के पास गया।

‘अमित, मुझे भी रात वाले ऑपरेशन पर शक था। पर हमें कोशिश करते रहना है। सामन्त प्रताप को छापे की खबर ज़रूर लगेगी। इससे वह डर जाएगा। हमें उसे आराम से नहीं रहने देना है।’

एक तरह से वे सही कह रहे थे। पुराने ज़माने के पुलिस के तरीके आज—मोबाइल

स्वयं किया था, जो उनके पक्के इरादे का सबूत था। उनके सुदृढ़ नेतृत्व की यह एक झलक

Downloaded from www.The-Gyan.in

थी। पुलिस का शीर्ष नेतृत्व, खास तौर पर वे अफसर जिन्होंने नक्सलियों और आतंकवादियों से लड़ते हुए अपने प्राण गँवाए थे, उनके कारनामें अधिकतर अनसुने रह जाते हैं। हमें हेमंत करकरे, अशोक कामते जैसे देश के लिए प्राण गँवाने वाले वीरों को भूलना नहीं चाहिए।

'सर, मुझे उस बदमाश मनीष को तो सबक सिखाना ही है। उसने हमें सचमुच बेवकूफ बनाया,' मैंने कहा।

आख़िरकार, कुमार सर मुस्कुराए।

'अमित, उसे भूल जाओ। उसे बस बिना काम किए कुछ पैसे बनाने थे। हमें बहुत लोग ठगते हैं। यह भी हमारे पेशे का हिस्सा है।'

मैं कुमार सर के जैसा बड़े दिल वाला नहीं था। पर मैंने मनीष का नाम और अपराध का ब्यौरा भविष्य के लिए अपने दिमाग के एक कोने में, राजेश चरण के साथ दर्ज कर लिया था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

21
हेडबट

9 जुलाई 2006

वर्ल्ड कप का फाइनल था। इटली फ्रांस का सामना करने जा रहा था। केबल ब्रॉडकास्ट बार-बार रुक रहा था। शेखपुरा में बिजली बहुत जाती थी। मैं नहीं चाहता था कि थोड़ा भी मैच छूटे, इसलिए मैंने केबल वाले को कुछ लीटर डीज़ल ख़ासकर भिजवा दिया था।

'कुछ भी हो जाए, आज केबल कनेक्शन को रुकने मत देना। जनरेटर चालू रखना। आज एक ज़रूरी मैच है, और मुझे हर हाल में यह मैच देखना है' मैंने उसे आदेश दिया था।

उन्माद छाया था। हमें बर्लिन के स्टेडियम में फैला उत्साह यहाँ तक मैच देखते हुए महसूस हो रहा था। कुमार सर भी आ गए थे।

'जल्दी आओ, ज़िनेडाइन ज़िदान ने इटालियन डिफेंडर को हेडबट किया है। फुटबॉल फील्ड में हँगामा मचा हुआ है!' तानू बाथरूम का दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाते हुए चिल्लाई।

वह सबसे कुख्यात हेडबट था, जो आज भी हर फुटबॉल प्रेमी की याद्दाश्त में उकेरा हुआ है। इतालवी खिलाड़ी मार्को माटेराज़्ज़ी ने ज़िदान की बहन के बारे में कुछ अभद्र बातें कह दी थीं। अपना गुस्सा काबू न कर पाने के कारण ज़िदान ने मार्को को ज़ोर से मार दिया था। उस समय के सबसे लोकप्रिय खिलाड़ी ज़िदान ने न केवल अपना आपा खोया, बल्कि वर्ल्ड कप भी खो दिया। उसको लाल कार्ड दे दिया गया। पेनल्टी शूटआउट में फ्रांस इटली से 5-3 के स्कोर से मैच हार गया था। जब बर्लिन में यह अफरा-तफरी मच रही थी, मैं बाथरूम में था और मेरा मोबाईल लगातार बज रहा था।

मैं जल्दी से बाहर निकला और टीवी पर हो रहे पागलपन को अनदेखा करते हुए, मैंने तुरन्त फोन उठाया। शांति देवी किसी को कॉल कर रही थी।

'हाँ, नोट कर लिए ऐड्रेस?' शांति कह रही थी।

शांति ने अभी-अभी किसी को अपना पता बताया था। पिछले पैंतीस दिनों से हजारों

इन्तजार कर रहा था जिससे मुझे सामन्त प्रताप या हार्लिक्स के ठिकाने का पता चल सके।

Downloaded from www.The-Gyan.in

और बदकिस्मती से वही महत्वपूर्ण कॉल मुझसे कुछ ही सेकेण्ड से छूट गई। इस बातचीत का शुरू का हिस्सा रिकॉर्ड भी नहीं हुआ था क्योंकि कॉल रिकॉर्ड होनी तभी शुरू होती है, जब मैं कॉल उठा लेता हूँ।

'हे भगवान, इतने कठोर न बनो,' मैंने प्रार्थना की।

और भगवान ने भी तुरंत ही मेरी प्रार्थना सुन ली। जिस व्यक्ति ने शांति को फोन किया था, वह दोबारा बोल उठा।

'भाभी, मैंने घर का नंबर तो नोट कर लिया लेकिन मोहल्ले का नाम नहीं लिख पाया। एक बार फिर बता दीजिए।'

'सत्संग नगर कॉलोनी। कर लिया नोट?' शांति ने कहा।

'हाँ। ठीक है, भाभी। प्रणाम।'

मैं खुशी से उछल पड़ा, जैसे मेरी लॉटरी लग गई हो या मेरे सारे शेयर बाज़ार के भारी घाटे, मुनाफों में बदल गए हों। मैंने उस आदमी को, जो शांति से बात कर रहा था, पूछताछ के लिए बुलाने की अपनी इच्छा को नियंत्रित किया। इससे वह अवश्य ही सतर्क हो जाती। वैसे भी मुझे हॉर्लिक्स के उस घर तक पहुँचने का इंतज़ार तो करना ही था। मैंने तुरंत रंजन को घर बुलाया और राजू और कृष्णा को भी साथ लाने के लिए कहा। तानू और कुमार सर सोचते ही रह गए कि मैं किस बात पर इतना ख़ुश हो रहा था।

~

अजीत ने आकर मुझे रंजन के आने की जानकारी दी। मैं जल्दी से बाहर बरामदे में आ गया।

'रंजन, शांति देवी देवघर की सत्संग नगर कॉलोनी में रह रही है। तुम्हें उसे तलाश करने वहाँ जाना है। राजू और कृष्णा, तुम्हें भी रंजन के साथ जाना होगा,' मैंने बिना समय गंवाए कहा।

'सर, हम उसे कैसे ढूँढ़ेंगे?' रंजन ने पूछा।

'देखो रंजन, सत्संग नगर कॉलोनी छोटी-सी जगह होगी। तुम, राजू और कृष्णा शांति देवी को चेहरे से पहचानते हो। हर कॉलोनी में एक सब्ज़ी मंडी होती है। वो सब्ज़ी खरीदने तो जरूर आएगी। जैसे ही वह दिख जाए, उसका पीछा करना शुरू कर देना। उसे गिरफ्तार नहीं करना। फिर से कह रहा हूँ, उसे गिरफ्तार नहीं करना। याद रखना, हमारा निशाना हॉर्लिक्स पर है।'

'सर, हम उसे सब्ज़ी मंडी में कैसे ढूँढ़ेंगे? हम सारे दिन तो मंडी में नहीं बैठे रह सकते,'

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अच्छा सवाल है। तुम बिल्कुल वही करोगे। तुम सब सब्ज़ी बेचनेवालों का भेस धरोगे और सब्जी मंडी मैं बैठोगे। तुम्हारे भेस के कारण शांति देवी भी तुम्हें पहचान नहीं सकेगी। भले ही वह तुम्हें शक्ल से जानती हो।’

तीनों के चेहरे से साफ दिख रहा था कि उनको सुनकर झटका लगा था।

‘सर, आप मज़ाक तो नहीं कर रहे हैं?’ एक साथ तीनों बोले।

उन्हें पता था कि उनके विरोध का मुझ पर कोई असर नहीं होगा। रंजन ने हारकर पूछा, ‘सर, आज का दिन थोड़ा अशुभ है, क्या हम मंगलवार को नहीं जा सकते?’

मैंने केवल अपनी भौहें तानकर उसे देखा। मैंने सोचा कि मेरा ऐसा करने पर उन पर भी वही असर पड़ेगा जो *सरफ़रोश* फिल्म में आमिर खान के अपने अधीन पुलिस अफसर के ऐसा ही प्रश्न पूछे जाने पर हुआ था। पर ख़ैर, मैं कोई आमिर खान तो था नहीं। वो बस मेरी तरफ उम्मीद से देखते रहे।

‘नहीं, पुलिस के लिए हर दिन अच्छा होता है। इन फालतू वहमों पर भरोसा मत किया करो। तुम अभी जाओगे।’ मैंने नाराज़गी जताते हुए कहा।

रंजन एक रात देवघर के रास्ते में किसी होटल में ठहरने का इरादा बनाने लगा जिससे ज़्यादा शुभ दिन वह देवघर जा सके, पर मेरे गुस्से को यादकर उसने इस इरादे को तुरन्त छोड़ दिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

22
ब्यूटी कुमारी

'सर, आज जब आप ऑफिस में नहीं थे तो एक लड़की का फोन आया था। दरअसल, वह पिछले एक हफ्ते से फोन कर रही है,' मेरे टेलीफोन ऑपरेटर ने तब बताया, जब मैं पुलिस लाइन से लौटा—जहाँ सारे सिपाही रहते हैं और गाड़ियाँ जैसे सारे संसाधन इत्यादि रखे जाते हैं।

मुझे यह सुनकर कुछ हैरानी हुई। 'कौन थी वो? उसे कुछ चाहिए था क्या?'

'सर, कोई स्थानीय लड़की होगी। कह रही थी, आपकी बहुत बड़ी फैन है,' टेलीफोन ऑपरेटर ने कहा।

'ठीक है, अगली बार फोन करे तो मेरी बात करा देना,' मैंने भरसक अपने उत्साह को छिपाते हुए सपाट भाव से कहा। आखिर चिकनी-चुपड़ी बातें किसे पसंद नहीं? वो भी अपोज़िट सेक्स से।

कुछ ही मिनट बाद, फोन बज उठा।

'सर, वो ही लड़की है,' टेलीफोन ऑपरेटर ने कहा।

'ठीक है, कॉल ट्रान्सफर कर दो,' मैंने कहा।

'हेलो सर, मैं आपकी बहुत बड़ी फैन हूँ। मैं आपको बहुत पसंद करती हूँ,' उधर से एक युवती कुछ चुभती हुई सी आवाज़ में बोली।

उसकी बड़ाई से मैं इतना खुश हो गया कि उसकी आवाज़ पर ध्यान ही नहीं दिया।

'आपका नाम क्या है?' मैंने अपने भावों को छुपाते हुए पुछा।

'ओ! सर, मेरा नाम ब्यूटी कुमारी है। क्या मैं आकर आपसे मिल सकती हूँ? मेरा सपना पूरा हो जाएगा,' उसने कहा।

'ज़रूर, आजकल मैं थोड़ा व्यस्त हूँ, लेकिन आप शुक्रवार को मुझसे मेरे ऑफिस आकर मिल सकती हैं।'

'ओ, बहुत-बहुत धन्यवाद, सर!'

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैं बेहद शर्मीला हुआ करता था। और क्योंकि लड़कों के स्कूल में पढ़ता था तो मुझे कभी लड़कियों से बात करने का मौका नहीं मिला। इसीलिए उनसे कोई ख़ास तवज्जो भी नहीं मिली। उन दिनों में लोग काफी रुढ़ीवादी थे। उम्र में मुझसे बड़ी सभी लड़कियाँ मेरे लिए 'दीदी' थीं और मुझसे छोटी लड़कियों के लिए मैं 'भैया' था। और अपनी उम्र की लड़कियों के साथ बातचीत करने का ढंग मुझे नहीं आता था। तो उचित यही था कि या तो मैं दूसरी ओर मुँह घुमा लूँ और उनको अनदेखा कर दूँ या ऐसे देखने की कोशिश करूँ जैसे कि वे वहाँ थीं ही नहीं। आईआईटी के शुरुआती दिनों में भी मेरा यही रवैया रहा। मुझे लड़कियों से मामूली बातचीत करना भी नहीं आता था। अगर कोई लड़की मुझसे पेन भी माँगती, तो मैं या तो शर्मा जाता था या फिर यह सोचकर कि 'ओह, इसने मुझसे बात की!' बौरा जाता था, या फिर मैं अनजाने में रूखा बरताव कर देता था। 1995 में आईआईटी में केवल तीस लड़कियाँ थीं और न जाने क्यों, लड़कियों का हॉस्टल कैंपस के दूसरे छोर पर था। मेरे जैसे लड़के के लिए, जो कभी कक्षा में भी नहीं जाता था, एक लड़की का दिखाई देना 'एलियन' दिखने जितना दुर्लभ था।

आईआईटी के अंतिम साल में ही मेरी दोस्ती अपनी कुछ सहपाठियों से हुई। पर मैं तब तक इतना परिपक्व नहीं था कि यह समझ सकूँ कि बिना 'गर्लफ्रेंड' हुए भी लड़कियाँ केवल मित्र हो सकती थीं।

बाद में, कुछ लड़कियाँ मुझ पर ध्यान देने लगीं। जल्द ही, मुझे इस बात का घमंड भी हो गया। मैंने बनावटी ऐक्सेंट अपना लिया और कुछ घटिया-से वन-लाइनर रट लिए। इन सबसे काम बन गए। कम से कम मैं तो यही सोचता था। जब तक मैं मसूरी के लाल बहादुर शास्त्री अकादमी पहुँचा, मेरी ख़ुद को लेकर सोच पूरी तरह बदल गई थी। मैं यह सोचने लगा था कि मैं किसी किस्म का हीरो था। मैंने अपने खोए हुए जवानी के दिनों की कमी पूरी करने की कोशिश की।

तानू से शादी करने के बाद मैं थोड़ा परिपक्व हुआ, लेकिन फिर भी वे लड़कपन के विचार मेरे मन में घर किए हुए थे। शायद अपनी कमियों को छिपाने के लिए यह मेरे बचाव का एक तरीका था।

मैं घर बड़े अच्छे मूड में आया। मेरा स्टाफ साफ-साफ देख पा रहा था कि मेरा चेहरा किस तरह खुशी से चमक रहा था। 'तानू, तुमने मुझसे शादी क्यों की? तुम्हारे पास तो इतने रिश्ते आए थे,' मैंने मुस्कुराते हुए पूछा।

तानू ऐश को अपनी गोद में हिलाते-हिलाते सुला रही थी। उसने बिना मेरी तरफ देखे ही उत्तर दिया, 'सीधी-सी बात है, क्योंकि तुम आईपीएस अफ़सर हो।'

बहुत सजीला हूँ, चतुर हूँ, होशियार हूँ वगैरह-वगैरह।

Downloaded from www.The-Gyan.in

नाराज़ होकर, मैं कमरे से बाहर निकल गया। कम से कम ब्यूटी कुमारी को तो मैं इंप्रेसिव लगता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

23
‘आलू ले लो’

सत्संग नगर कॉलोनी भारत के किसी भी छोटे शहर की पुरानी कॉलोनियों जैसी ही थी। घर बहुत पास-पास थे, और वे सरकारी जमीन या आसपास वालों की काफी जमीन घेरे हुए थे। कई लोगों ने तो अवैध तरीके से बिजली खींचने के लिए बिजली के खम्बों से ‘टोके’ या तार जोड़ रखे थे। नालियों में जगह-जगह कचरा फंसा हुआ था, जिससे कहीं-कहीं पानी बाहर बह रहा था। सड़कें संकरी और गड्ढेदार थीं, पैदल चलने वाले हज़ारों लोग ऑटो, रिक्शा और गायों की भीड़ से जूझने में लगे थे।

वह छोटी-सी सब्जी मंडी फल और सब्जी बेचने वालों से खचाखच भरी थी, और लगभग उतनी ही गायें भी वहाँ थीं, जो ठेलों पर और कचरे में मुँह डाल रही थीं। गायें कभी-कभी खरीददारों के सामान में भी मुँह डाल देती थीं। कभी-कभी वे किसी के पीछे भागतीं, तो कुछ डरे हुए लोग उन्हें अपना पीछा करते हुए देखकर अपने थैले छोड़ देते, जिससे गायों की मौज हो जाती।

रंजन ने जब राजू और कृष्णा को उनके नए रूप में देखा तो वह ख़ुद को रोक नहीं पाया और ज़ोर से हँस पड़ा। वे दोनों अपने सब्ज़ी बेचने वालों के भेस में ठेले के पास खड़े हुए, सच में वही लग रहे थे। कुछ पल रुककर, राजू और कृष्णा भी एक-दूसरे को देखकर जोर-जोर से हँसने लगे, जिससे उनके थुलथुल पेट हिलने लगे।

संयोग से, हवलदार शिव नारायण का एक रिश्तेदार सत्संग नगर की सब्ज़ी मंडी में आलू बेचता था। उसने अपने रिश्तेदार से अनुरोध किया था कि वह राजू और कृष्णा को आलू बेचने में अपनी मदद करने दे।

‘चलो अच्छा है, थोड़ा काम सीख लेंगे ये दोनों,’ शिव नारायण ने कहा।

‘चलो ठीक है। पर मैं इन्हें कोई पैसे-वैसे नहीं दूँगा,’ उस आलू वाले ने बेमन से कहा।

दोनों ठेले के पास आलू की बोरियों के साथ बैठ गए। उन्होंने कभी अपने सपनों में भी नहीं सोचा होगा कि वे किसी दिन आलू बेच रहे होंगे।

मालिक ने उन्हें तिरस्कार से देखा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

रंजन चाय की दुकान पर बैठा था। वह उम्मीद कर रहा था कि शांति देवी जल्दी दिख जाए। शुरु-शुरु में चल रहा हंसी-मज़ाक जल्द ही फीका पड़ गया था और रंजन व उसके साथी इस पहेली को जल्द से जल्द बूझना चाहते थे। सारे दिन भीषण गर्मी में खड़े होकर आलू बेचना बहुत ही मुश्किल काम था।

इसी तरह दो दिन जल्दी बीत गए। राजू और कृष्णा ने लगभग सारे आलू बेच दिए, पर उन्हें अभी तक शांति का कुछ पता नहीं चला था।

रंजन ने उस रात मुझे फोन किया।

'सर, हम पिछले दो दिनों से इंतज़ार कर रहे हैं, लेकिन शांति देवी का कुछ पता नहीं लगा,' वह परेशान लग रहा था।

'मुझे मालूम है कि तुम थक गए होगे। पुलिस का काम उतना तड़क-भड़क वाला नहीं है, जितना लोग सोचते हैं। थोड़ा धैर्य रखो, कभी न कभी तो उसे सब्ज़ी खरीदने आना ही पड़ेगा। कल का दिन हमारा होगा,' मैंने आत्मविश्वास से कहा। मुझे विश्वास था। मैं कई दिनों बाद अच्छी नींद सोया।

अगले दिन सुबह, मैं बिस्तर में आराम कर रहा था। अवि मेरी गोदी में बैठकर अपना खिलौने वाला ट्रक मेरे ऊपर चला रहा था।

तभी मेरा फोन बजा।

मैंने देखा कि रजंन का फोन है। मैं उत्सुकता से फोन की तरफ झपटा।

'सर, मुझे शांति दिख रही है। वह अभी-अभी घर का कुछ सामान खरीदने आई है,' रंजन दबी आवाज़ में बोला। उसके अंदर के प्रशिक्षित सिपाही ने उसके जोश को काबू में रखा।

मैंने अवि को नीचे ज़मीन पर बिठाया और बाहर बगीचे की तरफ निकल गया। मेरी धड़कनें बढ़ गई थीं। मैं इस क्षण का ही तो इंतज़ार कर रहा था।

'उससे सुरक्षित दूरी पर रहना। तुम उसे दिखने नहीं चाहिए और उसे संदेह भी न नहीं होना चाहिए,' मैंने कहा।

'सर, कृष्णा और राजू मेरे साथ हैं। आपका क्या आदेश है?'

'दूर से उसका पीछा करो। पता लगाओ कि वह कहाँ रहती है,' मैंने निर्देश देकर फोन काट दिया।

मैं फिर रंजन के फोन का इंतज़ार करने लगा। हर पल भारी लग रहा था।

'सर, सर, हमने उसे खो दिया। वह अचानक गायब हो गई,' रंजन ने हड़बड़ाते हुए कहा।

की पूरी कोशिश कर रहा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘सर हम उसके बिल्कुल पीछे थे पर अचानक वह गली में गुम हो गई। हम उसे ढूँढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, कुछ समय और दीजिए।’ रंजन हताश होकर बोला।

मैंने आसमान की ओर देखा, आँखें मूँदीं और अपने दिमाग को शान्त करने की कोशिश करने लगा। मैं अभी भी किसी करिश्मे की उम्मीद कर रहा था।

~

‘सर, हमने पूरी कोशिश की। वो हमें नहीं मिली,’ रंजन ने दोबारा कॉल करके कहा—उसकी आवाज़ मायूसी से काँप रही थी।

‘शांत हो जाओ,’ मैं एक विचित्र-सी शांति महसूस कर रहा था। भगवान शायद केवल मेरी परीक्षा ले रहा था, थोड़ा और धैर्य रखना था।

‘मुझे ठीक से बताओ कि तुमने उसे कहाँ खोया। उस इलाके उस मोहल्ले का कुछ ब्योरा दो।’

‘सर, रिहायशी इलाका है, सड़क की दोनों तरफ घर हैं। उनमें रहने वाले ज़्यादातर परिवार मध्यम और निम्न वर्ग के हैं। 300 मीटर पर सड़क ख़त्म जो जाती है।’

सड़क का एक छोर बंद था, इसका का अर्थ था कि शांति उसी छोटी-सी बंद गली में रह रही थी। वह रंजन और राजू को दिखने से पहले घर के अंदर चली गई होगी।

‘रंजन, तुरंत लोकल अखबार वाले को ढूँढ़ो। उससे पूछो कि क्या कोई परिवार हाल ही के दिनों में वहाँ आया है? पूछना कि क्या उस परिवार में दो बच्चे भी हैं? अगर नए निवासियों ने अँग्रेज़ी अखबार लगाया हो, तो वे पक्का शांति और उसके बच्चे होंगे। वैसे इलाके में गिनती के लोग ही अँग्रेज़ी अखबार पढ़ते होंगे।’ एक ही साँस में मैंने पूरा निर्देश दिया।

सौभाग्य से उस इलाके में बस दो ही अखबार वाले थे।

मैं इंतज़ार करता रहा, करता रहा। दो घंटे बाद रंजन ने फिर कॉल किया। इस बार वह काफी प्रसन्न लग रहा था।

‘सर, आपने सही कहा था। करीब एक महीने पहले तीन जनों के परिवार ने यहाँ एक घर लिया है। अखबारवाला रोज़ वहाँ अखबार देने जाता है। अगर एक दिन भी अँग्रेज़ी का अखबार न दे, तो उस घर की महिला बहुत हँगामा मचाती है। दरअसल, पूरे मोहल्ले में केवल वह ही एक घर है जहाँ अँग्रेजी अखबार आता है।’

‘कौन-सा पेपर लेते हैं?’ मैंने उत्सुकता से पूछा।

‘सर, पेपर वाला *टाइम्स ऑफ इंडिया* कह रहा है।’

जुनून के कारण मुझे उसके परिवार के छिपने की जगह मिल गई थी। मुझे लगभग पूरा

Downloaded from www.The-Gyan.in

विश्वास हो गया था कि शांति ही सत्संग नगर की नई निवासी है।

'सर, अब क्या करें?' रंजन ने पूछा।

'बस अखबार वाले से उसका सही पता ले लो। फिर निगरानी रखने के लिए उसके आसपास ही रहना। जैसे ही शांति देवी दोबारा दिखे, मुझे कॉल करना।'

मुझसे कुछ भी खाया ही नहीं गया। मैं कुछ भी करने की स्थिति में नहीं था, यहाँ तक कि बच्चों के साथ खेलने की स्थिति में भी नहीं। मुझे बहुत बैचेनी हो रही थी।

अब रंजन अपना उत्साह रोक नहीं पा रहा था। मुझे उसकी ऊर्जा महसूस हो रही थी। हमारी भावनाएँ कैसे रंग बदलती हैं!

'सर, मैंने उसे देखा। अभी-अभी वह कपड़े सुखाने आई थी।'

'तुम्हें पक्का पता है?' मैंने सुनिश्चित करने के लिए पूछा।

'सर, इससे ज़्यादा निश्चित नहीं हो सकता। अब आप बताइए कि क्या करें?'

'अपने होटल वापस लौट जाओ और आराम करो। हॉर्लिक्स को पकड़ने के लिए तुम्हारा बिल्कुल ताज़ा दम होना ज़रूरी है।'

पता नहीं क्यों पर मुझे विश्वास था कि वह जल्द ही अपने परिवार से मिलने देवघर आने वाला है।

Downloaded from www.The-Gyan.in

24
‘सुत्तल है’

शुक्रवार का दिन था। मैं अपने दफ्तर में बैठा रोज़ाना के काम निपटा रहा था।

‘सर एक लड़की आपसे मिलने आई है,’ अर्दली ने कहा।

‘उसे अंदर भेज दो,’ मैंने कुछ फाइलों पर हस्ताक्षर करते हुए कहा।

एक लड़की एक अधेड़ उम्र के आदमी के साथ अंदर आई। ‘हाइ, सर, मैं ब्यूटी कुमारी हूँ। याद है, हमारी फोन पर बात हुई थी?’ लड़की ने मुस्कराते हुए अपना परिचय दिया।

मैंने सिर उठाकर उसकी ओर देखा। यह देख कर मैं एकदम सकते में आ गया कि वह अपने नाम के ठीक उलट थी।

मैं कुछ कह पाता, उसके पहले ही उसने अपने पिता को आदेश दिया, ‘पापा, बाहर जाओ, आप। मुझे अमित सर से प्राइवेट में कुछ बात करनी है।’

आश्चर्य की बात थी कि वह आदमी बिना कुछ कहे-सुने बाहर चला गया। मुझे नहीं मालूम था कि ब्यूटी कुमारी की क्या योजना थी। उसने एकदम से मेरी मेज़ पर चढ़कर मेरी बाहों को जकड़ लिया, और मुझे जोर-जोर से हिलाने लगी। उसकी पकड़ काफी मज़बूत थी।

‘सर, आप मुझे बहुत अच्छे लगते हो। मैं आपसे शादी करना चाहती हूँ। मुझे आपकी दूसरी बीवी बनने से भी कोई समस्या नहीं है। मैं दीदी के साथ एडजस्ट कर लूँगी।’ उसने अपनी पकड़ और भी मज़बूत करते हुए कहा।

मुझे गहरा सदमा लगा, इससे पहले कि ब्यूटी कुमारी मेरे साथ और खींचातानी कर पाती, मैंने किसी तरह होश सम्भाल लिया।

‘गार्ड, गार्ड, अजीत, अजीत, जल्दी आओ,’ मैं ज़ोर से चिल्लाया। मेरा बॉडीगार्ड अजीत और अर्दली दौड़ते हुए आए और मुझे मेरी कुर्सी पर पसीने में लथपथ और एक लड़की को मेरी टेबल पर पसरा हुआ पाया। अजीत और अर्दली को समझ नहीं आया कि स्थिति को कैसे संभाला जाए। ऐसी स्थिति के लिए उनके पास कोई प्रशिक्षण भी नहीं था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अजीत, इस लड़की को मेरे दफ्तर से तुरंत बाहर करो। ध्यान रखना कि यह मेरे आसपास तो क्या बल्कि पाँच-सौ मीटर के दायरे में भी न आ सके। कभी नहीं। अरे, केवल यह लड़की ही क्यों? आज के बाद किसी भी लड़की को मैं अपने पास नहीं फटकने देना चाहता,’ मैंने आवेश में कहा।

‘सर, शांत हो जाइए,’ मुझे पानी का गिलास पकड़ाते हुए वह बोला।

मैं एक ही बार में सारा पानी गटक गया, मेरी साँसें अभी भी उखड़ी हुई थीं।

‘सर आपका, काम ही ऐसा है कि आपको हर तरह के लोगों से मिलना पड़ता है। आप यह नहीं कह सकते कि अब से आप किसी लड़की या औरत से नहीं मिलेंगे। आपकी सुरक्षा के लिए हम एक महिला कॉन्स्टेबल को भी यहाँ ऑफिस में तैनात कर देंगे,’ अजीत ने सलाह दी।

मैं चुप रहा। अजीत ने मुझे सलाम किया और अकेला छोड़ दिया। मुझे बाहर हँसी सुनाई दी। वह अजीत की हँसी थी और बाकी स्टाफ भी शामिल हो गए थे।

यह मेरे लिए सबक था। बस मेरे लिए अब कोई ब्यूटियाँ नहीं। तो क्या कि अगर मेरी बीवी मुझ पर ध्यान नहीं दे पाती थी! इस घटना के बाद आज तक मेरे दफ्तर में महिला आगंतुकों के साथ एक महिला पुलिस कॉन्स्टेबल या अफसर हमेशा साथ आती हैं। पता नहीं कब कोई साधारण-सी मुलाक़ात ज़िंदगी की तबाही का एक कारण बन बैठे, फिर चाहे बात पेशे की हो या व्यक्तिगत।

~

हॉर्लिक्स अपनी भाभी से घंटे-भर से बातें कर रहा था। मुझे सचमुच समझ नहीं आता था कि कोई फोन पर बात करके इतना आनंद कैसे ले सकता था। शायद हॉर्लिक्स अपनी प्रेमिका से ऐसे जिस आज़ादी से बात कर पाता था, या फिर शायद उसे अपनी दबी हुई भावनाएँ ज़ाहिर करने का कोई रास्ता चाहिए था। जो भी था, हॉर्लिक्स को हर बार ऐसा लगता कि पिछली बार से ज़्यादा आनंद मिलता था।

किसी नियम के जैसे, उसने अपने प्रेमालाप के बाद फौरन शांति देवी को फोन किया। उसने अपने बच्चों को बहुत लंबे समय से नहीं देखा था। शांति देवी से तो उसे ज़्यादा लगाव नहीं था, पर ऐसा लगता था कि वह अपने बच्चों को बहुत चाहता था।

‘हाँ, सब ठीक?’ हॉर्लिक्स ने पूछा।

‘सब ठीक ही होगा। तुम्हें क्या फर्क पड़ता है हम ज़िंदा हैं या मर गए?’ शांति ने रुखाई से कहा।

‘कब आ रहे हो, बाबा? हम आपका कितने दिनों से इंतज़ार कर रहे हैं,’ चिंटू बोला।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘आ रहे हैं न, जल्दी ही, एक दो दिन में। तुमको बहुत याद करते हैं।’ हॉर्लिक्स ने चिन्टू को दुलारा।

जब तक हालात काबू में होते हैं, बंदूकों और लड़कियों से घिरे एक अपराधी के जीवन में सब मंगल ही मंगल होता है। पर जब पुलिस उनके लिए परिस्थितियाँ कठिन कर देती है, तो उनका जीवन नरक हो जाता है। उसे हमेशा बचकर भागते रहना पड़ता है। अब हॉर्लिक्स की आवाज़ में थकान साफ़ झलक रही थी। इसमें कोई हैरत की बात नहीं है कि वह अपने बच्चों के लिए ऐसा जीवन नहीं चाहता था। चिंटू और रानी इससे अच्छे भविष्य के अधिकारी थे। वह उनसे मिलने के लिए आतुर था।

मैं भी उसे पकड़ने के लिए उतना ही आतुर था। उसके देवघर पहुँचने की खबर सुनते ही मैं जोश से भर उठा।

~

मैंने तुरन्त रंजन को फोन मिलाया।

‘शायद एक या दो दिनों में हमारा टार्गेट जल्द ही देवघर पहुँचने वाला है।’

‘सर, यह तो बड़ी अच्छी खबर है!’ रंजन काफी खुश लग रहा था। अभी तक उसने अनूठा धैर्य दिखाया था।

‘सर, अगर हॉर्लिक्स हमको शूट करे तो? बंदूकबाज़ी या मार-पीट तो होने की सम्भावना है ही,’ रंजन आगे बोला।

मैं बस सुनता रहा।

‘सत्संग नगर के एसएचओ को हमारी योजना के बारे में बताना होगा, अगर हमें कोई दिक्कत हो जाए तो। हमें स्थानीय पुलिस की मदद लेनी पड़ सकती है।’

‘ठीक है, पर तुम्हें स्थानीय पुलिस को हॉर्लिक्स के बारे में कुछ नहीं बताना है। अगर किसी से ज़रा भी जानकारी लीक हो गई, तो यह हमें बहुत महँगा पड़ेगा।’

‘सर, ज़रूर। एसएचओ सत्संग नगर के मनोज ने मेरे साथ ट्रेनिंग ली है। मेरे उससे अच्छे संबंध हैं,’ रंजन ने कहा।

जब किसी अपराधी को किसी दूसरे क्षेत्र में गिरफ्तार करना होता है, तो वहाँ की स्थानीय पुलिस को सूचित करना होता है। उनको गिरफ्तारी की सूचना देनी और फिर स्टेशन डायरी में उसे दर्ज किया जाता है। अगर पारगमन की अवधि चौबीस घंटे से ज़्यादा हो, तो अपराधी को स्थानीय न्यायालय में भी प्रस्तुत किया जाता है।

दो दिन बाद, मेरा फोन तकिये के नीचे वाइब्रेट कर रहा था। वह शांति देवी का फोन था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘हाँ, आ गए हैं। सुत्तल हैं। इतनी दूर से आए हैं तो थक गए होंगे।’

मैं बता नहीं सकता था कि मैं कितना ख़ुश था। शांति देवी ने अपने पति की लोकेशन मुझे बता दी थी। अभी हॉर्लिक्स सम्राट सत्संग नगर वाले अपने घर में था!

बिना समय गँवाए मैंने रंजन को कॉल किया।

रंजन ने फोन नहीं उठाया। मैंने फिर कोशिश की। कोई जवाब नहीं। मैं बहुत बेचैन हो रहा था, यहाँ तक कि कुछ काँप भी रहा था। मेरी वही हालत हो रही थी जो किसी ख़ास परीक्षा के पहले होती है। इस वाली परीक्षा में मुझे फेल नहीं होना था।

‘रंजन, रंजन अपना फोन उठाओ भी,’ मैं बुदबुदाया।

मैं हॉर्लिक्स के विचारों में ही डूबा हुआ था। उस समय तक मैं अपने कमरे में वापस सोने लगा था, क्योंकि अभी भी मैं छिपकलियों के अपने डर पर काबू नहीं पाया था। मैं बच्चों को लांघते हुए बिस्तर से उतरा। मैंने अंधेरे में अपनी चप्पलें ढूँढ़ी और पलंग के पास रखे स्टूल से ठोकर खाकर लगभग गिरने ही वाला था। ऐश नींद में रोने लगी। तानू उसे गोद में लेकर चुप कराने लगी।

उसे एकदम समझ आ गया कि मैं किसी बेहद अहम काम में व्यस्त था।

मैं घर से बाहर खुले में चला गया। हमारा घर बहुत छोटा था। मैं कुछ कदम चलते ही बगीचे में आ पहुंचा। फिर भी, शेखपुरा में हमारा घर दूसरा सबसे बड़ा घर था। डीएम का मकान सबसे बड़ा था, क्योंकि उसने वरिष्ठ इंजीनियर वाला घर हथिया लिया था!

बाहर भोर के समय की हल्की-सी ठँड थी।

रंजन अभी भी मेरा फोन नहीं उठा रहा था। मुझे पता था कि वह सारे दिन का थका हुआ अभी सो रहा होगा। मैंने राजू और कृष्णा को फोन करने का मन बनाया ही था कि फोन बजने लगा। रंजन की कॉल थी।

मैंने फिर से अपने आपको संभाला। एक अफसर अगर चिंतित भी हो, तो भी उसे अपने जूनियर अफसरों से आत्मविश्वास के साथ, आराम से ही बात करनी चाहिए।

‘रंजन, इस समय हॉर्लिक्स अपने घर में ही है। जाओ और उसे पकड़ लो।’

मैंने न तो अपनी बात को आगे बढ़ाई, और न ही रंजन ने मुझसे कोई सवाल पूछा। वह एक अनुभवी पुलिस वाला था। उसे पता था कि उसे क्या करना था। मुझे पूरा विश्वास था कि वह हॉर्लिक्स को पकड़ लेगा।

~

राजू और कृष्णा ने अपनी आँखें मलीं और बिस्तर से कूद पड़े। तीनों चुपचाप तैयार हो गए।

अपने-अपने हथियार जाँचे। केवल शिवनारायण के पास वैध हथियार था। दरअसल, केवल

Downloaded from www.The-Gyan.in

वही कानूनन हॉर्लिक्स को गिरफ्तार कर सकता था। राजू और कृष्णा आम नागरिक थे और रंजन एक निलंबित पुलिसवाला।

रंजन ने सत्संग नगर के एसएचओ को फोन किया।

'मनोज भाई, मैं यहाँ एक आदमी को जालसाजी और धोखाधड़ी के मामलों में गिरफ्तार करने आया हुआ था। ना, ना कोई ख़ास आदमी नहीं है। मुझे शायद तुम्हारे पुलिस बल की ज़रूरत पड़े। दो-चार आदमी दे देना। अगर ज़रूरत पड़ जाए। ठीक है, शुक्रिया।'

~

जिस घटिया-से होटल में वे रह रहे थे, वह हॉर्लिक्स के घर के बहुत पास था। ज़ाहिर है, वह रणनीति के मुताबिक ही चुना गया था। वे जल्द ही कॉलोनी में पहुँच गए। उगते सूरज के साथ-साथ आसमान भी रंग बदल रहा था। रंजन और उसके तीनों साथियों ने एक बार फिर मकान का निरीक्षण किया। पहली मंज़िल पर खिड़कियाँ थीं, जिन पर ग्रिल लगी हुई थीं। घर से भागने के लिए बालकनी से कूद कर निकला जा सकता था, लेकिन नीचे सड़क पर गिरकर पैर टूटने का खतरा था। केवल फ़िल्मी हीरो अक्षय कुमार ही इतनी ऊँचाई से कूदकर अपने पैरों पर खड़ा हो सकता था। रंजन ने एक कॉन्स्टेबल को बालकनी के नीचे तैनात किया और दूसरे को सीढ़ियों पर, जिससे कोई कहीं से भी भाग न निकले। जब रंजन को पक्का भरोसा हो गया कि भागने के सभी रास्ते बंद हो गए हैं, तो वह चुपचाप सीढ़ियों से ऊपर चढ़ा। शिव नारायण कुछ दूरी से संभल-संभलकर उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

राजू और कृष्णा अपनी बोलेरो में इंतज़ार कर रहे थे।

रंजन दरवाज़ा खटखटाने वाला था। अंदर घुसने का केवल वही एक तरीका था। उसे आशा थी कि अनजाने में शांति शायद दरवाज़ा खोलेगी, क्योंकि हॉर्लिक्स तो गहरी नींद में सो रहा था। लेकिन पहले उसने सोचा कि धीरे-से दरवाज़े को धक्का देकर तो देखे। लो! दरवाज़ा तो अलीबाबा की गुफा की तरह खुल गया। रंजन दबे पांव घर में घुसा। उसकी धड़कनें तेज़ हो गई थीं। दरवाज़े के पास के बाथरूम से उसने भजन गाती हुई एक महिला की आवाज़ सुनी। पक्का यह शांति देवी थी जो शायद अपने सुबह के पूजा-पाठ के लिए तैयार हो रही थी। रंजन ने धीरे-से कुंडी सरकाई और उसे अंदर बंद कर दिया। उसे अपनी किस्मत पर भरोसा नहीं हुआ। यह तो कुछ ज़्यादा ही सरल साबित हो रहा था। यह सच है कि मेहनत जितनी की जाए, भाग्य भी उतना ही साथ देता है। उसकी इतनी मेहनत करने के बाद ऐसा होना उचित भी था।

दरवाज़ा बंद करने की ओर नहीं गया था। पलंग पर वह आदमी लेटा था जिसे हम बेतहाशा

Downloaded from www.The-Gyan.in

ढूँढ़ रहे थे। अपने घर में हुई इस घुसपैठ से एकदम अनजान हॉर्लिक्स सम्राट बेसुध सो रहा था। एक ऐसे क्षण में शिव नारायण और रंजन ने एक-दूसरे को देखा, जो सदा के लिए उनकी यादों पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाला था।

रंजन ने हार्लिक्स के मुँह पर हाथ रखा और उसे हिलाया। हार्लिक्स झटके से उठा। उसने जो देखा उस पर वह यक़ीन ही नहीं कर पाया। अपना मुँह रंजन के हाथों से दबा पाकर, उसकी आँखें फटी की फटी रह गईं। एक पल को तो उसने यही सोच लिया कि रंजन उसे गोली मार देगा।

हॉर्लिक्स ने अपनी आँखें बंद कर ली। तो यह था उसका अंत। जितने लोगों की हत्या उसने की थी, उन सबके चेहरे उसकी आँखों के सामने लहरा गए।

'हे भगवान, मेरे बच्चों का ध्यान रखना। उन्हें मेरे सपने पूरे करने देना,' उसने सोचा।

वह बन्दूक का घोड़ा दबने की आवाज़ का इंतज़ार करने लगा।

पर जब वह जानलेवा गोली नहीं चली, तो उसने आँखें खोली और रंजन को अपने हाथ बाँधने की कोशिश करते देखा; वह भी उसी की पत्नी की साड़ी से। क्या बेवकूफी दिखाई थी उसने। हॉर्लिक्स ने ख़ुद को रंजन की पकड़ से छुड़ाया और उसे ज़ोर से एक घूँसा मारा। वह गुस्से से भन्नाया हुआ अपनी बंदूक ढूँढ़ने लगा। उसने बंदूक अपने पास क्यों नहीं रखी? वह इतना लापरवाह कैसे हो गया?'

रंजन अभी भी उसके किए वार के असर से उबर ही रहा था, पर शिव नारायण चुस्त और सतर्क था। उसने हॉर्लिक्स के सिर पर अपने कारबाइन की नली से हमला किया। हॉर्लिक्स की आँखों के आगे अंधेरा छा गया था और वह वहीं पर लड़खड़ा गया। इतना समय रंजन के लिए काफी था, हॉर्लिक्स के हाथ बाँधकर, उसके मुँह में शांति का ब्लाउज़ ठूँसकर, उसकी आँखों पर वह गमछा बांधने के लिए, जो शिव नारायण हमेशा अपने पास रखता था। इसी बीच, शांति ने स्नान कर लिया था। बाहर न निकल पाने पर उसने दरवाज़ा पीटना शुरू कर दिया। हॉर्लिक्स ने बंधन से छूटने की पूरी कोशिश की, पर अब वह कानून की गिरफ़्त में था। केवल उसकी पत्नी ही उसकी मदद कर सकती थी, पर वह भी अंदर बंद थी। रंजन और शिव नारायण ने उसे सीढ़ियों से नीचे धकेला।

कृष्णा और राजू बहुत ख़ुश थे, उनकी आँखों से वह खुशी झलक रही थी।

'जल्दी चलना चाहिए। भीड़ इकट्ठी न हो जाए। लोग धीरे-धीरे अपने घरों से बाहर आ रहे हैं,' रंजन ने राजू और कृष्णा को चुप रहने का इशारा किया। वे ज़रा भी आवाज़ करते तो हॉर्लिक्स उन्हें पहचान लेता।

कृष्णा अपने खौलते हुए गुस्से को काबू नहीं कर पाया और उसने हॉर्लिक्स के मुँह पर

नीचे से हॉर्लिक्स के आँसू बह निकले।

Downloaded from www.The-Gyan.in

25
‘मेरे पति बिहार के “मशहूर” क्रिमिनल हैं’

‘सर पकड़ लिया। हमने उसे पकड़ लिया है। आगे के लिए क्या ऑर्डर है?’ कुछ समय पहले हुए नाटक के एकदम उलट रंजन ने शांत रहकर आराम से बताते हुए पूछा।

मैंने राहत की सांस ली और घर के अन्दर भागा।

‘क्या?’ आधी नींद में तानू ने पूछा।

मेरी मुस्कुराहट और चेहरे की चमक ने सब कुछ कह दिया। वह पलंग से कूद पड़ी और उसी स्टूल से टकराई, जिससे पहले मैं टकराया था। दोनों बच्चे जाग गए और रोने लगे। पर इस बार तानू ने चिन्ता नहीं की।

‘अच्छी खबर है?’ उसने पूछा।

मैंने सिर्फ उसके माथे को चूमा। वह कसकर मुझसे लिपट गई।

रंजन तसल्ली से मेरे निर्देशों का इंतज़ार कर रहा था। उस पल का महत्व वह समझ रहा था।

‘बहुत बढ़िया, रंजन। मुझे तुम पर गर्व है। जल्दी से इसे शेखपुरा ले आओ।’

‘धन्यवाद, सर। सब कुछ आपके मार्गदर्शन की वजह से हुआ है,’ किसी भी पुलिसवाले को बधाई देते समय जो जवाब देना होता है वही रटारटाया जवाब रंजन ने भी दिया।

~

रंजन ने मनोज को फोन मिलाया।

‘मनोज भाई, धन्यवाद। बहुत आभारी हैं आपके जो आपने हमें अपने आदमी दिए। यह आदमी एक बड़ा अपराधी था—कुख्यात हॉर्लिक्स सम्राट। बिहार में कई हत्याओं के मामले में वांछित है। मैं इसे शेखपुरा ले जा रहा हूँ।’

एसआई मनोज को ज़रा झटका तो लगा, पर वह उस समय बेहद व्यस्त था। उसने इस

Downloaded from www.The-Gyan.in

शांति के लगातार दरवाजा खटखटाने और चिल्लाने से उसकी मकान मालकिन का ध्यान उसकी ओर गया, वह ऊपर की मंज़िल की ओर भागी और उसने बाथरूम का दरवाज़ा खोला। शांति देवी यह जानकर स्तब्ध रह गई कि उसके पति को कुछ घुसपैठिए उठाकर ले गए थे। उसने तुरंत मुझे फोन किया।

'साहिब, हम देवघर से शांति देवी बोल रहे हैं।'

मैं एकदम हैरान हो गया।

'कौन शांति देवी? तुमने मुझे क्यों फोन किया?' मैंने जानबूझकर अन्जान बनते हुए कहा।

'सर मैं "मशहूर" क्रिमिनल हॉर्लिक्स सम्राट की पत्नी हूँ। आप उसको ढूँढ़ रहे थे,' उसने ज़ोर देकर कहा।

मुझे बहुत मज़ा आया था। अच्छा तो हॉर्लिक्स की बीवी के लिए उसका पति काफी 'मशहूर' व्यक्ति था।

'साहिब, कुछ लोग उसे थोड़ी देर पहले उठाकर ले गए हैं। बताइए तो, क्या वो आपके आदमी थे? मुझे उसकी सुरक्षा की चिंता हो रही है।'

'मुझे तुम्हारे पति से कोई लेना-देना नहीं है। मैं शेखपुरा का एसपी हूँ, देवघर का नहीं। मुझे कैसे पता होगा कि देवघर में क्या चल रहा है?' मैंने सख्ती से कहा और फोन काट दिया।

उफ़! यह तो बहुत ही मज़ेदार खेल हो गया था। शांति देवी के पास भी मेरा नंबर था। और उसकी इतनी हिम्मत थी कि वह मुझे फोन करके अपने पति की सुरक्षा के बारे में पूछे।

बदकिस्मती से वह आसानी से हार मानने वाली नहीं थी। उसने देवघर की एसपी को फोन किया, 'मैडम हमारा हसबैंड का किडनैप हो गया है। मेरी मदद कीजिए,' शांति ने विनती की। उसने एसपी को पूरी घटना बताई।

एसपी अमृत कौर काफी थकी हुई थीं। शांति के फोन ने शायद उनको कुछ ज़्यादा ही जल्दी उठा दिया था। ज़्यादातर एसपी और एसएचओ का काम ही ऐसा होता है कि कभी-कभी उन्हें रात को 2 बजे तक भी जागना पड़ता है।

फिर भी, अमृत कौर तुरंत हरकत में आ गईं। उनके ज़िले में पहले ही बहुत मुश्किलें थीं, वह यह नहीं चाहती थीं कि अब एक अपहरण की घटना भी हो जाए। उन्होंने एसएचओ मनोज को फोन किया।

'बड़ा बाबू, तुम्हारे क्षेत्र में किसी हॉर्लिक्स सम्राट का अपहरण हो गया है। तुरंत सारी

से ज़रा भी लापरवाही बर्दाश्त नहीं करूँगी। अगर तुम अगुआ हुए को वापस नहीं लाओगे तो मैं तुम्हें सस्पेंड कर दूँगी।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘मैडम, वह आदमी तो बहुत खतरनाक अपराधी है। शेखपुरा और नवादा में वह दर्जनों केस में वांछित था। शेखपुरा पुलिस की टीम पिछले कुछ दिनों से उसे पकड़ने के लिए यहाँ डेरा डाले हुई थी,’ मनोज ने इस उम्मीद से बताया कि यह ऑपरेशन शेखपुरा पुलिस का है, यह जानकर शायद एसपी का गुस्सा कुछ ठंडा हो।

मनोज का जवाब सुनकर अमृत कौर तो और भी भड़क गईं।

‘तुमने शेखपुरा पुलिस को उसे क्यों ले जाने दिया? हॉर्लिक्स सम्राट की गिरफ्तारी तो हमारे लिए एक बड़ी कामयाबी होती। उसे वापस लेकर आओ नहीं तो अपनी नौकरी गँवा बैठोगे,’ नाराज़ होकर अमृत ने मनोज को आदेश दिया।

चिंतित मनोज ने तुरंत रंजन को फोन लगाया।

‘रंजन भाई, तुरंत वापस आ जाओ। मेरी एसपी मैडम मुझसे बहुत गुस्सा हो गई हैं। और तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि तुम हॉर्लिक्स सम्राट को खोज रहे थे?’

‘मनोज, हॉर्लिक्स की पहचान बता देने से तो हमारा खुफिया मिशन खतरे में पड़ जाता। अब तो हम शेखपुरा के रास्ते में हैं।’

अब मनोज थोड़ा नाराज़ हुआ। उसको ऐसा लगा जैसे कि रंजन ने उसके साथ धोखा किया था।

‘वापस आओ, जल्दी से। हमने पहले ही शेखपुरा की सड़क ब्लॉक कर दी है। अगर तुम वापस नहीं आए तो मुझे तुम्हारे खिलाफ अपहरण का मामला दर्ज करना पड़ेगा।’

रंजन अब दुविधा में पड़ गया। उसने फ़ौरन मुझे फोन किया और सारी बातें बताई। कहानी में अचानक आये इस मोड़ से मैं भी दुविधा में आ गया था।

मैंने जल्दी से अमृत कौर का नंबर मिलाया।

‘गुड मॉर्निंग, मैडम। मैं शेखपुरा का एसपी अमित लोढ़ा बोल रहा हूँ। मेरी टीम ने अभी-अभी आपके ज़िले के सत्संग नगर कालोनी से एक कुख्यात अपराधी हॉर्लिक्स सम्राट को पकड़ा है। मैडम, मैं आपका आभारी रहूँगा अगर आप उसे जल्द से जल्द शेखपुरा भेज दें।’

‘हाँ, अमित ज़रूर। मैं बस उससे पूछताछ करना चाहती हूँ कि कहीं वह देवघर में तो कोई अपराध करने की योजना नहीं बना रहा था,’ अमृत कौर मेरे फोन से ज़्यादा खुश नहीं लग रही थीं। उनके जवाब से मुझे तसल्ली नहीं हुई। हॉर्लिक्स देवघर में क्यों अपराध करेगा?

‘एक बात और, मैडम। कृपया हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी को गुप्त ही रखिएगा। हम किसी को पता नहीं लगने देना चाहते हैं कि वह हमारी हिरासत में है। मीडिया को बिल्कुल

‘ठीक है।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘मैडम, मैं फिर से कह रहा हूँ, इस मामले में गोपनीयता बरतनी बहुत ज़रूरी है। हमें हॉर्लिक्स से पूछताछ करनी है और उसके और साथियों के बारे में पता लगाना है। अगर उनको हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बारे में पता चल गया तो वे सतर्क हो जाएँगे, और अपनी छिपने की जगह पक्का बदल लेंगे।

मैं इससे ज्यादा साफ-साफ कुछ नहीं कह सकता था। अमृत कौर मुझसे दो बैच सीनियर थीं। वे काफी अनुभवी थीं और स्थिति की नज़ाकत समझ सकती थीं।

मैंने कुमार सर को समाचार सुनाने के लिए फोन किया।

‘सर, हमने हॉर्लिक्स को पकड़ लिया। रंजन और उसकी टीम ने उसे देवघर में पकड़ा है।

कुमार सर खुश हो गए। इस खुशखबरी का बहुत इंतज़ार किया था और मुझे ख़ुशी थी कि इस कठिन समय में मैं उन्हें इतनी अच्छी खबर दे पा रहा था। वे अपने बेटे के पास पटना गए हुए थे, जो बीमार था।

‘शाबाश! उससे पूछताछ करो और फिर जो पता चले मुझे बताना।’

‘सर, आपके और देवघर के एसपी के अलावा और किसी को इस गिरफ्तारी के बारे में नहीं पता है, कारण पता ही है मैंने बताया कि अमृत कौर ने हॉर्लिक्स को पूछताछ के लिए बुलाया है।

‘ठीक है, मैं समझ सकता हूँ। कल आता हूँ।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

26
‘साहिब गुसल में है’

हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी का उत्सव तो मनाना ही चाहिए था। मैंने अपने रसोइये को आलू के पराठे बनाने के लिए कहा और तब तक ऐश के साथ खेलते-खेलते भुजिया खाता रहा। वह मेरी ओर बेसब्री से देखने लगी कि मैं उसे भी भुजिया खिलाऊँ। जब मैंने थोड़ी-सी भुजिया उसे दी तो वह खुशी से चहक उठी थी।

अजीत भागता हुआ अंदर आया।

‘सर, एडीजी आपसे बात करना चाहते हैं। वायरलेस ऑपरेटर ने अभी-अभी संदेश दिया है।’

एडीजी मुझे खास पसंद नहीं करते थे, क्योंकि वे अभी भी मुझसे मेरे नालंदा के दिनों में उनके भतीजे को नियुक्त न करने के लिए नाराज़ थे। और मैं उन्हें इसलिए पसंद नहीं करता था क्योंकि वे मुझे पसंद नहीं करते थे। हमारे बीच हमेशा बढ़ते जाने वाला बैरभाव पैदा हो गया था।

समय के साथ, मुझे अहसास हुआ कि इस मन-मुटाव से केवल मुझे ही दर्द पहुंच रहा था, और कुछ भी नहीं। कभी-कभी प्रतिक्रिया देने की जगह बात को जाने देना बेहतर होता है।

मैंने एडीजी निवास का नंबर मिलाया। एके प्रसाद अपनी पतली आवाज़ के लिए जाने जाते थे। ‘हेलो,’ किसी ने महीन आवाज़ में कहा।

‘गुड मॉर्निंग सर, शेखपुरा से अमित बोल रहा हूँ।’

‘साहिब गुसल में हैं।’

‘क्या मैं जान सकता हूँ आप कौन बोल रहे हैं?’

‘मैं एडीजी की पत्नी बोल रही हूँ। दस मिनट बाद फोन कर लें।’

‘ठीक है, मैडम। कष्ट के लिए माफी चाहता हूँ।’

मैडम की आवाज़ एडीजी की आवाज़ से बहुत मिलती-जुलती थी। मैं मुस्कुराया और

‘हेलो, एडीजीज़ रेज़िडेंस।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘गुड मॉर्निंग सर। अमित बोल रहा हूँ। आपने कॉल करने के लिए कहा था।’

‘ओह, अंकल। पापा पूजा कर रहे हैं। आप कुछ मिनट बाद कॉल कर लेंगे, प्लीज़?’

इस बार एडीजी की बेटी बोल रही थी। वह भी उन्हीं की तरह बोलती थी।

कुछ देर बाद मैंने फिर से कॉल किया। इस बार मैडम को ‘सर’ कहकर मैं ख़ुद को फिर शर्मिंदा नहीं करना चाहता था।

‘हेलो,’ फिर एक पतली आवाज़ में किसी ने कहा। मैंने सोचा कि दूसरी ओर फिर कोई स्त्री ही होगी।

‘मैडम, क्या मैं एडीजी सर से बात कर सकता हूँ?’

‘लोढ़ा हम एडीजी बोल रहे हैं।’ सुनकर मेरे गाल शर्म से लाल हो गए।

‘सॉरी सर, मैंने सोचा मैडम हैं,’ मैंने दबे स्वर में बोला।

एडीजी ने मेरी माफ़ी अनसुनी कर दी। या तो वे इस गड़बड़ के आदी थे या फिर उन्होंने मान लिया था कि मैं जान-बूझकर उनका मज़ाक उड़ा रहा था।

‘तुमने मुझे बताया नहीं कि हॉर्लिक्स सम्राट पकड़ा गया है,’ उन्होंने कहा। मैं चकित रह गया था।

‘सर, मैं आपको बताने ही वाला था,’ मैंने झूठ बोला, ‘लेकिन आपको कैसे मालूम हुआ?’

‘तुम टीवी नहीं देखते क्या? हॉर्लिक्स की खबर सारे न्यूज़ चैनलों पर आ रही है। देवघर की उस महिला एसपी ने अभी-अभी प्रेस वार्ता की है। वह दावा कर रही है कि हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी देवघर पुलिस की उपलब्धि है।’

मैं चुप रहा।

‘क्या तुम इस केस पर काम नहीं कर रहे थे? तुम्हें इसलिए ही शेखपुरा पोस्ट किया था न?’

‘सर, मेरी ही टीम ने हॉर्लिक्स को गिरफ्तार किया है। मैंने जान-बूझकर उसकी गिरफ्तारी को गुप्त रखा था, जिससे हमें सामन्त प्रताप की सूचना मिल सके।’

मेरी आवाज़ में निराशा साफ थी।

‘ठीक है, अब उसे लेकर आओ और अच्छी तरह से पूछताछ करो।’

मैंने टीवी चलाया। सारे चैनलों पर हॉर्लिक्स का चेहरा था। मुस्कुराती हुई अमृत कौर मीडिया को बता रही थी कि कैसे देवघर पुलिस ने कुख्यात अपराधी हॉर्लिक्स सम्राट को गिरफ्तार किया था। मैं तो बिल्कुल टूट-सा गया था। अमृत कौर ने अपना वादा तोड़ दिया था। अब विजय को हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बारे में पता चल जाएगा और वो दोगुना

मैंने रंजन को कॉल किया, मैं उसकी अयोग्यता से बहुत नाराज़ था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘यह प्रेस कॉन्फ्रेंस क्यों होने दी तुमने? मुझे बताया क्यों नहीं? हमारी सारी मेहनत गई ना पानी में?’

मेरा सारा उल्लास गायब हो गया था। इतनी जल्दी सब कुछ कैसे बदल गया था?

रंजन भी उतना ही उदास था।

‘सर, हमें तो एसपी के ऑफिस के बाहर इंतज़ार करने को कहा गया था। स्टाफ ने हमें कहा था कि सभी औपचारिकताएँ जल्द ही पूरी कर ली जाएँगी। हमें नहीं पता था कि एसपी प्रेस कॉन्फ्रेंस बुला लेंगी। यहाँ तक कि देवघर पुलिस ने तो हमें हॉर्लिक्स को शेखपुरा ले जाने के लिए ट्रांज़िट रिमांड मंगवाने को कहा है।’

मैं अपना गुस्सा काबू नहीं कर पा रहा था। मैंने अमृत कौर को फोन किया। तीन-चार बार फोन करने पर भी उन्होंने नहीं उठाया। मुझे पता था कि अब वह मेरा कॉल नहीं उठाएँगी। मैंने उनके कार्यालय में फोन मिलाया।

‘एसपी ऑफिस, देवघर,’ दूसरी ओर से आवाज़ आई।

‘पीए साहिब, मैं *आज तक* से एक पत्रकार बोल रहा हूँ। क्या मैं एसपी मैडम से बात कर सकता हूँ? मुझे अपने चैनल के लिए एक लाइव बाइट चाहिए।’

अमृत कौर जोश से भरी हुई फोन पर बोलीं। मेरी आवाज़ गुस्से से काँप रही थी। मैंने रूखे और सख्त अंदाज़ में उनसे कहा, ‘मैडम, ये आपने क्या कर दिया? हमारी महीनों की दिन-रात की मेहनत को आपने तबाह कर दिया। आप इतनी अनप्रोफेशनल कैसे हो सकती हैं?’

मैंने उनकी वरिष्ठता की परवाह नहीं की।

‘नहीं-नहीं, अमित। ऐसा नहीं है। मैं समझा सकती हूँ।’ अमृत कौर की चहकती आवाज़ से खुशी गायब हो गई थी।

‘तुम जानते हो? देवघर में हाल ही में लगातार अपराध होते चले जा रहे हैं। लोगों का पुलिस पर विश्वास काफी कम हो गया है। हम चाह रहे थे कि कोई बड़ी उपलब्धि मिल जाए जो लोगों का फिर से पुलिस में भरोसा जगा जाए। उम्मीद करती हूँ कि तुम समझ सकोगे। जैसे ही तुम अपनी टीम भेजोगे, हम तुरंत हॉर्लिक्स को भेज देंगे। सारी औपचारिकताएँ पूरी कर ली गई हैं,’ अमृत कौर एक ही साँस में कहती चली गईं।

मैंने ज़ोर से फोन पटका। ऐसा अक्सर होता है—कभी-कभी पुलिस की पूरी कोशिशों के बावजूद किसी-किसी जिले में अपराध का ग्राफ अचानक चढ़ने लगता है। जनता का भरोसा पुलिस से हटने लगता है जिससे पुलिस विभाग को काफी आलोचना झेलनी पड़ती है। मीडिया का ध्यान आकर्षित करने और जनता का भरोसा जीतने के लिए पुलिस ऐसी

जनता को उनकी मेहनत नज़र आना भी ज़रूरी होता है। हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी देवघर पुलिस के लिए वही आशा की किरण थी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने वैधानिक औपचारिकताओं की अच्छी तरह समझ रखने वाले एसआई अब्दुल अज़ीज़ को देवघर से हॉर्लिक्स को लाने का लिए भेजा। उसकी एक और विशेषता थी। वह ज़्यादा प्रश्न नहीं पूछता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

27
पूछताछ

हॉर्लिक्स को देवघर से ला रही शेखपुरा पुलिस की टोली का रंजन ने कुछ दूरी से पीछा किया। राजू और कृष्णा कार में चुपचाप बैठे खिड़की के बाहर झाँकते रहे। हॉर्लिक्स के साथ कोई भी लापरवाही नहीं कर सकते थे।

एसआई अब्दुल अज़ीज़ बार-बार पीछे देख रहा था कि हॉर्लिक्स सुरक्षित है या नहीं। अगर उसको गिरफ्तारी कुछ अटपटी लग रही थी तो भी उसने जताया नहीं। वैसे उसने रंजन से यह ज़रूर पूछ लिया कि वह देवघर में क्या कर रहा था?

'सर, मुझे बड़ा साहिब ने देवघर यह पक्का करने के लिए बुलाया था कि गिरफ्तार किया गया आदमी हॉर्लिक्स ही था,' रंजन ने हाज़िरजवाबी से काम लिया था।

बड़ा साहिब या एसपी जिला पुलिस का सबसे बड़ा बॉस होता है। इसलिए अब्दुल अज़ीज़ ने और सवाल नहीं पूछे। उसका इस मामले से कोई लेना-देना नहीं था। उसका काम तो हॉर्लिक्स को सुरक्षित शेखपुरा पहुँचाना था। किसी भी तरह की भागने की कोशिश से निपटने के लिए दो जीपों में भरे बारह कमाडों काफी थे।

'सर, हम शेखपुरा बस पहुंचने वाले हैं,' रंजन ने मुझे बताने के लिए फोन किया।

'ठीक है, मैंने अजीत और मेरे पर्सनल गार्डों को हॉर्लिक्स को छिवाड़ा पुलिस स्टेशन तक लाने के लिए भेजा है। मैं भी कुछ देर में पहुँच रहा हूँ। तुम सब अभी के लिए थोड़ा छिपकर रहना।'

छिवाड़ा सामन्त प्रताप के अड्डे से बहुत दूर था और हम वहाँ उसके गैंग के सदस्यों के किसी भी प्रकार के संभावित हमले से बचे रह सकते थे। आखिर, वह पहले भी जेल से भाग चुका था।

'और रंजन, शाबाश, बहुत बढ़िया! पर याद रखना, हमारा काम अभी खत्म नहीं हुआ है,' मैंने रंजन की हौसला अफज़ाई की।

~

Downloaded from www.The-Gyan.in

अजीत और कुछ कमांडो एसआई अज़ीज़ का शेखपुरा बॉर्डर पर इंतज़ार कर रहे थे। एसआई अब्दुल अज़ीज़ अजीत को देखकर मुस्कुराया। वह एक गौरवमय दिन था, न केवल शेखपुरा पुलिस के लिए बल्कि पूरे बिहार पुलिस के लिए भी। अजीत ने उस आदमी को देखा, जिसके नाम मात्र से एक नहीं चार जिलों के लोग थर-थर काँपते थे। एक ऐसा आदमी – जिसने आदमी, औरतों और बच्चे समेत जाने कितने लोगों की हत्या की थी – चेहरे से ज़रा भी हत्यारे जैसा नहीं लगता था। वह किसी भी और मामूली, बेनाम, अंजान व्यक्ति जैसा ही था, जो हमारे देश के गाँवों और शहरों में रहते हैं। हॉर्लिक्स ने अपना सिर तक नहीं उठाया। वह नीचे देख रहा था, उदासीन और डरा हुआ। अजीत ने उसकी हथकड़ियाँ जाँची। वह कोई चूक नहीं होने देना चाहता है। उसे पता था कि हॉर्लिक्स कितना खतरनाक था।

छिवाड़ा का एसएचओ अनुज कुमार एक जाबांज पुलिसवाला था। अपने करियर में उसने कितने ही कुख्यात अपराधियों का सामना किया था। उसके बाएँ पैर की जाँघ में खूंखार सुल्तान गैंग से एनकाउंटर के दौरान लगी एक बुलट का घाव था, जो उसकी हिम्मत और प्रतिबद्धता का सबूत था। उसे अपने काम पर बहुत गर्व था और होना भी चाहिए। तो क्या अगर उसे अब थोड़ा लंगड़ाकर चलना पड़ता था!

पर वह भी इस अप्रत्याशित घटना के लिए तैयार नहीं था। शेखपुरा का ख़ौफ-हॉर्लिक्स सम्राट, टूटा और हताश-सा अंदर आया। उसने अविश्वास में अपनी आँखें मलीं। क्या सच में वह हॉर्लिक्स था? वह हत्यारा, जो पिछले पाँच सालों से पुलिस की मुसीबतों का एक बड़ा कारण था? वही हॉर्लिक्स जो आर्मी में अच्छा निशानची बन सकता था, लेकिन परिस्थितियों ने कुछ और बना दिया?

अजीत ने हॉर्लिक्स को लॉकअप के अंदर कर दिया। पूरा पुलिस थाना सचेत और सावधान हो गया। जब मैं पहुँचा, तो मैंने अनुज के कमरे में जाकर उसे हॉर्लिक्स को सेल से बाहर लाने के लिए कहा। मुझे उसका एकदम सामान्य रूप देखकर बिल्कुल हैरत नहीं हुई। स्क्रीन वाले अपराधियों की तुलना में असल जीवन के अपराधी सामान्य ही दिखते हैं। पुलिसवालों में भी अभिनेताओं जैसी अकड़ नहीं होती। हम असाधारण जुनून वाले साधारण लोग ही हैं।

हॉर्लिक्स बाहर आया और हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

'प्रणाम, सर,' उसने कहा।

यही बिहारी संस्कृति की खूबी है। बिहारी लोग हमेशा सबसे बहुत आदर से बात करते हैं। वे हरेक को 'आप' कहकर संबोधित करते हैं, चाहे वह उम्र में बहुत छोटा ही क्यों न हो।

अलग क्यों थे? आखिर ऐसा इंसानी दिमाग में क्या आ जाता है कि एक साधारण पारिवारिक व्यक्ति ऐसा कुख्यात अपराधी बन जाता है।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैं उठा, पास जाकर हॉर्लिक्स को घूरा और फिर ज़ोर से धकेला। उसका संतुलन बिगड़ गया। वह रोने लगा। जिस समय मैं किसी खतरनाक अपराधी से मिलता था तो ऐसा जरूर करता था। मैं इस तरह से जताता था कि बॉस कौन है।

'बेटा को एसपी बनाना है। क्या तुम्हारे बेटे को पता है कि तुम कौन हो? जब बड़ा होगा तो उसे तुम पर शर्म आएगी।' मैंने उसके ज़ख्मों को कुरेदा।

हॉर्लिक्स की आँखों से आँसुओं की झड़ी लग गई।

'अब बताओ, सामन्त प्रताप कहाँ है?'

'सर, मुझे सच में नहीं पता। और अगर पता होता, तो भी मैं नहीं बताता।'

अजीत ने लाठी उठाई, मैंने अजीत को घूरा। वह अपनी ग़लती समझ गया।

मेरे ट्रेनिंग के दिनों में एक बार मेरा बहुत बुरा अनुभव रहा था।

युवा प्रोबेशनर आईपीएस अफसरों को एसएचओ पद पर तैनात किया जाता है, ताकि वे पुलिस थानों के काम करने का तरीका समझ सकें। मुझे भी राँची के एक अलग-थलग पुलिस थाने, बेड़ो में पोस्ट किया गया था। मेरे पदभार संभालने के कुछ दिनों बाद ही वहाँ एक घर में कुछ अपराधियों ने लूटपाट की। मैंने उस केस को सुलझाना अपनी निजी प्रतिष्ठा का मामला बना लिया।

'सर, पक्का गौरव साहू ने किया होगा!' एसआई हरिशंकर ने कहा, जो बेड़ो पुलिस थाने में मेरे ट्रेनर थे।

'आपको कैसे पता?'

'अरे सर, उसका हिस्ट्री रहा है। उसका क्राइम रिकॉर्ड देख लीजिए। वह कुछ दिन पहले ही मौका-ए-वारदात के आस-पास घूमता दिखा था,' हरिशंकर ने उत्तर दिया।

मैंने एनपीए में सिखाए गए पूछताछ के तरीके इस्तेमाल करने की पूरी कोशिश की, पर कोई फायदा नहीं हुआ। पुलिस लाइन में फिंगरप्रिंट उठाने का कोई किट नहीं था, और यदि हम उंगलियों के निशान उठा भी लेते तो उन्हें मिलाने के लिए कोई डेटाबेस नहीं था। मुझे कोई और सुराग नहीं मिले।

मैंने अपनी हताशा में गौरव साहू के घर पर छापा मार दिया, जहाँ वह शांति से सो रहा था। ज़ाहिर है, उसने कहा कि वह बेगुनाह था। मुझे भी संदेह था कि वह लूट-पाट से जुड़ा भी था या नहीं। कभी-कभी किसी छोटी-मोटी चोरी-चकारी के बाद ही किसी आदमी पर 'अपराधी' का ठप्पा लग जाता है। गौरव एक युवक था, जिसका नाम कई सारे अपराधों के लिए पुलिस डोसियर (फ़ाइल) में आया तो था, पर किसी भी अपराध में उसके शामिल होने का कोई सबूत नहीं था।

मानसिक रूप से तोड़ने की भी कोशिश की। मेरी कुंठा की कोई सीमा ही नहीं रह गई थी। लेकिन तब तक, गौरव पूरा थक कर चूर हो चुका था और बेहोश हो गया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

हरिशंकर ने मेरी ओर घबराकर देखा।

'सर, यह क्या हो गया?'

'सर, मर गया क्या?' हेड कॉन्स्टेबल मुंशी ने चिंता करते हुए पूछा।

'मुझे नहीं पता,' हरिशंकर ने उत्तर दिया।

पुलिस स्टेशन का पूरा स्टाफ रफूचक्कर हो गया।

मैं डरते-डरते गौरव के पास घुटनों पर झुककर बैठा।

'हे भगवान, इतने क्रूर भी मत बनो,' मैंने प्रार्थना की। मैं अपना करियर शुरू होने से पहले ही खत्म होने नहीं होने देना चाहता था।

मैं मदद के लिए चिल्लाया, पर किसी भी सिपाही ने उत्तर नहीं दिया।

किसी कारण से इंस्पेक्टर राम सिंह अभी भी मेरे सामने ही खड़ा था। शायद वह कुछ ज़्यादा ही डरा हुआ था और भाग नहीं सका।

'इंस्पेक्टर साहब, मेरी मदद कीजिए। आइए भी,' मैंने आदेश दिया।

इंस्पेक्टर ऐसे चल रहा था जैसे किसी नशे में हो, पर उसकी सहायता गौरव को मेरे खटारा जिप्सी में पीछे डालने के लिए काफी थी।

रांची ले जाने के लिए जितनी तेज़ी से जिप्सी को चला सकता था, मैंने चलाया। रास्ते में, मैं एक बच्चे को बाल-बाल बचा पाया और एक ट्रक से भिड़ते-भिड़ते बचा। मेरी जिप्सी रास्ते की तमाम बेहूदे तरीके से बने स्पीड ब्रेकरों पर ठोकरें खाकर कूदी। मैंने परवाह नहीं की।

'पानी पिलाओ, राम सिंह! बेहोश न होने पाए।' मैंने पीछे मुड़कर कहा।

राम सिंह ने एक शब्द भी नहीं बोला। शायद वह कल्पना कर रहा था कि उस पर किस तरह के आरोप लगेंगे क्योंकि हमारी निगरानी में यह आदमी एकाएक गिर गया था।

राँची के सबसे अच्छे अस्पताल, राजेंद्र मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल तक की डेढ़ घंटे की ड्राइव दौरान मैं लगातार प्रार्थना करता रहा। राम सिंह और मैंने गौरव को स्ट्रेचर पर लिटाया और इमरजेंसी ट्रॉमा सेंटर में ले गए।

'प्लीज़ डॉक्टर, इमरजेंसी है। यह आदमी मौत से लड़ रहा है। प्लीज़ कुछ कीजिए,' मैंने विनती की।

वह युवा डॉक्टर, जो शायद एक इंटर्न था, काफी हैरान लग रहा था।

'यह हुआ कैसे?'

'यह आदमी इंट्रोगेशन (पूछताछ) के दौरान बेहोश हो गया।'

डॉक्टर ने गौरव की नब्ज़ आदि चेक की।

आभारी रहूँगा।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

उस युवा इंटर्न ने मेरी ओर देखा। मैं यूनिफ़ॉर्म में नहीं था। उसने बस सिर हिलाया और गौरव को अंदर ले गया।

एक घंटे बाद, डॉक्टर अपने सीनियर डॉक्टर के साथ बाहर आया। उन बुजुर्ग डॉक्टर ने मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा और बड़े दुलार से बोले।

'बेटा, आगे से ध्यान रखना। अभी तुम्हारा बहुत लंबा करियर बाकी है।'

मैंने सहमति में सिर हिलाया और उनसे हाथ मिलाया। मैंने अपने आप से वादा किया कि मैं भविष्य में थोड़ी भी गम्भीर पूछताछ से दूर रहूँगा।

~

अजीत हॉर्लिक्स की ओर घूरते हुए बोला, 'बता, कहाँ पे है सामन्त प्रताप? हम तुम्हारे पूरे गैंग को खत्म कर देंगे।'

काफी समय तक पूछताछ चलती रही, पर हॉर्लिक्स ने कोई भी जानकारी नहीं दी। पूरे दिन के बीत जाने पर मैंने पूछताछ बंद कर दी।

'अनुज, मैं पुलिस लाइन से और जवान भेज रहा हूँ, किला बना दो थाने को। हॉर्लिक्स पर नज़र भी रखना। वह किसी को नुकसान न पहुँचा सके। खास तौर पर ख़ुद को।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

28
‘मेरा बेटा पुलिस अफसर बनेगा’

हॉर्लिक्स छिवाड़ा पुलिस स्टेशन की ठंडी ज़मीन पर लेटा हुआ था। वह आँखें बंद करके उस दिन को याद कर रहा था जिसने उसकी पूरी ज़िंदगी बदल दी थी।

उसने अपनी दुकान उस दोपहर जल्दी बंद कर दी थी। उसे जवाहर नवोदय विद्यालय के प्रिंसिपल से मिलने जाना था। वह प्रिंसिपल के कार्यालय जल्द से जल्द पहुँचना चाहता था, क्योंकि बहुत मुश्किल से उन्होंने मिलने का समय दिया था।

वह बहुत उत्साहित था कि उसके बेटे, चिंटू को अच्छे स्कूल में एडमिशन मिल जाएगा। ख़ुद अनपढ़ होते हुए भी वह कड़ी मेहनत करता रहा था जिससे उसके बच्चों को किसी चीज़ की कमी न हो। वह अपने मन में कई बार सोचता था, ‘मेरा बेटा इतना होशियार है। मेरे सारे सपने पूरे करेगा। बड़ा आदमी बनेगा। वह तो पुलिसवाला बनेगा—एसपी बनेगा’।

गरीब परिवार में जन्मा हॉर्लिक्स हमेशा गाँव में सबसे ताने सुनता रहता था, क्योंकि वह पढ़ा-लिखा नहीं था और मुश्किल से बस अपना नाम लिख पाता था। चूँकि वह दुबला-पतला और मरियल-सा था, लोग भी उसे ज़्यादा मान नहीं देते थे। वह इतना सूखा-सा था कि लोग कहते थे, ‘इसको हॉर्लिक्स पिलाओ।’ और इस तरह उसका नाम वही पड़ गया। हॉर्लिक्स ने पुलिस में भर्ती का सपना पाल रखा था, क्योंकि यह उसके लिए मर्दानगी का असल प्रतीक था। वह सभी पुलिसवालों को सम्मान से देखता था, खास तौर पर एसपी को।

हॉर्लिक्स बिहार पुलिस के कॉन्स्टेबल रिक्रूटमेंट की परीक्षा देने भी गया था।

‘चलो भाई, निकलो मैदान से। क्या तुम्हें पता नहीं कि कॉन्स्टेबल बनने के लिए कम से कम मैट्रिक पास होना ज़रूरी है?’ भर्ती के प्रभारी डीएसपी ने पूछा।

‘और तुम तो पीएचडी भी होते तो भी हम तुम्हें भर्ती नहीं करते क्योंकि तुम्हारी लंबाई और छाती की नाप नौकरी की ज़रूरत के हिसाब से ठीक नहीं हैं,’ सार्जेंट मेजर ने हमदर्दी से कहा।

आईपीएस अफसर। वह ज़िले की पुलिस का बॉस होगा,’ उसने ठान लिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

उसके गाँव का स्कूल सही नहीं था। नवोदय विद्यालय चिंटू की पढ़ाई-लिखाई के लिए कहीं काम का साबित होता।

स्कूल से कुछ दूरी पर, अचानक उसने एक आवाज़ सुनी, 'चल पैसा निकाल!' उसने मुड़कर देखा तो भीखू शर्मा था। इतने में दो और भारी-भरकम आदमियों ने हॉर्लिक्स को घेर लिया।

'भीखू, ये पैसे मेरे बेटे की पढ़ाई के लिए हैं। मुझे कृपा करके जाने दो,' हॉर्लिक्स ने विनती की।

भीखू गांव का गुंडा था। लम्बा और तगड़ा, वह हॉर्लिक्स से काफी ऊंचा था।

'भीखू भैया, मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ता हूँ। मैंने अपनी भैंस बेचकर यह पैसा इकट्ठा किया है। भगवान का लिए मुझे जाने दो।'

भीखू ने उसको ज़ोर से चाँटा मारा और उससे पैसे वाला थैला छीन लिया। घबराए हुए हॉर्लिक्स ने बैग जकड़ने की कोशिश की। लेकिन उसके बस की यह बात नहीं रह गई थी।

भीखू ने उसे घसीटा। बाकी दोनों बदमाशों ने भी उस पर घूसे और लातें बरसाईं।

अबे कमज़ोर आदमी, तेरा बेटा किसी पढ़ाई-लिखाई के लायक नहीं है,' भीखू ने हॉर्लिक्स के पेट में लात मारते हुए बोला।

अचानक हॉर्लिक्स ज़ोर से चिल्लाया और भीखू पर कूद पड़ा। इससे पहले कि किसी को कुछ समझ आता, उसने भीखू के कान को ज़ोर से काट खाया और भीखू दर्द से चिल्ला पड़ा।

हॉर्लिक्स तब तक नहीं रुका जब तक उसने उसका पूरा कान चबा नहीं डाला। भीखू असहनीय दर्द के मारे कराहने लगा।

दोनों बदमाशों को भरोसा नहीं हो रहा था कि हॉर्लिक्स जैसा एक दुबला-पतला, डरपोक इंसान ऐसा विनाश कैसे कर गया। किसी तरह से उन्होंने भीखू को उठाया और वहाँ से भाग गए।

हॉर्लिक्स ने बैग उठाया और प्रिंसिपल के ऑफिस की ओर चल पड़ा।

आधे घंटे बाद, हॉर्लिक्स को दो सिपाहियों ने रोका।

'आजा, जीप में बैठ जा। भीखू शर्मा की हत्या के प्रयास के आरोप में तुझे गिरफ्तार किया जा रहा है,' पुलिसवाले ने कहा।

'लेकिन सर, मैं निर्दोष हूँ। भीखू ने ही तो मुझपर हमला किया था,' हॉर्लिक्स चिल्लाया।

'किसी का कान चबाने के बाद कोई निर्दोष नहीं रह जाता है। हमें कानून का पालन

डाल दिया गया। और वहाँ वह सामन्त प्रताप से मिला—नवादा का आतंक।

Downloaded from www.The-Gyan.in

सामन्त प्रताप ने हॉर्लिक्स को अपने छोटे भाई जैसा माना। आखिरकार कोई तो था जो हॉर्लिक्स का आदर-सम्मान करता था। और जल्द ही हॉर्लिक्स ने भक्ति भाव और वफादारी से सामन्त की सेवा करने की शपथ ली। नवादा जेल से भागने पर हॉर्लिक्स ने जल्द ही जान लिया कि वह बंदूक अच्छी चला लेता था। उसे हत्याएँ करने में मज़ा आने लगा। उसे लोगों को मारने का एक अजीब-सा नशा होता जा रहा था।

'अब कोई भी मुझ पर हँसने की हिम्मत नहीं करेगा। अब मैं कमज़ोर नहीं हूँ,' उसने ऐलान किया।

जल्द ही वह एक कमजोर, डरपोक, शर्मीले इंसान से कायापलट कर एक खूँखार हत्यारा और सामन्त प्रताप का सबसे भरोसेमंद बन गया।

पर कुछ सवाल अभी भी उसके मन में थे, 'मैं यह क्या बन गया हूँ? जब मेरे बच्चों को सच्चाई पता चलेगी, तो क्या मैं उन्हें मुँह दिखा पाऊँगा?'

वह बहुत होनहार निशानची तो बन गया था, लेकिन वह पिता के किरदार में नाकामयाब रहा था। और कहीं अपने दिल की गहराइयों में वह मुक्ति चाहता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

29
‘शेखपुरा पुलिस ज़िंदाबाद!’

16 जुलाई 2006

मैं घर कुछ प्रसन्न और कुछ निराश पहुँचा। सामन्त प्रताप - हॉर्लिक्स की जोड़ी का आधा हिस्सा तो मैंने तोड़ दिया था, पर मैं परेशान था क्योंकि अभी भी मुझे सामन्त प्रताप के ठिकाने का पता नहीं लग पाया था। मुझे पता था कि हॉर्लिक्स सच बोल रहा है। उसे सामन्त की छिपने की जगह के बारे में मालूम नहीं था। हम उसकी कॉल करीब चालीस दिनों से सुन रहे थे। एक बार भी उसने सामन्त प्रताप का नाम तक नहीं लिया था।

मैंने टीवी चलाया। एक चैनल पर बॉलीवुड की एक मसाला फिल्म आ रही थी। फिल्म में पुलिसवाला स्क्रीन पर डांस कर रहा था और अपराधियों का पीछा करने और गिरफ्तार करने का पूरा मज़ा उठा रहा था। मैं मुस्कुराता हुआ सोचने लगा कि काश, असली पुलिसवालों की ज़िंदगी भी इतनी मज़ेदार होती।

~

कुमार सर अगले दिन पहुँचे और उन्होंने हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी का ब्यौरा देने के लिए प्रेस कांफ्रेंस बुलाई। मेरा ऑफिस मीडियाकर्मियों से भर गया और एक भगदड़-सी मच गई।

शेखपुरा जैसी छोटी-सी जगह में शायद ही कोई असली पत्रकार था। प्रेसवालों का वेतन भी बहुत कम था, क्योंकि शेखपुरा में सामन्त प्रताप के गैंग की गतिविधियों के अलावा समाचार के लायक कुछ होता ही नहीं था। ज़्यादा संवाददाताओं के दूसरे काम-धंधे भी थे – किराने की दुकानें चलाने से लेकर मोबाइल फोन बेचने तक। कुछ स्ट्रिंगर भी थे, जो अनौपचारिक रूप से लोकप्रिय न्यूज़ चैनलों को थोड़े पैसे के बदले में समाचार और फुटेज दिया करते थे।

इन स्ट्रिंगर्स ने प्रेस कांफ्रेंस का पूरा फ़ायदा उठाया। रिकॉर्ड करने के लिए उनके पास

Downloaded from www.The-Gyan.in

बात तो थी नहीं कि शेखपुरा की खबरें पूरे बिहार में सुर्खियों में आने जा रही थीं। हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी से उन्होंने काफी मुनाफा कमाया।

'शेखपुरा पुलिस ने एक बहुत ही मुश्किल कार्रवाई के बाद हॉर्लिक्स सम्राट को गिरफ्तार कर लिया है। सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी भी होने वाली है और जल्द ही उसका गैंग भी पूरी तरह खत्म कर दिया जाएगा। इस सफलता के लिए मैं अमित लोढ़ा और उनकी टीम को बधाई देता हूँ।' कुमार भरत ने मीडिया के सामने घोषित किया।

प्रेस बहुत-से प्रश्न पूछना चाहती थी। सभी लोगों की तरह वे भी अचंभित थे। हॉर्लिक्स को कैसे पकड़ लिया गया था? इस ऑपरेशन में हुआ क्या था? उसकी गिरफ्तारी में कौन-कौन शामिल थे? क्या सिपाहियों का इस शानदार उपलब्धि के लिए अभिनंदन नहीं होना चाहिए?

कुमार सर जान-बूझकर ऑफिस से चले गए। उन्हें पता था कि यह हमारा समय था और वो हमारी मेहनत का श्रेय ख़ुद नहीं लेना चाहते थे जैसा कुछ अफ़सर करते थे। साथ ही, वे यह भी जानते थे कि मैं मीडिया के साथ बातचीत करने में काफी अच्छा था और उनका पुलिस के फ़ायदे के लिए सही इस्तेमाल करना जानता था।

'सर, हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी में कौन-कौन शामिल थे? इस ऑपरेशन को कैसे प्लान किया गया था?' इस प्रकार के प्रश्न प्रेस ने मुझपर बरसाए।

'माफ कीजिए, मैं पुलिस कर्मचारियों के नाम नहीं बता सकता। इससे हमारा मिशन खतरे में पड़ सकता है। हमारी कार्रवाई हर बारीकी की जांच करके प्लान की गई थी और और उसे शानदार ढंग से अंजाम दिया गया था। बेशक, अंदर से भी कुछ मदद हमें मिली है।'

'अंदर से मदद? आपका मतलब है कि सामन्त प्रताप के गैंग के किसी सदस्य ने आपकी सहायता की है?' किसी ने उत्तेजित होकर पूछा।

'ओ, नहीं। ऐसा कुछ नहीं है। वह तो बस मेरी ज़ुबान फिसल गई।'

'अरे नहीं, सर। हम किसी को नहीं कहेंगे। हमें उसका नाम तो बताइए। किसी ने तो आपको कोई सुराग दिया ही होगा। नहीं तो हॉर्लिक्स को पुलिस इतनी जल्दी कैसे पकड़ पाती? आखिरकार सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स पिछले पाँच वर्षों से वांछित हैं।'

मुझे पूरा यकीन था कि पत्रकार यह दाना चुग लेंगे।

'दरअसल, वह आदमी सामन्त प्रताप के गैंग का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो सामन्त प्रताप के काफी निकट है, और वह हमारी मदद कर रहा है। लेकिन आप प्लीज़ यह छापिएगा नहीं। यह खबर इस ऑफिस से बाहर नहीं जानी चाहिए। मुझे पता है कि मैं आप

'हाँ सर, बिल्कुल। हम पे भरोसा रखिए।'

'ज़रूर। मुझे आप पर पूरा भरोसा है,' मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मुझे पता था कि वे पत्रकार मेरे दफ्तर से निकलते ही सबसे पहले सबको यही बात बताएँगे। मैं चाहता था कि यह अफवाह जल्दी फैले। इससे गैंग के सदस्य एक-दूसरे पर शक करने लगेंगे। अपने गैंग के छछूंदर को ढूँढ़ने लगेंगे। उन सबमें धीरे-धीरे डर बढ़ने लगेगा, और ज़ाहिर है, जल्द ही सामन्त प्रताप भी घबराने लगेगा। मैं चाहता था कि वह बौखला जाए।

मुझे पता था कि मेरी यह चाल कामयाब होगी। प्यार और पुलिसी में सब कुछ जायज़ है।

'एक और घोषणा करना चाहूँगा। शेखपुरा 15 अगस्त से पहले ही सामन्त प्रताप के डर से आज़ाद हो जाएगा। स्वतंत्रता दिवस से पहले, सामन्त प्रताप सलाखों के पीछे होगा।'

मैंने पूर्ण आत्मविश्वास से बोला, जो कुछ-कुछ दंभ जैसा लगा। मैंने यह सोच-समझकर किया था। फिर एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, जिसके बाद एकदम अफरा-तफरी मच गई। अब सबको बता दिया गया था कि सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी केवल संभावना ही नहीं, बल्कि आने वाले समय में होगी ही।

जैसे ही प्रेस वाले दफ्तर से बाहर निकले, शेखपुरा पुलिस थाने के बाहर हल्ला-गुल्ला होने लगा था। पूरे शहर के लोग कुख्यात अपराधी की एक झलक के लिए जमा हो गए थे। जब उन्होंने आखिरकार उसे लॉकअप में देखा, तब किसी में हिम्मत आई और वह चिल्लाया, 'शेखपुरा पुलिस, ज़िंदाबाद!'

हर पुलिसवाला गर्व से मुस्कुरा रहा था। सिवाय राजेश चरण के। वह चिंतित हो उठा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

30
‘मर्द है तो आजा!’

सामन्त प्रताप का मोबाइल पिछले बीस दिनों से बंद था। मैं सोच रहा था कि अब उसे कैसे पकड़ूँगा।

मेरे सवाल का जवाब मुझे जल्दी ही मिल गया—वह भी खुद सामन्त प्रताप से ही! मेरे सरकारी फोन पर सामन्त प्रताप का नाम चमका, लेकिन इस बार वह सीधे मुझे कॉल कर रहा था।

‘एसपी साले! तुझे घर में घुस के मारूँगा!’ सामन्त प्रताप गुर्राया।

सामन्त प्रताप गुस्से से तिलमिला रहा था। उसने मुझ पर चुनिंदा गालियाँ बरसाईं।

‘कमीने, हॉर्लिक्स मेरा भाई है। तेरी उससे पूछताछ करने की हिम्मत कैसे हुई?’ वह पागलों की तरह चिल्लाया।

‘तेरा बाप हूँ मैं। तू क्या कर लेगा? मुझे बता तू कहाँ है। मैं अभी आकर मारता हूँ तुझे! डरपोक आदमी, तुझे औरतों और बच्चों को मारने का बड़ा घमंड है ना। आजा मर्द की तरह लड़ के दिखा। अब तेरा पाला पड़ा है, असली मर्द से, एक सच्चे पुलिसवाले से,’ मैंने जवाब दिया।

वाह! मुझे नाज़ हुआ था अपने आप पर। मुझे ऐसे भारी-भरकम डायलॉग मारने में बहुत मज़ा आया था। बॉलीवुड की उन एक्शन फिल्मों को देखने से मुझ पर ख़ासा असर हुआ था।

हैरानी की बात यह थी कि फिर मुझे सामन्त प्रताप के सुबकने की आवाज़ सुनाई दी। मैं यह देखकर स्तब्ध था कि उसके जैसे निष्ठुर में कुछ भावनाएँ भी थीं। इसका मतलब था कि वह असुरक्षित महसूस कर रहा था। मैं बहुत ख़ुश हुआ।

सामन्त प्रताप ने कुछ और गालियाँ बकीं और फिर फोन काट दिया। शायद उसे और अपशब्द याद नहीं आ रहे थे।

मुझे आईआईटी दिल्ली का अपना पहला दिन याद हो आया। मैं उस ‘फुद्दु’ से आज

र

Downloaded from www.The-Gyan.in

नीलगिरी हॉस्टल के बाहर अपना सूटकेस और बिस्तर लिए खड़ा था। दो तगड़े, गँवार-से लड़कों ने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, 'अबे ओ फच्चे, इधर आ!'

मैं उलझन में पड़ गया और इधर-उधर देखने लगा।

'ओए फच्चे, तुझसे बात कर रहे हैं,' वे फिर से मेरी ओर हाथ हिलाते हुए बोले।

'चल, इंट्रो दे,' एक ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

'मेरा नाम अमित लोढ़ा है। मैं जयपुर से हूँ। मैंने. . .'

मेरे वाक्य के पूरे होने से पहले ही उनमें से एक लड़के ने ज़ोर से मेरे गाल पर थप्पड़ मारा।

'ऐसे बोलते हैं अपने सीनियर से? तुम हमसे "सर" कहकर बात करोगे। फिर से इंट्रो दो।'

'मेरा नाम है अमित, सर'

मुझे फिर थप्पड़ पड़ा।

'तो तू अमित सर है,' सीनियर चिल्लाए। यह यातना कुछ मिनटों तक चलती रही। मैं रोने-रोने को हो गया था। इससे उन दोनों को और भी आनंद मिल रहा था।

'तुम सुधाकर सर से नहीं मिले, क्या?' उन्होंने एक ठिगने बॉडी-बिल्डर की ओर इशारा किया जो वहीं एक कोने में बीड़ी पी रहा था। वह एकदम नंग-धड़ंग था—उसने केवल एक लाल रंग की लंगोट लपेटी हुई थी।

'विश कर सर को। सुधाकर सर यहाँ के सबसे सीनियर स्टूडेंट हैं। कोर्स तो चार साल का है, पर सुधाकर सर का यहाँ छठा साल है। वे हमारे गुरु हैं!'

मैं सुधाकर सर की ओर से भी दो-चार थप्पड़ पड़ने की उम्मीद कर रहा था, पर उन्हें मुझपर दया आ गई। वे केवल मुस्कुराए और मुझे भगा दिया। मुझे पता चला कि वे पिछले दो साल से लगातार फेल हो रहे थे। और बाकी दोनों उपद्रवी छात्र बेहद प्रतिभाशाली थे—उनमें से एक तो जेईई ऑल इंडिया के छठवें रैंक पर आ चुका था!

मैं सोचने लगा कि क्या मैं सच में सही जगह आया था कि नहीं। क्या ऐसा होता था आईआईटी? अगले पंद्रह दिनों तक तगड़ी रैगिंग चलती रही, पर इसने मुझे यकीनन मज़बूत बना दिया।

~

मैं तुरंत छिवाड़ा पुलिस थाने पहुंचा। मैंने हॉर्लिक्स को लॉकअप से निकाला। वह पहले की निरंतर पूछताछ से उबर गया था। मैं घंटों तक प्रश्न पूछता रहा, जबकि मुझे पता था कि वह

इंतज़ार किया। आखिरकार, कुछ घंटों बाद मेरे पास कॉल आई।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘एसपी, कितना तंग करोगे मेरे भाई को?’ इस बार सामन्त प्रताप गिड़गिड़ाते हुए बोला, ‘मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं। मैं तेरे और तेरे परिवार के पीछे पड़ जाऊँगा,’ वह धमकियाँ और गालियाँ देने लगा। पता नहीं क्यों, पर उसकी गालियाँ मुझे संगीत के समान लग रही थीं। मुझे पता था, वह बुरी तरह हिल चुका था।

‘सामन्त प्रताप, मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हूँ। ख़ुशी तो मुझे होगी,’ मैंने जवाब दिया। इस बार मैंने ड्रामा नहीं किया।

पाँच मिनट बाद मुझे ज़ोर का एक झटका लगा। सामन्त प्रताप एक कॉल कर रहा था। ‘अरे कैलाश बाबू। आप कर क्या रहे हैं? यह कैसे एसपी को शेखपुरा में पोस्ट किए हैं? हमको मरवाइएगा क्या?’ रोष से भरे सामन्त प्रताप ने कहा।

‘अरे हम क्या करें? यह तो सरकार का फैसला था इस लोढ़ा को शेखपुरा पोस्ट करने का। बहुत बदमाश है। किसी की नहीं सुनता। मैं कुछ नहीं कर सकता। और मुझे आज के बाद कभी फोन भी मत करना। मुझे भी फँसाओगे।’

मैं अपने कानों पर यकीन नहीं कर पा रहा था। मोस्ट वांटेड भगोड़ा, सामन्त प्रताप, बिहार पुलिस के वरिष्ठतम अफसरों में से एक, कैलाश सम्राट से बात कर रहा था!

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या करूँ। यह तो घनघोर पाप था।

मैंने कुमार सर को फोन किया और उन्हें उस बातचीत के बारे में बताया। अप्रत्याशित रूप से उन्हें भी यह सुनकर काफी अचंभा हुआ।

‘वह और सामन्त प्रताप एक ही समुदाय के हैं। याद है ना, कुछ महीनों पहले ही सामन्त प्रताप कई शक्तिशाली लोगों का काफी नज़दीकी था। वैसे बड़ी ही अनूठी बात है, पर ऐसा भी होता रहता है। हर विभाग में कोई न कोई कलंकी होता ही है।’

‘हाँ सर।’

वैसे भी, अगर मैं इस सीनियर अफसर को सज़ा दिलाना भी चाहता, तो मेरे पास कोई ठोस सबूत तो था नहीं। उनके कॉल रिकॉर्ड में तो केवल सामन्त प्रताप की कॉल के आने का ही पता चल पाता। वह अफसर दावा कर सकते थे कि उनका नंबर तो सार्वजनिक रूप से उपलब्ध था। कोई भी उन्हें कॉल कर सकता था। और वैसे भी, सामन्त प्रताप का सिम कार्ड जाली नाम पर खरीदा गया था। इन तकनीकी वजहों के कारण मैं कैलाश सम्राट या नेताजी पर दोष नहीं लगा सकता था।

पहले राजेश चरण और अब कैलाश सम्राट। मैं तो किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकता था। बिल्कुल भी नहीं।

लग रहा था कि सामन्त प्रताप की बातें अभी पूरी नहीं हुई थीं और वह दूसरे लोगों को

‘हम क्या करें, सर? हम क्या करें नेताजी? अब तो उनके पास हॉर्लिक्स भी है! ओ, मेरा भाई!’ सामन्त प्रताप फिर रोने लगा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

वह गरिमापूर्ण, सभ्य-सी आवाज़ कुछ देर शांत रही।

'सामन्त भाई, मैंने आपको पहले भी कई बार सतर्क किया था कि आप अपने कमबख़्त मोबाइल फोन को बंद रखो।'

सामन्त प्रताप चुप रहा और फिर उसने कॉल काट दी। उसने पिछले इतने दिनों से तो अपना मोबाइल बंद ही रखा था। क्या वाकई ऐसा ही था?

हमेशा नहीं। जैसा कि मुझे बाद में पता चला, उसने एक नया सिम कार्ड और फोन ले लिया था। वह सतर्क हो रहा था। इसलिए उसने मुझे नए फोन से कॉल नहीं किया था। उससे तो उसका भेद तुरंत ही खुल जाता। वह कुछ समय के लिए सोचता ही रहा। 'हॉर्लिक्स को कैसे पकड़ लिया गया था? उसने ऐसी क्या गलती कर दी थी?' सामन्त प्रताप को शायद कभी इसका उत्तर नहीं मिलने वाला था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

31
‘जय चामुंडी माँ’

‘हॉर्लिक्स कैसे गिरफ्तार हुआ?’ सामन्त प्रताप अनुमान लगाता रहा। वह भी सबकी तरह आश्चर्यचकित और परेशान था। वह खुद भी नहीं जानता था कि हॉर्लिक्स शेखपुरा छोड़ने के बाद से कहाँ था।

सामन्त प्रताप को अपने गैंग के सदस्यों पर संदेह होने लगा। शेखपुरा और नवादा में काफी अफवाहें फैल गई थीं, खासकर प्रेस कांफ्रेंस के बाद। इससे सामन्त प्रताप को भ्रम हो गया था।

‘क्या किसी ने हॉर्लिक्स को धोखा दिया था? क्या ऐसा मेरे साथ भी हो सकता है?’

उसके साथ पहले भी धोखा हो चुका था। कुछ साल पहले वह पंकज सिंह की वजह से गिरफ्तार हो गया था।

पंकज ने ठान ली थी कि सामन्त प्रताप को रास्ते से हटाना है। पर वह हमेशा अपने आदमियों से घिरा रहता था। और अगर उसकी हत्या की कोशिश असफल रही, तो पंकज जानता था कि सामन्त प्रताप उसे नहीं छोड़ेगा। पंकज उसे अपने रास्ते से हटाने के लिए उतारू था। उसकी अपने ही गैंग में अहमियत घट गई थी। उसके अपने आदमी भी अब उसका सम्मान नहीं करते थे।

उसने सोचा कि सामन्त प्रताप को कैसे हटाया जाए और आखिरकार यह तय किया कि उसे खत्म करने का एक ही तरीका था—पुलिस।

तो उसने एक योजना बनाई। ‘सर, सामन्त प्रताप आज रात नालंदा में अपनी रखैल के पास जा रहा है। हाँ सर, एकदम पक्का है। पता नोट करिए,’ पंकज ने पुलिस थाने में फोन करके बताया।

एसएचओ ने उस छोटे-से होटल में रात 1 बजे के आस-पास छापा मारा। सामन्त प्रताप ने अपने कपड़े समेटे और चुपचाप पुलिस के साथ बाहर आ गया।

‘ठहरो, मुझे ढंग से हथकड़ी तो लगाने दो। यह बहुत ही खतरनाक है,’ एसएचओ ने

Downloaded from www.The-Gyan.in

सामन्त प्रताप ने एसएचओ की आँखों में देखा और थूका। 'बड़ा बाबू, मुझे पता है कि किस हरामी ने मुझे धोखा दिया है। उसे बता देना मैं उसे जल्द ही मार डालूँगा।'

एसएचओ ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसे नहीं पता था कि उसे किसने फोन किया था। उसने परवाह भी नहीं की थी। ज़रूरी बात तो यह थी कि सामन्त प्रताप सलाखों के पीछे था।

~

सामन्त प्रताप को रास्ते से हटाने के बाद, पंकज ने गैंग पर अधिकार जमाने के लिए ऐड़ी-चोटी का जोर लगा दिया, लेकिन उसके पास सामन्त जैसी प्रतिभा नहीं थी। जल्द ही उसका गैंग बिखर गया। सामन्त के समुदाय के आदमियों की पंकज की ओर कोई वफ़ादारी नहीं थी, लक्खा, लडुआ और रौशन जैसे कुछ ख़ास आदमी सामन्त प्रताप के वापस आने का इंतज़ार कर रहे थे। उन्हें ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा, क्योंकि कुछ ही दिन बाद सामन्त प्रताप जेल तोड़कर बाहर आ गया।

'उस धोखेबाज़ हरामी को ढूँढ़ो। मैं उसकी छाती फाड़कर, उसका खून पी जाऊँगा,' सामन्त प्रताप गुर्राया। जेल से छूटने के बाद वह और भी क्रूर और खतरनाक बन गया था।

'भाई, मिल जाएगा,' लक्खा ने कहा।

जबसे सामन्त प्रताप के नवादा जेल तोड़कर भाग निकलने की खबर सुर्खियों में आई, तो पंकज छिप गया। उसे पता था कि सामन्त प्रताप उसे ढूँढ़ता हुआ आएगा।

~

उस नीम-हकीम का 'नर्सिंग होम' ढूँढ़ना मुश्किल नहीं था। नवादा की हरेक गली में 'पुरुषों की समस्याओं' के निदान हेतु उस 'खानदानी हक़ीम' के विज्ञापन चिपके हुए थे।

पंकज हक़ीम से मुलाक़ात की उम्मीद में अंदर बैठा था। आखिरकार उस हक़ीम ने उससे वादा किया था कि उसका 'पुरुषत्व' जल्द ही उसे वापस मिल जाएगा। हक़ीम ने उसके लिए कोई दुर्लभ जड़ी-बूटी ढूंढ़ निकाली थी, जिससे तुरंत नतीजा मिलने की गारंटी थी।

अचानक किसी ने उसके कंधे पर थपथपाया।

'कैसे हो, पंकज? भूल गए? आओ, तुम्हारे गुप्त रोग का इलाज करते हैं।' सामन्त प्रताप ने आँखों में दुष्टता से मुस्कुराते हुए कहा।

पंकज हक्का-बक्का रह गया और भागने की कोशिश करने लगा, पर वह लक्खा और

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘सामन्त , सामन्त भाई!’ पंकज ने डर से काँपते हुए हल्के से कहा। उसे याद आ गया कि उसके भाई, सर्वेश्वर की हत्या किस प्रकार भैरव मंदिर में की गई थी।

सामन्त प्रताप ने हॉर्लिक्स को इशारा किया। लक्खा ने पंकज का मुँह ढका और हॉर्लिक्स ने उसके पेट में चाकू भोंककर घुमा दिया। पंकज की आँतें तुरंत फट गईं और उनमें से खून की फुहार निकलने लगी। सामन्त प्रताप ने पंकज की जनेऊ से उसका गला घोंटना शुरू कर दिया।

‘निकलो, चलो, काम हो गया,’ रौशन बोला।

सामन्त प्रताप ने पंकज की ओर देखा। उसे उसकी जान उसके शरीर से रिसती दिखाई दे रही थी। उसने उसके पेट में ज़ोर की एक लात मारी। पंकज आखिरी बार कराहा। उसका बेजान शरीर ज़मीन पर पड़ा था। हक़ीम इतना डर गया था कि उसकी धोती मैली हो गई थी। सामन्त प्रताप दुष्टता से हँसा और क्लिनिक से बाहर निकल गया।

~

सामन्त प्रताप ने पंकज की हत्या को याद करते हुए सोचा कि वह कितनी संतोषजनक हत्या थी।

पर अब किसकी हिम्मत हुई उसे धोखा देने की?

Downloaded from www.The-Gyan.in

32
‘फोन क्यों नहीं बज रहा है?’

शेखपुरा में जीवन अचानक बदल गया था। हवा में एक बेचैनी थी, जिसने सभी को नींद से झकझोर दिया था। सभी अवश्यंभावी का इंतज़ार कर रहे थे—और वह थी, सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी। सभी जगहों पर, चाहे नाई की दुकान हो या चाय की दुकान, लोग इसी की ही बातें कर रहे थे।

ऐसा लग रहा था जैसे शेखपुरा पुलिस में नई ऊर्जा भर गई हो। सिपाही अपने गुणगान का मज़ा ले रहे थे और उनका गर्व उनकी सोच और हावभाव में साफ झलक रहा था। उसी समय, हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी से सामन्त प्रताप के गैंग में हर स्तर पर हड़कंप-सा मच गया था। चूहों ने जहाज़ के डूबने से पहले ही उसे छोड़कर भागना शुरू कर दिया था। उनमें से कई तो ख़ुद पुलिस के पास पहुँच गए थे। छोटे-मोटे जुर्म शेखपुरा से गायब हो गए थे। अब मैं अपना पूरा ध्यान अपने निशाने पर लगा सकता था।

~

मैं अपने घर के आंगन में बैठा था। तभी, ‘सर, चिंतामणी साहब आप से मिलने आए हैं,’ मेरे अर्दली ने कहा।

चिंतामणि साहब बिहार के बहुत ही रसूखदार और प्रभावशाली व्यक्ति थे।

मैं सोचने लगा कि बिना किसी सूचना के वह क्यों आए हैं और वह भी मेरे घर पर। मैंने कुछ अफसरों को उनकी चापलूसी करते हुए देखा था। ज़ाहिर है, उन्हें यह बहुत अच्छा भी लगता था।

मैंने चिंतामणी साहब को जल्दी-जल्दी मेरी ओर बढ़ते हुए देखा। उन्होंने अपने बॉडी गार्ड को इशारे से रुकने को कहा। उन्होंने नेताओं की पारंपरिक पोशाक, कड़क सफेद कुर्ता और पाजामा, पहन रखी थी। मुझे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई—मैं अपनी टी-शर्ट और निकर भी नहीं बदल पाया था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

चिंतामणी साहब ने अपना चश्मा ठीक किया और मुस्कुराए। मुझे दिख रहा था कि वह बहुत प्रसन्न थे।

'अमित जी, बहुत बधाई! मुझे पता था आप हॉर्लिक्स को गिरफ्तार कर लेंगे।'

'धन्यवाद, चिंतामणी जी।'

'मुझे आपकी ख्याति के बारे में मालूम था। मैंने ही आपका नाम शेखपुरा के लिए सुझाया था। पता है आपको, बहुत विरोध हुआ था। आपके ही वरिष्ठ अफसर नहीं चाहते थे कि आप कहीं के भी एसपी बनाए जाओ।'

मुझे पता था कि वे सही कह रहे हैं, लेकिन पूरी तरह से नहीं। मुझे शेखपुरा इसलिए पोस्ट किया गया था, ताकि अगर ज़रा भी गड़बड़ हो जाए तो एक बलि का बकरा तैयार हो।

मुझे यह भी पता था कि चिंतामणी साहब के लिए सामन्त प्रताप एक बहुत बड़ा रास्ते का पत्थर था। दोनों के समुदायों के बीच बहुत पहले से आपसी बैर चलता आ रहा था। सामन्त प्रताप पिछड़े वर्गों का स्वघोषित मसीहा था, जबकि चिंतामणी अपने समुदाय के लिए नए ज़माने के नेता थे। सामन्त प्रताप के गैंग के बिखर जाने से चिंतामणी का उस क्षेत्र में बोलबाला और बढ़ जाता। वह फिर बिना चुनौती के राज कर पाते।

चिंतामणी कहने लगे, 'अमित जी, अगर आप सामन्त प्रताप को गिरफ्तार करते हैं, तो मैं आशा करता हूँ कि आपको बहुत अच्छी पोस्ट दी जाए।'

मैंने तुरंत जवाब दिया, 'चिंतामणी जी, क्या आप मुझे लुभाने की कोशिश कर रहे हैं? क्या आप सोचते हैं कि मैं यह सब किसी ईनाम या पोस्टिंग के लिए कर रहा हूँ?'

चिंतामणी की मुस्कुराहट तुरंत गायब हो गई। मेरे तीखे सवाल से वह स्तब्ध रह गए। बेशक, कुछ महीनों पहले तक मैं किसी बड़े जिले में जाना चाहता था। हर एसपी कोई बड़ा, प्रतिष्ठित और चुनौतीपूर्ण जिला चाहता है। पर मैं नहीं चाहता था कि वह मुझे इस तरह मिले। और अब तक मेरी राय भी बदल चुकी थी। अब मैं पुराना अमित नहीं रहा था। राम दुलार के भतीजे से उस अचानक हुई मुलाकात के बाद, पोस्टिंग आदि जैसी छोटी-छोटी चीज़ों से मेरा मन ऊब गया था। मुझे ऐसा लग रहा था कि राम दुलार के परिवार के लिए सामन्त प्रताप को पकड़ना ज़रूरी है।

चिंतामणी जल्द ही वापस चले गए। मुझे खुशी थी कि मैं अभी भी आईपीएस की गरिमा सहेजे हुए था और अपना साहस दिखा सकता था।

~

गया था। तानू ऐश्वर्या को हवा से फूलने वाले टब में नहलाने के लिए बाहर आंगन में ले

Downloaded from www.The-Gyan.in

जाती थी। अभी भी सारा स्टाफ उसके सामने नाचते और गाते थे। ऐश को इस तरह सबका ध्यान पाना बहुत पसंद था। इस दौरान मैं सारे दिन फोन कॉल सुनने के बीच-बीच में उसी के हमनाम वाली एक मशहूर हिरोइन की फिल्में देखने पर ध्यान देता रहता था।

मैं फोन बजने का इंतज़ार करता रहता था। वह बजता तो था, लेकिन उस वजह से नहीं जो मैं चाहता था।

'हेलो, मैं दिल्ली से रिचा चावला बोल रही हूँ। आपने shaadi.com पर जो वैवाहिक विज्ञापन दिया था, उसी के विषय में मैं आपसे बात करना चाह रही थी।'

मैं इन कॉलों से परेशान हो गया था, फिर भी मुझे बड़ी सभ्यता से जवाब देना पड़ता था कि कहीं संयोग से इन्हीं में से कोई भविष्य में मेरी भावज (छोटे भाई की पत्नी) ना बन जाए।

'आपका भाई कितना कमाता है? देखिए, मैं *एमटीवी रोडीज़* की फाइनलिस्ट रह चुकी हूँ। मेरे रहन-सहन का कुछ स्तर होना चाहिए, ठीक है?'

मैंने रिचा को धन्यवाद दिया और *एमटीवी रोडीज़* की एक प्रतियोगी को अपनी माँ की बहु बनते सोचकर मुस्कुरा दिया।

'हमें माफ कीजिएगा। हमारी बेटी का खर्चा आपके भाई की कमाई से अधिक आता है। यह बराबरी का मैच नहीं है,' एक अन्य लड़की के पिता ने कहा। मैं धैर्य के साथ ये सब बातें सुन लेता था।

पर मेरा धीरज अब हताशा में बदल रहा था। सामन्त प्रताप के फोन नम्बर पर कोई हरकत नहीं हो रही थी। कुछ दिन पहले उसने अपने फोन से बस तीन ही नंबर मिलाए थे —शेखपुरा एसपी का, यानी मेरा, कैलाश सम्राट का और नेताजी का। और अब फिर उसका फोन बंद पड़ा था। उसे ढूँढ़ने का कोई रास्ता निकालना ही था।

'तानू, फोन क्यों नहीं बज रहा है?' मैंने अपनी पत्नी से हताश होकर कहा।

'आपने क्यों घोषणा कर दी कि पंद्रह अगस्त से पहले आप सामन्त प्रताप को पकड़ लेंगे? शेखपुरा को आज़ादी! क्या ज़रूरत थी इतना बढ़-चढ़ कर ढींग हांकने की?' तानू ने डांटा।

'वह मैंने जानबूझकर चाल चली थी। मैं सामन्त प्रताप के साथ एक खेल खेल रहा हूँ। मुझे उसे मानसिक स्तर पर तोड़ना है,' मैंने जवाब दिया। अब मुझे दिमागी खेलों का स्तर थोड़ा और ऊपर ले जाना था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

33
'एनकाउंटर'

चिंतामणी जी से भेंट के अगले दिन, मैंने राजेश चरण को अपने दफ्तर बुलाया। आमतौर पर झलकता उसका आत्मविश्वास गायब था। चरण ने घबराहट के साथ मुझे सलाम किया।

'राजेश, मैंने अपने कुछ भरोसेमंद पुलिसवालों की एक टीम को सामन्त प्रताप को गिरफ्तार करने के लिए भेजा है। क्योंकि तुम शहर के प्रभारी हो, ध्यान रखना कि शहर में कानून और व्यवस्था की स्थिति न बिगड़े। सामन्त प्रताप के समर्थकों को काबू में रखना!' मैंने बिना पलक झपकाए कहा।

राजेश रंग उड़ गया और पूछने लगा, 'सर, टीम में कौन-कौन हैं?'

'ओ, वह तो गोपनीय है। तुम्हारे ही कुछ हिम्मती साथी हैं।'

तभी मेरा फोन बजा।

'ओ! बहुत अच्छे! बड़ी अच्छी खबर है। शाबाश, मुझे गर्व है तुम पर! लाश को गंगा में फेंक दो। सामन्त प्रताप के सारे पाप धुल जाएँगे।'

मैं कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और जीत की खुशी में अपने हाथ ऊपर की ओर उठा लिए।

'राजेश, मिठाई ले आओ। सामन्त प्रताप मारा गया है। उसने हमारे सिपाहियों पर गोलियाँ चलाई और हमने उसे जवाबी हमले में शूट कर दिया।'

राजेश अब बुरी तरह से पसीने में लथपथ हो गया था।

'सर, बधाई हो!' राजेश हकलाया।

मैंने उसे भेज दिया।

कुछ मिनट बाद, अजीत मेरे कमरे में आया और सावधान खड़ा हो गया।

'जय हिन्द, सर,' उसने मुस्कुराते हुए कहा।

'बहुत अच्छे अजीत, तुमने बिल्कुल सही समय पर फोन किया।'

'सर, उम्मीद है कि राजेश हमारे जाल में फँस जाएगा।'

मैंने उसकी ओर देखा और मुस्कुराया। मुझे इस छुपन-छुपाई के खेल में मज़ा आने

Downloaded from www.The-Gyan.in

सामन्त प्रताप के गैंग में हंगामा मच गया। हर वह फोन जो ऑब्ज़र्वेशन पर था, उस पर एक ही विषय पर बात चल रही थी—क्या सच में सामन्त प्रताप को पुलिस ने मार डाला था?

कुछ महीनों पहले ही शायद गैंग के सदस्य इस बात पर हँस रहे होते कि पुलिस सामन्त प्रताप के आसपास भी पहुँच सकती थी। पर अब हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बाद से वे यकीन कर पा रहे थे कि शायद सामन्त प्रताप पुलिस मुठभेड़ में मारा गया है। उनके मन में पुलिस का डर साफ़ दिखाई दे रहा था।

'साहिब को मार दिया क्या?'

'सामन्त भाई पुलिस एनकाउंटर में मारे गए हैं क्या?'

'नहीं-नहीं, किसी ने कहा है वे बच निकले हैं।'

'नहीं मुझे लगता है कि वे बुरी तरह घायल हो गए हैं। तीन गोलियाँ लगी हैं।'

'मुझे लगता है कि वे नाज़ुक स्थिति में है। उनकी एक आँख घायल हो गई है।'

हमारी चाल काम तो कर गई थी, लेकिन पूरी तरह से नहीं। हालाँकि, सामन्त प्रताप के साथी घबरा गए थे, पर उनमें से किसी को भी सामन्त प्रताप के बारे में कुछ मालूम नहीं था। वे सभी एक जैसे अंधकार में थे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

34
‘नेटवर्क नहीं आ रहा है’

घर पहुँचकर मैंने अपने दिमाग में पूरा केस फिर से दोहराया। सामन्त प्रताप का मोबाइल फोन स्विच ऑफ था। उसने अपने फोन में कोई दूसरा सिम कार्ड भी नहीं डाला था। मैंने उसका आईएमईआई नंबर कई बार चलाकर देखा लेकिन उसके मोबाइल पर कोई नया सिमकार्ड नहीं लगा था। लेकिन एक और पहलू था जिस पर मैंने अभी तक ध्यान नहीं दिया था। मैंने हॉर्लिक्स से जो पूछताछ की थी, उसके बारे में सामन्त प्रताप को काफी कुछ पता था। हमारे बीच कोई तो था जो सामन्त प्रताप को सब कुछ बता रहा था।

अगर वह किसी के संपर्क में नहीं था तो भी वह अभी किसी से तो बातचीत कर ही रहा होगा। कोई ऐसा जिस पर वह अपनी जान बचाए रखने के लिए भरोसा कर सकता था। शेखपुरा में क्या हो रहा था, यह जानने के लिए सामन्त प्रताप उत्सुक होगा। अब तो वह और भी हताश हो गया होगा क्योंकि अकेला और मुश्किलों से घिरा हुआ था।

लेकिन पिछले कई दिनों से मैंने उसके बारे में कोई भी बातचीत होती नहीं सुनी थी। हम लोग पहले से ही उसके सारे साथियों के कॉल्स पर निगरानी रख रहे थे। मुझे अहसास हुआ कि हम केवल उन्हीं नंबरों को देख रहे थे जो उसके गैंग के सदस्य थे। लेकिन उनका क्या जो उसके समर्थक भी थे मगर उनके नाम पुलिस रिकॉर्ड में नहीं थे?

पिछले एक महीने से सामन्त प्रताप ने अपना असल नंबर या तो बंद कर रखा था, या फिर वह उसे बहुत कम इस्तेमाल कर रहा था। जब उसे फोन ट्रैकिंग के बारे में पता चला होगा, तो उसने पक्का अपना सिम कार्ड और फोन, दोनों ही बदल लिए होंगे। लेकिन उसके साथी, परिवार, दोस्त और समर्थक अपने नंबर क्यों बदलेंगे? मुझे समझ आया कि मुझे उनके फोन भी ट्रैक करने चाहिए। उनमें से कुछ लोग तो वही नंबर इस्तेमाल कर रहे होंगे।

मैंने बीएसएनएल में फोन किया और सामन्त प्रताप के फोन का पिछले तीन माह का कॉल रिकॉर्ड माँगा, क्योंकि अभी तक तो मैंने केवल टावर की लोकेशन पर ही ध्यान दिया था।

रखे हुए थे। जल्द ही, वे सभी खत्म हो गए। तानू बच्चों के साथ लेट गई, ताकि उन्हें सुला

Downloaded from www.The-Gyan.in

सके।

हमारा पूरा बेडरूम फैक्स के कागजों से भरा हुआ था। मैं हरेक कॉल को देखने लगा। बड़ा थकाने वाला काम था। मैंने मार्च और अप्रैल की सारी कॉल डीटेल देखीं। वह सारे नंबर जिनसे सामन्त प्रताप ज़्यादातर संपर्क में रहता था, मैंने उन सब पर एक लाल मार्कर लेकर गोले बनाए।

सारे कागज़ उड़ रहे थे, इसलिए मैंने पंखा बंद कर दिया। वोल्टेज हमेशा की तरह कम था। एसी भी कमरा ठंडा करने में बहुत समय लगा रहा था। मेरा नन्हा बेटा, अवि, गहरी नींद में सो रहा था। पर बेटी ऐश ने चिड़चिड़ाना शुरू कर दिया। कुछ ही मिनटों में उसके कपड़े पसीने से भीग गए थे। तानू ने उसे उठाया और गोदी में लेकर झुलाने लगी।

हर आधे घंटे बाद मैंने कुछ समय आराम किया। और चूँकि तानू जगी हुई थी, तो हम इधर-उधर की बातों पर हँसी-मज़ाक करते रहे और अपने अब तक के जीवन के हसीन पलों की मीठी-मीठी यादों में डूबते-उतराते रहे। हम अपने बच्चों के साथ खेलते रहे और प्यार से मुस्कुराते रहते। मैं कभी इतना ज़्यादा खुश नहीं हुआ था। यहाँ तक कि हम अपने रात के कपड़ों में ही ज़मीन पर बैठे, हर पल का मज़ा ले रहे थे। यह हमारी दुनिया थी। और इसके अलावा कुछ भी मायने नहीं रखता था।

पर मुझे अपने ज़िम्मे लिए काम को जारी रखना था। जब मैंने बड़ी मेहनत से उन कागज़ों पर कई निशान बना दिए और उनमें से अक्सर किए जाने वाले नम्बरों को अलग किया। उस रात पूरा काम नहीं हो पाया। मुझे करीब तीन दिन लगे, जिसमें मैंने ऐसे दस नंबर तय पाए, जिनसे सामन्त प्रताप अधिक संपर्क में रहा था। आजकल एसपी के दफ्तर में एक विशेष सैल होता है, जहाँ कॉल्स का परीक्षण और सारे डेटा की छानबीन होती है। हमारे पास बढ़िया सॉफ्टवेयर हैं, जिनसे किसी भी जिज्ञासा का समाधान फ़ौरन मिल जाता है, कुछ सेकेंड नहीं तो मिनटों में दिए गए नम्बर से जुड़ी आने-जाने वाली सारी कॉल के हर तरह के विवरण मिल जाते हैं।

मुझे अपने काम को देख कर तसल्ली हुई। मैंने सारे नंबर होम सेक्रेट्री को भेजे, उन्हें ऑब्ज़र्वेशन पर डालने की अनुमति लेने के लिए। मैंने अपने एसएस फंड से पाँच और मोबाइल फोन खरीदे। मेरी पूरी मेज़ पर मोबाइल फोन भर गए थे और मेरा सीक्रेट सर्विस का फंड घटता जा रहा था।

पैरलेल लाइन पर बातचीत सुनने की अनुमति भी जल्द ही मिल गई। जब परिणाम मिलने लगते हैं, तो सब काम आसानी से होने लगते हैं।

हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बाद कम से कम उसके फालतू के प्रेमालाप से तो छुटकारा

मैंने निगरानी के लिए एक फोन अजीत को दे दिया। रंजन को भी उसके हिस्से के मोबाइल फोन मिले। मैंने दो और नए फोन अपने पास रख लिए। ये सारे मोबाइल उन

Downloaded from www.The-Gyan.in

कॉल्स के लिए अलग किए गए थे जिन पर सामन्त प्रताप अक्सर बात करता रहा था।

मैं ख़ासी मेहनत कर चुका था। अब मुझे नतीजों का इंतज़ार था। मैंने यूपीएससी परीक्षा के नतीजे का भी इतनी बेचैनी से इंतज़ार नहीं किया था।

एक हफ्ता निकल गया। सारे नंबर ऑब्ज़र्वेशन पर थे। लेकिन किसी से भी कोई काम की जानकारी नहीं मिली थी।

~

मेरा मोबाइल वाइब्रेट कर रहा था। मैंने उसे तकिए के नीचे से निकाला। सामन्त प्रताप अपने पुराने बीएसएनएल नम्बर से किसी को कॉल कर रहा था। इतने दिनों बाद सामन्त प्रताप के फोन पर कुछ हरकत देखकर मैं बहुत खुश था। बिना किसी चीज़ से टकराए, मैं तुरंत दूसरे कमरे में चला गया।

'संजय, क्या चल रहा है?' परेशान सामन्त प्रताप ने पूछा।

'भैया, आपने कॉल क्यों किया? हमने मना किया था न। और पुराने फोन से क्यों मिला रहे हैं?

'अरे भाई, नया एयरटेल वाला सिम काम नहीं कर रहा है तो मैंने सोचा पुराने बीएसएनएल वाले से कोशिश करता हूँ। इसका नेटवर्क आ रहा है।'

'शेखपुरा में तो सब बदल गया है। पुलिस बहुत सक्रिय हो गई है। हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी का बहुत गहरा असर पड़ा है। एसपी बड़ी छिपाकर कार्रवाई करता है। उसका अगला कदम क्या होगा, यह पता लगाना नामुमकिन है।

'हम्म। ठीक कह रहे हो। पता लगा क्या कि कौन गद्दार था?'

'नहीं भैया। कोई भी हो सकता है। सूरज, लड्डुआ. . . पता नहीं। हमारे साथ कोई भी गद्दारी कर सकता। आपको बहुत ध्यान से रहना है। उम्मीद है कि और कोई नहीं जनता कि आप कहाँ हैं।'

'नहीं-नहीं किसी को मेरा ठिकाना नहीं पता। मैं किसी पर भरोसा नहीं कर सकता। पर कब तक छिपा रहूँगा? इसका कोई तो अंत होगा ही न।'

संजय और सामन्त प्रताप दोनों चुप हो गए। मुझे पता था कि इसका एक ही अंत होगा — सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी।

मैंने घड़ी की ओर देखा। सुबह के 4:47 बजे थे। इतनी सुबह-सुबह भी, जब पौ फटने को थी, सामन्त प्रताप तनाव में था। लगता है, मैंने उसकी रातों की नींद उड़ा दी थी।

मेरे दिन की शुरुआत इससे अच्छी नहीं हो सकती थी! साफ था कि सामन्त प्रताप

कि मैंने उसके पुराने बीएसएनएल नंबर को निगरानी में अभी भी रखा हुआ था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने तुरंत रंजन को बुलाया।

'तुमने किसी संजय के बारे में सुना है? इस नाम का कोई सामन्त प्रताप के नजदीक है क्या?'

'सर, संजय तो बहुतों का नाम होता है,' रंजन ने नींद में कहा, 'पर मैं पता लगाने की कोशिश करता हूँ।' उसने जरूर मुझे कभी भी उसे चैन से न सोने देने के लिए कोसा होगा।

मैंने घड़ी के दस बजाने का इंतज़ार किया। मैंने तुरंत पटना बीएसएनएल के हँसमुख जीएम, शर्मा जी, को फोन किया।

'शर्मा जी, आपको तंग करने के लिए माफी चाहता हूँ। मुझे एक नंबर की कॉल डीटेल तथा लोकेशन चाहिए। एसएमएस किया है आपको। चाहें तो नोट कर लें।'

'हाँ, सर जी, मैंने आपका एसएमएस देखा। मुझे लगता है, आपने काफी सुबह भेजा था, पाँच बजे के आस-पास। नंबर 9413@#$343 ही है न?'

'हाँ, शर्मा जी। मुझे ये डीटेल जल्द से जल्द चाहिए।'

'दस मिनट में आपके इनबॉक्स में होंगी। मुझे ज़रूर बताइएगा जब आप सामन्त प्रताप को अरेस्ट कर लें।'

मैं शर्मा जी के जवाब से कुछ चौंक गया था।

'आपको कैसे पता?' मेरे आश्चर्य की कोई सीमा नहीं थी।

'अरे सर, हम भी तो बिहार में रहते हैं। हम आपके काम के बारे में अखबारों में पढ़ते रहते हैं और मेरे दफ्तर में भी सभी आपके नाम से परिचित हैं। ऐसा और कोई एसपी नहीं है जो हमें लगभग रोज़ कॉल करता हो। मुझे भरोसा है कि अपने जोश के कारण आप सामन्त प्रताप को जल्द ही गिरफ्तार कर लेंगे।'

मैंने उनको धन्यवाद दिया और अब फिर से एकदम ताज़ादम हो गया था। अपने पसंदीदा ज़्यादा सिके हुए टोस्ट पर अच्छी तरह से मक्खन लगाकर खाते-खाते अपना लैपटाप खोला। मेरे इनबॉक्स में बीएसएनएल से एक मेल आ चुकी थी।

सामन्त प्रताप के बीएसएनएल नंबर पर और कोई भी गतिविधि नहीं हुई थी, सिवाय उस कॉल के जो उसने उसी सुबह संजय को की थी। तो यह तो साफ़ था कि वह अब एयरटेल का नंबर इस्तेमाल कर रहा था। यही उसने संजय को भी कहा था। एक्सेल शीट के दूसरे कॉलम में उसकी लोकेशन थी, एमपी राज या महेशपुर राज, पाकुड़। मैं अनुमान लगा रहा था कि वह किसी अस्थायी ठिकाने पर था या स्थायी। और यह संजय कौन था?

लगभग वे सभी नंबर जो मैंने इतनी जी-तोड़ मेहनत करके निकाले थे, नकली नामों से जारी किए गए थे। उन दिनों बिहार में यह आम बात थी। सिम कार्ड विक्रेता शायद ही कभी

विशेषकर ऐसे संदिग्ध लोगों के लिए ही कार्ड उपलब्ध करवाते थे। यह रैकेट बहुत फल-फूल रहा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

सौभाग्य से, संजय ने अपना सिम कार्ड अपने नाम पर ही लिया था। हमने उसकी पृष्ठभूमि जाँची। वह एक साधारण स्कूल अध्यापक था, जिसका कोई भी पुलिस रिकॉर्ड नहीं था। मैंने थोड़ी छान-बीन की तो मुझे अपने स्रोतों से पता लगा कि बचपन से वह सामन्त प्रताप को अपने बड़े भाई के समान मानता था। वह हमेशा से सामन्त प्रताप का बहुत वफादार रहा था। उसके लिए इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि सामन्त प्रताप अब निर्दयी हो गया था।

मैंने तुरंत संजय का नंबर पैरलेल सुनने के लिए डाल दिया और अगले तीन-चार दिन के लिए उसकी हर कॉल को मॉनिटर किया। संजय की बातचीत में सामन्त प्रताप का नामोनिशान नहीं था। मैं और गम्भीरता से सोचने लगा। कोई तो और तरीका होना चाहिए था जिससे संजय सामन्त प्रताप से बात करता था। पर कौन-सा?

~

पोलो कोएलो ने अपनी बेस्टसेलिंग पुस्तक *द अलकेमिस्ट* में लिखा था कि जब हमें किसी चीज़ की बहुत चाह हो तो सारा ब्रह्मांड हमें उससे मिलाने में मदद करने में लग जाता है। यह मेरे लिए तो सच साबित ही रहा था। आख़िरकार संजय की एक बातचीत से पता चला कि सामन्त प्रताप कैसे बात कर रहा था।

'हेलो, संजय भैया। साहिब से कैसे बात होगी?' उस महिला की आवाज़ जानी-पहचानी लग रही थी, जैसे मैं जनम से उसे जानता था।

सामंती व्यवस्था में कोई व्यक्ति ज़रा भी अहमियत बढ़ जाने पर तुरंत ख़ुद को 'साहिब' की उपाधि से नवाज़ लेता था। कई आदमी तो यह चाहते थे कि उनकी पत्नी भी उन्हें 'साहिब' कहकर बुलाए।

'शांति भाभी, क्या आप थोड़ा धीरज नहीं रख सकतीं? सामन्त भाई को कॉल करने दीजिए। फिर मैं उनकी बात आपसे करवा दूँगा। और आपने मुझे इस नंबर पर क्यों फोन किया है? मैंने खास तौर पर आपको दूसरा नंबर दिया था।'

'अरे, क्या करें, दोनों नंबर एक ही नाम से सेव किए हुए हैं। शायद मैंने गलती से तुम्हारा पुराना नंबर मिला दिया। अगली बार मैं तुम्हारे 'स्पेशल' नंबर पर ही फोन करूँगी। कसम से।'

एक बार फिर मेरा भाग्य जाग उठा था। इस बार भी शांति देवी ही सामन्त प्रताप के पतन का कारण बनेगी। पहले भी उसने हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी में हमारी सहायता की थी। मैंने ख़ुद से वादा किया कि सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी के बाद मैं ख़ुद जाकर शांति देवी

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने संजय के फोन की कॉल डिटेल मांगी और शांति देवी के नंबर को अंकित किया। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि जो नम्बर तब से ऑब्ज़र्वेशन पर था जब से वह देवघर में थी, उसके अलावा उसके पास एक दूसरा नंबर भी था। इसका मतलब था कि या तो उसके पास इस पूरा समय एक और सिम कार्ड था, या फिर उसने नया सिम खरीद लिया था।

मुझे शांति देवी का नया नंबर मिल गया और मुझे ऐसा लगा कि मैंने यह नंबर कहीं देखा था। नए नंबरों की वह लिस्ट निकाली जो मैंने बनाई थी। उसमें देखने पर पता चला कि लिस्ट में वही नंबर था! शांति देवी बहुत दिनों से सामन्त प्रताप के संपर्क में थी। असल में मैंने अंजाने में उस नंबर को भी निगरानी पर डाल रखा था।

मैंने जल्दी से अजीत को बुलाया।

'अजीत, मैंने तुमको एक मोबाइल दिया था, पैरलल लिसनिंग के लिए। कोई काम की बात सुनने में आई क्या?'

अजीत ने कुछ शर्मिंदा होते हुए मेरी ओर देखा।

'सर, एक औरत बात करती है। मैं ज़्यादा समझ नहीं पाया। ज़्यादातर बातें बेकार की ही होती हैं।'

'तुरंत मुझे वह फोन लाकर दो,' मैंने कहा।

काश मैंने वह नंबर ख़ुद ही ट्रैक किया होता, अजीत को नहीं दिया होता। क्या पता मुझसे अब तक कोई अहम बात छूट गई हो?

लेकिन अब पछताकर क्या फ़ायदा होता?

Downloaded from www.The-Gyan.in

35
‘मुझे गैस बंद करनी आती नहीं’

मैंने उस फोन को चार्ज किया, जिससे मैं शांति देवी का नंबर ट्रैक कर रहा था, और फिर इंतज़ार करने लगा। कुछ घंटों बाद शांति का कॉल आया।

‘हेलो, संजय भैया, कब बात करवाएँगे?’

‘भाभी, मैंने आपसे धैर्य रखने को कहा था ना। आज शाम 5 बजे तक कॉल करेंगे वे। आप घर पर ही रहना। मैं आपको बुला लूँगा।’

मैंने तुरंत शर्मा जी को शांति देवी का नंबर दिया। ‘शर्मा जी प्लीज़ मुझे 9413***877 की कॉल डिटेल दे दीजिए।’

‘इतनी सी बात? अभी लीजिए,’ शर्मा जी ने कहा।

मुझे शांति देवी की आउटगोइंग कॉल्स में से संजय का ‘स्पेशल’ नंबर चाहिए था। मैंने सारे रिकॉर्ड चेक किए और अगले दस मिनट में वह नंबर ढूँढ़ निकाला। किस्मत से वह भी बीएसएनएल का ही नंबर था। शर्मा जी के लिए आज का दिन व्यस्त रहने वाला था।

मैंने घड़ी की ओर देखा। दोपहर के 3:40 बज रहे थे। मुझे तुरंत ही संजय के नंबर को पैरलल लिसनिंग पर डालना था। मैंने शर्मा जी को फिर फोन किया।

‘शर्मा जी, एक व्यक्तिगत अहसान चाहता हूँ। मुझे पता है, आप निराश नहीं करेंगे।’

‘अरे सर, आपके लिए तो कुछ भी। आदेश करें।’

हमेशा की तरह शर्मा जी अच्छे मूड में थे।

‘मैं चाह रहा था कि आप एक नंबर को तुरंत पैरलल लिसनिंग पर डाल दें। मैं अगले एक घंटे में उस पर एक महत्वपूर्ण कॉल आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।’

‘ठीक है सर, कर देते हैं,’ शर्मा जी ने अपने हमेशा के जोशीले ढंग में कहा।

मुझे बहुत राहत महसूस हुई।

‘धन्यवाद, शर्मा जी। मैं आपका बहुत आभारी हूँ। कभी आपके किसी काम आ सकूँ तो बताइएगा।

गिरफ्तार कर लीजिए। जनता की बड़ी सेवा होगी।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘ज़रूर, शर्मा जी।’

मैंने हमेशा अच्छे संबंध बनाने की कोशिश की है और उन संबंधों से हमेशा मुझे बहुत फायदा हुआ है। मैं शर्मा जी से कभी नहीं मिला था, बस फोन पर बात करके ही हमारे बीच एक नाता बन गया था। हम दोनों ही अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठावान थे। शायद यही हमारी घनिष्टता का कारण था।

~

शाम 4:57 को मेरा मोबाइल बजा। संजय का नंबर था। मैंने हरा बटन दबाया। मन ही मन में मैंने शर्मा जी को उनकी मदद के लिए शुक्रिया अदा किया।

यह वही कर्कश आवाज़ थी, जिसने कुछ दिन पहले मुझे धमकी दी थी। मैं कभी सामन्त प्रताप की आवाज़ को नहीं भूल सकता।

‘संजय, क्या खबर? शांति बगल में है क्या?’

‘प्रणाम, भैया। आप वापस आ जाएँगे तो सब ठीक हो जाएगा। शांति भाभी आप से बात करने को बेचैन रहती हैं। मैं फोन को उनके पास ले जा रहा हूँ। फोन पर ही रहिएगा।’

मैं तुरंत सामन्त प्रताप के काम करने का तरीका समझ गया। उसकी चाल थी तो साधारण-सी लेकिन चतुर भी थी। जब भी सामन्त प्रताप किसी से बात करना चाहता था, वह संजय को फोन करता था। फिर संजय उस व्यक्ति तक फोन लेकर जाता था। सामन्त प्रताप और संजय दोनों ने नकली नामों से नए सिम ले लिए थे। अब मेरे पास संजय का ‘स्पेशल नंबर’ था, तो सामन्त प्रताप का ‘स्पेशल नंबर’ मुझे जल्द ही मिल जाना मुश्किल नहीं था।

कोई भी, एक भी, इन दोनों के उन नंबरों के बारे में नहीं जानता था, तो पुलिस के उनको ट्रैक करने का प्रश्न ही नहीं था। सामन्त प्रताप को किसी तरह पता चल गया होगा कि पुलिस एक फोन नंबर से बहुत सी जानकारी निकाल सकती है। वह इतना बुद्धिमान तो था ही कि समझ सके कि पुलिस उससे संबंधित लोगों, दोस्तों और रिश्तेदारों के नंबरों पर निगरानी रख रही है।

नवादा जेल में बिताए दिनों में वह पुलिस के तरीके तो जान ही गया होगा। नेताजी ने भी साफ शब्दों में उसको सतर्क किया था। हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बाद उसे और भी सावधानी बरतनी थी। उसे मालूम था कि पूरी पुलिस हाथ धोकर उसके पीछे पड़ी हुई है।

वह यह नहीं जानता था कि मैं बाघ की तरह अकेला काम कर रहा था। अब मेरे सिर पर जुनून सवार हो गया था। मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य था उसे सलाखों के पीछे देखना।

अलग रास्ते अपनाए थे और अब हम आमने-सामने खड़े थे। जहाँ मैं एक नम्र, कमतर

Downloaded from www.The-Gyan.in

आत्मविश्वासी किशोर रहा था – जो कुलीन संस्थानों में पढ़ा, जहाँ मेरे चरित्र का निर्माण हो सका – वहीं सामन्त प्रताप एक मानसिक रोगी था; एक दंभी जानवर। उसे समाज की ऊपरी परत के लोगों से घृणा थी। वह हमेशा से वहशी था। जब मैं नालंदा का एसपी बनकर अपने पेशे के शिखर पर पहुँचा ही था, सामन्त प्रताप की भयानक गैंगलॉर्ड की प्रतिष्ठा, कुछ ही मील दूर नवादा में पनप रही थी। कई बार, हम दोनों एक-साथ मुख्य पृष्ठ की खबरों में आए थे—वह, लोगों को मारने के लिए और मैं, पीड़ितों को बचाने के लिए। मेरे द्वारा बचाए और उसके द्वारा मारे गए लोगों की संख्या भी लगभग बराबर ही थी।

मैंने शांति देवी को फोन पर आते सुना, एकदम प्रफुल्लित।

'क्या, साहिब, कब से इंतज़ार कर रही हूँ। आप आजकल इतना कम कॉल करते हैं। मैं आपको बहुत याद करती हूँ।'

'मेरी जान, मैं भी तुमको बहुत याद करता हूँ। मुझे पहले उस कमीने एसपी लोढ़ा की खबर लेने दो। फिर मैं तुमको अपनी बाहों में भर लूँगा। हमेशा के लिए।'

शांति के साथ सामन्त प्रताप का अफेयर चल रहा था! यह तो बॉलीवुड स्कैंडल से भी बड़ा कांड था।

मैंने तुरंत शर्मा जी को फोन करके उनसे संजय के नंबर की कॉल डिटेल माँगी। दस मिनट में ई-मेल मेरे लैपटॉप की स्क्रीन पर था। मैंने कर्सर को एक्सेल शीट की एक नीचे की पंक्ति पर रखा : शाम 4:57 बजे पर, जब एक इनकमिंग कॉल छः मिनट और चौबीस सेकंड लम्बी चली थी। मैं इसी को ढूँढ़ रहा था। मैंने उसके पास वाले कॉलम में वह नंबर देखा। वह दस अंक ऐसे लग रहे थे, मानो लॉटरी के लकी नंबर हों। मैं बेहद खुश था। अब मेरे पास सामन्त प्रताप का नया नंबर आ गया था। मैं फिर से खेल में आ गया था।

मैंने एयरटेल ऑफिस को इस नंबर की कॉल डिटेल माँगने के लिए फोन किया। साथ-साथ मैंने वह नंबर गृह सचिव के ऑफिस भी भेज दिया। कुछ ही घंटों में कमान फिर मेरे हाथ में थी। मेरे पास लगभग वह सारी जानकारी थी, जो मुझे उस अपराधी का शिकार करने के लिए चाहिए थी।

कॉल डिटेल चौंका देने वाली थी। सारे रिकॉर्ड में एक ही नंबर था—संजय का। सामन्त प्रताप बहुत सतर्क था। संजय के पास भी केवल सामन्त प्रताप से बात करने के लिए एक नया सिम कार्ड था। केवल खुशकिस्मती के कारण शांति ने संजय के असल नंबर पर फोन कर दिया था और उसी से मुझे ये सारे नंबर मिल गए थे।

सामन्त प्रताप नियमित रूप से संजय को फोन किया करता था, ज़्यादातर शायद शांति देवी से ही बात करने के लिए। वह हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बाद वापस अपने गाँव चली

गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस वहाँ तक कैसे पहुँची? किसने पता बताया? पर इस सबके बावजूद अब वह ज़्यादा खुश लग रही थी। जो बातचीत मैंने सुनी और जो जानकारी मुझे

Downloaded from www.The-Gyan.in

मिली थी, उसके हिसाब से तो वह कभी हॉर्लिक्स से प्यार करती ही नहीं थी, केवल सामन्त प्रताप पर मोहित थी। मुझे बाद में जाकर पता चला था कि शांति देवी सामन्त प्रताप की हिंसक, उग्र प्रवृत्तियों से आकर्षित थी। हॉर्लिक्स उसके लिए बहुत ही सीधा-सादा व्यक्ति था—उसमें सामन्त प्रताप वाली बात नहीं थी। और क्या पता, शायद उसे हॉर्लिक्स और सुलेखा के अफेयर के बारे में मालूम था!

जो डीटेल एयरटेल से मुझे मिली, उससे यह साफ था कि सामन्त प्रताप की लोकेशन एक ही थी। एयरटेल सिम बीरभूम पश्चिम बंगाल के नलहटी में टावर सी इलाके में था। इससे मुझे कुछ शक हुआ, क्योंकि बीएसएनएल के अनुसार तो वह पाकुड़ में था। वह एक ही साथ दो जगहों पर कैसे हो सकता था?

मैंने फिर रंजन को नींद से जगाया। वह तभी राँची से अपनी बीमार पत्नी का ध्यान रखने के बाद लौटा था। उसकी पत्नी की मानसिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी। डॉक्टर ने उसके अवसाद का कारण अकेलापन बताया था। एक पुलिसवाले का जीवन तो कठिन होता ही है, लेकिन उसके परिवार का जीवन और भी कठिन होता है। एक औसत पुलिसवाले अपना ज़्यादातर समय उनसे दूर ही काटते हैं। उनकी तैनाती दूर-दराज़ इलाकों में होती है, जहाँ मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पातीं। बदकिस्मती से यह एक ऐसा पेशा है जिसमें सिपाही की उसके परिवार से दूरियाँ कई तरह से बढ़ती जाती हैं।

मैंने रंजन को नए घटनाक्रम के बारे में बताया। उसे आगे की खबर सुनकर खुशी हुई। उसे दिख रहा था कि मैं सामन्त प्रताप का पीछा पूरे दम-ख़म से कर रहा हूँ और अब मुझपर उसकी गिरफ्तारी का जुनून सवार था। उसे पता था कि इस खेल में मैं ही जीतूँगा और यह कि उसका किरदार भी बहुत महत्वपूर्ण है। राजू और कृष्णा इस स्थिति में बाहर के खिलाड़ी थे, जैसे अब आईपीएल में होते हैं।

'सर, हम आज रात ही बीरभूम चले जाएँगे। वहाँ घनी आबादी है। साथ ही, लोगों से बातचीत करने में भी परेशानी होगी, क्योंकि वहाँ बांग्ला बोली जाती है। हमें सामन्त प्रताप की लोकेशन पता करने में समय लगेगा।' उसने कहा, जब उसे अहसास हुआ कि मेरे दिमाग में क्या चल रहा था।

'राजू और कृष्णा से क्या खबर है?'

'सर, सामन्त प्रताप के कोई जान-पहचान वाले या रिश्तेदार न तो पाकुड़ में हैं, न ही बीरभूम में। उसकी इस पसंद पर उनको भी आश्चर्य हुआ।'

'रंजन, अभी सामन्त प्रताप बिल्कुल घबराया हुआ है। उसे पता है कि वह किसी पर विश्वास नहीं कर सकता है। इसलिए ज़ाहिर है, वह ऐसी जगह पर जाकर छुपा है जहाँ उसे

'हाँ, सर।'

'सावधानी से जाना, रंजन,' मैंने रंजन को सतर्क किया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

रंजन मुस्कुराया और बोलेरो मैं बैठ गया।

~

'चुन, सुनो, मैंने गैस पर दूध उबलने रखा है। प्लीज़ गैस बंद कर दोगे?' तानू बाथरूम के अंदर से चिल्लाई।

मैं अलसाता हुआ रसोई तक पहुँचा। मैंने चूल्हे को देखा और उसकी नॉब को परखने लगा। दूध गरम हो रहा था और उबलने को था, पर मुझे तो गैस बंद करनी आती ही नहीं थी। दूध तो उबलकर बाहर आने ही वाला था—मैं घबरा गया था। मैं बाथरूम की तरफ भागा और मैंने ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया।

'तानू! तानू!' मैं ज़ोर से चिल्लाया, बच्चे खुश होकर मुझे देख रहे थे।

'क्या है? दरवाज़ा क्यों तोड़ रहे हैं?' तानू ने आँखों से साबुन पोंछते हुए बोला।

'मुझे गैस बंद करना नहीं आता। नॉब को सीधी तरफ घुमाना है या उलटी तरफ?'

'क्या? आपने अभी भी बंद नहीं की? अब तक तो दूध उफन चुका होगा।'

उसने गाउन पहना और रसोई की तरफ भागी। पूरे स्टोव पर दूध फैल चुका था। तबाही मच चुकी थी। तानू ने मेरी ओर बनावटी गुस्से से देखा!

'कहने को तो आप आईआईटी के इंजीनियर हो,' तानू ने मुझे ताना मारा।

मुझे सच में गुस्सा आ गया। 'मेरा मज़ाक मत बनाओ। और हाँ, आईआईटी में दूध उबालना नहीं सिखाते!' मैंने तुनककर जवाब दिया।

वह बस शरारत से मुस्कुराई और उसने मुझे अपनी बाहों में समेट लिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

36
‘आपने जीता है एक नोकिया मोबाइल फोन’

पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिले में एक छोटा-सा शहर है, नलहटी, जो बंगाल-झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्र में स्थित है। हिन्दू पौराणिक कथाओं के अनुसार, शक्ति का ‘नल’, अर्थात गला, यहाँ गिरा था। इसलिए शक्तिपीठ का नाम नलहतेश्वरी मंदिर पड़ गया। रंजन और उसकी टीम ने मंदिर के पास ही डेरा डाल लिया।

‘सर, सामन्त प्रताप को नलहटी में ढूँढ़ना बहुत कठिन साबित हो रहा है, और साथ ही, मैं थोड़ी दुविधा में भी हूँ। सामन्त प्रताप एक ही समय पर दो जगहों में कैसे हो सकता है? आपने बताया था कि एक ही दिन और लगभग एक ही समय पर बीएसएनएल मोबाइल फोन उसकी लोकेशन पाकुड़ बता रहा है और एयरटेल के हिसाब से उसकी लोकेशन नलहटी,’ उलझन में रंजन ने कहा।

रंजन का प्रश्न तो जायज़ था। मैंने भी पहले सोचा था। मैंने अपने पीए को बंगाल और झारखंड का एक बड़ा वाला नक्शा लाने को कहा।

‘सर, शेखपुरा में कहाँ से मैप मिलेगा? यहाँ तो मूल सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं,’ मेरे पीए ने अपनी मजबूरी का बखान किया।

मैंने फिर से रंजन को फोन किया और उसे पाकुड़ जाने को कहा। यदि सामन्त प्रताप वहाँ था, तो उसे ढूंढ़ना आसान होगा। पाकुड़ झारखंड का एक छोटा-सा शहर था।

शांति देवी से उसकी बातचीतों के हिसाब से उसकी लोकेशन स्थायी ही थी। इस वजह से मैंने यह नतीजा निकाला कि या तो उसने एक घर किराए पर ले लिया था, या फिर वह अपने किसी ख़ास साथी के घर में रह रहा था।

उस दिन मैं लंच के लिए जल्दी घर आ गया। मेरे करने को ज्यादा काम नहीं था।

बड़ा ही अजब विरोधाभास था। एक ओर मेरे सुलझाने को शेखपुरा में कोई अपराध का मामला नहीं था, और दूसरी ओर मैं बिहार के मोस्ट वॉन्टेड अपराधी का पीछा कर रहा था। मैंने कुछ देर झपकी लेने की सोची और ड्रॉइंग रूम में कालीन पर लेट गया। मेरी पीठ

कर रहा था कि दर्द एक-दो दिन में कम हो जाए।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने आँखें बंद ही की थीं, कि अचानक मेरा फोन बजने लगा। दूसरी ओर रंजन था—वह बहुत उत्साहित लग रहा था।

'सर, सर, आपको एक बहुत दिलचस्प बात बतानी है।'

मैं साँस रोके सुनता रहा।

'सर, जो बीएसएनएल और एयरटेल के दो टावर की लोकेशन हैं. . . '

'हाँ, हाँ, आगे बताओ,' मैंने उत्साहित होकर कहा।

'सर एक जगह है जहाँ उन दोनों टावर के सिग्नल आते हैं। मेरी पत्नी ने कुछ देर पहले मेरे बीएसएनएल नंबर पर फोन किया था। मेरा फोन पाकुड़, एमपी राज, के टावर-सी की लोकेशन दिखा रहा था। फिर कॉल कट गई। मैंने उसे फिर मिलाने की कोशिश की पर कॉल ड्रॉप होती रही। मैं राजू का फोन लेकर अपनी पत्नी को फोन मिलाने ही वाला था, जब मैंने स्क्रीन पर देखा तो "एयरटेल, टावर ए, बीरभूम" लिखा आ रहा था। मैंने फिर से दोनों मोबाइल फोन को जाँचा और वे दोनों वहीं अलग-अलग टावर दिखा रहे हैं जो आपने मुझे नोट करवाए थे, लेकिन एक ही जगह पर।' रंजन ने पूरा किस्सा एक ही साँस में सुना दिया।

खुशी की ऐसी लहर मेरे शरीर में दौड़ी कि मेरी पीठ का दर्द एकदम गायब हो गया।

यह तो साधारण तर्क था। मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि यह मुझे पहले क्यों नहीं सूझा। ज़ाहिर था कि सामन्त प्रताप बीरभूम और पाकुड़ के बॉर्डर पर ही कहीं रह रहा था। उसका बीएसएनएल सिम एमपी राज के टावर सी, पाकुड़ की सीमा में आता था और एयरटेल टावर नलहटी, बीरभूम में, जो पाकुड़ की सीमा से कुछ ही किलोमीटर पर स्थित था। एक मोबाइल फोन के टावर की पहुँच लगभग तीस किलोमीटर होती है। दोनों टावर एक-दूसरे से ज़्यादा दूर नहीं होंगे। तो साफ़ है कि बीएसएनएल और एयरटेल के नेटवर्क के एरिया कहीं-कहीं एक-दूसरे के क्षेत्र में ओवरलैप होते होंगे। सामन्त प्रताप ठीक ऐसे ही क्षेत्र में था। अब हमें बस सामन्त प्रताप की लोकेशन का ठीक-ठीक अनुमान लगाना था। पर वह इलाका भी काफी बड़ा था। सामन्त प्रताप को ढूँढ़ना मुश्किल ही था।

मैंने अपने स्तर पर यह तो पता लगा ही लिया था कि सामन्त प्रताप का नया एयरटेल सिम डुमरिया गाँव, पाकुड़ के निवासी पंकज सैनी के नाम पर जारी किया गया था।

मैंने रंजन से पूछा कि क्या राजू या कृष्णा इस नाम से सामन्त प्रताप के किसी साथी को जानते थे? पर उन्होंने मना कर दिया।

मैंने रंजन और कृष्णा को डुमरिया गाँव की पड़ताल करने को कहा। उस गाँव में पंकज सैनी नाम का कोई व्यक्ति नहीं था। हमारे लिए उस आदमी को खोजना बहुत ज़रूरी था

प्रताप का साथी हो सकता था, जिसने पाकुड़ में छिपे रहने में उसकी मदद की थी। या फिर

Downloaded from www.The-Gyan.in

सामन्त प्रताप ने शायद पंकज के नाम से सिम कार्ड लिया था। मुझे अपना हर कदम सोच-विचार करके रखना था।

एयरटेल ऑफिस से मैंने उस सिम कार्ड विक्रेता का पता और फोन नंबर ले लिया जिससे सामन्त प्रताप ने सिम लिया था। मैंने अपने ऑपरेटर से उस दुकान का नंबर मिलाने को कहा, जिससे लगे कि कोई बड़ा अधिकारी फोन कर रहा है।

मेरे आईपीएस के शुरुआती दिनों में जब मैं खुद किसी का नंबर मिलाता था, तो लोग समझते थे कि कोई उनके साथ मसखरी कर रहा था। वे यही सोचते थे कि एसपी एक बड़ा अफसर होता है, वह खुद क्यों किसी का नंबर मिलाएगा? वे यह उम्मीद करते थे कि या तो उनका पीए या फिर उनका टेलिफोन ऑपरेटर फोन मिलाए। वह यह भी सोचते थे कि कार का दरवाज़ा खोलने के लिए मुझे ड्रॉइवर का इंतज़ार करना चाहिए था, या डांट-फटकार के नए-नए बहाने ढूँढ़ता रहना चाहिए। किस्मत से मेरे पास तानू का साथ था जो ज़मीन पर मेरे पैरों की पकड़ मज़बूती से बनाए रखती थी। प्रोबेशन के दिनों में एक बार उसने मुझे एक कॉन्स्टेबल पर चिल्लाते हुए सुन लिया, 'पंखे से लटका दूँगा। सबक सिखाऊँगा तुझे।' वगैरह वगैरह।

'यह कोई तरीका है अपने मातहतों से बात करने का?' उसने नाराज़गी से पूछा।

'तानू पुलिस अफसर ऐसे ही बात करते हैं। तुमने मेरे कुछ "कड़क" सीनियर्स को ऐसे ही बात करते नहीं सुना? नहीं तो हम अपने जूनियर्स को अनुशासित कैसे रखेंगे? उन्हें हमसे डरना चाहिए। तभी तो लोग समझेंगे कि मैं एक सख्त अफसर हूँ।'

'उनके मन में आपके लिए डर नहीं, सम्मान होना चाहिए—आपके काम और उसूलों के कारण,' तानू ने जवाब दिया। और अपने जूनियर्स पर चिल्लाने की क्या ज़रूरत है? आपका रसूख तो आपकी रैंक में है। आपको तो केवल एक कागज़ पर हस्ताक्षर करने भर की देर है और किसी भी कर्मचारी के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई शुरू हो जाएगी।'

'हाँ, हाँ तुम ठीक कह रही हो,' मेरे पास सहमति जताने के अलावा कोई और रास्ता नहीं था।

'रुको, मेरी बात खत्म नहीं हुई। याद रखना वो आपके अधीन नहीं काम कर रहे हैं; वे आपके साथ काम कर रहे हैं' तानू ने सधे हुए शब्दों में कहा।

'उफ़! बड़ा भारी-भरकम भाषण था!' मैं मन-ही-मन बुदबुदाया, पर मुझे मालूम था कि वह सही कह रही थी। मैंने भगवान का शुक्रिया अदा किया कि तानू मेरे साथ थी।

~

'जी हाँ,' मालिक ने सुस्त अंदाज़ में कहा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘एसपी साहिब, शेखपुरा, बात करेंगे।’

मैंने एक कुर्सी के सरकने की आवाज़ सुनी; दुकानदार शायद अब सीधा बैठ गया था।

‘हेलो, मैं शेखपुरा का एसपी बोल रहा हूँ। हमारी छानबीन के दौरान पता चला है कि एयरटेल का एक सिम कार्ड तुमने 3 जुलाई को किसी पंकज सैनी के नाम पर जारी किया था। तुमने वह सिम कार्ड बिना डिटेल की जाँच करे ही जारी कर दिया था।’

‘सर, इतने लोग रोज़ आते हैं, हो सकता है कोई गलती हो गई हो,’ उसने चिंतित होते हुए कहा।

~

‘तो इस गलती की कीमत चुकाने को तैयार हो जाओ। क्या तुम्हें पता है कि बिना सत्यापन के सिम कार्ड देना आईपीसी की धारा 419, 465 और 471 के अंतर्गत अपराध है?’

धाराएँ सुनकर ज़रूर दूसरी ओर उस दुकान के मालिक के पसीने छूट रहे होंगे।

‘सुनो, अगर तुम जेल नहीं जाना चाहते हो, तो हमें इस पंकज को ढूंढ़कर दो।’

‘सर, मैंने अभी रिकॉर्ड चेक किया है, किस्मत से उसने फॉर्म में अपना दूसरा नंबर दिया है,’ उसने घबराते हुए कहा।

‘तो उसे अपनी दुकान में बुलाओ और उसे कहो कि सत्यापन के लिए उसे फिर से अपने सारे कागज़ लाने हैं,’ मैंने कहा।

‘पर हुज़ूर, वह क्यों आएगा, जब उसने पहले ही जाली कागज़ों से सिम कार्ड लिया था?’

‘हाँ, हाँ,’ अपने बुद्धूपन को छुपाते हुए मैंने कहा। ‘अच्छा तो उसे कहो कि उसके मोबाइल नंबर, 9318**6740 को एक बम्पर ईनाम मिला है—एक मोबाइल फोन और तीन महीने का टॉक टाइम एयरटेल की ओर से मुफ्त। वह ज़रूर आएगा ईनाम लेने के लिए।’

‘आपको पक्का लगता है कि वह आएगा, सर?’

‘बिलकुल’

~

‘क्या आप पंकज सैनी बोल रहे हैं?’ सिम कार्ड विक्रेता ने पूछा।

‘बधाई हो! आपने एक फ्री नोकिया मोबाइल सेट जीता है।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘मैंने! किस लिए?’ अचंभित होकर पंकज ने पूछा।

‘एयरटेल ने एक लकी ड्रॉ किया था जिसमें आप जीते। आप कल दोपहर 12 बजे से पहले जय माता टेलिकॉम पर आ जाएँ और अपना मुफ्त फोन और गिफ्ट वाउचर ले लें। यह स्कीम दोपहर के बाद खत्म हो जाएगी।’

पंकज चुपचाप सोचने लगा।

आखिरकार, उसने कुछ सेकंड बाद पूछा, ‘मोबाइल सेट में कैमरा भी है क्या?’

पंकज लकी ड्रॉ के झाँसे में फंस चुका था।

विक्रेता ने पंकज के साथ इस मीटिंग के बारे में बताने के लिए मुझे फोन किया। मैं किसी विजेता के जैसे मुस्कुराया। मुझे पता था कि कैमरे वाले फ्री मोबाइल फोन का लालच किसी के लिए भी लुभावना होता है। उन दिनों में कैमरे वाला मोबाइल फोन होना बहुत बड़ी चीज़ थी।

रंजन, राजू और कृष्णा जय माता टेलिकॉम पर उस पंकज का इंतज़ार कर रहे थे। दोपहर के आस-पास एक लंबा पतला युवक आया। वह बहुत उत्साहित दिखाई दे रहा था।

‘नमस्ते, मैं पंकज सैनी हूँ, लकी ड्रॉ का विजेता।’

‘हाँ, ठीक है। क्या आपने हमसे 3 जुलाई को एक सिम कार्ड खरीदा था?’ दुकानदार ने पंकज से पूछा।

रंजन ध्यान से उनकी बातें सुन रहा था।

‘नहीं, मैं दूसरा सिम कार्ड क्यों खरीदूँगा? मैं तो पिछले एक महीने से आपकी दुकान पर ही नहीं आया।’ पंकज ने गुस्से से कहा।

‘ओ! तो फिर माफ कीजिए, हम यह प्राइज़ आपको नहीं दे सकते।’

‘बेवकूफ़, तो तुमने मेरा समय क्यों खराब किया? मैं अपना पसंदीदा टीवी सीरियल छोड़कर यहाँ तक आया।’

पंकज ने लगभग चार-पाँच मिनट तक उसे खूब गालियाँ दीं और फिर चला गया।

रंजन ने मुझे फोन करके स्थिति से अवगत कराया।

‘रंजन, या तो इस पंकज को सच में उस नए सिम कार्ड के बारे में नहीं पता जो सामन्त प्रताप इस्तेमाल कर रहा है, या फिर वह दिखावा कर रहा है। अगर वह सामन्त प्रताप का साथी है, तो शायद वह इतनी आसानी से हमारे चंगुल में फँसने नहीं वाला है,’ मैंने कहा।

‘फिर मुझे क्या करना होगा, सर? वह एक बस में चढ़ने वाला है।’

‘उसका पीछा करो। अगर हमारी किस्मत अच्छी हुई, तो शायद तुम सीधा शेर की गुफा में ही पहुँच जाओगे!’

फिर थका-मांदा, गुस्से से भरा पंकज उतरा और एक घरों के झुंड की ओर बढ़ा। रंजन और उसकी टोली कुछ दूरी बनाए उसका पीछा करते रहे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

पंकज एक घर में घुसा और दरवाज़ा बंद कर लिया। रंजन ने उस इलाके का मुआयना किया। सब कुछ शांत लग रहा था।

राजू पान वाले के पास गया और उसने बातों-बातों में पंकज के बारे में पूछा।

'अरे भैया, क्या यहाँ कोई पंकज सैनी रहता है? मैं एयरटेल मोबाइल कंपनी से हूँ। मुझे उसे एक ईनाम देना है,' राजू ने कहा।

'पंकज? ओ! वो तो केबल का धंधा करता है। काम अच्छा नहीं चल रहा है; उस पर बहुत भारी कर्जा है। उसकी समस्याओं का समाधान करने के लिए आपका ईनाम काफी नहीं होगा,' पान वाले ने उत्तर दिया।

'क्या वो अकेला रहता है? उससे बाहर के कोई लोग मिलने आते हैं क्या?'

'हाँ, अकेला ही रहता है। उससे मिलने कोई नहीं आता। आप इतने सवाल क्यों पूछ रहे हो? पुलिसवाले हो क्या?'

राजू हँसा, 'मैं पुलिसवाला लगता हूँ क्या?'

'लगते तो गुंडे हो,' पान वाले ने बेबाक कहा।

राजू की हँसी गायब हो गई और उसकी भौंह तन गई। पान वाले को गालियाँ देता हुआ वह रंजन और कृष्णा के पास आया। सबने यही नतीजा निकाला कि सामन्त प्रताप पंकज के घर पर नहीं रह रहा था। या तो पंकज का सामन्त प्रताप से कोई लेना-देना ही नहीं था या फिर वह इतना चतुर था कि सामन्त प्रताप को अपने साथ न रखे।

हमारे मिशन की शुरूआत से मैंने यह स्पष्ट कर दिया था कि मैं किसी भी व्यक्ति को तब तक न तो गिरफ्तार करूँगा और न ही उससे पूछताछ करूँगा, जब तक मैं एकदम पक्का न हो जाऊँ कि वह व्यक्ति मुझे सामन्त प्रताप तक पहुँचाएगा। मैं किसी भी प्रकार से सामन्त प्रताप को सचेत नहीं करना चाहता था। अब पंकज सैनी से पूछताछ का भी कोई प्रश्न नहीं था।

~

'काहे फोन किया, संजयवा?'

'भाई, आपसे कुछ बात करनी है। ज़रूरी है,' संजय ने कहा।

'ठहरो, मुझे छत पर जाने दो। दिन में साला फोन घर के अंदर काम ही नहीं करता। लेकिन रात में सही चलता है।'

'ओके भैया, होल्ड करते हैं।'

सामन्त प्रताप छत पर गया और बोला 'हाँ, अब बोलो। नेटवर्क अभी ठीक है।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

मेरे दिल की धड़कने तेज़ हो गईं। इतने समय बीत जाने के बाद, क्या यह काम इतना आसान होने जा रहा था?

मैं सामन्त प्रताप के बोलने का इंतज़ार करने लगा। मैं सारे भगवानों से प्रार्थना करने लगा कि वे सामन्त प्रताप से उसका पता बुलवा दें।

Downloaded from www.The-Gyan.in

37
‘रिंगा-रिंगा रोजेज’

‘मरवाएगी वो पागल औरत! पगला गई है क्या? यहाँ मेरा ज़िंदा रह पाना मुश्किल हो रहा है और अब वह मेरे लिए और मुसीबत खड़ी करना चाहती है। उससे झूठ बोल दो और कह तो मैं उससे जल्दी मिलने आ रहा हूँ। जब तक एसपी का ट्रांसफर नहीं होता, मैं नहीं आ सकता। तब तक मुझे छुपे रहना होगा,’ सामन्त प्रताप फोन पर चिल्लाने लगा।

‘सामन्त भाई, अगर एसपी का ट्रान्सफर नहीं हुआ तो क्या होगा?’

‘अबे साले, संजयवा, शुभ-शुभ बोल।’

मुझे सामन्त प्रताप की आवाज़ में उसकी झुंझलाहट साफ दिख रही थी। वह निर्विवाद डॉन, किंगमेकर, अपनी ही धूमिल छाया बन गया था।

मुझे पता था कि हमने सामन्त प्रताप को शिकंजे में कस लिया है। वह कुछ नहीं कर सकता था। कम से कम तब तक तो नहीं जब तक वह पाकुड़ में छिपा था। जैसे निर्वासन में बैठे जनरल युद्ध नहीं जीत सकते। उनको सेना का नेतृत्व उसके सामने खड़े होकर करना पड़ता है।

मैं निराश हुआ कि सामन्त प्रताप ने अपना पता नहीं बताया। लेकिन अच्छी बात यह थी कि उसके मोबाइल की लोकेशन अभी भी स्थायी थी। वह वहाँ से हिला नहीं था। मुझे यकीन हो गया था कि अब केवल कुछ ही दिनों की बात थी।

बंगाल और झारखंड सीमाओं के नक्शे भी मुझे मिल गए थे। उनमें ज़्यादा विवरण तो नहीं दिया गया था, लेकिन सामन्त प्रताप की संभावित स्थिति निकालने के लिए वे काफी थे। ग्रिड का इस्तेमाल करके मैंने अनुमान लगाया कि छुपने का संभावित क्षेत्र लगभग दस वर्ग किलोमीटर से अधिक नहीं था। फिर भी इतने बड़े क्षेत्र में किसी को ढूँढ़ना मुश्किल था। लेकिन मैंने सकारात्मक पहलू को देखा—मैं सफल धावा बोलने लायक दूरी पर तो था ही।

दूसरे कमरे से मैंने आवाज़ सुनी, ‘रिंगा रिंगा रोजेज, पाकिट फूल ऑफ पोजेज, हश्शा, बुस्सा।’ तानू दहशत में अवि को ‘रिंगा रिंगा रोज़ेज़’ नामक नर्सरी के गीत सुनाते हुए सुन

‘हे भगवान! ये कैसा उच्चारण सीख लिया है तुमने?’ तानू बोली।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘तुम इतना क्यों घबरा रही हो? इतना क्यूट लग रहा है,’ मैंने कहा।

‘चलो भी! आप क्या यह चाहते हैं कि वो शब्दों को गलत-सलत बोलना सीखे?’

‘तो फिर तुम क्या करोगी?’

‘मैं इसको घर पर ही पढ़ा दूँगी, और मुझे आपसे किसी मदद की उम्मीद नहीं है।’

‘तानू, यह तो गलत है। तुम यह क्यों मान लेती हो कि मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं करूँगा? बस यही है कि आजकल मैं कुछ ज़्यादा ही व्यस्त चल रहा हूँ।’

‘रहने दीजिए! व्यस्त? पूरे दिन सीएनबीसी पर स्टॉक मार्केट को कौन देखता रहता है? और किसने *रैम्बो* और *जेम्स बॉन्ड* की फिल्में अनगिनत बार देखी हैं?’

‘अरे, वो ऐक्शन फिल्में तो मेरा उत्साह बढ़ाने के काम आती हैं। मेरे काम के लिए यह बहुत ज़रूरी है।’

‘मेरे प्यारे बिहारी जेम्स बॉन्ड, आपके मिशन में आपकी मदद के लिए कोई सुंदर लड़की नहीं मिलने वाली है। सिवाय एक ऐसी औरत के जिसके पेट पर स्ट्रेच मार्क्स और सी-सेक्शन के कारण टांकें लगे हों।’

मैं बनावटी हँसी हँसते हुए बोला, ‘तानू तुम्हें पता है कि उस दिन मैं बस मज़ाक कर रहा था। मुझे माफ कर दो। अब मुझे हर बार बुरा मत महसूस कराया करो।’

‘डियर हबी, मैं तो भूल ही गई थी! आपके पास तो वो ब्यूटी कुमारी भी है,’ तानू ने ताना मारा। वह बेतहाशा हँसते-हँसते पलंग पर लोटने लगी।

अवि के बिहारी उच्चारण पर मुझे कोई आश्चर्य नहीं था। स्थानीय बोलचाल के कुछ शब्द और लहज़ा सीख लेना उसके लिए स्वाभाविक था। मेरे अन्य बैचमेट्स, जिनकी पोस्टिंग देश के अलग-अलग कोनों में हो गई थी, उनके बच्चों के साथ भी ऐसा ही होता था।

यह तो भारत की संस्कृति और विविधता की सुंदरता है कि एक राज्य से दूसरे में जाते ही भाषा व बोली बदल जाती हैं। एक ही राज्य में कुछ सौ किलोमीटर चलने पर कई शब्दों का उच्चारण एकदम बदल जाता है।

मेरे कई बैचमेट्स – जो दक्षिण भारत से थे और उनको हिन्दी का एक अक्षर भी नहीं आता था – ने जल्द ही भाषा सीख ली थी और अब वे काफी धाराप्रवाह ढंग से हिन्दी बोल लेते हैं। उनकी शब्दावली उन लोगों से भी बेहतर हो गई है जो सारी उम्र उस भाषा को बोलते आए हैं। कुछ ने तो हिन्दी के बोलचाल के चुनिंदा शब्द और मुहावरे भी सीख लिए थे, जो उनके उच्चारण में और भी मज़ेदार लगते थे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

सामन्त प्रताप उस रात बड़े ही रोमान्टिक और कुछ कमोत्तेजित मूड में लग रहा था। उसने संजय को शांति देवी से बात करवाने को कहा।

'क्या हाल है, मेरी जान? मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है। काश मैं तुम्हें अपनी बाहों में भरकर सारी रात प्यार कर सकता।'

'क्या? मुझे कुछ सुनाई नहीं दे रहा। इतना शोर है। यह आपके पीछे से क्या आवाज़ें आ रही हैं?' शांति देवी ने पूछा।

'ओह! ये इस कमबख़्त ट्रकों के हॉर्न का शोर है। इनकी वजह से मैं सारी रात नहीं सो पाता,' सामन्त प्रताप झुँझलाते हुए बोला।

मुझे ट्रकों के कानफोड़ू हॉर्न और उनसे निकलती वो खास तरह की आवाज़ें साफ सुनाई दे रही थीं। सामन्त प्रताप पक्का किसी मुख्य सड़क या हाईवे के पास रह रहा था।

मेरे दिमाग के घोड़े दौड़ते रहे, जबकि सामन्त प्रताप और शांति देवी अपनी रसिक बातें करते रहे।

जैसे ही कॉल खत्म हुई, मैंने रंजन का नंबर मिलाया। 'तुमने मुझे वह जगह बताई थी न जहाँ एयरटेल और बीएसएनएल के टावर ओवरलैप करते हैं।'

'हाँ सर, सामन्त प्रताप उस क्षेत्र में ही कहीं होगा। पर कैसे ढूँढ़ें उसे? वहाँ तो उस दायरे में सैकड़ों घर होंगे।'

'रंजन, पिछले कुछ दिनों से उसकी कॉलें सुनने से मुझे इतना पक्का तो है कि या तो वह हाइवे या फिर किसी व्यस्त सड़क के आस-पास रह रहा है। जो क्षेत्र हमने चिह्नित किया है, उसमें कुछ ही हाईवे या सड़कें होंगी। मुझे कल दोपहर तक उन सारी सड़कों और हाईवे के बारे में बताना जहाँ से भारी वाहन गुज़रते हों। यह भी बताना कि क्या वहाँ रिहाइशी इलाके भी हैं क्या?'

मैंने अंदाज़ा लगाया कि रिहाइशी इलाके तो ज़्यादा नहीं होंगे। लोग हाईवे से दूर ही रहना पसंद करते हैं क्योंकि ट्रकों और बसों का शोर कोई नहीं सुनना चाहता और वहाँ रहना सुरक्षित भी नहीं होता।

मुझे अच्छे से पता था कि हमारे लक्ष्य का दायरा और कम होने वाला था।

'सर, हमारे ज़ोन में केवल एक ही हाईवे है, जो पाकुड़ से आसनसोल जाता है,' अगले दिन रंजन ने कहा।

'आगे बोलो,' मैं ध्यान से सुन रहा था।

'और, अच्छी बात तो यह है कि एनएच की एक ओर कुछ ही मकान हैं। दूसरी तरफ केवल दुकानें और व्यापारिक संस्थान हैं।'

मुझे पता था सितारे मेरे पक्ष में थे। उस दिन सुबह एयरटेल नेटवर्क का अचानक बैठ जाना, शांति देवी के सामन्त प्रताप के साथ अवैध संबंध, एनएच पर हॉर्न का शोर – ये

Downloaded from www.The-Gyan.in

सभी बहुत सुंदर संकेत थे, जो मुझे मेरी मंज़िल तक पहुँचाने वाले थे।

मैं सामन्त प्रताप के छिपने के सटीक स्थान के बहुत पास पहुँच गया था। बस मुझे उसके इलाके का पता लगाना था। मुझे एक अनोखा विचार आया। लेकिन पता नहीं क्यों, मुझे विश्वास था कि मैं सफल होने वाला था।

मैंने अपना फोन उठाया औरअपनी ज़िंदगी की सबसे अजीब कॉल मिलाई। मैंने सामन्त प्रताप का एयरटेल नंबर मिलाया।

'हैल्लो, विजय भाई बोल रहे हो?' मैंने ठेठ बिहारी लहज़े में बोला। हैरानी की बात यह थी कि मैं एकदम शाँत था।

पर शायद सामन्त प्रताप की धड़कन रुक गई होगी। सैकड़ों मील दूर भी मैं उसके तनाव को महसूस कर पा रहा था।

'हेलो, हेलो, कौन बोल रहा है?'

मैं चुप रहा।

'हेलो, हेलो' सामन्त प्रताप अब हताश हो रहा था।

'हाँ, सामन्त भाई, आपको हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बारे में कुछ बताना था,' मैंने पूरे आत्मविश्वास के साथ बोला।

'क्या पता है तुम्हें? तुम हो कौन, साला?'

'मुझे ठीक से सुनाई नहीं दे रहा। लगता है नेटवर्क की प्रॉब्लेम है। फिर कॉल करता हूँ।'

मैंने फोन काट दिया, और अपने बिहारी लहज़े से बड़ा खुश हुआ। मेरी योजना थी तो बहुत साहसी, पर मुझे मालूम था कि मेरी कॉल का सामंत पर क्या असर पड़ेगा। वही जो मैं चाहता था।

~

सामन्त प्रताप के पसीने छूट रहे थे। 'कौन कॉल करेगा मुझे? संजय के अलावा किसी के पास यह नंबर नहीं है। और हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के बारे में कौन जान सकता है?'

उसके दिमाग में हर प्रकार के प्रश्न उठ रहे थे और जवाब किसी का नहीं पता था! उसने तुरंत संजय को कॉल किया।

'संजय, कुत्ते, कमीने! तूने मेरा नंबर किसको दे दिया? धोखेबाज़!'

'भैया, ज़ुबान संभालकर बात कीजिए। मैं आपके साथ बड़ा हुआ हूँ। आपको पता है, मैं आपके लिए जान भी दे सकता हूँ। और आप मुझ पर शक कर रहे हैं? किस लिए? कम

Downloaded from www.The-Gyan.in

सामन्त प्रताप के गैंग का सदस्य नहीं था, फिर भी संजय उसका बहुत वफादार था। वह उन कुछेक लोगों में से एक था जो सामन्त प्रताप से बहस कर सकते थे।

सामन्त प्रताप ने विस्तार से संजय को कॉल के बारे में बताया और उसने जवाब दिया, 'सामन्त भैया, मैंने आपका नंबर किसी को नहीं दिया है। मैं क्यों दूँगा किसी को? मैं अपनी जान दे दूंगा आपकी सुरक्षा के लिए।'

'मुझे माफ कर दे, संजयवा। पर यह नया नंबर और किसके पास हो सकता है?'

'उसे फिर से कॉल करने दीजिए। कोई शुभचिंतक भी तो हो सकता है। क्या पता, वो हमें हमसे गद्दारी करने वाले के बारे में ही बता दे।'

'हम्म, वो तो ठीक है। पर उसको ये नंबर कैसे मिला? क्या हम पता कर सकते हैं कि किसने मुझे फोन किया?'

'भैया हम कोई पुलिस थोड़ी है।'

सामन्त प्रताप अपने छोटे-से घर के चक्कर लगाता रहा। समय कैसे बदल गया था! कहाँ वह पूर्ण अधिकार से अपने चेलों के साथ सड़कों पर घूमा करता था। उसकी शानदार एसयूवी कारें नवादा और आसपास के इलाकों की गड्ढों-भरी सड़कों पर राज करती थीं। सामन्त प्रताप को अपना साम्राज्य, अपना जीवन वापस चाहिए था।'

~

मैंने सामन्त प्रताप और संजय के बीच बातचीत के मज़े उठाए। जिस नंबर से मैंने सामन्त प्रताप को कॉल किया था, उस पर सामन्त प्रताप ने कुछेक बार कॉल किया, लेकिन मैंने जान-बूझकर फोन नहीं उठाया। सामन्त प्रताप को धीरे-धीरे चूर-चूर करने में मुझे बहुत अजीब सा सुख मिल रहा था।

कॉल खत्म होने के बाद, मैंने ऐश को फर्श पर बैठे देखा। अब वह पूरे घर में घुटनों पर चलने लगी थी। उसे अपने सामने बड़ा होता देखना मुझे बहुत सुख देता था। अवि के बचपन में मैं काफी ज़्यादा व्यस्त रहता था। उस समय मैं ज़्यादा बड़े ज़िले को संभाल रहा था। ज़ाहिर है कि, मैं घर पर अधिक समय नहीं बिता पाता था। दरअसल अपने दोनों ही बच्चों के जन्म के समय मैं तानू के पास नहीं था।

क्योंकि शेखपुरा में मेरे पास अपराधी सामन्त प्रताप का पीछा करने के अलावा लगभग और कोई काम नहीं था, इसलिए मैं घर पर ज़्यादा समय बिता पाता था। वैसे भी सामन्त प्रताप की बातचीत सुनने के लिए मेरा घर पर रहना ज़्यादा ठीक था। तानू मेरी मौजूदगी से काफी खुश रहती थी, इसके बावजूद कि मैं एक बहुत आलसी पिता था। मुझे

मेरे लिए पोज़ करना बहुत पसंद था। उसकी किलकारियाँ मुझे बहुत खुशी देती थीं। मेरी

Downloaded from www.The-Gyan.in

परिवार की अहमियत को पहचानने में मदद करने के लिए मैंने सामन्त प्रताप को धन्यवाद दिया, और यह भी कि पोस्टिंग वगैरह का कोई महत्त्व नहीं है।

उस दिन मुझे आई जी एमए हुसैन का कॉल आया। 'अमित, कैसा चल रहा है?' उन्होंने पूछा।

'सर, मुझे पूरा यकीन है कि सामन्त प्रताप जल्द ही हमारे हाथ आ जाएगा। मेरा बस एक ही निवेदन है कि जब सामन्त प्रताप पकड़ लिया जाए, तो आप रंजन को फिर बहाल कर दें' मैंने उन्हें दोबारा याद दिलाया।

'ज़रूर, अमित, कर देंगे,' उन्होंने अपने आधिकारिक स्वर में कहा। इस बार उनकी आवाज़ में कोई हिचकिचाहट नहीं थी।

~

मैंने रंजन को फोन किया और कहा, 'रंजन, आज दोपहर में ठीक से सो लो। रात बहुत लंबी होने वाली है।'

'जी, सर,' रंजन ने उत्तर दिया। यह पहली बार था कि मैं उसे सो लेने दे रहा था।

फिर मैंने एयरटेल ऑफिस फोन किया।

'क्या मैं जीएम साहब से बात कर सकता हूँ? मैं शेखपुरा का एसपी बोल रहा हूँ।'

'हाँ, सर, बताएँ कि आपके लिए क्या कर सकते हैं?' जीएम ने विनम्र अंदाज़ में पूछा।

'हम एक बहुत ही खतरनाक अपराधी की कॉलें पिछले पंद्रह दिनों से सुन रहे हैं। हमें आपकी बहुत मदद मिली है।'

'यह तो हमारा सौभाग्य है, सर,' जीएम ने उत्तर दिया।

'धन्यवाद। लेकिन मुझे अभी आपसे एक अर्जेंट सहायता चाहिए। मैं पहले से 965498**43 नंबर पर खुद नज़र रखे हुए हूँ। क्या मेरा एक और सहकर्मी भी इस नंबर को सुन सकता है? उसी समय, अपने मोबाइल पर?'

जीएम ने थोड़ी देर सोचा।

'जी हाँ, सर, यह संभव है।'

'तो कृपया जल्द से जल्द इसे शुरू करा दीजिए।'

एयरटेल के जीएम को मेरी आवाज़ से मेरी बेचैनी महसूस हो गई थी।

'मैं बस यह जानता हूँ कि अगर आप मेरी मदद कर दें, तो हम बिहार के सबसे बड़े अपराधी को पकड़ लेंगे।' दूसरी ओर अभी भी सन्नाटा था। 'जीएम साहब, आपको हमेशा गर्व होगा कि आपने सामन्त प्रताप को पकड़ने में हमारी मदद की।'

जीएम ने चौंकते हुए पूछा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘हाँ, अब आप समझ पा रहे हैं न कि आपकी मदद हमारे लिए कितनी ज़रूरी है?’ मैंने जीएम पर भावनात्मक दबाव बनाने की पूरी कोशिश की थी।

‘ठीक है, सर।’

‘मैं आपको उस अफसर का नंबर भेज रहा हूँ,’ मैंने कहा—मैं अपनी खुशी छिपा नहीं पा रहा था।

मैंने रंजन को फिर फोन किया, ‘रंजन, मैंने तुम्हारे नंबर पर भी सामन्त प्रताप की कॉल सुनने की सुविधा ले ली है।’

‘सच में, सर?’

रंजन थोड़ा हैरान लग रहा था। ‘रंजन, आज राष्ट्रीय राजमार्ग पर उन सड़क से लगे घरों के पास गाड़ी चलाना है।’

‘ठीक है, सर,’ रंजन बोला, बिना यह समझे कि मेरा क्या इरादा था।

‘जब तुम उस रिहायशी इलाके में पहुँचने वाले हो, तो एक तय हिसाब से लगातार हॉर्न बजाना। मैं सामन्त प्रताप को उसके फोन पर उसी समय कॉल करूँगा,’ रंजन को अपने कानों पर यकीन नहीं हो रहा था। क्या मैं होश में था? कोई भी अपने होशो-हवास में ऐसी योजना नहीं बना सकता था।

‘मैंने कल सामन्त प्रताप को कॉल किया था,’ रंजन बिलकुल चौंक गया। क्या मैं सच कह रहा था?

मैंने उसे पिछले दिन सामन्त प्रताप से हुई बातचीत के बारे में बताया।

‘जब मैं उसे कॉल करूँगा, तुम अपने फोन पर उस बातचीत को सुन सकोगे। तुम अपना हॉर्न तय हिसाब से ही बजाते रहना। जब तुम उसकी लोकेशन के पास पहुँच जाओगे, तो तुम्हें फोन पर भी अपने हॉर्न की आवाज़ सुनाई देगी, थोड़ी देर के बाद। तुम्हें समझ आ रहा है न?’

रंजन का सिर घूम गया। उसको लगा यह तो सीधे किसी हॉलीवुड थ्रिलर का सीन था। मैंने इस योजना की भौतिकी तो उसे नहीं समझाई, पर मुझे पता था कि जिस जगह रंजन को फोन पर भी उतनी ही ज़ोर से हॉर्न सुनाई देगा, जितनी ज़ोर से उसे कार में सुनाई दे रहा होगा, वह सामन्त प्रताप की लोकेशन के सबसे पास होगा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

38
‘जगह मिल गई’

एक घंटे बाद, रंजन राजमार्ग पर स्थित रिहायशी इलाके के पास पहुँचा।

‘सर, मैं तैयार हूँ।

राजू और कृष्णा भी रंजन के साथ बोलेरो में दुबके हुए बैठे थे।

‘ठीक है, रंजन, मैं अगले पाँच मिनट में सामन्त प्रताप को कॉल करूँगा। मैं कोशिश करूँगा कि उसे जितनी देर हो सके, उतनी देर बातों में उलझाए रखूँ। तुम लगातार हॉर्न बजाते रहना। जैसे ही हॉर्न की आवाज़ मोबाइल पर भी सुनाई देने लगे, धीरे चलना। एकदम उस जगह को याद कर लेना और फिर वहाँ से चुपचाप निकल जाना।’

मैंने रंजन को सब कुछ एक बार फिर समझाया।

मैंने लंबी साँस भरी और सामन्त प्रताप का नंबर मिलाया। सामन्त प्रताप की रिंगटोन मेरे कानों में बजी। साथ ही, रंजन का मोबाइल भी बजा। उसकी स्क्रीन पर सामन्त प्रताप का नंबर दिखाई दिया। रंजन ने पैरलेल लिसनिंग के लिए हरा बटन दबाया।

मैं और रंजन सैकड़ों किलोमीटर दूर होने के बावजूद भी एक-दूसरे की साँसों को महसूस कर पा रहे थे। मैंने सामन्त प्रताप के कॉल उठाने का इंतज़ार किया।

‘उठा, उठा फोन, भगवान के लिए, उठा ले।’

ऐसी परिस्थिति के लिए एक पुलिसवाले को कोई भी संस्थान, यहाँ तक कि मशहूर राष्ट्रीय पुलिस अकादमी भी तैयार नहीं कर सकती। देश भर में हज़ारों पुलिसवाले अपराधों को सुलझाने के लिए चाणक्य नीति के चारों उसूलों को अपनाते हैं—साम, दाम, दंड और भेद। उन्हें अपराधियों की तरह सोचना पड़ता है; यहाँ तक कि उन्हें अपराधियों से एक कदम आगे ही रहना पड़ता है। यही वजह है कि राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए), आसूचना ब्यूरो (आईबी), और रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) जैसी एजेंसियाँ हमारे देश की रक्षा सफलतापूर्वक कर पाती हैं।

काम करने जा रहा था।

मुझे उसी जानी-पहचानी कर्कश आवाज़ में जवाब ईनाम के तौर पर मिला।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘हैल्लो, कौन बोल रहे हो?’ सामन्त प्रताप ने चकराते हुए ऊँची आवाज़ में पूछा।

‘अरे सामन्त भैया, हम बोल रहे हैं। सुनिए, आपके गैंग में एक गद्दार है।’

मैं बढ़िया सधे हुए अंदाज़ में बोल रहा था। रंजन ने बाद में बताया कि उसे अपने शहरी एसपी साहिब को स्थानीय ढंग से, बिल्कुल अपराधियों की तरह बोल-बतियाते हुए सुनकर बड़ा मज़ा आया था। मेरे लहज़े से वह इतना प्रभावित हुआ कि कुछ क्षण के लिए हॉर्न बजाना ही भूल गया था।

‘मैं तुम्हें उस गद्दार की पहचान बता सकता हूँ।’

‘अरे, तो बोलो ना। इधर-उधर की बात क्यों कर रहे हो?’ सामन्त प्रताप अब झल्ला गया था।

‘सामन्त भैया, पुलिस आपको बेतहाशा ढूँढ़ रही है। आपके कई आदमियों को पुलिस ने खरीद लिया है, खास तौर पर लडुआ और गजापति को।’

‘लडुआ और गजापति? मैंने तो उन पर बहुत भरोसा किया है।’

सामन्त प्रताप अपने सबसे भरोसेमंद आदमियों का नाम सुनकर भौंचक्का रह गया।

‘रंजन, तुम हॉर्न क्यों नहीं बजा रहे हो?’ मैंने सोचा।

मुझे मालूम था, मैं बातचीत को ज़्यादा देर तक नहीं चला सकता था। मेरा लहज़ा कभी न कभी तो मुझे धोखा दे ही देता।

एकाएक हॉर्न की तीखी सी आवाज़ ऐसे बढ़िया क्रम में सुनाई दी, जैसे कि वह कोई सुरीला गाना हो।

‘भाई, आपकी आवाज़ नहीं आ रही। आपके पीछे से बहुत ज़ोर से कोई आवाज़ आ रही है,’ मैंने जान-बूझकर कहा।

‘हाँ, कोई बेवकूफ ज़ोर से हॉर्न बजा रहा है। मूर्ख कहीं का!’ सामन्त प्रताप पुरज़ोर आवाज़ में चिल्लाया।

रंजन उस जगह को ठीक से पहचानने के लिए लगातार हॉर्न बजाता रहा जहाँ सामन्त प्रताप छुपा हुआ था। एक खास क्षण पर रंजन यह जान गया कि वह सही जगह पहुँच गया था। उसके फोन में और बोलेरो के अंदर हॉर्न की आवाज़ लगभग बराबर आ रही थी। रंजन को असल हॉर्न बजने के कुछ पल बाद वापस फोन पर सुनाई दिया। यह अंतराल रेडियो तरंगों को डिजिटल ध्वनि को ले जाने में लगता है। हमारे बोले गए शब्द सुनने वाले को कुछ देर बाद अपने फोन पर सुनाई पड़ते हैं। इसी तरह, टीवी पर दिखने वाले लाइव दृश्य भी असल में कुछ पल पहले घटे होते हैं।

रंजन ने बाहर झाँका और उन घरों के ब्लॉक को याद कर लिया। वह अपने लक्ष्य के

उससे बातें कर रही थीं, उसे अपनी ओर बुला रही थीं। परन्तु वह ऐसे विचारों को नकार कर आगे निकल गया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘उसने फौरन मेरे दूसरे नंबर पर संदेश भेजा। सर, जगह मिल गई।’

मैंने उसका संदेश पढ़ा और मुस्कुराया।

‘अच्छा, सामन्त भाई, जैसे ही खबर मिलती है, बताता हूँ,’ मैंने कहा और अचानक फोन काट दिया।

सामन्त प्रताप दंग रह गया। यह कौन था जो उसे कॉल कर रहा था? और कॉल करने वाले के पास उसका नंबर कहाँ से आया? दूसरी ओर, मेरा रोमांच अपने चरम पर था। मैंने रंजन को फोन किया।

‘रंजन, मुझे उस जगह के बारे में बताओ।’

‘सर, वहाँ सड़क के किनारे कुछ सरकारी घरों के ब्लॉक हैं, जिनमें चार-चार अपार्टमेंट हैं—दो निचली मंजिल पर और दो पहली मंजिल पर। मातहतों के लिए जैसे होते हैं वैसे घर छोटे हैं।’

‘हाँ, बोलते जाओ,’ मैं कान खोलकर सुन रहा था।

‘सर, मैंने एकदम उस जगह को याद कर लिया है। उस इलाके में तीन से अधिक ब्लॉक नहीं हैं, और उनके बीच 10–15 फीट की दूरी होगी।’

मैंने उस इलाके की कल्पना की। वह किसी भी मुफ़स्सिल शहर के सरकारी आवासीय इलाके जैसा ही था।

‘सर, हम सामन्त प्रताप का पता कैसे लगाएँ? क्या मैं हरेक घर में जाकर देखूँ?’ रंजन ने पूछा।

‘और सामन्त प्रताप को सतर्क कर दो? रंजन, हम कोई भी जोखिम नहीं उठा सकते। हम कोई रास्ता निकालेंगे। हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी याद है ना? बस थोड़ा सब्र करो।’

मैं सामन्त प्रताप के इतने पास होकर भी इतना दूर था। मैं अपने अतिउत्साह में सही समय आने से पहले वार नहीं करना चाहता था। किसी गलत कदम के कारण यदि कोई अपराधी हाथ से निकल जाए, तो यह बड़ी हिम्मत तोड़ने वाली बात होती है। सामन्त प्रताप के मामले में तो मैं कोई भी गलती करने की गुंजाइश नहीं रखना चाहता था। सचमुच यह जीने और मरने का सवाल था। लेकिन न जाने कैसे, मुझे आभास था कि फिर एक बार ऊपर वाला मेरी मदद करने जा रहा था।

~

रंजन, राजू और कृष्णा महेशपुर के पाकुड़ में एक ख़स्ताहाल छोटे से होटल में रुके थे। मैंने उन्हें जानबूझकर वहीं छुपकर रहने को कहा था। सामन्त प्रताप, राजू और कृष्णा को

हमारे मकसद को नुकसान पहुँचा सकता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने आराम से काम लिया। मुझे लग रहा था कि शायद शांति देवी ही फिर मेरे लिए फ़रिश्ता बनकर आएगी। वह अकेली ही हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी का मुख्य कारण थी। वह फिर मुझे सामन्त प्रताप को पकड़वाने में सहायता करेगी।

'कितने दिनों से बात नहीं किया है,' अगले ही दिन शांति देवी ने सामन्त प्रताप को फोन करके शिकायत की।

'जान, मैं काम में लगा था,' सामन्त प्रताप ने प्यार से कहा।

'काम? कौन-सा काम? छिपकर के आप कौन सा काम कर रहे हैं?'

'चुप कर, बेवकूफ़ औरत।'

सामन्त प्रताप ने परेशान होकर फोन काट दिया। उसे पता था, शांति देवी सही कह रही थी। उसने सोचा कि उसने जो दिन नवादा जेल में बिताए थे, वे भी इससे बेहतर थे। जेल में इससे ज़्यादा आज़ादी थी। वह हमेशा अपने साथियों से घिरा रहता था। जेल स्टाफ भी उसकी नवाबों जैसी खातिरदारी करते थे। यहाँ वह एकदम अकेला था, हर समय चिंता में डूबा हुआ। वह खुद को बहुत कमजोर महसूस कर रहा था।

मैं बातचीत को ध्यान से सुन रहा था। मुझे पता था कि जल्द ही, कोई न कोई सुराग तो मिलेगा। आखिरकार, बातचीत के किसी छोटे-मोटे अंशों ने नहीं बल्कि पीछे से आ रही एक आवाज़ ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। सामन्त प्रताप के आस-पास कहीं लकड़ी का काम चल रहा था, या तो उसके या पड़ोस के घर में।

अगले दिन शांति देवी ने फिर फोन किया, 'क्या गुस्सा हो हमसे? आपको पता है ना हम आपको कितना प्यार करते हैं। प्लीज़ माफ कर दो।'

'हाँ, हाँ, ठीक है! पर तूने मेरा सारा मूड बिगाड़ दिया। भूल मत, मैं सामन्त प्रताप हूँ, सामन्त प्रताप, नवादा और शेखपुरा का राजा,' सामन्त प्रताप शांति देवी पर गरजा।

'अए हए मेरे राजा, आपकी रानी आपका इंतज़ार कर रही है।'

यह बेमतलब की, बेवकूफी भरी रोमांटिक बातें कुछ और देर चलती रहीं। अब मुझे ही इसका अंत करना होगा।

~

'रंजन, सामन्त प्रताप की लोकेशन के सबसे पास किसी बढ़ई की दुकान ढूँढ़ो। तुरंत,' मैंने रंजन को कहा।

'बढ़ई की दुकान? किसलिए, सर?'

'रंजन, सामन्त प्रताप या उसके आसपास के किसी घर में कहीं एक बढ़ई काम कर

Downloaded from www.The-Gyan.in

भी सुनाई दी थी,' रंजन समझ गया। हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी में अखबार वाला बहुत काम आया था। अब यह बढ़ई हमें सामन्त प्रताप तक पहुँचाने वाला था।

'इतनी छोटी जगह पर एक या दो बढ़ई ही होंगे। उससे पूछना कि वह कहाँ काम कर रहा है। यदि घर का पता न भी चले तो कम से कम ब्लॉक का पता ले आना।'

एक घंटे से भी कम समय में रंजन का कॉल आया।

'सर, मुझे घर और ब्लॉक पता चल गया। छापा मार दूँ? मेरे साथ राजू, कृष्णा और शिवनारायण हैं।'

'अभी कुछ मत करो। घर छोटे हैं और एक-दूसरे के बहुत पास हैं। क्या पता सामन्त प्रताप किस घर में है। शायद वह पहली मंजिल पर हो और बढ़ई नीचे काम कर रहा हो। हथौड़े की आवाज़ नीचे से ऊपर आराम से पहुँच सकती है। हम उसे तभी पकड़ेंगे जब हमें उसकी लोकेशन पक्की हो।'

'सर, समझ गया। आप बिलकुल ठीक कह रहे हैं।'

'जितना गुप्त रूप से हो सके, तुम वहाँ रहने वालों के बारे में पता करो।'

'ठीक है, सर।'

'और हाँ, राजू और कृष्णा को साथ मत ले जाना, वह उनको तुरंत पहचान जाएगा।'

'जी सर। कल सुबह सबसे पहले यही काम करूँगा।'

Downloaded from www.The-Gyan.in

39
‘आ गया हूँ छत पर’

मैं उस रात सोया नहीं। ऐसा तनाव के कारण नहीं, बल्कि रोमांच की वजह से हुआ। अपने मन में तो मैं अभी से अपनी जीत का जश्न मना रहा था।

सुबह 6:15 बजे मुझे रंजन का कॉल आया। वह बिल्कुल हताश हो चुका था।

‘सर, अनर्थ हो गया। सब कुछ खत्म हो गया,’ रंजन ने निराश होकर कहा।

‘क्यों. . . क्या हुआ?’ रंजन ने फोन कृष्णा को दे दिया। वह ख़ुद मुझसे बात करने से बहुत डरा हुआ था।

‘सर, राजू और मैं सुबह पास के ढाबे पर चाय पीने गए थे। जब हम अपनी बोलेरो की तरफ जा रहे थे तो हमने सामन्त प्रताप को सड़क की दूसरी तरफ चापाकल पर मुँह धोते हुए देखा।’

‘यह **!& चापाकल क्या होता है?’

‘सर, हैंडपम्प।’

‘तो?’

‘सर, लगता है सामन्त प्रताप ने राजू को देख लिया है।’

मैं घटनाओं के इस मोड़ से हक्का-बक्का, शब्दहीन हो गया था।

‘सर, सामन्त प्रताप मुँह पर पानी डाल रहा था। जैसे ही उसने ऊपर देखा, उसकी आँखें राजू से मिली। मुझे लगा जैसे सामन्त प्रताप की आँखें हमारा तब तक पीछा करती रहीं जब तक हम वहाँ से चले नहीं गए,’ कृष्णा बोला।

ये तो हमारी परियों की कहानी जैसे मिशन का एंटीक्लाइमैक्स सा हो गया था, एक बेहद दुखद अंत।

‘सर, मुझे अभी भी पक्का नहीं है कि सामन्त प्रताप ने राजू को पहचाना या नहीं। अब उसकी एक लंबी दाढ़ी है और उसने सिर पर गमछा लपेटा हुआ था,’ कृष्णा ने कहा।

‘अरे, तुमने उसको पकड़ा क्यों नहीं?’ मैंने सख्ती से कहा।

आ जाने की ज़रा भी उम्मीद नहीं थी,’ कृष्णा ने कहा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

मैंने अपने आपको संभाला। मेरा दिमाग़ तेज़ी से दौड़ रहा था। 'तुम सब उस ब्लॉक में जाकर जल्दी से अपनी-अपनी पोजिशन ले लो और रेडी होते ही मुझे फोन करो।'

गंवाने के लिए ज़रा भी समय नहीं था।

मैंने पाकुड़ डीएसपी का नंबर मिलाया। संयोग से उसने मेरे साथ झारखंड और बिहार के अलग होने से पहले के दिनों में काम किया था।

'हेलो, राजीव। मैं अमित लोढ़ा बोल रहा हूँ। याद है?'

'जय हिन्द, सर। बिल्कुल। कैसे हैं आप?'

'राजीव, मैंने शेखपुरा से एक पुलिस टीम भेजी है छोटी-मोटी वसूली वगैरह करने वाले एक बदमाश को पकड़ने के लिए। महेशपुर के एसएचओ को कहना कि वे तैयार रहें। अगर ज़रूरत पड़ी तो।'

'ज़रूर सर, मैं एसएचओ को तुरंत कह देता हूँ।'

यह आम बात थी। राजीव ने एसएचओ महेशपुर से कह दिया, और फिर अपने काम में मसरूफ़ हो गया।

दस मिनट बाद, रंजन का फोन आया।

'सर, हम तैयार हैं,' रंजन ने आत्मविश्वास से कहा।

'रंजन, राजू और कृष्णा को कहो कि वो ब्लॉक की इमारत से निकलने वाले रास्ते को रोककर खड़े हो जाएँ। शिव नारायण और तुम अपने हथियार तैयार रखो। मैंने स्थानीय पुलिस को आगाह कर दिया है, अगर तुम्हें ज़रूरत पड़े तो,' मैंने पूरे संयम से कहा।

'रंजन, सब अपने फोन सायलेंट मोड पर रखो और बिल्कुल चुप-चाप रहना। मैं सामन्त प्रताप को कॉल कर रहा हूँ।'

रंजन मान गया और उसने 'जी, सर' कहकर फोन रख दिया। वह इतना रोमांचित था कि ज़्यादा बोल नहीं सकता था।

मैंने सामन्त प्रताप का नंबर मिलाया। इस बार उसने एकदम उठा लिया, जैसे कि वह मेरी कॉल का इंतज़ार कर रहा हो।

'अबे, कुछ खबर है तो बताओ। गुस्सल में हूँ। नहीं तो तू जा भाड़ में,' सामन्त प्रताप ने गालियाँ देते हुए कहा।

'अरे भाई, पुलिस तुम्हें पकड़ने ही वाली है।'

'क्या? मुझे डरा रहा है क्या?' सामन्त प्रताप ने अपने बदन पर लाइफबॉय साबुन मलते हुए पूछा।

'हेलो, हेलो, मुझे सुनाई नहीं दे रहा, सामन्त भैया। लगता है वहाँ नेटवर्क की समस्या

'मैं तुझे सुन पा रहा हूँ। बोल!' सामन्त प्रताप गुर्राया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘हेलो, भैया। आप बाहर क्यों नहीं चले जाते? या छत पर ही चले जाओ, तो और भी बेहतर होगा। फिर मैं आपको अच्छी तरह सुन पाऊँगा। मुझे आपको पुलिस की योजना के बारे में कुछ बहुत ज़रूरी बताना है।’

‘जाता हूँ।’

सामन्त प्रताप ने तुरंत अपने घर का दरवाज़ा खोला और ब्लॉक की सीढ़ियों से छत की ओर जाने लगा।

इस बीच, मैंने अपने दूसरे फोन से रंजन को फोन किया।

‘रंजन, मेरे निर्देशों के लिए तैयार रहना,’ मैंने दबी आवाज़ में बोला।

‘सर, मैं आपकी सारी बातचीत सुन पा रहा हूँ,’ रंजन ने धीरे से कहा, वह अपना उत्साह छिपा नहीं पा रहा था।

मैं भूल गया था कि रंजन भी सामन्त प्रताप का नंबर ऑब्जर्व कर पा रहा था।

‘और भी अच्छा,’ मैंने सोचा।

‘हाँ, आ गया हूँ छत पर। अब सुनाई दे रहा है?’

‘काफी ठीक है, सामन्त भाई।’

‘अब!’ मैंने रंजन को निर्देश दिया।

रंजन पहले ही सीढ़ियाँ चढ़ने लगा था।

‘सर, येस सर,’ वह हाँफते हुए बोला, शिव नारायण, उसका वफादार बॉडीगार्ड, उसके बिल्कुल पीछे था।

रंजन छत पर पहुँचा और उसने दरवाज़ा खोल दिया। वहाँ कोई नहीं था। रंजन की धड़कनें थम गईं।

‘सर, दूसरी तरफ,’ शिव नारायण चिल्लाया।

रंजन ने बगल वाले घर के छत के दरवाज़े को लात मारकर खोला।

उसकी आँखों के बिल्कुल सामने था सामन्त प्रताप।

दोनों वहीं ठिठक गए।

सामन्त प्रताप, वह खतरनाक दरिन्दा जो सैकड़ों लोगों की क्रूरता से हत्या कर चुका था, वह आदमी जो पिछले पाँच सालों से पुलिस को चकमा देता रहा था; जो बिहार के चार जिलों में आतंक फैलाए हुए था, वह अब एकदम स्तब्ध रह गया था।

‘मैंने कहा था ना तुझे कि पुलिस पकड़ लेगी,’ मैंने अपना पूरा आधिकारिक रुतबा दिखाते हुए कहा। इस बार, अपनी ही रोबदार आवाज़ और लहज़े में।

सामन्त प्रताप फोन कान पर लगाए ही रह गया, उसके बदन से साबुन की बूंदें टपक

साथ यह क्या हो रहा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

40
‘सर, पकड़ लिया’

फिर, अचानक से, एक बिल्ली की तरह सामन्त प्रताप छत से कूदने के लिए भागा।

‘पागल हो गया है? क्या कर रहा है? तू बचकर नहीं निकल सकता,’ रंजन चिल्लाया।

सामन्त प्रताप गुर्राया। फिर वह रेलिंग को लांघकर पाइप के सहारे तेज़ी से नीचे जाने लगा। बिना एक पल गँवाए, रंजन भी उसके पीछे-पीछे उतर गया।

दोनों खतरनाक ढंग से पाइप से लटक गए। वे किसी तरह पहली मंजिल पर उतर आए थे।

‘राजू भाई! कृष्णा! पकड़ो इसे। जाने नहीं देना,’ राजू और कृष्णा को मदद के लिए पुकारते हुए शिव नारायण फिर से नीचे भागा।

इसी दौरान, रंजन का हाथ फिसल गया, राजू और कृष्णा घबराकर उसे देखने लगे।

सौभाग्य से, रंजन का पैर सामन्त प्रताप को जाकर लगा, जिससे उसकी भी पाईप से पकड़ छूट गई और वह रंजन के साथ लुढ़कता हुआ गिर पड़ा। दोनों ज़मीन पर गिरे—रंजन दर्द से कराह रहे सामन्त प्रताप के ऊपर था। गिरने से चोट केवल सामन्त प्रताप को ही लगी। फिर भी, पता नहीं कैसे, वह तुरंत उठ खड़ा हो गया। शायद पहली मंजिल से गिरने से उसे ज़्यादा चोट नहीं लगी थी।

सामन्त प्रताप की लुंगी खुल गई, जिससे क्षण-भर के लिए राजू और कृष्णा का ध्यान कुछ भटक गया, ठीक वैसे ही जैसे कि छिपकली की पूँछ शिकारी का ध्यान बंटा देती है।

‘ग्रेनेड तो नहीं है?’ शिव नारायण ने पूछा। ज़ाहिर है, उसकी लुंगी में कुछ भी नहीं था। एक कहानी फैल गई थी कि सामन्त प्रताप एक-दो ग्रेनेड अपनी लुँगी में रखता था। सामन्त प्रताप की ऐसी साख थी कि लोगों ने इस बात पर भरोसा भी कर लिया था।

सब कुछ बहुत जल्दी-जल्दी हो रहा था। राजू और कृष्णा ने उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन सामन्त प्रताप उनकी पकड़ से छूट गया। बिल्कुल एक चिकनी मछली की तरह। शायद उसके बदन पर जो साबुन लगा था, उससे उसको मदद मिली हो।

कर दिया और वह गिर पड़ा। इस बार यह घातक प्रहार शिव नारायण ने किया था। रंजन ने

Downloaded from www.The-Gyan.in

उसकी ओर सराहते हुए देखा। शिव ने बहुत मदद की थी। यह दूसरी बार हुआ था कि उसने किसी कुख्यात अपराधी को मार गिराया था—पहला हॉर्लिक्स था।

सामन्त प्रताप ने उसे ज़हर-भरी नज़रों से देखा।

रंजन ने सामन्त प्रताप के गाल पर ज़ोर से मुक्का मारा। यह गलत जगह थी। इससे रंजन के हाथ पर चोट आई, लेकिन वह फिर भी सामन्त प्रताप को एक और मुक्का मारने से चूका नहीं, इस बार सीधा उसकी ठोड़ी पर।

राजू और कृष्णा ने उसके हाथ एक पेटी से बाँध दिए और जल्दी से उसे बोलेरो में धकेल दिया। रंजन और शिव नारायण भी जल्दी से अंदर
बैठ गए।

यह सब करते ही रंजन ने मुझे फोन किया, 'सर, सर, पकड़ लिया, सर,' रंजन ने उत्साहित होकर कहा।

पिछले ढाई महीनों से मैं इस पल का इंतज़ार कर रहा था। मैं बिल्कुल शांत हो गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दूँ। मेरी कोई भावनाएँ नहीं थीं, बस शून्य था। अब मुझे पता चला कि जब कोई पर्वतारोही माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुँचता है तो उसे कैसा लगता है। उसके पास और कोई चोटी जीतने को नहीं रह जाती। वह बिल्कुल निचुड़ा हुआ महसूस करते हैं—शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से।

तानू कमरे में आई और फौरन इशारे करके पूछने लगी कि क्या हुआ। लगता है मेरी पत्नी के पास कोई छठी इंद्री है जिससे वह पता लगा लेती है कि उसके पति के मन में क्या चल रहा है।

मैंने केवल उसे 'थम्स अप' दिखा दिया। तानू ख़ुशी से उछलने लगी। वह मेरे लिए बहुत खुश थी। मैंने उसे गले लगा लिया।

अजीत एक कोने में खड़ा था। वह हमें हमारी निजी खुशी मनाने दे रहा था, लेकिन मुझे उसकी आँखों में आँसू भरते दिख रहे थे। मेरे परिवार के एक सदस्य की तरह ही वह भी बेहद वफादार था। मैंने उसकी पीठ थपथपाई।

मैंने कुमार सर को खबर देने के लिए फोन किया।

'बधाई हो, अमित, बहुत बढ़िया,' उन्होंने कहा, हमेशा की तरह कुछ ही शब्दों में। पर मुझे पता था कि उन्होंने मुझे कितना सहारा दिया था। तानू के अलावा, वे ही थे जिन्हें हमेशा से मुझपर भरोसा था। सबसे अहम तो यह था कि वे कभी मेरे काम में रुकावट नहीं डालते थे। न तो कोई टीका-टिप्पणी, न ही बिना मतलब के सवाल, और उन्होंने आज तक एक भी ऑर्डर जारी नहीं किया था। यह बहुत अनूठी बात है, क्योंकि कई ब्यूरोक्रैट चिट्ठि

गया।

फिर मैंने एमए हुसैन सर को फोन किया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘सर, हम सामन्त प्रताप को शायद अगले आधे घंटे में पकड़ने वाले हैं। मेरी आपसे विनती है कि आप रंजन का सस्पेंशन वापस ले लें। वह उस टीम को लीड कर रहा है जो सामन्त प्रताप को गिरफ्तार करेगी।’

पहली बार हुसैन सर दिल खोलकर हँसे।

‘ठीक है, अमित। मैं तुरंत ऑर्डर्स भेजता हूँ।’

हुसैन सर को इतना तजुर्बा तो था ही कि वे समझ जाएँ कि हमने पहले ही सामन्त प्रताप को पकड़ लिया था। उन्हें पता था कि मैं उनको सच नहीं बता रहा था, लेकिन उन्होंने इस बात का बुरा नहीं माना। दस मिनट बाद ऑर्डर मेरी फैक्स मशीन से निकल आया : ‘एस आई रंजन का निलंबन तुरंत प्रभाव से वापस लिया जाता है—आज्ञा से, आईजी भागलपुर।

~

आईजी सर ने अपनी बात रख ली थी। मैं रंजन के लिए बहुत खुश था। वह इसका और इससे भी कहीं अधिक पाने का पूरा हकदार था। उसने लगभग अकेले ही बिहार के दो सबसे खतरनाक अपराधियों, हॉर्लिक्स और सामन्त प्रताप, को पकड़ लिया था। न केवल रंजन ने दिमागी तत्परता दिखाई थी, बल्कि ऊँचे दर्जे की हिम्मत का भी परिचय दिया था। सामन्त प्रताप उन पुलिसवालों के परिवारों के पीछे पड़ जाता था, जो उसके खिलाफ होते थे, लेकिन फिर भी रंजन और शिव नारायण एक भी बार मिशन में भाग लेने से पीछे नहीं हटे।

आधे घंटे बाद, नाराज़ होकर रंजन ने फोन किया, ‘सर, सर, यह साला गाली दे रहा है। बहुत गुस्सा आ रहा है। क्या करूँ?’

रंजन बहुत परेशान हो रहा था। सामन्त प्रताप लगातार रंजन और बाकी सबको गालियाँ दिए जा रहा था। वह अपने पुराने ढर्रे पर लौट आया था। मैंने कुछ पल सोचा।

ऐकाएक मेरा सरकारी फोन बजा। कुमार सर थे।

‘अमित, उम्मीद है कि तुम सामन्त प्रताप को कोई नुकसान पहुँचाने की नहीं सोच रहे हो।’

सर को कैसे पता चला कि हमारे मन में क्या चल रहा था? उनको पूर्वाभास कैसे हुआ?

‘सर, बस क्षणिक विचार था,’ मैंने धीरे से कहा।

‘ऐसी कोई गलती मत करना। सामन्त प्रताप एक बहुत ही ताकतवर समुदाय से है और अभी भी उसके काफी समर्थक होंगे। वो दिन गए जब पुलिसवाले कुछ भी कर लेते थे,’

‘हाँ सर, मैं समझता हूँ।’

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘रंजन, डीआईजी साब ने साफ मना कर दिया है,’ मैंने रंजन को समझाया।

‘पर सर, वह मेरे परिवार, मेरी माँ और बहन के लिए गंदी-गंदी गालियाँ दिए जा रहा है।’

‘तो उसका मुँह बंद कर दो।’

~

अजीत पहले ही मिठाई लाने चला गया था।

‘सर, मैं कोठी में सारे पुलिसवालों और स्टाफ को मिठाई बाँटूँगा,’ अजीत बोला।

अजीत के उत्साह को देखकर और उसने जिस तरह मेरे ढाई कमरे के घर को ‘कोठी’ कहा था, उससे मैं बड़ा खुश था। ऐसी शान!

अपने मन में मैं अभी भी थोड़ा चिंतित था। सामन्त प्रताप बहुत खतरनाक था। अगर वह नवादा जेल से भाग सकता था, तो फिर वह रंजन की हिरासत से भी भाग सकता था।

मैं अपने छोटे-से आंगन में घूमता रहा।

हर मिनट एक घंटे के बराबर लग रहा था। बड़ा अजीब था। पिछले इतने दिनों से मैं शांत रहा था और अब, मैं एक और मिनट भी सब्र नहीं कर पा रहा था।

शाम को 6 बजे के आस-पास, रंजन की बोलेरो मेरे कम्पाउंड में दाखिल हुई। एक बड़ी-सी, प्यारी मुस्कान के साथ रंजन गाड़ी से उतरा। मैंने उसे गले लगा लिया।

रंजन ने राजू और कृष्णा को पहले ही मेरे घर से कुछ किलोमीटर दूर उतार दिया था। शिव नारायण पिछली सीट पर बैठा था, अपनी पूरी भरी हुई कारबाइन सामन्त प्रताप के माथे पर ताने हुए।

रंजन ने गाड़ी का दरवाज़ा खोला। एक थका-मांदा आदमी धीरे-धीरे बाहर निकला। आख़िरकार मैंने अपनी कहानी के खलनायक सामन्त प्रताप को अपने सामने इस बेबस हालत में देखा। मेरे मन में उसकी जो छवि इतने सालों में बनी थी, उसके बिल्कुल विपरीत वह बहुत पतला और कद में छोटा था।

रंजन ने उसके मुँह की पट्टी खोली।

‘एसपिया कहाँ है?’ सामन्त प्रताप हम सबकी ओर देखते हुए दहाड़ा। वह थक ज़रूर गया था, लेकिन उसने अभी भी हिम्मत नहीं हारी थी।

अब तक मेरे सारे हाउसगार्ड और स्टाफ इकट्ठा हो चुके थे। उनको यकीन नहीं हो रहा था कि वह कुख्यात सामन्त प्रताप उनके सामने खड़ा था।

‘हम हैं यहाँ के एसपी,’ मैंने अफ़सराना अंदाज़ में कहा।

डालने से, मैं बता सकता था कि उसके हिसाब से किसी जिले की पुलिस के अगुआ होने के

Downloaded from www.The-Gyan.in

लिए मेरी उम्र बहुत कम थी।

मेरी टी-शर्ट और निक्कर के पहनावे में मैं और भी छोटा लग रहा था। सामन्त प्रताप को यह बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था कि इतने छोटे, और (कम से कम उसकी राय में) अनुभवहीन व्यक्ति ने उसे अपनी चतुरता से मात दे दी थी। यही तो है आईपीएस की खूबी। सर्विस में शुरुआत से ही एक अफसर को अपनी टीम की अगुआई करना सिखाया जाता है। एक आईपीएस अफसर, औसतन सत्ताईस से अट्ठाईस साल की उम्र में, एक सीईओ के बराबर बन जाता है।

'कल हम यहाँ पर गर्दा छुड़ा देंगे। तुझे पता चल जाएगा शेखपुरा का राजा कौन है,' सामन्त प्रताप गुर्राया। ज़ाहिर था, वह दिलेर दिखने की कोशिश कर रहा था।

अजीत गुस्से में तमतमाता हुआ आगे बढ़ा।

'साले, औकात में रह,' उसने सामन्त प्रताप को थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया।

'अजीत, रुको।'

मेरा आदेश सुनकर अजीत रुक गया।

'जाकर मेरे बावर्ची, भीम सिंह को बुलाओ।'

सब एक-दूसरे को देखने लगे। अब मैं बावर्ची को क्यों बुला रहा था? कहीं मैं सामन्त प्रताप को लिट्टी-चोखा जैसे बिहारी व्यंजन तो नहीं खिलाने वाला था?

मेरा गोल-मटोल बावर्ची, भीम सिंह, बाहर आया।

'जी, हुज़ूर।'

मैंने सामन्त प्रताप की तरफ इशारा किया।

'इस आदमी को ज़ोर से धक्का मारो, जितनी ज़ोर से हो सके।'

भीम सिंह मेरा हुक्म सुनकर कुछ सकपकाया। आख़िर वह तो केवल एक बावर्ची था, चाहे वह अपने काम में कितना ही बुरा क्यों न हो। वह हैरत में पड़ गया कि इतने सिपाही खड़े हैं तो साहब उसे क्यों इस लुँगी पहने हुए दुबले-पतले आदमी को धक्का देने को कह रहे थे?

पर मुझे पता था भीम सिंह खुश था। उसे हमेशा से अपने वर्दी वाले साथियों जैसा बनना चाहता था। बेलन उसे शोभा नहीं देता था। उसकी चाहत थी कि वह अपने हाथों में राइफल पकड़े। आज उसे सख्त दिखने का मौका मिल रहा था। 'शायद कोई छोटा-मोटा अपराधी होगा,' उसने सोचा।

उसने सामन्त प्रताप को हल्के-से धकेला। सामन्त प्रताप गुर्राया, और उसने अपने गुटखे से सने भूरे दाँत फाड़े।

मैंने भीम को आदेश दिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

सबके सामने अपमानित होना भीम को अच्छा नहीं लगा। इस बार उसने अपना पूरा वज़न डाला और सामन्त प्रताप को ज़ोरदार धक्का दिया।

सामन्त प्रताप ज़मीन पर गिर पड़ा और बिना हिले-डुले लेटा रहा। मैं थोड़ा चिंतित हो गया। मैंने उसकी नब्ज़ देखी और अजीत को पानी लाने का इशारा किया।

भीम ने विजयी महसूस करते हुए आस-पास देखा।

सामन्त प्रताप पहले ही प्यासा और हारा-थका था। मैं नहीं चाहता था कि वह मेरे घर के कम्पाउंड में बेहोश हो जाए।

Downloaded from www.The-Gyan.in

41
'अपनी वर्दी पहनो'

अजीत ने सामन्त प्रताप के चेहरे पर थोड़ा पानी छिड़का। वह हम सबको गालियाँ देता हुआ उठा और फिर, एकाएक, बुरी तरह सुबकने लगा। आखिरकार उसको समझ आ गया कि उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। भीम सिंह के हाथों धकेले जाने से उसका भुरभुरा आत्मसम्मान पूरी तरह बिखर गया था।

डीएसपी सामन्त प्रताप को शहर के पुलिस थाने ले गए। मैंने डीजीपी सर को फोन मिलाया और उन्हें सामन्त प्रताप की गिरफ्तारी के बारे में बताया। वे खुश हुए और उन्होंने मुख्यमंत्री को यह खुशखबरी दी।

मैंने जाते हुए रंजन को रोका, और अंदर से आईजी द्वारा की गई उसकी बहाली के ऑर्डर वाला लिफाफा लाकर उसके हाथ पर रख दिया। रंजन ने विस्मित नजरों से मुझे देखा और उसे खोलकर पढ़ने लगा। रंजन की आँखों से आँसू बहने लगे!

'अपनी वर्दी पहनो, रंजन। तुम उसमें बहुत अच्छे लगते हो,' मैंने मुस्कुराते हुए कहा।

रंजन ने अपने आँसू पोंछे और मुझे सलामी दी। वह एक कोने में गया और अपनी पत्नी को फोन करने लगा।

~

रात को खाने में मेरी पसंद के गरमागरम कढ़ी–चावल थे। मैंने भीम सिंह को मेज़ पर बुलाया।

'क्या तुम्हें पता है, तुमने आज किसको धक्का दिया था?'

'जी, हुज़ूर। वह सामन्त प्रताप था। मुझे पहले नहीं पता था। काश मैं उसे पहचान लेता।'

'पता है, सामन्त प्रताप भी तुम्हारे बारे में पूछ रहा था। वह कह रहा था कि तुम्हें ऐसा सबक सिखाएगा जो तुम्हें जीवन-भर याद रहे।'

मुझसे ऐसी क्या गलती हो गई? आपने मुझे और मेरे परिवार को इस तरह खतरे में क्यों

Downloaded from www.The-Gyan.in

डाल दिया?' वह सिसकने लगा।

तानू ने उसे दिलासा दी, 'अरे मज़ाक कर रहे हैं।'

जब वह शांत हो गया और कमरे से बाहर चला गया, तो तानू ने मेरी ओर गुस्से से देखा और मुझे डांटते हुए कहा, 'उसे डराने की क्या ज़रूरत थी? और उसको धक्का देने के लिए क्यों कहा था?'

मैं चुप रहा। सामन्त प्रताप के मिथक को तोड़ना ज़रूरी था। लोगों को उसके डर के साए से मुक्त जो करना था।

मैं अपने कमरे में घुसा और मैंने उन दर्जनों मोबाइल फोनों की ओर देखा, जो पिछले कुछ महीनों से दिन-रात मेरे साथी रहे थे। मैंने उनको स्विच ऑफ किया और दराज़ में रख दिया।

~

अगले दिन, मैं सुबह प्रेस कांफ्रेंस के लिए दफ्तर पहुँचा।

'मैंने वादा किया था कि मैं स्वतंत्रता दिवस से पहले सामन्त प्रताप को पकड़ लूँगा। आज 13 अगस्त है।'

अजीत शेखपुरा और नवादा के भूतपूर्व डॉन सामन्त प्रताप को अंदर लाया। पल भर के लिए सन्नाटा छा गया। फिर अचानक तहलका सा मच गया।

फ्लैशलाइटें चमकने लगीं, और प्रेस अनियंत्रित हो गई। वह उस दिन राज्य की सबसे बड़ी खबर थी। मैं बस मुस्कुराता रहा और उनके सवालों के जवाब देता रहा। मैंने रंजन की भूमिका के बारे में कुछ नहीं कहा। उससे न केवल कुछ मुश्किल सवाल उठने लगते, बल्कि रंजन को नुकसान भी पहुंच सकता था।

एकाएक सामन्त प्रताप चिल्लाया, 'इन सत्ताधारियों ने मेरा फायदा उठाया है और मुझसे बेईमानी की है। इन्हें बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी।'

इससे पहले कि वह और कोई भेद खोलता, अजीत सामन्त प्रताप को वहाँ से ले गया। मुझे कुछ राहत मिली। मैं जानता था कि सामन्त प्रताप सही कह रहा था, पर मैं अभी उसकी चालों से प्रेस को भटकाना नहीं चाहता था। वह एक अपराधी था और किसी भी सहानुभूति के लायक नहीं था। मैं दफ्तर से बाहर निकला तो वहाँ खड़े लोगों ने तालियों से मेरा स्वागत किया। मेरे सभी अफसरों और जवानों के चेहरों पर हर्षोल्लास था।

'सर, वह महिला शांति देवी है,' हवलदार शिव नारायण ने धीरे से मेरे कान में फुसफुसाया।

थे।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘मैं आपको जितना धन्यवाद दूँ, कम है। आपने शेखपुरा पुलिस की एक बहुत बड़ी सेवा की है।’ मैं उसे दुविधा में छोड़कर चल दिया। मैंने शांति देवी को धन्यवाद करने का अपना वादा पूरा कर दिया था लेकिन उसे अंदाज़ा नहीं था कि किसलिए।

मैं घर जाने ही वाला था, जब राजेश चरण का फोन आया।

‘सर, सर। जल्दी से शेखपुरा चौक आइए। देखिए सामन्त प्रताप के साथ क्या हुआ है।’

मैं तुरंत चौक की ओर भागा और सामन्त प्रताप को देखकर चकित रह गया। उसके गले में चप्पल, जूतों की मालाएँ थीं। किसी ने उसकी आधी मूँछें और आधा सिर मूंड दिया था।

यह एकदम चौंका देने वाला दृश्य था। शेखपुरा की गलियों में सामन्त प्रताप को परेड किया जा रहा था। शेखपुरा के ख़ौफ, सामन्त प्रताप को देखने के लिए लोग एक-दूसरे को धक्के दे-देकर सड़कों पर जुट रहे थे।

कुछ देर तक यही करतब चलते रहे जब तक कि सबको घेरे में नहीं ले लिया गया। मैंने एस्कॉर्ट पार्टी को लताड़ा और इस मजमे का अंत किया। सामन्त प्रताप मुझे अपनी सुलगती नज़रों से देख रहा था। मुझे उनमें अपने लिए नफरत की आग भड़की दिखाई दे रही थी। मैंने सामन्त प्रताप को कुछ समझाने की कोशिश नहीं की, हालाँकि मुझे पता था कि इस तमाशे और अपने अपमान के लिए वह मुझे ज़िम्मेदार ठहरा रहा था। इसके बावजूद कि सामन्त प्रताप खुद एकदम ज़ालिम था, फिर भी उसकी व उसके मानवाधिकारों की हिफ़ाज़त करना ज़रूरी था।

सामन्त प्रताप को सुरक्षा की कई परतों के बीच जेल भेजा गया। मैंने शेखपुरा जेल के बाहर विशेष सुरक्षा बल लगा दिया, जिससे वह नवादा जेल जैसी कोई चाल दोहरा न पाए। बीएमपी और एसएपी के तीस-पैंतीस जवान गार्ड के रूप में तैनात कर दिए गए।

~

‘सर, उस दिन आप जिस छोटे-मोटे अपराधी की बात कर रहे थे, वो सामन्त प्रताप था क्या?

पाकुड़ के डीएसपी राजीव का फोन था।

‘हाँ,’ मैंने आराम से कहा।

‘सर, आप मुझे बता तो देते,’ राजीव काफी दुखी लग रहा था, ‘मेरे एसपी मुझसे खुश नहीं हैं। मुझे काफी डाँट सुननी पड़ी, सर।’

समय नहीं था,’ मैंने झूठ बोला।

Downloaded from www.The-Gyan.in

ज़ाहिर है कि राजीव को मैं सामन्त प्रताप के बारे में नहीं बता सकता था। हॉर्लिक्स की गिरफ्तारी के समय देवघर में जो बुरा अनुभव हुआ था, उससे मैंने अपनी सीख ले ली थी!

मेरा फोन अगले दो दिनों तक लगातार बजता रहा। पूरे बिहार से मुझे बधाइयाँ आ रही थीं। मुझे खुशी से अधिक राहत महसूस हो रही थी। आखिरकार काम निबट गया था। मैंने कुछ समय बाद अपने सारे निजी फोन बंद कर दिए। मैं कम से कम कुछ दिनों के लिए किसी भी फोन की घंटी नहीं सुनना चाहता था।

~

तानू मेरे लिए बहुत ज़्यादा खुश थी। आखिरकार अब मैं कुछ आराम कर सकता था। मैंने टीवी चलाया और 'क्रेज़ी किया रे' गाना ढूँढ़ने लगा।

'चुन, टीवी चैनलों में ढूँढ़ने की ज़रूरत नहीं है। आपकी हीरोइन तो आपके सामने खड़ी है।'

मैंने सिर उठा करके देखा। तानू एक छोटी-सी ड्रेस पहने हुए बहुत ही सुंदर लग रही थी।

'वाह!' मैंने सीटी बजाई।

वह अपने फिट अवतार में वापस आ गई थी। दरअसल, मेरा ही वज़न थोड़ा बढ़ गया था। पिछले दो महीनों में मैंने बहुत कम कसरत की थी।

'मैं फ्रिज में से चॉकलेट लेकर आता हूँ,' मैं किचन में जाने के लिए उठा।

जब मैं अपने कमरे में वापस आया तो मुझे बेहद ताज्जुब हुआ। भीम सिंह हमारे बेडरूम में खड़ा था। उसका मुँह खुला हुआ था, रसगुल्ला ठूँसने जितना बड़ा।

'भीम सिंह, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' मैं तमतमा गया था।

'हुज़ूर, डीएम साहब ने आपके लिए एक ज़रूरी संदेश भेजा था। बस वही देने आया था।'

'दरवाजा तो खटखटाना था न? मूर्ख कहीं का!'

'हुज़ूर, दरवाज़ा खुला था।'

'अब निकलो यहाँ से!' मैंने दरवाज़े की ओर इशारा किया।

भीम सिंह एक बार फिर मुड़कर देखने के बाद जल्दी से बाहर चला गया।

तानू ने मेरी ओर देखा और हँसने लगी।

'तुम दरवाज़ा बंद नहीं कर सकती थीं?' मैंने पूछा।

'अरे, मुझे क्या पता था कि कोई बेडरूम में घुस आएगा?'

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अरे हीरो, शेखपुरा के जेम्स बॉन्ड। क्यों नाराज़ हो रहे हो? आप भी तो हीरोइनों को घूरते रहते हो।’

‘तानू यह कोई फिल्म नहीं है, और तुम एसपी की बीवी हो।’

‘अरे, इतने ओल्ड-फैशन्ड मत बनिए।’

तानू फिर हँसने लगी। अब मैं भी अपनी हँसी नहीं रोक पा रहा था।

‘साला भीम सिंह!’

~

शेखपुरा की आफ़त रहा शख़्स अब सलाखों के पीछे था। पर अभी भी कुछ काम बाकी थे। मैंने राजेश चरण को अपने ऑफिस बुलाया।

‘जय हिंद, सर।’

‘राजेश, आस्तीन के साँप। तुम डिपार्टमेंट के नाम पर कलंक हो। तुम जैसे लोगों की वजह से ही ईमानदार पुलिसवालों का नाम खराब होता है,’ मैंने गुस्से से उबलते हुए उसे कहा।

‘सर, सर. . . लेकिन मैंने क्या किया?’ राजेश ने पत्ते की तरह काँपते हुए पूछा।

‘क्या तुम्हें नहीं पता तुमने क्या किया?’

मैंने उसके फोन की कॉल डिटेल्स का प्रिंटआउट उसकी ओर फेंककर पूछा।

‘अगर मेरा बस चलता तो मैं सबके सामने तुम्हारा भेद खोल देता। तुम्हें तुरंत सस्पेंड किया जाता है और मैं यह पक्का करूँगा कि तुम्हें डिसमिस किया जाए।’

राजेश एकदम पीला पड़ गया, ‘सर माफ कर दो। ग़लती हो गई,’ वह सुबकने लगा।

‘मैं अपना आपा खो दूँ, उससे पहले तुम निकल जाओ यहाँ से। निकलो बाहर, तुरंत!’

अजीत ने राजेश को बाहर जाने का इशारा किया।

‘और यह वर्दी उतार दो। तुम इसके लायक नहीं हो।’

तभी रंजन मेरे ऑफिस में घुसा—वह अपनी पुलिस वर्दी में जंच रहा था। उसका चेहरा बड़ी-सी मुस्कान से खिला हुआ था। मुझे उस पर गर्व महसूस हुआ था।

‘रंजन, तुमने समाज की बहुत बड़ी सेवा की है। लेकिन अब हमें सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स को सज़ा भी दिलानी है। उनके खिलाफ़ जितने पेंडिंग मामले हैं, सब निकाल कर लाओ।’

‘सर, यह कहना आसान है, पर करना बहुत कठिन है। उन दोनों के विरुद्ध दर्जनों मामले हैं। पर गवाही कौन देगा? उनके सामने कोर्ट में कौन खड़ा होगा?’

काम करना पड़ेगा। इसलिए कुमार सर, मैं, नालंदा के एसपी और नवादा के एसपी ने एक

Downloaded from www.The-Gyan.in

बैठक की। चारों ने तय किया कि विजय के खिलाफ़ किस मामले के आधार पर मुकदमा आगे बढ़ाना चाहिए। काफी सोच-विचार के बाद हमने तय किया कि नवादा जेल तोड़ने वाला केस सबसे सही था, क्योंकि उसके गवाह खुद पुलिसवाले ही थे और वे किसी भी आम आदमी के बनिस्बत अधिक आसानी से कोर्ट में गवाही दे सकते थे। आखिरकार, हमें इन खतरनाक मुजरिमों को जेल की सलाखों के पीछे भेजने का उपाय मिल ही गया था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

42
'सारेगामा'

मैं अपनी ट्रेनिंग के दिनों में काफी चुस्त-दुरुस्त हुआ करता था। मुझे स्पोर्ट्स बहुत पसंद थे, खासकर स्क्वॉश। गठिया के कारण शरीर में अकड़न होने से और सामन्त प्रताप को पकड़ने की जुनूनी व्यस्तता के कारण कुछ महीनों से मैं बिल्कुल कसरत नहीं कर पा रहा था। मेरी बाहर लटकती हुई कमर मेरे गुरूर के लिए काफी नुकसानदेह थी। मुझे फिर से फिट होना था। लेकिन बदकिस्मती से, शहर में न तो कोई जिम था और न ही खेल की सुविधाएँ थीं।

मैंने डीएसपी सर से पूछा 'क्या शेखपुरा में कोई टेनिस या बेडमिंटन कोर्ट है?'

'सर, आपको तो यहाँ की हालत पता ही है। यहाँ तक कि गया और मुज़फ्फरपुर जैसे बड़े-बड़े शहरों में भी खेल सुविधाएँ नहीं हैं। पटना के क्लब्स में तो टेनिस कोर्ट में शादी की अनुमति तक दे दी जाती है। हमारे देश में स्पोर्ट्स की परवाह किसे है?'

वह ठीक कह रहे थे, पर फिर भी मैंने उन्हें मेरे लिए कोई भी खेल खेल सकने वाली जगह ढूँढ़कर देने को कहा।

शाम को डीएसपी मुझे एक छोटे-से क्लब में ले गए और बड़ी शान से वहाँ एक टेबल टेनिस की मेज़ दिखाने लगे।

'सर, टेनिस तो नहीं मिला पर यहाँ आप टेबल टेनिस खेल सकते हैं।'

टेबल टेनिस की मेज़ की दो ही टाँगें थीं—बाकी दो गायब थीं। किसी ने ईंटें लगाकर मेज़ टिका रखी थी।

मुझे काफी निराशा हुई। मुझे टेबल टेनिस खेलने में कभी कोई दिलचस्पी नहीं थी और वह भी बैसाखियों पर खड़ी एक मेज़ पर।

~

उसी दिन, बाद में, मुझे एक कॉल आया, 'बॉस, मैंने सुना है आप स्पोर्ट्स खेलना शुरू

Downloaded from www.The-Gyan.in

यह श्रीकांत था, शेखपुरा का मिलनसार डीएम। नालंदा के दिनों में उसने एसडीओ के पद पर मेरे साथ काम किया था।

'कहाँ खेलने की सोच रहे हो? इस पूरे शहर में तो कोई कोर्ट है ही नहीं,' मैंने पूछा।

'अरे सर, हम एफसीआई के गोदाम में खेल लेंगे। मैं किसी को बोलकर नेट और निशान लगवा दूँगा। कल शाम को मिलते हैं।'

मैं बहुत खुश था। तानू, श्रीकांत और मैंने रोज़ शाम को खेलना शुरू कर दिया। कुछ ही समय बाद, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट और कुछ और अफसर भी हमारे साथ खेलने आने लगे। अब हमारे पास अपना कोर्ट था। तो क्या अगर सीमेंट की सतह ऊँची-नीची थी, उसके पीले बल्ब टिमटिमा रहते थे और हर तरफ चूहे अनाज की बोरियों में से कुछ खाते रहते थे?

यह हमारा अपना सीरी फोर्ट स्टेडियम था!

~

ज़िंदगी धीरे-धीरे चलती रही। मैंने वे सारी फिल्में देख डालीं जो मैं पिछले कुछ महीनों में ही नहीं बल्कि पिछले कुछ सालों में नहीं देख पाया था।

मैंने अपने अंदर के किशोर कुमार को भी उभारने की सोची और एक संगीत शिक्षक से सीखना शुरू किया।

वे अपने हारमोनियम को लेकर घर आए। 'सर, गाइए। सा, रे, गा, मा गाइए,' उन्होंने मुझसे आग्रह किया।

मुझे थोड़े समय सुनने के बाद, उन संगीत शिक्षक को समझ आ गया कि मुझमें संगीत की कोई प्रतिभा नहीं है। मेरे बेसुरे शोर को और न सहन कर पाने पर अपने गुस्से को उन्होंने अपने हारमोनियम पर निकाल दिया था।

'ओह सर! शायद हारमोनियम खराब हो गया है। मुझे इसे ठीक कराने के लिए कुछ दिन दीजिए।'

मुझे अब भी लगता है कि उन्होंने मेरी थर्ड डिग्री यातना से बचने के लिए अपने हारमोनियम को जान-बूझकर खराब कर दिया था।

~

हफ्ते भर बाद, सरकार ने सामन्त प्रताप को गया की जेल में भेज दिया। हॉर्लिक्स को भागलपुर की जेल में भेज दिया गया। यह सही फैसला था—शेखपुरा जेल के पास उन

सुरक्षा बल नहीं था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

इस बीच, मैं अब अपने परिवार पर पूरा ध्यान दे सकता था। ऐश्वर्या सारे घर में घुटनों के बल चलने लगी थी और मैं भी घुटनों पर उसका पीछा करता रहता था। अवि अपनी पढ़ाई में अच्छा कर रहा था और इससे तानू भी ख़ुश थी।

'चुन, मेरे हिसाब से अब हमें ऐश को चलना सिखाना चाहिए।'

'तानू, हो जाएगा। वो चल लेगी। जल्दी क्या है?'

'आप हर चीज़ से बचते रहते हो। जब अवि बड़ा हो रहा था, तब भी आपने यही किया था। दोनों बच्चों की पॉटी ट्रेनिंग में आपने मेरी मदद नहीं की थी।'

'यार, तुम हमेशा शिकायत करती रहती हो। ये मेरे काम थोड़े ही है। मैं तो अपराधियों को पकड़ने में लगा रहता हूँ,' मैंने जवाब दिया। वैसे भी, मैं इन कामों में माहिर नहीं था।

'मिस्टर, आप और जगह "साहिब" होंगे, लेकिन घर पर नहीं। यह मत उम्मीद कीजिए कि क्योंकि मैं औरत हूँ, मुझे ही बच्चों के सब काम करने हैं।'

हमेशा की तरह, मुझे मालूम था कि वह ठीक कह रही थी। तो हमने अपनी मेज़ के चारों ओर ऐश को चलाना शुरू किया, मैं उसके पीछे-पीछे उसे सहारा देते हुए चलता रहता जिससे, कहीं उसका संतुलन न बिगड़ जाए। बड़ा मज़ा आया।

मेरे सुखद जीवन को एडीजी (इंटेलिजेंस) के फोन ने बीच में ही रोक दिया।

'अमित, तुम्हारे लिए एक बुरी खबर है,' एडीजी का स्वर बहुत गंभीर था।

मैं सोचने लगा कि ऐसा क्या हुआ होगा। पिछले तीन महीनों में जो कुछ भी बुरा हो सकता था, हो चुका था। बड़े दिनों बाद, मेरा जीवन आखिरकार पटरी पर आया था।

'अमित, सामन्त प्रताप तुम पर निशाना साध रहा है। अच्छा बताओ, क्या तुम रोज़ बेडमिंटन खेलने जाते हो?'

'हाँ, सर, जाता हूँ।'

'तो फिर बंद कर दो। हमें गया की जेल के अपने सूत्रों से पुख्ता खबर मिली है। सामन्त प्रताप ने अपने आदमियों को तुम पर बेडमिंटन कोर्ट में हमला करने के लिए कहा है। वहाँ तुम आसानी से निशाना बन जाओगे।'

'धन्यवाद, सर। मैं ध्यान रखूँगा।'

मैंने फोन रखा और सोचने लगा।

एडीजी एकदम सही कह रहे थे। मेरी तयशुदा दिनचर्या और एफसीआई का पूरी तरह असुरक्षित गोदाम किसी के लिए मुझपर घेरकर हमला करने के लिए आसान जगह थी। बेडमिंटन कोर्ट पर तो मैं आराम से उनका शिकार बन सकता था।

मैंने तय किया कि मैं कुछ समय के लिए खेलना बंद कर दूँगा। कुछ दिन तो मैं घर पर

केवल मुझे तकलीफ हो रही थी, बल्कि यह मेरे लिए एक चुनौती बन गई थी। मैं जिले का

Downloaded from www.The-Gyan.in

एसपी था, मैं कायर की तरह नहीं जी सकता था। अगर लोगों को पता चल जाए तो वे क्या सोचेंगे? जब पुलिस ही छुपकर बैठी हो, तो आम आदमी का क्या होगा?

मैंने कुमार सर से गुज़ारिश करके मुंगेर पुलिस लाइन्स से अपने लिए बुलेट-प्रूफ जिप्सी मँगाई और पटना पुलिस मुख्यालय से एक एके-47 भी मंगवाकर रख ली। इसके अलावा, मेरे पास मेरी 9 एमएम ग्लोक पिस्टल तो थी ही, पर आमने-सामने की लड़ाई के लिए एके-47 सबसे अधिक कारगर होती है। मैंने अपने घर के चारों ओर स्पेशल टास्क फोर्स के प्रशिक्षित कमांडो और एसएपी के जवान लगाकर सुरक्षा बढ़ा दी। फिर भी मेरा घर काफी असुरक्षित था। यह शेखपुरा के एक कोने में पड़ता था और आस-पास लगभग कोई आबादी भी नहीं थी। बिजली भी काफी समय गुल ही रहती थी। इसलिए मैंने जेनरेटर के लिए अतिरिक्त डीज़ल रखना शुरू कर दिया। इन सबके अलावा, अतिरिक्त सुरक्षा के लिहाज़ से मैंने इनवर्टर भी ले लिया, जिससे आपात स्थिति में भी घर में रोशनी रहे।

कुछ दिन बाद, मैंने देखा कि एक बोलेरो गाड़ी रोज़ रात मेरे घर के आस-पास चक्कर काटती थी, जैसे कि कोई हमारे घर की पैमाइश कर रहा हो। बच्चे आंगन में खेलते थे—शेखपुरा में उनके पास मनोरंजन के लिए बस वही था। मैंने सोचा कि मेरे घर पर देशी बम फेंककर बच्चों को नुकसान पहुँचाना किसी के लिए भी बहुत आसान था। ये सब खयाल मेरे मन में घूमते रहते थे। रात को एके-47 सिराहने रखकर सो पाना मुश्किल था।

~

डीएम बड़े हैरान हुए—मेरे बेडमिंटन रैकेट्स के साथ एक एके-47 रखी थी।

'बॉस, ये क्या है?'

'अरे, कुछ नहीं, यार'

'तो आप यह बंदूक लेकर कोर्ट पर क्या कर रहे हैं? गलती से चल गई तो?'

'श्रीकांत, चिंता मत करो। एके-47 या कोई भी पिस्तौल तब तक नहीं चलेगी जब तक उसका सेफ़्टी कैच नीचे हो।

'एके-47! यह एके-47 है!' सीजेएम भी गन को देखते हुए डीएम और एसडीएम के साथ बोले।

'सर, आप हमें डरा रहे हैं। सब कुछ ठीक तो है न?'

'हाँ। आइए, खेलते हैं।'

किसी को भी खेलने में मज़ा नहीं आ रहा था। न तो कोई ध्यान लगा पा रहा था और न ही किसी में जोश था। लग रहा था जैसे मेरे बेडमिंटन किट के पास एक एके-47 रखी

Downloaded from www.The-Gyan.in

अगले दिन मैं एफसीआई गोदाम के पास खड़ा इंतज़ार करता रहा, लेकिन कोई भी खिलाड़ी नहीं आए। मैंने डीएम को कॉल करने के लिए अपना फोन उठाया।

'हुज़ूर, कोई फायदा नहीं है,' मेरे ड्राइवर ने कहा। मैंने फोन एक तरफ रखा और उसे देखने लगा।

'हुज़ूर कल डीएम साहब बहुत चिंतित हो गए। जब वे बाहर आए तो उन्होंने चारों ओर तैनात सिपाही देखे, जो शूट करने के लिए तैयार बैठे थे। बुलेटप्रूफ जिप्सी देखकर तो वे बिल्कुल ही सकपका गए,' मेरे ड्राइवर ने हल्के से मुस्कुराते हुए कहा।

लेकिन डीएम और बाकी अफसरों को यह कोई मज़ाक की बात नहीं लगी। और इस तरह, मेरे बेडमिंटन चैंपियन बनने का सपना अधूरा रह गया। उसके बजाय फिर मैंने ख़ुद को फिट रखने के लिए घर पर ही मार्शल आर्ट्स का प्रशिक्षण शुरू कर दिया।

~

वापस दफ्तर की बात करें तो एक दिन मेरे दफ्तर में मानवाधिकार संगठन का पत्र आया।

सेवा में,
एसपी, शेखपुरा
विषय : अभियुक्त विचाराधीन कैदी के मानवाधिकारों का हनन
आपको सूचित किया जाता है कि हेल्पिंग हैंड्स संगठन कथित सामन्त प्रताप के संदर्भ में घटी हाल ही की घटना का संज्ञान ले रहा है।
आपको शुक्रवार तक अधो हस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में अपना जवाब देने के लिए निर्देशित किया जाता है।
भवदीय,
एसडी
मेम्बर सेक्रेट्री
हेल्पिंग हैंड्स संगठन

ज़ाहिर था, मैं बहुत नाराज़ हुआ। पहली बात तो यह थी कि सामन्त प्रताप कोई 'कथित सामन्त प्रताप' नहीं था। वह बिहार का सबसे भयानक अपराधी था। मुझे बिल्कुल समझ नहीं आ रहा था कि यह संगठन उसके मानवाधिकारों की इतनी चिंता क्यों कर रहा था। और दूसरी बात यह थी कि मैंने अकेले कोई गलत काम नहीं किया था। मैंने ही तो उस दिन सामन्त प्रताप का सार्वजनिक तिरस्कार रोका था! और अब मुझे ईनाम में गुलदस्तों की

Downloaded from www.The-Gyan.in

डीएसपी यश शर्मा बहुत ही परिपक्व अफसर थे, जो एजेंसियों और संगठनों की कार्यशैली से परिचित थे।

'सर, चिंता मत कीजिए। आपको कुछ नहीं होगा।'

'आपने चिट्ठी पढ़ी है? मुझसे मेरी कार्रवाई के लिए जवाब माँगा जा रहा है,' मैंने कहा —मैं अपना दर्द छिपा नहीं पा रहा था।

'सर, आपका जवाब मैं तैयार कर दूँगा।'

'फिर भी, मैं उन्हें क्या जवाब दूँगा? उस घटना को मैं कैसे समझाऊँगा?'

'आप कहना कि उसे जूतों की माला शेखपुरा की जनता ने पहनाई थी। और यही सच है। हमारे पास गवाह हैं। और यहाँ तक कि जो पुलिस पार्टी सामन्त प्रताप के पहरे पर थी, उसे उसी दिन निलंबित कर दिया गया था। मुझे पता था कि इस घटना की बात बढ़ सकती थी और सामन्त प्रताप आपको तंग करने की पूरी कोशिश करेगा। वैधानिक और अन्य तरीकों से।'

मैंने मुस्कुराकर शर्मा का धन्यवाद किया। पुलिस विभाग में ऐसे कई वफादार और अनुभवी साथी हैं जो आपको मुसीबत से निकाल लेते हैं।

मुझे बाद में मालूम हुआ कि संगठन में मेरे और शेखपुरा पुलिस के खिलाफ़ कई सारी शिकायतें आई थीं। सभी शिकायतें सामन्त प्रताप के आदमियों की ओर से की गई थीं। पर यह तो सामन्त प्रताप का मेरे खिलाफ़ एक षड्यंत्र था।

मुझे पता था कि सामन्त प्रताप को जल्द से जल्द दोषी सिद्ध करना और सज़ा दिलाने की ज़रूरत थी। मैंने नवादा के जिला न्यायाधीश से सुनवाई को प्राथमिकता देकर शुरू करने का निवेदन किया। हमने अपने सारे गवाह जुटाए और सारे सबूत इकट्ठे कर लिए।

~

नवादा के फास्ट-ट्रैक कोर्ट में मुकदमा हुआ। इन 'फास्ट-ट्रैक' कोर्ट की फटाफट फैसले लेने की कार्यशैली की वजह से ही बिहार में आपराधिक घटनाएँ कम हो पाई हैं। नवादा के एसपी हर रोज़ सुनवाई के लिए पर्याप्त बीएमपी और एसएपी स्टाफ के साथ जाते थे, यह पक्का करने के लिए कि सब सुचारु रूप से चले। सामन्त प्रताप को रोज़ विशेष एंटी-लैण्डमाइन गाड़ी में लाया जाता था, जिससे न तो उसके दुश्मन उस पर हमला कर सकें और न ही उसके साथी उसे छुड़ाने का दुस्साहस कर सकें।

जो सबूत हमने जुटाए थे, उनसे यह तय हो गया था कि सामन्त प्रताप के खिलाफ़ केस पक्का था। हमने ये तथ्य इस्तेमाल किया कि 2001 में उसके जेल तोड़कर भाग जाने के

वह जेल से ज़बरदस्ती निकल गया था। यह ऐसा ही था जैसे स्कूल बंक करने वाले छात्र को

Downloaded from www.The-Gyan.in

शिक्षक गैर हाज़िर बताता है। इसके अलावा, उन जेल कर्मचारियों और गार्ड की पोस्टमॉर्टम व घावों की रिपोर्टें भी सबूत के तौर पर इस्तेमाल की गई थीं, जो उसके जेलतोड़ की कोशिश में मारे गए और घायल हुए थे। कोर्ट का फ़ैसला ऐतिहासिक था, जिसमें सामन्त प्रताप को आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई थी। हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। यह फ़ैसला पूरे पुलिस विभाग की कड़ी मेहनत का शानदार नतीजा था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

43
अवि पर हमला

कुछ महीनों बाद मेरा तबादला बेगूसराय हो गया। यह वही सुंदर जगह थी जहाँ मैं तब एसपी बनना चाहता था जब मैं अपने दोस्त राजेश भूषण की जगह पर वहाँ का काम सम्भाल रहा था। समय कितना बदल चुका था। तानू सबसे खुश थी। बच्चे बड़े हो रहे थे। ऐश्वर्या ने दालें और हरी सब्जियाँ बिना नखरे किए खानी शुरू कर दी थीं। और अवि ने आईओसी कैम्पस के डीएवी स्कूल में जाना शुरू कर दिया था। हमने भी फिर से एक असली कोर्ट पर रोज़ बेडमिंटन खेलना शुरू कर दिया था। आईआईटी के मेरे एक प्यारे बैचमेट हंसराज वहाँ के डीएम थे। जीवन इससे बेहतर नहीं हो सकता था। या ऐसा हम सोच रहे थे।

एक दिन तानू, डीएम की पत्नी, मोना के साथ आईओसी के वार्षिक चैरिटी समारोह में बैठी थी।

'मैडम, मैडम, जल्दी आइए। जल्दी!' एक घबराया हुआ हवलदार आकर बोला।

'क्या हुआ? बताओ मुझे!'

तानू को लग गया था कि कोई बड़ा हादसा हो गया था।

'हम पर हमला हुआ है!'

'क्या? तुम्हारे साथ कौन-कौन था?'

'सर और अवि भैया।' हवलदार ने कहा और रोने लगा।

तानू अपने घुटनों पर गिर पड़ी, ख़ुद को संभाल नहीं पा रही थी।

'दोनों ठीक हैं, मेमसाहिब। चंडी माता ने बचा लिया।'

तानू बेगूसराय चौक की ओर भागी, जहाँ पुलिस भरी हुई थी। डीएसपी पंकज और कोतवाली एसएचओ संजीव उससे मिलने के लिए आगे आए।

'मैडम, आपका बेटा सुरक्षित है।'

उसने उनको अनदेखा किया। उसकी आँखें अवि और मुझे तलाश रही थीं। भीड़ समुद्र

बिहार का एक महत्वपूर्ण त्योहार था। उसकी आँखें इधर-उधर देखती रहीं और फिर

Downloaded from www.The-Gyan.in

एकदम रुक गईं। उसने अजीत को एक दुकान के अंदर देखा—जिसने अवि को हर खतरे से बचाए रखने के लिए बाहों में ले रखा था।

अवि मज़े से हँसता हुआ अपनी पसंदीदा आम वाली आइसक्रीम चाट रहा था।

तानू उनकी तरफ बढ़ने लगी और सहज ही फिर तेज़ चलने लगी।

अवि ने उसको देखा तो उसकी बाहों में कूद पड़ा। तानू ने उसको ज़ोर से जकड़ लिया।

'साहिब कहाँ हैं? कैसे हैं?' आसुँओं से रुँध रहे गले से उसने पूछा था।

'आ रहे हैं, सर। मैंने अभी उनके साथ के एक गार्ड से पूछा है,' अजीत ने जवाब दिया। 'मैडम, भैया घर पर बोर हो रहे थे। तो साहिब ने मुझे कहा कि मैं उन्हें बाज़ार में घुमाकर ले आऊँ। हमने सोचा अवि बाबू को मेले में मज़ा आएगा, वह दुर्गाजी की इतनी मूर्तियाँ भी देख लेंगे।'

अजीत के माथे की चोट को जाँचते हुए वह चुप रही। सौभाग्य से, चोट गहरी नहीं थी।

'हम जिप्सी से उतर गए क्योंकि बाज़ार में बहुत भीड़ थी। मैंने गार्ड को हमारे चारों तरफ निगरानी रखने को कहा। फिर भैया ने आइसक्रीम माँगी,' अजीत साँस लेने के लिए रुका। 'एकदम से सर ने दो संदिग्ध आदमियों को हमारी ओर आते देखा। उनके हाथ उनकी जेबों में थे। सर ने भाँप लिया कि कुछ गड़बड़ थी। अचानक, वे उन पर चिल्लाए। वे दोनों रुक गए और तुरंत पीछे मुड़ गए। सर उनके पीछे भागे, जो उन्होंने गलत किया। उनके पास कोई हथियार भी नहीं था, क्योंकि सर को तो हथियार रखने की कोई ज़रूरत नहीं थी जब हम इतने सारे लोग उनके साथ थे। पहले तो हमें समझ नहीं आया कि उनके पीछे भागें या अवि बाबू के साथ रहें। सर को अकेले उन बदमाशों के साथ तो नहीं छोड़ सकते थे। मैंने गार्ड्स को सर की सहायता करने के लिए भेज दिया। हवलदार और मैं भैया के साथ रह गए,' अजीत ने कहा।

'हम सर का इंतज़ार कर रहे थे। अचानक, मैंने देखा कि दो बदमाश हमारी तरफ भागते आ रहे थे। मैं अपनी पिस्टल निकालता, उसके पहले ही एक बदमाश ने हमारी ओर एक देशी बम फेंका।'

तानू ने तुरंत कल्पना की कि किस तरह अजीत ने अपने आप को अवि के इर्द-गिर्द लपेट लिया होगा, जिससे कि बम का पूरा असर उसी तक रह जाए। वह बेहद भाग्यशाली रहा था। बम बनाने वाले ने शायद बारूद सही मात्रा में नहीं डाला था। बम फूट तो गया, लेकिन छर्रे बहुत तेज़ी से नहीं उड़ पाए और इसलिए कोई घातक नुकसान नहीं हुआ।

हवलदार भी घबरा गया था, पर उसने अपनी पोजीशन लेकर हवा में शॉट चला दिए। बदमाश समझ गए कि वे चूक गए थे और फिर भाग निकले।

'मैं ठीक हूँ, तानू' मैंने कहा और जो उसकी तरफ देखकर मुस्कुराया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

तो जैसे बाँध ही टूट गया और तानू अपने आँसू रोक नहीं पाई। हमने एक-दूसरे को गले लगाया, और हम दोनों के बीच में अवि अपनी बहती हुई आइसक्रीम को पकड़े रहने की कोशिश करता रहा। मुझे न तो इससे ज़्यादा राहत कभी मिली थी, और न ही खुशी। चाहे मैंने अपने बच्चे को कभी एबीसी नहीं सिखाए हों, लेकिन दुनिया के किसी भी दूसरे पिता की ही तरह मैं उनको अपनी जान से ज़्यादा प्यार करता था।

मैंने अजीत को देखा। उसके माथे पर लगी चोट से खून बह रहा था और उसकी कमीज़ तार-तार हो गई थी।

'तुम ठीक हो? तुम्हें तुरंत डॉक्टर के पास ले जाने की ज़रूरत है।'

'सर, मैं ठीक हूँ।'

'मुझे बताओ कि हुआ क्या था?' तानू ने पूछा।

उसे यह पूछने की कोई ज़रूरत नहीं थी कि यह किसका किया-धरा था। सामन्त प्रताप।

'साहिब ने एक हमलावर को लगभग पकड़ ही लिया था, जब उन्होंने लंगड़ाना शुरू कर दिया। हमें लगा उनका पैर मुड़ गया है,' एक गार्ड ने कहा, जो मेरे पीछे आया था।

'हमने अपराधियों को पकड़ने की कोशिश की, पर वो पहले ही हमसे काफी आगे थे और फिर वो अंधेरे में ओझल हो गए।' दूसरे कॉन्स्टेबल ने कहा।

तानू तुरंत समझ गई। मुझे मेरे एंकिलूसिंग स्पोंडिलाइटिस का दौरा पड़ा होगा। उसने मेरी ओर गुस्से से देखा, 'क्या ज़रूरत थी बहादुरी दिखाने की? अगर हमलावरों ने गोली चला दी होती तो क्या होता?' मैंने उसे थामने की कोशिश की, पर उसने अपना हाथ छुड़ा लिया।

~

हम अजीत को डॉक्टर के पास सदर अस्पताल ले गए। 'सर, ये आदमी बहुत किस्मत वाला है। अगर चोटें गंभीर होतीं या ज़्यादा खून बह जाता, तो हम ज़्यादा कुछ नहीं कर पाते।'

डॉक्टर सही कह रहा था।

मैंने तानू का चेहरा देखा। उसके गालों पर आँसू सूख गए थे।

'चुन, कुछ तो करिए, प्लीज़। मुझसे वादा कीजिए कि हमारे बच्चों पर कोई मुसीबत नहीं आएगी। कभी भी।'

'हाँ, मैं वादा करता हूँ,' मैंने उसके हाथ पकड़कर कहा।

अगले दिन, मेरे वरिष्ठ साथियों और शुभचिंतकों की कॉलों का सिलसिला चलता रहा।

Downloaded from www.The-Gyan.in

उस दिन सुबह, मेरी टेबल पर स्पेशल ब्रांच की एक रिपोर्ट पड़ी थी। रात के हमले के संदर्भ में मुझे मेरे परिवार के लिए सतर्क होने की बात कही गई थी। मैं उसे पढ़कर मुस्कुराया। क्या लाभ हुआ इस 'चेतावनी' का। ऐसा स्पेशल ब्राँच के फील्ड यूनिट्स के साथ होता रहता है। फील्ड यूनिट में अक्सर स्टाफ और उपकरणों की कमी रहती है। अधिकतर समय यूनिट इंचार्ज, एक जूनियर अफसर, किसी घटना के बाद उसकी रिपोर्ट बनाता है, और वह भी ज़िला पुलिस से जानकारी लेने के बाद। विडम्बना यह है कि स्पेशल ब्राँच का काम जिसके लिए उसे बनाया गया है उससे ठीक उलट होता है—उनको तो घटना से पहले जिले की पुलिस को जानकारी देनी होती है।

मैंने रिपोर्ट एक तरफ रख दी। मुझे उम्मीद थी कि आगे किसी ऐसी 'चेतावनी' का सामना नहीं करना पड़ेगा। पर स्थिति इतनी जल्दी शांत नहीं होने वाली थी।

Downloaded from www.The-Gyan.in

44
एमएलए पर हमला

26 अगस्त 2012

कृष्णा बहुत व्यस्त व्यक्ति था। वह पूरे जिले में एक के बाद एक कार्यक्रम में भाषण देने जाता रहता था। वह कुछ दिन पहले स्वर्ग सिधारे किसी गाँव वाले की स्मृति में दिए गए एक 'ब्रह्मभोज' से लौट रहा था। शाम को उसे एक शादी में भी जाना था। लेकिन उसको कोई शिकायत नहीं थी। कभी वह केवल शेखपुरा का एक शस्त्र व्यापारी कृष्णा हुआ करता था और आज वह कुछ बन गया था। वह अपनी किस्मत के इस तरह पलटने पर बहुत खुश था।

गाड़ी उसके पैतृक गाँव मुरारपुर में दाखिल होने ही वाली थी। वह शादी में शानदार स्वागत की उम्मीद कर रहा था। आखिरकार, वह वहाँ का स्थानीय एमएलए जो था। वह इसी सब सोच में मगन था और उसका ड्राइवर अच्छी रफ्तार में गाड़ी आराम से चला रहा था। तभी पलक झपकते ही एक ज़ोरदार धमाका हुआ और दो बार पलटने से कार का ढाँचा बुरी तरह हिल गया। अगले ही पल, उसे महसूस हुआ कि जैसे उसके कान का पर्दा फट गया हो।

कृष्णा को सदमा लगा था, फिर भी वह किसी तरह कार से निकल आया। उसके ड्राइवर और बॉडीगार्ड बुरी तरह घायल हो गए थे। उसने अपनी कार और उसके नीचे बने बड़े-से गड्ढे को देखा। गाड़ी के अगले हिस्से के परखच्चे उड़ गये थे। घबराकर, उसने अपने आस-पास हमलावरों को ढूँढ़ा। किस्मत से, कुछ गाँव वाले उसकी मदद के लिए जल्दी से वहाँ आ गए थे।

'एमएलए साहब, आप ठीक तो हैं? आप ठीक तो हैं, कृष्णा भैया?' ग्रामीणों ने पूछा।

हमलावरों ने बम को जब ट्रिगर किया, उस समय गाड़ी बम से कुछ मीटर दूर थी। कोहरे की वजह से वे ठीक से उसकी दूरी का अनुमान नहीं लगा पाए। कृष्णा ने भगवान

गुस्ताखी नहीं कर सकता था। जेल में छह साल बिताने के बाद भी, सामन्त प्रताप पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

~

बाद में, जब वह दिल्ली के एम्स अस्पताल में स्वास्थ लाभ ले रहा था तब शेखपुरा पुलिस कृष्णा को उस हादसे की जाँच के बारे में बताने पहुँची। कृष्णा को मारने की साज़िश, बेशक, सामन्त प्रताप और उसके साथियों ने जेल में ही रची थी।

कृष्णा को कोई ताज्जुब नहीं हुआ। नक्सलियों के अलावा केवल सामन्त प्रताप ही लैंडमाइन बिछाना जानता था। पूरी योजना बहुत बारीकी से बनाई गई थी। असल धमाके से कुछ दिन पहले उसका पूर्वाभ्यास भी किया गया था। मौके पर मिली बैटरी से अपराधियों का सुराग मिला। एक ऐसा ही यंत्र और बैटरी नवादा के थालपोस गाँव के खेतों में उपयोग की गई थी। बेल पर अब छूट चुके छोटू सम्राट ने यह योजना बनाई थी।

कृष्णा को निर्णय लेना था। उसे पूर्व एमपी केशो सिंह की हत्या याद थी। उसे पता था कि हर बार किस्मत उसे नहीं बचा सकती थी। सामन्त प्रताप फिर से कृष्णा के पीछे पड़ जाएगा।

पटना पहुँचकर उसने तुरंत राजू को फोन किया। देर रात हो चुकी थी, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

आधे घंटे में ही राजू उसके बरामदे में पहुँच गया।

'राजू, मैं साफ बताता हूँ। हम जानते हैं कि सामन्त प्रताप ही इस हमले के पीछे था। उसने कुछ समय पहले एसपी लोढ़ा साहिब पर भी हमला करवाया था। सामन्त प्रताप ने हमसे यह लड़ाई मोल ली है, जिसे अब हम खत्म करेंगे।

'कृष्णा भाई, क्या चाहते हो?' राजू ने पूछा।

कृष्णा ने गम्भीरता से उसकी आँखों में देखा।

'तुम्हें क्या लगता है?'

वे सारी रात बात करते रहे। उन्होंने अपनी योजना की हर बारीकी पर विचार किया। उन्हें भरोसा था कि यह खेल का अंतिम पड़ाव था। सामन्त प्रताप के कर्मों का यही फल था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

45
‘वही लड्डू हैं’

13 जून 2013

‘कैसन हो हॉर्लिक्स?’

सामन्त प्रताप इतने दिनों के बाद हॉर्लिक्स से मिलकर बड़ा ख़ुश था। उसने हॉर्लिक्स को गले लगाया और उसके चेहरे को चूमता रहा।

‘क्या बात है?’ सामन्त प्रताप ने हॉर्लिक्स की उदासीन प्रतिक्रिया देखकर थोड़ी फिक्र से पूछा था।

‘नहीं भैया, सब ठीक है। बस मुझे अपने बच्चों की याद आ रही है।’

‘हाँ, पर चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा। तुम्हें नवादा जेल तोड़ना याद है ना?’

सामन्त प्रताप ठहाके मार-मारकर हँसने लगा। उसने हॉर्लिक्स की ओर देखा, जो कुछ भी नहीं बोल रहा था।

सामन्त प्रताप और हॉर्लिक्स काफी समय के बाद मिल रहे थे। मुकदमे के दौरान उन्हें अलग-अलग रखा गया था, लेकिन सज़ा पूरी करने के लिए उन्हें नवादा जेल में साथ भेज दिया गया था। यह तो पूरी तरह आदर्श न्याय हुआ था।

हॉर्लिक्स के लिए यह सारा सिलसिला इसी जेल से शुरू हुआ था। एक समय उसकी इतनी खुशहाल पारिवारिक ज़िंदगी हुआ करती रही थी, पर सामन्त प्रताप ने सब कुछ बदल कर रख दिया था। वह एक ऐसा सीधा-साधा आदमी था, जो केवल अपने बच्चों के लिए उज्ज्वल भविष्य चाहता था। वह अपना सपना पूरा होते देखना चाहता था, चाहे उसे सारी उम्र कारागार की सलाखों के पीछे ही क्यों न काटनी पड़े।

~

‘क्या सोच रहा है?’ सामन्त प्रताप ने उसका कंधा थपथपाते हुए पूछा।

हॉर्लिक्स ने उदास होकर जवाब दिया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘अरे, तुझे तो खुश होना चाहिए। कौन था तू? एक मामूली सा आदमी। अब तू मेरा दाँया हाथ है। पूरा बिहार राज्य तुझसे डरता है।’

‘हाँ भाई, तुम सही कह रहे हो। लोग मुझे मासूम बच्चों के हत्यारे के नाम से जानते हैं।’

‘अबे, लगता है तू हिम्मत हार गया है। ये सज़ा, ये आजीवन कारावास—इनका कोई मतलब नहीं है। हम फिर से आज़ाद पंछी हो जाएँगे।’

हॉर्लिक्स हल्के से मुस्कुराया सामन्त प्रताप खिल उठा।

‘चल, अब खुश हो जा।’

‘जी, सामन्त प्रताप भैया। आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। मैं कैसे भूल सकता हूँ? आप तो राजा हैं, सम्राट हैं।’

‘यह हुई न बात,’ सामन्त प्रताप ने उसकी पीठ थपथपाई।

‘हाँ, हाँ, चलो जश्न मनाते हैं,’ जोश से भरकर हॉर्लिक्स बोला।

हॉर्लिक्स ने अपना टिफिन खोला और कुछ लड्डू निकाले।

‘खाओ भैया, ये आपकी पसंद के हैं।’

‘ओहो, मज़ा आ गया। कैसे लाया तू इनको?’

‘भैया, आपने ही तो कहा था, जेल में सब मिल जाता है। बस उसकी कीमत चुकानी पड़ती है।’

‘बिल्कुल, बिल्कुल।’

‘चलो बहुत बातें हो गईं। अब खाते हैं।’

‘यार हॉर्लिक्स, तूने मूड अच्छा कर दिया।’

‘तो फिर तो आप दो खाइए।’ हॉर्लिक्स ने लड्डू सामन्त प्रताप की ओर बढ़ाए।

‘बड़े स्वादिष्ट हैं। धन्यवाद भाई,’ सामन्त प्रताप खुशी से खाते-खाते बोला।

‘तो फिर लो आप एक और खाओ, एक मेरे हाथ से।’

‘कितना खिलाएगा?’

सामन्त प्रताप का मुँह लड्डुओं से भर गया। वह अजीब लग रहा था।

‘भाई, आपके लिए यह तो मेरा प्यार है।’

‘हाँ, हॉर्लिक्स, मैं जानता हूँ तू मुझसे कितना प्यार करता है।’

दोनों ज़ोर से हँसने लगे। बाकी कैदी भी मुस्कुराए, लेकिन दूर से ही। सामन्त प्रताप के पास आने की हिम्मत अभी भी किसी में नहीं थी।

कुछ ही मिनटों के बाद, सामन्त प्रताप रुक गया। उसे कुछ चक्कर आने लगे और वह अपने हाथ पैर नहीं हिला पा रहा था।

सामन्त प्रताप ख़ुद को घसीटकर हॉर्लिक्स के पास गया।

‘क्या मिलाया था लड्डू में? आस्तीन के साँप! कमीने!’

Downloaded from www.The-Gyan.in

वह लपका और उसने किसी तरह हॉर्लिक्स का गिरेबान पकड़ लिया, लेकिन उसकी पकड़ छूट गई और वह ज़मीन पर गिर पड़ा। कुछ देर वह इसी तरह बिना हिले पड़ा रहा। फिर अचानक, बुरी तरह खाँसने लगा। उसके थूक में मिले खून से उसकी कमीज़ सुर्ख लाल रंग गई।

हॉर्लिक्स सामन्त प्रताप के आस-पास खड़ा रहा और फिर उसकी आँखों में देखकर बोला।

'वो ही मिलाया था जो जेलब्रेक के टाइम में मिलाया था। पर इस बार खुराक थोड़ी ज्यादा थी।'

सामन्त प्रताप ने हॉर्लिक्स को घूरा और फिर बेजान हो गया।

Downloaded from www.The-Gyan.in

उपसंहार

कृष्णा अब शेखपुरा का माननीय एमएलए है। राजू अफानी गाँव का मुखिया है।

रंजन की भी तरक्की हो गई है, और वह इंस्पेक्टर बन गया है। अब उसकी पत्नी की तबियत भी बेहतर है। ज़ाहिर है, उसकी बीमारी में अपने पति के साथ रहने से ही बहुत सुधार आ गया।

कुमार सर बिहार पुलिस के एडीजी हैं।

मेरा बॉडी गार्ड अजीत अब पुलिस के एएसआई पद पर तैनात है। अब वह मेरा बॉडी गार्ड तो नहीं रह सकता, पर मेरे प्रति उसकी निष्ठा आज भी अडिग है।

मैंने मनीष को बस जाने दिया। कुमार सर ने कहा था कि उसे माफ करो और भूल जाओ। शांति देवी अभी भी हैरान है। उसने अपने जीवन में आए दोनों ही पुरुषों को खो दिया और उसे अभी तक यह भी नहीं पता कि यह सब हुआ कैसे। उसने फिर कुछ समय बाद शादी कर ली। शायद तीसरी बार वह ख़ुशकिस्मत हो!

नेताजी ने जेल तोड़ मामले में उनकी भूमिका के कारण अदालत में आत्मसमर्पण कर दिया।

ऐश्वर्या एक बहुत प्यारी बिटिया बनती जा है। उसकी माँ को डर है कि मेरे लाड़-प्यार से वह सिर चढ़ जाएगी।

हॉर्लिक्स नवादा जेल में अपनी सज़ा काट रहा है।

~

कृष्णा पर असफल हमले के तुरंत बाद, राजू और कृष्णा हॉर्लिक्स के साथ एक सौदा करने के लिए भागलपुर जेल गए। यह एक ऐसा सौदा था जिससे वो इंकार नहीं कर सका था।

'हॉर्लिक्स भैया, एक वक़्त पर आप और हम कितने अच्छे दोस्त थे,' राजू और कृष्णा ने ईमानदारी से कहा।

हो भी क्यों न, सामन्त प्रताप के गैंग में तीनों ने साथ काम किया था। उन दिनों में दारू

छोटू पर जान छिड़कता था।

Downloaded from www.The-Gyan.in

‘आपको तो अब जेल रहना है। क्या आप अपने बच्चों के लिए जो सपने देखे हैं, उन्हें पूरा नहीं करना चाहेंगे?’ कृष्णा बोला।

‘हॉर्लिक्स, मुझे लगता है, अभी भी छोटू पुलिसवाला बन सकता है। सोचो, तुम्हारा छोटू!’ राजू ने आगे कहा।

‘सच में? कैसे?’ हॉर्लिक्स की आँखों में उम्मीद की किरण दिखाई देने लगी।

राजू ने हॉर्लिक्स को समझौते के बारे में बताया। वह तुरंत मान गया।

‘और शायद आपको पता ही होगा कि सामन्त प्रताप का शांति भाभी के साथ अफेयर चल रहा था,’ कृष्णा ने कहा। हॉर्लिक्स ने अपना मुँह फेर लिया। वह अपनी आँखों के आँसू उन्हें नहीं दिखाना चाहता था।

~

मैं अपने बेटे, अवि से बिहार और झारखंड के सबसे प्रतिष्ठित स्कूल, नेतरहाट स्कूल के हॉस्टल में मिलने गया। इस स्कूल की परम्परा रही है कि यहां के कई छात्र आईएएस और आईपीएस अफसर बना करते हैं।

‘अवि, तुम्हारा दोस्त छोटू कहाँ है? उसे बुलाओ।’

‘पापा, प्लीज़! उसे छोटू मत बुलाओ। हम अब टीनेजर्स हो गए हैं,’ अवि ने पलटकर कहा।

‘ठीक है, सॉरी। मुझे पता है कि वह तुम्हारा बेस्ट फ्रेन्ड है और बड़ा भी हो गया है, पर मैं तो उसे उसके “छोटू” के दिनों से जानता हूँ।’

बढ़िया कपड़े पहने एक होशियार किशोर आया और उसने मुझे नमस्कार करते हुए बोला, ‘मॉर्निंग अंकल, आप कैसे हैं?’

‘मैं ठीक हूँ, बेटा। आप कैसे हो?’

‘पापा, आपको पता है, शिवम निबंध लेखन में फर्स्ट आया है!’ अवि ने बताया।

‘बहुत बढ़िया, शिवम। निबंध का क्या विषय था?’

‘अंकल वह था, “आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं?”’

‘ओह, और आपने क्या लिखा?’

‘मैं IPS अफसर बनना चाहता हूँ।’

मैंने शिवम के सिर पर हाथ फेरा और आकाश की ओर देखा। मुझे पता है कि ईश्वर

Downloaded from www.The-Gyan.in

आभार

जब मैंने अपने दोस्त और जाने-माने निर्देशक, नीरज पांडे को फिल्म बनाने का सुझाव दिया, तो उन्होंने तुरंत मुझे किताब लिखने का सुझाव दे दिया। मैं आज-कल करता रहा, टालता रहा क्योंकि मुझे लगता था कि अपने विचारों को बैठकर सिलसिलेवार करना और फिर लिखना एक बहुत ही मुश्किल काम था। पर शायद लेखक बनना मेरी नियति थी।

भारत के सर्वश्रेष्ठ क्राइम लेखक, हुसैन ज़ैदी से मेरा परिचय इमरान हाशमी ने कराया, जिन्होंने फिर मुझे पेंगुइन रैंडम हाऊस, इंडिया की पब्लिशर, मिली ऐश्वर्या से मिलाया। अपनी सिनेमाई छवि के उलट, इमरान असल जीवन में बड़े ही शिष्ट और पढ़े-लिखे हैं। हमारी किताबों और बेटों से जुड़ी घनिष्ठता के कारण ही मैं बंदूक के साथ-साथ पेन भी चला पाया।

मैं उन सभी पुलिसवालों, उन भूले-बिसरे नायकों के प्रति अपना आभार जताना चाहता हूँ, जिन्होंने अपने कर्तव्य को सबसे पहले रखा और मेरे 'बुरे' समय में मेरी मदद की। आईपीएस श्री सुनील कुमार हमेशा से मेरे लिए एक लाजवाब परामर्शदाता रहे। इंस्पेक्टर रंजन कुमार और हवलदार शिव नारायण तो बहादुरी, साहस और वीरता के प्रतीक हैं। वर्षों से मेरा बॉडीगार्ड, और अब एक एएसआई, अजीत कुमार मेरी परछाई की तरह रहे हैं। ये हैं उस तरह के पुलिसकर्मी, जो हमारे हृदय को गर्व की भावना से भर देते हैं। इनके साथ-साथ भवानी सिंह का भी शुक्रिया। मैं ख़ुशकिस्मत हूँ कि मुझे डीजी सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) श्री के के शर्मा, आईपीएस, का सहयोग मिला था, जिन्होंने मेरी हर कोशिश को बढ़ावा दिया है।

एक ऐसा व्यक्ति भी है, जिनसे मैंने बहुत-कुछ सीखा है और जिनको मैं अपना आदर्श मानता हूँ, और वह हैं राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता, अक्षय कुमार। खासकर, सरस और मनोहर मिसेज़ फनीबोंस, ट्विंकल खन्ना को, इस किताब की प्रस्तावना लिखने के लिए धन्यवाद।

मैं ईश्वर का जितना धन्यवाद करूँ उतना कम है कि उसने मेरी शादी मेरे जीवन की

आभारी हूँ, जिन्होंने धैर्य के साथ रोज़ मेरे गाने सुने और मेरी अजीब आदतों को सहन किया। आदित्य अब मेरा दोस्त, भरोसेमंद और टेनिस कोर्ट पर मुझे सबसे कड़ी टक्कर देने

Downloaded from www.The-Gyan.in

वाला बन गया है। मुझे उसकी छोटी-छोटी बातों पर की गई समीक्षा के बाद ही अपनी लेखन क्षमता पर भरोसा हुआ।

यह किताब रवीन्द्र माहुर की मदद के बिना पूरी ही नहीं होती। मैं अवंतिका पोद्दार डालमिया, वरुण एस मेहता, मेरे ससुर, अरुण दुग्गड़, मेरे माता-पिता, डॉ नरेंद्र लोढ़ा और आशा लोढ़ा के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अनेक बार मेरी किताब की पाण्डुलिपि को पढ़ा और कारगर सुझाव दिए। बचपन से ही मेरा छोटा भाई, नमित, मेरा एक मज़बूत संबल रहा है। मैं बहुत ख़ुशकिस्मत हूँ कि समीर गहलोत जैसे मेरे कुछ बेहतरीन दोस्त रहे हैं जिन्हें आईआईटी दिल्ली, जयपुर के सेंट ज़ेवियर्स, व सिविल सेवा के कारण जान पाया हूँ।

हुसैन, आपके लगातार मिलने वाले समर्थन के लिए धन्यवाद, और पेंगुइन की मिली, वैशाली, उद्योतना और शिवानी का इस हिंदी संस्करण में उनकी संपादकीय सलाहों के लिए भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ। साथ ही, कानन बाला जी का हिंदी अनुवाद के लिए भी मैं आभार व्यक्त करना चाहता हूँ।

Downloaded from www.The-Gyan.in

THE BEGINNING

Let the conversation begin...

Follow the Penguin Twitter.com@PenguinIndia

Keep up-to-date with all our stories Youtube.com/PenguinIndia

Like ‘Penguin Books’ on Facebook.com/PenguinIndia

Find out more about the author and
discover more stories like this at Penguinbooksindia.com

Downloaded from www.The-Gyan.in

हिन्द पॉकेट बुक्स

यू एस ए | कैनेडा | यूके | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया
न्यू जीलैंड | भारत | साउथ अफ्रीका | चीन

हिन्द पॉकेट बुक्स, पेंगुइन रैंडम हाउस ग्रुप ऑफ़ कम्पनीज़ का हिस्सा है,
जिसका पता global.penguinrandomhouse.com पर मिलेगा

पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया प्रा. लि.,
चौथी मंजिल, कैपिटल टावर 1, एमजी रोड,
गुरुग्राम 122002, हरियाणा, भारत

प्रथम अंग्रेजी संस्करण *Bihar Diaries* , 2018 में पेंगुइन रैंडम हाउस और ब्लू साल्ट मीडिया द्वारा प्रकाशित
यह हिन्दी संस्करण हिन्द पॉकेट बुक्स में पेंगुइन रैंडम हाउस द्वारा 2021 में प्रकाशित
कॉपीराइट © पंकज दुबे

सर्वाधिकार सुरक्षित
This digital edition published in 2021.
eISBN: 978-9-391-14903-1

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, जिनका यथासंभव तथात्मक सत्यापन किया गया है, और इस सम्बन्ध में प्रकाशक एवं सहयोगी प्रकाशक किसी भी रूप में उत्तरदायी नहीं हैं।

www.penguin.co.in

Downloaded from www.The-Gyan.in

इधर आईआईटीयन अमित लोढ़ा बने भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी !
उधर सामंत प्रताप ने अपने जीवन के पहले अपराध को दिया अंजाम !!
सालों बाद टकराईं दोनों की राहें और फिर शुरू हुआ दिल दहलाने वाला एक हैरत-अंगेज़ खेल...

बिहार डायरीज़ अमित लोढ़ा द्वारा एक भयावह गिरोह के सरगना सामंत प्रताप की रोमांचक गिरफ़्तारी का ज्वलंत विवरण है। वह क्षेत्र में सैकड़ों लोगों के क्रूर नरसंहार, वसूली, अपहरण जैसे अनगिनत अपराधों के लिए कुख्यात था।

बिहार के एक सुस्त पिछड़े हुए कस्बे शेखपुरा में, अमित के पुलिस अधीक्षक पद पर कार्यकाल के दौरान, रोंगटे खड़े करने वाली कहानी, जो अपराधी का पीछा करते हुए तीन राज्यों की सीमाओं में फैल गयी थी।

कैसे अमित अपनी पेशेवर चुनौतियों का सामना करते हुए अपनी अंदरूनी आशंकाओं को नियंत्रित करते हैं? वे तब क्या करते हैं, जब सामंत उनके परिवार के पीछे पड़ता है?

बिहार डायरीज़ एक युवा, सुसभ्य आई पी एस अफ़सर के साहस और खूँखार अपराधी के दुस्साहस के बीच संग्राम की कहानी है।

'एक बेहद रोमांचक चूहे-बिल्ली का खेल। अंतरंग और दिलचस्प, यह असली जीवन पर आधारित एक ऐसा पुलिस ड्रामा है, जिसे आप पूरा पढ़े बिना छोड़ नहीं पाएँगे।'

इमरान हाशमी

'यह कोई आम रोमांचक पुलिस कहानी नहीं है। एक ही बार में पढ़ लेने योग्य।'

रॉनी स्क्रूवाला

आवरण चित्र : प्रियांकर गुप्ता
आवरण डिज़ाइन : देवांगना दास

नॉन–फ़िक्शन

₹199

www.hindpocketbooks.com

FSC

E-book available

Downloaded from www.The-Gyan.in